# रक्षा अनुसंधान भारती

21वां अंक

वर्ष 2025-26

अप्रैल - सितंबर

**रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय**

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन, गांधीनगर, गुजरात में राजभाषा विभाग की कीर्ति पुरस्कार योजना के अंतर्गत डीआरडीओ की गृह पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" को माननीय क़ानून एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल एवं राज्य सभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा के कर कमलों द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

रक्षा अनुसंधान भारती के 20वें अंक का विमोचन

# रक्षा अनुसंधान भारती

21वां अंक

वर्ष 2025-26

अप्रैल-सितंबर

**रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन मुख्यालय**

डीआरडीओ भवन, राजाजी मार्ग

नई दिल्ली - 110011

# रक्षा अनुसंधान भारती

वर्ष 2025, 21वां अंक


**मुख्य संरक्षक**

**डॉ. समिर वी कामत**

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

**संरक्षक**

**डॉ. मनु कोरुला**
महानिदेशक
संसाधन एवं प्रबंधन

**श्री सुनील शर्मा**
निदेशक
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

**प्रधान संपादक**

**श्री चन्द्र प्रकाश मीणा**

सह निदेशक, प्रमुख (राजभाषा)

**संपादक**

**श्रीमती अरुण कमल**

सहायक निदेशक (रा.भा.)

**आवरण पृष्ठ संकल्पना**

**श्री संजय कुमार,** तकनीकी अधिकारी 'सी'
**श्री अंकुर मैंदीरत्ता,** तकनीकी अधिकारी 'बी'
**श्री कपिल सिंह,** ग्राफिक डिजाइनर
जनसंपर्क निदेशालय

**विशेष संपादन सहयोग**

**सुश्री श्रद्धा वर्मा,** वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

**संपादन सहयोग**

**सुश्री स्वाति सिन्हा,** वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
**श्री सचिन सांगवान,** वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
**सुश्री प्रतिष्ठा मिश्रा,** कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
**श्री सतेन्द्र कुमार,** डीईओ
**सुश्री समन बानो,** डीईओ


---

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं। उन पर संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

## संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) मुख्यालय की गृह-पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" के इक्कीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत में अनेक भाषाएं बोली जाने के बावजूद हिंदी राजभाषा के स्थान पर विराजमान है और यह हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है कि कार्यालय का कार्य अधिक-से-अधिक हिंदी में करने का प्रयास करें। पत्र-पत्रिकाएं किसी भी भाषा के प्रयोग को बढ़ाने का एक माध्यम बनती हैं। इस मुख्यालय की गृह-पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" इसी लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रयासरत है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी स्तरीय होंगी, जो डीआरडीओ कार्मिकों की राजभाषा में रूचि का परिचायक होंगी।

मैं इस अवसर पर संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय के निदेशक सहित पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए बधाई देता हूं और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थानः नई दिल्ली

दिनांकः 03 सितम्बर, 2025

**(डॉ. समिर वी. कामत)**

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350 फैक्स/Fax : 011-23018216 ई-मेल/E-mail : secydrdo@gov.in

डॉ॰ मनु कोरूला
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (आर. एण्ड एम.)
Dr. Manu Korulla
Outstanding Scientist &
Director General (R & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
अनुसंधान तथा विकास संगठन
101, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110 011, भारत

Government of India
Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
101, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110 011, India

# संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) मुख्यालय अपनी गृह-पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" के इक्कीसवें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

राजभाषा हिंदी को जब सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में अपनाने की कल्पना की गई तो साथ में यह भी संकल्पना की गई कि इसका संवर्धन इस प्रकार से हो कि यह भारत की बहुमूल्य संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सके। किसी भी स्वाधीन देश की प्रगति में राजभाषा का बहुत महत्व है। हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक और परिचायक भी है। इस प्रकार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी की गृह-पत्रिकाएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मैं इस शुभ अवसर पर निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय और रचनात्मक सहयोग देने वाले वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

मनु कोरूला

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः 28 अगस्त, 2025

**(डॉ. मनु कोरूला)**

दूरभाष/Phone : 011-23011860 फैक्स/Fax : 011-23015395
ई-मेल/E-mail : dgrm.hqr@gov.in

सुनील शर्मा
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)

Sunil Sharma
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.स.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated ....................

# संदेश

यह मेरे लिए हर्ष का विषय है कि रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) मुख्यालय अपनी गृह-पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" के स्तरीय प्रकाशन ने केन्द्र सरकार के 'क' क्षेत्र के कार्यालयों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, जिसे पिछले तीन वर्षों में दो बार राजभाषा विभाग के द्वारा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस वर्ष हम इस पत्रिका का इक्कीसवां अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

किसी भी देश की प्रगति में राजभाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में एकता की भावना को जगाने और इसे सुदृढ़ करने में राजभाषा हिंदी का योगदान अविस्मरणीय रहा है। आज की विकसित हिंदी निस्संदेह हमारी आधुनिक जीवन पद्धति का एक अटूट अंग बनी हुई है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गृह-पत्रिकाओं का उद्देश्य है अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में मूल लेखन एवं अपने शासकीय कार्यों को हिंदी में करने के लिए प्रेरित करना। मुझे विश्वास है कि डीआरडीओ मुख्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" का यह अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होता रहेगा।

"रक्षा अनुसंधान भारती" पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों और हमारी संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएं।।

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः 19 अगस्त, 2025

**(सुनील शर्मा)**


E-mail : sunil-sharma.hqr@gov.in

चन्द्र प्रकाश मीणा
सह निदेशक
Chandra Prakash Meena
Associate Director

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
संसदीय कार्य,
राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
399, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110011

Government of India
Ministry of Defence
Defence R&D Organisation
Directorate of Parliamentary Affairs,
Rajbhasha and Organisation & Methods
399, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110011

# संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) मुख्यालय की गृह-पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" के इक्कीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। डीआरडीओ मुख्यालय राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु सदैव प्रयत्नशील रहा है।

राजभाषा नीति, नियमों का अनुपालन एवं कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक और नैतिक कर्तव्य है। हिंदी को सरकारी कामकाज में एक यथोचित स्थान दिलाना भी हम सभी का दायित्व है, अतः इस दिशा में ठोस प्रयास किये जाने जरूरी हैं। गृह पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" का मुख्यालय द्वारा नियमित प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन का एक प्रभावशाली स्तम्भ है, जिसके प्रतिवर्ष दो अंक निकाले जाते हैं, एक सामान्य और एक तकनीकी विशेषांक। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में मुख्यालय से संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारियाँ तथा कार्मिकों द्वारा प्रदत्त लेख एवं अन्य रचनाएं जब राजभाषा हिंदी में प्रकाशित की जाएंगी तो निश्चित ही सभी कार्मिक अपने कार्य क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित होंगे और मुख्यालय का यह प्रयास राजभाषा हिंदी के प्रसार में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करेगा।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि मुख्यालय की गृह पत्रिका ने केन्द्र सरकार के कार्यालयों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, जिसका पूरा श्रेय हमारे लेखकों का जाता है। मैं मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस सम्मिलित प्रयास एवं योगदान के लिए हार्दिक बधाई देता हूं और "रक्षा अनुसंधान भारती" के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूं।

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः 19 अगस्त, 2025

**(चन्द्र प्रकाश मीणा)**

Tele : (O) 011-23007911 • Fax : 011-23011133 • E-mail : cpmeena.hqr@gov.in

अरुण कमल
सहायक निदेशक (रा.भा.)
Arun Kamal
Assistant Director (OL)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
संसदीय कार्य,
राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
399, डी आर डी ओ भवन,राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110011

Government of India
Ministry of Defence
Defence R&D Organisation
Directorate of Parliamentary Affairs,
Rajbhasha and Organisation & Methods
399, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110011

## संपादकीय

आज के समय में अल्पकालिक परिवर्तन भी बड़े दीर्घकालिक प्रभाव वाले होते हैं। ये परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहे हैं कि आदमी अपने आप को कब, कहाँ, किन परिस्थितियों में पाए, कहना मुश्किल है। परिस्थितियाँ सकारात्मक भी हो सकती हैं और नकारात्मक भी। लेकिन इन तीव्र परिवर्तनों के दौर से गुजरकर भी हमने बहुत हद तक अपनी संस्कृति और अपनी परंपरा को बचाए रखा है, जिसका एक महत्वपूर्ण स्रोत हमारी भाषाएँ हैं।

यह हमारी भाषाओं की विशेषता रही है कि सैकड़ों वर्षों में विभिन्न भाषाओं और संस्कृति के विभिन्न प्रभावों के बीच भी उन्होंने अपना स्वरूप नहीं खोया है। उन्होंने अपनी विशेषताओं को अक्षुण्ण बनाए रखा है और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि काफी गति से आज वे प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। हिंदी, जिसे संविधान में राजभाषा का दर्जा मिला है, सभी भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। अगर हम स्वधीनता संग्राम काल को ही लें अर्थात् 1857 से 1947 के बीच का समय, तो हिंदी की भूमिका भुलाई नहीं जा सकती। हिंदी ने उस सेतु का काम किया जिसने पूरे भारत में विभिन्न दिशाओं से बह रही भाषाई नदियों को स्वयं में आत्मसात कर सबको एकजुट कर दिया। संपूर्ण राष्ट्र उस समय अगर एकसूत्र में बंधा था, तो इसका पूरा श्रेय हिंदी को जाता है। यह देश कृतज्ञ था हिंदी का, जिसने उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी और पूर्व में कामरूप से पश्चिम में कच्छ तक, पूरे देश की भावनाओं को जोड़ दिया, उसमें राष्ट्रीयता की ऐसी लहर उड़ेल दी, जिसका मुकाबला करना अंग्रेजों के बस का नहीं रहा। हिंदी भाषी नेताओं को छोड़ भी दें, गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के नेता भी हिंदी के एकमात्र विकल्प

दूरभाष/Tele : (O) 011-23007906 • फैक्स/Fax : 011-23011133 • ई-मेल/E-mail : arunkamal.hqr@gov.in / arunkamal40@gmail.com

को ही साथ लेकर चले। वे सभी भाषा के विषय पर निस्संदेह एकमत थे कि पूरे भारत की संपर्क भाषा एक ही है, और वह है हिंदी।

अमीर खुसरो की हिंदवी से शुरू होनेवाली हिंदी, आज आगे बढ़ते हुए विश्व बाजार की सबसे अधिक संभावनाओं से भरी भाषा दिखाई दे रही है। इससे हिंदी की मांग बहुत बढ़ी है और हिंदी और देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता ने बाहर के लोगों को भी काफी प्रभावित किया है। सरकार की तरफ से इसके प्रसार की दिशा में काफी सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं और यह इसी का नतीजा है कि आज वास्तव में हिंदी पूरे भारत की संपर्क भाषा बन गई है। हिंदी में आज वह सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जो आगे बढ़ने के लिए जरूरी हैं, समय के साथ चलने के लिए जरूरी हैं।

आज ऐसे संगठन का हिस्सा होकर जो देश की आत्मनिर्भरता और सुरक्षा के लिए समर्पित होकर काम कर रहा है, मैं हमेशा से गौरवान्वित रही हूं और संगठन के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के बीच विज्ञान से हिंदी को संबद्ध कर एक अंतर्मुख की अनुभूति मिलती रही है। इसी क्रम में हमने वर्ष में पत्रिका के दो अंक निकालने शुरू किए, जिसमें एक सामान्य अंक और एक तकनीकी विशेषांक, जो डीआरडीओ के विभिन्न शोध क्षेत्रों पर केन्द्रित होते हैं। यह तथ्य आप सभी से साझा करते हुए और भी खुशी है कि पिछले चार वर्षों में डीआरडीओ मुख्यालय की पत्रिका रक्षा अनुसंधान भारती ने तीन राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त कर अपनी एक खास जगह बनायी है जिसके लिए मैं सभी रचनाकार साथियों एवं अपनी प्रकाशन टीम की हृदय से आभारी हूं।

पिछले इलेक्ट्रॉनिकी केन्द्रित तकनीकी विशेषांक के बाद पुनः एक सामान्य अंक, जिसमें विभिन्न विषयों को समाहित करती अनेक शोध परक, ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर रचनाएँ शामिल की गई हैं, आपके समक्ष प्रस्तुत है। आप अपने विचार, सुझाव हम तक प्रेषित करें.. हर सुझाव राजभाषा का मार्ग प्रशस्त करने का एक माध्यम होगा, जिसे कार्यान्वित कर हमें खुशी होगी।

साभिवादन,

**(अरुण कमल)**
सहायक निदेशक (राजभाषा)

# संवीक्षा समिति के सदस्यों का आभार

**अध्यक्ष**

## डॉ. सञ्जय कुमार द्विवेदी

**वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक (कार्मिक निदेशालय)**

**सदस्य**

## श्री चन्द्र प्रकाश मीणा

**सह निदेशक, प्रमुख (राजभाषा)**

## श्रीमती अरुण कमल

**सहायक निदेशक (रा.भा)**

**सदस्य सचिव**

## सुश्री श्रद्धा वर्मा

**वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी**

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| | **आत्मनिर्भरता** | | |
| 1 | रक्षा प्रौद्योगिकी में स्टार्टअप्स के सशक्तिकरण की ओर डीआरडीओ | अमित शर्मा | 16 |
| 2 | अनोखे उद्यमियों का सृजन द्वार : आईआईटी-आईआईएम का आधार | अरुण कमल | 19 |
| 3 | डार्क साइकोलॉजी : अनैतिक मनोविज्ञान | अजय कुमार | 24 |
| 4 | प्रणालियों और तकनीकों का डेटाबेस | अतुल कुमार | 32 |
| 5 | अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी | शुभाषीश श्रीवास्तव | 36 |
| 6 | रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता में डीआरडीओ की भूमिका | ले. कर्नल कनिष्क सिंह सिवाच | 39 |
| 7 | विकसित भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका | श्याम सुंदर मीना | 43 |
| 8 | ब्लॉकचेन - स्मार्ट शहर | गौरव कुमार | 50 |
| 9 | गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय | रितेश कुमार जौरिहार | 52 |
| 10 | भ्रष्टाचार मुक्त भारत | अविनाश कुमार | 55 |
| 11 | आधुनिक भारत | प्रभूनाथ दूबे | 57 |
| 12 | मेक इन इंडिया | रमेश गौड़ | 59 |
| 13 | विकसित भारत@2047 | रेखा | 62 |
| 14 | ऑनलाइन शिक्षा बनाम ऑफलाइन शिक्षा | अरुण चौधरी | 65 |
| 15 | आत्मनिर्भर भारत | सुशील कुमार | 68 |
| | **तकनीक** | | |
| 16 | अनुभव और AI-समर्थित PMIS 2.0 की दिशा में एक प्रस्ताव | पल्लवी वार्ष्णेय | 72 |
| 17 | सरकारी दफ्तरों का डिजीटलीकरण - भारत एक नई दिशा की ओर | अंकुर शास्ता | 75 |
| 18 | डिजिटल युग में शिक्षा का बदलता स्वरूप | सुरेंद्र प्रताप सिंह | 78 |
| 19 | एक सशक्त और सुरक्षित साइबर प्रणाली : एक अपरिहार्य आवश्यकता! | जगत सिंह | 80 |
| 20 | कृत्रिम बुद्धिमत्ता : एक विशेषाधिकार या नुकसान | संजीव कुमार | 83 |
| 21 | घर बैठे डिजिटल अरेस्ट : साइबर अपराध का नया चेहरा | विनोद कुमार | 86 |
| 22 | भारत में साइबर सुरक्षा | मशकूर अली | 88 |
| 23 | कृत्रिम बुद्धिमत्ता | एम सम्पूर्ण कुमार | 92 |
| 24 | भारत के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका और डीआरडीओ का योगदान | मिठ्ठू मेहता | 94 |
| 25 | इलेक्ट्रिक वाहन (EV) : हरित परिवहन | अनीता चौहान | 99 |

| क्र.सं. | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| | **संस्कृति** | | |
| 26 | पुरी रथ यात्रा : आस्था एवं परंपरा का प्रतीक | सचिन सांगवान | 104 |
| 27 | ॐ का महत्व | संदीप रावत | 106 |
| 28 | वैदिक घर | अर्चना सिंह | 108 |
| 29 | वैशाली के बारे में | ओम प्रकाश | 110 |
| 30 | युद्ध के बाद जीवन: एक नए सवेरे की तलाश | मनोज कुमार कटारिया | 111 |
| 31 | विदाई समारोह सम्बोधन | सुनील कुमार | 112 |
| 32 | सनातन धर्म में विज्ञान | सुषमा सिंह | 116 |
| 33 | भारतीय शादियां | प्रदीप कुमार | 118 |
| 34 | रंगीला राजस्थान | पप्पू राम मीणा | 120 |
| 35 | जीवन में रिश्तों का महत्व | कृष्णा कुमार | 122 |
| 36 | नैतिक शिक्षा और समाज | जीत बनर्जी | 124 |
| | **रक्षा** | | |
| 37 | भारतीय सीमा विवादों का प्रबंधन - एक जटिल कार्य | सोनपाल | 128 |
| 38 | आधुनिक भारतीय कूटनीति | दीपक लखचौरा | 131 |
| 39 | आतंकवाद | रविन्द्र सिंह नेगी | 134 |
| 40 | भारत पाकिस्तान तनाव : युद्ध एकमात्र विकल्प | अमित बंसल | 137 |
| 41 | भारत का मित्र देशों के साथ रक्षा सहयोग | मुकेश कुमार | 140 |
| 42 | युद्ध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका | कुंदन कुमार झा | 142 |
| 43 | आतंकवाद - एक भयावह समस्या | लखविंदर सिंह | 145 |
| 44 | देश का फौजी | निखिल कौशिक | 148 |
| 45 | आतंकवाद : वैश्विक समस्या | कुमेर पंत | 150 |
| | **प्रकृति** | | |
| 46 | लेह: ऊंचे दर्रों की भूमि से होकर यात्रा | विनोद कुमार सिंह | 154 |
| 47 | हमारी यमुना, हमारी जिम्मेदारी: पुनरुद्धार का मार्ग | डॉ. प्रमोद कुमार साहु | 159 |
| 48 | जलवायु परिवर्तन: एक वैश्विक चुनौती | मनीषा आर्या | 163 |
| 49 | भागलपुर रेशम : एक चिरस्थायी खजाना | प्रियांशु साहिल यादव | 165 |
| 50 | मखाने की खेती | गोपाल शाह | 167 |

| क्र.सं. | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 51 | जल ही जीवन है | प्रताप चन्द्र नायक | 169 |
| 52 | पेड़ : अमूल्य संपदा | विजेन्द्र कुमार | 171 |
| 53 | प्रकृति और हम | महादेव पंडित | 173 |
| 54 | भारत में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता और उपाय | शिवम चौधरी | 175 |
| | **विविध** | | |
| 55 | कार्मिक निदेशालय एवं उसका नेतृत्व : एक झलक | बबीता वर्मा | 178 |
| 56 | मार्वान अट्टापट्टू : दृढ़ संकल्प और समर्पण की गाथा | दिनेश | 183 |
| 57 | मोटापा: एक चिंता | अनिल कुमार | 185 |
| 58 | प्रगति की माप केवल गति से नहीं बल्कि सही दिशा से | प्रतिष्ठा मिश्रा | 187 |
| 59 | हम तुम | एन पी अनिता | 189 |
| 60 | जीवन में खेलों का महत्व | सुनील कुमार | 192 |
| 61 | क्षमा चाहता हूं, ये गलती से हो गया | प्रवेश कुमार | 195 |
| 62 | किसी संस्था का चरित्र चित्रण, उसके नेतृत्व में प्रतिबिम्बित | शिवजीत | 197 |
| 63 | आज के परिप्रेक्ष्य में पुरुषों की बिगड़ती स्थिति : छद्म नारीवाद और समानता की प्रतिस्पर्धा | कपिल अग्रवाल | 199 |
| 64 | पारिवारिक पेंशन | राजेन्द्र अटल | 202 |
| 65 | जीवन में सच्चा आनंद | आनंद कुमार | 206 |
| 66 | फोन की दुनिया: एक आउटसोर्स्ड अस्तित्व | नीरज | 208 |
| 67 | संतुष्टि ही प्रकृति की दौलत है | विपिन बिहारी | 210 |
| 68 | पुरुषार्थ ही प्रारब्ध है | भूपेंद्र सिंह | 216 |
| 69 | लघु कथाएँ | अंजलि कंवर | 215 |
| 70 | असंभव कुछ भी नहीं... | रश्मि सैनी | 216 |
| | **काव्य खंड** | | |
| 71 | अखबार | अनुमीत चावला | 218 |
| 72 | सबको साथ लेकर चलो | पंकज भारती | 219 |
| 73 | कविता के बहाने | अंकुश | 220 |
| 74 | राम और रावण - वो जो कहानी के पार हैं | योगेश कुमार | 221 |
| 75 | सिंदूर : देश भक्ति का अमर दस्तूर | सुंदरी श्रीनिवासन | 223 |

| क्र.सं. | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 76 | लोकगीत - अपना गांव | राम शंकर चौरसिया | 224 |
| 77 | छवि देश की बदलेंगे | अरुण कमल | 225 |
| 78 | ऑपरेशन सिंदूर | शिल्की सुमन | 226 |
| 79 | रिश्ते क्या हैं | किरन | 228 |
| 80 | पर्यावरण की पुकार | मदन मोहन मीना | 229 |
| 81 | समाज में महिलाओं की भूमिका | वंदना ढींगरा | 230 |
| 82 | रिश्ते | दीपक कुमार | 231 |
| 83 | सबक | बसंत लाल | 232 |
| 84 | आईपीएल | वरुण लाकड़ा | 233 |
| 85 | मेरा वजूद | बिंदु कंधारी | 234 |
| 86 | रणभूमि की ललकार | मोहित लाल | 234 |
| 87 | खून की मिट्टी में उगते हैं सिपाही | विशाल कुमार | 236 |
| 88 | वतन के वास्ते | आकाश कुमार | 237 |
| 89 | रील्स में हंसता समाज | पुजा कुमारी | 238 |
| | **राजभाषा खंड** | | |
| 90 | डीआरडीओ में राजभाषा: एक सूत्रधार | ले. कर्नल अभिनव कुमार | 240 |
| 91 | संसदीय राजभाषा समिति : एक नियामक शक्ति | सुजीत कुमार मेहता | 243 |
| 92 | कार्यालयी हिंदी : मौलिकता का अभाव | श्रद्धा वर्मा | 247 |
| 93 | हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट | स्वाति सिन्हा | 250 |
| 94 | कंठस्थ प्रशिक्षण का आयोजन | | 252 |
| 95 | उन्मेष 2026 का आयोजन | | 252 |

# हमारे प्रेरणा स्रोत

कठिनाइयों, कष्टों और समस्याओं से क्यों डरें?
जब मुसीबतें आएं, तो अपने कष्टों की प्रासंगिकता
को समझने की कोशिश करें। विपत्तियां हमेशा
आत्मनिरीक्षण के अवसर प्रदान करती हैं।

# आत्मनिर्भरता

**आत्मनिर्भरता सच्ची स्वतंत्रता की कुंजी हैं।**

– लाल बहादुर शास्त्री

# रक्षा प्रौद्योगिकी में स्टार्टअप्स के सशक्तिकरण की ओर डीआरडीओ

**अमित शर्मा**
जनसंपर्क निदेशालय

## स्टार्टअप महाकुंभ 2024: नवाचार और उद्यमिता का भव्य संगम

भारत सरकार द्वारा आयोजित स्टार्टअप महाकुंभ 2024 3 से 5 अप्रैल तक भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। यह आयोजन “Startup India @2047 - भारत की कहानी का अनावरण” विषय पर केंद्रित था, जिसका उद्देश्य भारत को 2047 तक एक वैश्विक नवाचार और स्टार्टअप हब के रूप में स्थापित करना है। इस महाकुंभ में 3,000 से अधिक स्टार्टअप्स, 1,000 से अधिक निवेशक, इनक्यूबेटर, और लगभग 50,000 से अधिक आगंतुकों ने भाग लिया। यह आयोजन युवाओं, नवोन्मेषकों, और नीति-निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान करता है, जहाँ वे नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अपने विचार साझा कर सकें और रणनीतिक साझेदारियाँ बना सकें। इस महाकुंभ में न केवल टेक्नोलॉजी और उद्यमिता को बढ़ावा देने वाले स्टार्टअप्स को मंच मिला, बल्कि निवेशकों, नीति निर्माताओं और सरकारी संस्थाओं के साथ प्रत्यक्ष संवाद और सहयोग के अनगिनत अवसर भी प्रदान किए गए।

## क्रांति की ओर रक्षा नवाचार - स्टार्टअप महाकुंभ 2025 में DRDO

भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने इस महाकुंभ में अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई और देश में रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचार व आत्मनिर्भरता को सशक्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की। DRDO ने स्टार्टअप महाकुंभ में एक भव्य डिफेंस-एंड-स्पेस

टेक्नोलॉजी पवेलियन स्थापित किया, जिसमें अत्याधुनिक साइबर सुरक्षा समाधानों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सिस्टम, स्वायत्त युद्ध प्रणालियों, स्मार्ट सैन्य उपकरणों जैसे बुलेटप्रूफ जैकेट, स्मार्ट हेलमेट, और रोबोटिक हथियारों का प्रदर्शन किया गया। इस पवेलियन का उद्घाटन DRDO के अध्यक्ष डॉ. समिर वी. कामत की उपस्थिति में हुआ, जिन्होंने स्टार्टअप्स के साथ संवाद किया और उन्हें रक्षा क्षेत्र में नवाचार के लिए प्रोत्साहित किया।

स्टार्टअप महाकुंभ 2024 के उद्घाटन समारोह में केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पियूष गोयल जी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। उन्होंने अपने संबोधन में स्टार्टअप्स को नवाचार और उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया और सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उन्हें समर्थन देने की प्रतिबद्धता जताई।

## सेमिनार और पैनल चर्चा के दौरान डॉ. समिर वी. कामत, सचिव डीडीआर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ की भागीदारी

DRDO के अध्यक्ष डॉ. समिर वी. कामत ने स्टार्टअप महाकुंभ के दौरान आयोजित सेमिनार 'रक्षा क्षेत्र में स्टार्टअप्स की भूमिका' में भाग लिया, जिसमें उन्होंने 'रक्षा क्षेत्र में स्टार्टअप्स की भूमिका' विषय पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि कैसे स्टार्टअप्स रक्षा प्रौद्योगिकी में नवाचार ला सकते हैं और DRDO उनके साथ मिलकर काम करने के लिए तत्पर है।

## 'डेयर टू ड्रीम 5.0' प्रतियोगिता का शुभारंभ

DRDO ने स्टार्टअप महाकुंभ 2024 में 'डेयर टू ड्रीम 5.0' प्रतियोगिता के नए संस्करण की घोषणा की। यह प्रतियोगिता नवोन्मेषकों और स्टार्टअप्स को रक्षा और एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी में अपनी नवीन अवधारणाओं और विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करती है। प्रतियोगिता के विजेताओं को DRDO के साथ अपने विचारों को विकसित करने का मौका मिलेगा, जिससे वे अपनी तकनीकों को व्यावसायिक रूप से लागू कर सकें।

## TDF योजना के लाभ और स्टार्टअप्स के लिए अवसर

DRDO की 'Technology Development Fund (TDF)' योजना के तहत, स्टार्टअप्स को अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। स्टार्टअप महाकुंभ 2024 में, DRDO ने इस योजना के तहत उपलब्ध अवसरों पर प्रकाश डाला और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित किया कि वे इस योजना का लाभ उठाकर अपनी तकनीकों को विकसित करें। TDF योजना के माध्यम से, स्टार्टअप्स को प्रति परियोजना 50 करोड़ रुपये तक की वित्तीय सहायता मिल सकती है, जिससे वे अपनी नवाचार क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं और रक्षा क्षेत्र में योगदान कर सकते हैं।

## DRDO के सहयोग से स्टार्टअप्स को क्या मिला:

**तकनीकी सहयोग और संसाधनों तक पहुंच**: DRDO ने स्टार्टअप्स को अपनी प्रयोगशालाओं, परीक्षण सुविधाओं और तकनीकी विशेषज्ञता तक पहुंच प्रदान की, जिससे वे अपने उत्पादों को उच्च स्तर पर परख और प्रमाणित कर सकें।

**फंडिंग और निवेश के अवसर:** TDF योजना के तहत, स्टार्टअप्स को अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता मिली, जिससे वे अपनी तकनीकों का व्यावसायीकरण कर सकें।

**वैश्विक रक्षा बाजार में प्रवेश:** DRDO के साथ साझेदारी से स्टार्टअप्स को अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी तकनीकों का प्रदर्शन करने का अवसर मिला, जिससे वे वैश्विक रक्षा बाजार में प्रवेश कर सके।

**सरकारी रक्षा अनुबंधों तक पहुंच:** DRDO के सहयोग से, स्टार्टअप्स को सरकारी रक्षा अनुबंध प्राप्त करने का अवसर मिला, जिससे उन्हें वित्तीय स्थिरता और व्यावसायिक विकास का लाभ मिला।

## निष्कर्ष

स्टार्टअप महाकुंभ 2024 में DRDO की भागीदारी ने यह प्रदर्शित किया कि भारत रक्षा नवाचार में एक नए युग की ओर अग्रसर है। इस आयोजन ने स्टार्टअप्स और DRDO के बीच सहयोग को नई दिशा दी, जिससे देश को आत्मनिर्भर भारत की ओर एक और ठोस कदम मिला। DRDO की यह पहल न केवल रक्षा क्षेत्र को सशक्त बनाएगी, बल्कि युवाओं को भी प्रेरित करेगी कि वे भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए अत्याधुनिक तकनीक विकसित करें।

# अनोखे उद्यमियों का सृजन द्वारः आईआईटी-आईआईएम का आधार

**अरुण कमल**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

अपना भारत दिन-दुनी रात-चौगूनी लगातार ऊंची-ऊंची छलांगे लगाता प्रगति की राह पर अग्रसर है। इन ऊंची-ऊंची छलांगों में थोड़ी-बहुत चोट तो लगती ही है, लेकिन इन खरोचों की चिंता किसने की है। देखिए आगे बढ़ना है तो बहुत कुछ करना पड़ेगा। मन मार कर पढ़ना पड़ेगा.. क्यों.. हम बचपन से यही सुनते रहे हैं कि देख लो, अभी मेहनत कर लो.. पढ़ लिखकर जिंदगी बना लो.. वरना जिंदगी जीने को तरस जाओगे.. हर मोड़ पर मात खाओगे।

लेकिन आपको क्या लगता है एक बार पढ़-लिखकर जिंदगी में कुछ बन जाने के बाद क्या होता है। क्या ऐसी कुछ खुशी मिल जाती है, जिसे आप हर दिन महसूस करें। हमें अपनी पसंदीदा मिठाई खाकर, बचपन में दोस्तों के साथ खेलकर, किसी प्रेयसी या प्रेमी की आंखों में झांककर, संतान के गोल्ड मेडल को हाथों से महसूसकर जो दिल को सुकून पहुंचता है, क्या यह सुकून उन उपलब्धियों के बाद हमारे हर दिन का हिस्सा बन पाता है। नहीं न... जिंदगी की रस्साकसी चलती ही रहती है। लेकिन भाई.. हमारा पूरा समाज अपने बच्चों को पढ़ाने में लगा है.. दिन-रात जागकर.. बच्चों के बचपने को आग में झोंककर वह अपने बच्चे को बनाने में लगा है.. पहुँचना कहां है आखिर।

एक जमाना था, हर माँ-बाप के होनहार बच्चे आईएएस बनते थे, लेकिन अब नहीं। यह सफलता की कुंजी डुप्लीकेट होने लगी है.. कभी लग भी जाती है.. कभी चार-पांच साल तक आप उस कुंजी को घुमाते ही रहेंगे लेकिन ताला खुल नहीं पाता है। आजकल लोग रिस्क नहीं लेते... खेलो भी और मारो श्योर शॉट छक्का और वो कैसे लगेगा? वो तब लगेगा जब आपके बच्चे की एंट्री आईआईटी या आईआईएम में हो जाए। भाई क्या कहें, हम जैसे कुछ लोगों को बच्चों की हालत देखकर लगता है कि इन आईआईटी-आईआईएम ने भारत का बचपन खराब कर दिया है.. आपको क्या लगता है? ऐसा कह सकते हैं क्या ... नहीं कह सकते ना..? पता नहीं क्या पढ़ाते हैं.. या क्या खिला देते हैं.. या क्या घोल कर पिला देते हैं बच्चों को। डीएनए ही बदल जाता है। सोच ही बदल जाती है। मैं हैरान हो जाती हूं.. कहीं किसी भी फील्ड में किसी सफल व्यक्तित्व पर नजर पड़े और आप उसकी तह में जाने की कोशिश करें तो वहाँ कोई न कोई आईआईटी या आईआईएम झांकता नजर आता है। इन से निकले सफल व्यक्तियों को अगर इस आलेख में दर्ज करना शुरू करेंगे तो सूची बहुत लंबी हो जाएगी। सुंदर पिच्चई, एन आर नारायण मूर्ति, चेतन भगत, रोहित बंसल, रघुराम राजन, मनोहर पर्रिकर, विनोद खोसला जैसे लोगों को तो सभी जानते हैं, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है।

तो चलिए बात करते हैं कि इन दोनों संस्थानों ने किस तरह से हमारे लिए बहुत सारे एंटरप्रोन्योर

बनाए हैं। जिन्होंने पढ़ लिखकर सरकारी नौकरी नहीं तलाशी बल्कि सैकड़ों-हजारों के लिए रोजगार बनाकर देश की प्रगति की राह को अलग-अलग दिशाओं में सुकर बनाते जा रहे हैं। आज ऐसे-ऐसे स्टार्ट अप आ गए हैं, जहाँ तक शायद कइयों की कलप्ना भी नहीं पहुँच सकती। आप किसी काम के लिए सुविधाएँ तलाशें और कई-कई एजेंसी मिल जाएंगी, जो आपको वो सुभी सुविधाएँ आपकी अंगुलियों की टिपर पर मौजूद करा देती हैं। यहाँ तक अपने जीवन की समाप्ति के बाद अगर आपको लगे कि पता नहीं बच्चे आपके पिंड दान के लिए समय निकाल पाएँ या नहीं तो अपनी जीवन अवधि में ही आप अपने पिंड दान की बुकिंग कर सकते हैं और पूरी निश्चिंतता के साथ मोक्ष द्वार में प्रवेश के लिए इह लोक से आंखें बंद कर सकते हैं। आइए मिलते हैं कुछ ऐसे ही आईआईटी और आईआईएम से निकले कुछ अनोखे उद्यमियों से, जिन्होंने कई-कई क्षेत्रों में कमाल किया है।

**• सचिन बंसल और बिन्नी बंसल (फ्लिपकार्ट)- आईआईटी, दिल्ली**

सचिन और बिन्नी बंसल की कहानी अब पुरानी हो चुकी है। दोनों ही आई आई टी दिल्ली के छात्र थे, जिन्होंने मिलकर 2007 में फ्लिपकार्ट की सह-स्थापना की, जो बाद में भारत की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनी बन गई। दोनों ने भारत में ऑनलाइन शॉपिंग की क्षमता को पहचाना और एक ऑनलाइन पुस्तक विक्रेता के रूप में शुरुआत की। उन्होंने अपनी संयुक्त बचत से 6,000 डॉलर जमा किए और अपने अपार्टमेंट से ही काम करना शुरू कर दिया। फ्लिपकार्ट ने धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बेचना शुरू कर दिया, जिसमें कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य सामान शामिल हैं। कंपनी ने कैश ऑन डिलीवरी, ईएमआई और एक्सचेंज ऑफर जैसे विकल्प देकर ग्राहकों को आकर्षित किया। बाद में सचिन और बिन्नी विभिन्न कारणों से अलग हुए, बाद में, सचिन बंसल ने फ्लिपकार्ट छोड़ दिया और उन्होंने नवी टेक्नोलॉजीज नाम का एक फिनटेक स्टार्टअप शुरू किया। इन्होंने अपनी मेहनत और समर्पण से भारत में ऑनलाइन शॉपिंग की क्रांति ला दी।

**• श्री भाविश अग्रवाल (ओला कंज्यूमर पूर्व ओला कैब्स): आई आई टी, मुंबई**

श्री भाविश अग्रवाल, ओला कैब्स के सह-संस्थापक और सीईओ हैं जिन्होंने अंकित भाटी के साथ मिलकर यह प्लेटफॉर्म तैयार किया। यह एक राइड बुकिंग प्लेटफॉर्म है, जिसने पूरे भारत में परिवहन की समस्या काफी हद तक हल कर दी है। श्री अग्रवाल ने अपना करियर माइक्रोसॉफ्ट रिसर्च से शुरू किया, जहाँ उन्होंने दो शानदार वर्षों तक काम किया और दो पेटेंट दाखिल करने और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में तीन शोधपत्र प्रकाशित करने में सफल रहे। उनके जीवन के किसी अनमोल पल में परिवहन संबधी समस्याओं को झेलते हुए उन्हें एक विश्वसनीय परिवहन व्यवस्था का विचार आया, जो लोगों को एक अपूर्व सुविधा के साथ-साथ संतोषजनक अनुभव प्रदान करे। इन्होंने ओला कृत्रिम , एक व्यापक भाषा मोडल आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की कंपनी की भी स्थापना की, जो वर्ष 2024 में एआई का पहला यूनीकॉर्न बना, जिसका अनुमानित मान लगभग 1 बिलियन डॉलर आंका

गया है। उन्हें टाइम मैगजीन के **100 Most Influential People of 2018** में शामिल किया गया था। ये 2.3 बिलियन डॉलर के नेट वर्थ के साथ ये विश्व के सबसे युवा बिलियनायर में से एक हैं।

**सौरभ बोथरा (हैबिल्ड - ऑनलाइन योग): आईआईटी, बीएचयू**

सौरभ बोथरा, एक और उभरता हुआ नाम है, जो पूरे भारत में स्वास्थ्य सजग लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो चुके हैं। इन्होंने भी अपनी 32 वर्ष की छोटी सी आयु में आईआईटी, बीएचयू की अपनी पढ़ाई से बिल्कुल अलग क्षेत्र में अपनी ऐसी खास पहचान बनाई है, जो हमारे कल्पना से परे की बात है। वे योग की कक्षाएं चलाते हैं और योग को अपने जीवन स्वरूप और अपनी आदतों में ढाल लेने के लिए उन्होंने ऑनलाइन स्टार्ट अप HABUILD शुरू किया। अपनी आईआईटी-बीएचयू में पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने कैंपस में सात्विक मेस की शुरुआत की जो काफी लोकप्रिय हुई और साथ ही अध्ययन की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने Let's Reading क्लब की भी स्थापना की। 20, मार्च 2020 में लगा जनता कर्फ्यू इनकी जिंदगी का टर्निंग प्वाइंट था, जब उन्होंने योग की निःशुल्क कक्षाएं जूम के माध्यम से लेनी शुरू कीं और कोविड-19 के दौरान इन कक्षाओं ने अपनी जड़ें जमा लीं और आज व्यस्ततम व्यक्तियों, घरेलू महिलाओं से लेकर बड़े-बुजुर्गों तक में एक आस बन गई है, स्वस्थ बने रहने की, जिस आस की नींव को सौरभ बोथरा ने अपनी मेहनत और लगन से काफी सींचा है। 3 छात्रों के साथ शुरू किया गया यह सफर आज 38 देशों से 2 मिलियन सदस्यों तक पहुंच गया है। इन्होंने 12 जनवरी 2024 को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया जब 246,252 प्रतिभागी एक साथ ऑनलाइन योग कर रहे थे।

- **वरुण खेतान एवं अभिराज सिंह भल (अर्बन कंपनी): आईआईटी कानपुर**

बहुत छोटे से समय में घरेलू आवश्यकताओं के लिए अर्बन कंपनी हमारे जीवन का हिस्सा बन गयी है, जो पहले अर्बन क्लैप के नाम से शुरु हुआ था। वर्ष 2014 में इसकी शुरुआत आईआईटी कानपुर के दो छात्रों, वरुण खेतान और अभिराज भल के द्वारा की गई। दोनों की आईआईटी की दोस्ती के बाद राहें अलग हो गई थीं, लेकिन नए उद्यम की चाह ने दोनों को फिर से साथ ला दिया और शुरुआती एक असफलता और दुबारे जीतोड़ मेहनत के बाद इन्होंने नवंबर 2014 में घरेलू सेवाओं में सहयोग हेतु अर्बन क्लैप की स्थापना की। यह कंपनी लगातार अपनी सेवाओं का विस्तार कर रही है और इसने रतन टाटा सहित कितने ही निवेशकों को रिझाया। जून 2021 में इस यूनिकॉर्न का मान $2.1 तक पहुंच गया। अभी इस कंपनी के 50 लाख से अधिक संतुष्ट ग्राहक हैं और इसने 30,000 से अधिक का एक सशक्त व्यवसायी नेटवर्क तैयार किया है।

**• दीपिंदर गोयल (ज़ोमैटो): आईआईटी दिल्ली**

इतनी रुचि लेकर तरह-तरह के पकवान खाने वाले और जोमैटो से मंगानेवालों को यह पता नहीं है कि इस सफल मंच को बनाने वाले दीपिंदर गोयल भी एक आईआईटियन हैं। जोमैटो एक फूड डिलीवरी और रेस्तराँ लिस्टिंग प्लेटफार्म है। उन्होंने एक साधारण परिवार में जन्म लिया, लेकिन कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से उन्होंने गणित और कंप्यूटिंग में आईआईटी दिल्ली से इंटीग्रेटेड एम.टेक की डिग्री प्राप्त की। पढ़ाई पूरी कर बैन एंड कंपनी में काम करते हुए, उन्हें फूड डिलीवरी का एक नया विचार आया, और उन्होंने 2008 में पंकज चड्ढा के साथ मिलकर फूडीबे (Foodiebay) नाम की एक रेस्तरां-सूची वेबसाइट शुरू की जिसे बाद में उन्होंने ज़ोमैटो के रूप में बदल दिया। वर्ष 2022 में क्विक कॉमर्स प्लेफार्म का भी अधिग्रहण किया है।

**• श्रीहर्ष मजेटी (स्विगी): आईआईएम, कोलकाता**

हर्ष मजेटी, स्विगी के सह-संस्थापक और सीईओ, ने एक ऐसे व्यवसाय की शुरुआत की जो भारत में ऑनलाइन फूड डिलीवरी का एक प्रमुख खिलाड़ी बन गया। स्विगी की कहानी एक असफल स्टार्टअप (Bundl) के बाद शुरू हुई, जिसे श्रीहर्ष और नंदन रेड्डी ने 2013 में लॉजिस्टिक्स समाधान के रूप में शुरू किया था। 2014 में, उन्होंने फूड डिलीवरी ऐप स्विगी के साथ एक नया प्रयास किया, जो अब भारत में काफी लोकप्रिय है। स्विगी ने अपने ग्राहकों को स्थानीय रेस्टोरेंट्स से जोड़ने में सफलता प्राप्त की और समय के साथ इसकी वृद्धि जारी रही। इन्होंने BITS पिलानी से इंजीनियरिंग और आईआईएम बैंगलोर से एमबीए की पढ़ाई की। स्विगी फूड डिलीवरी के अलावा, स्विगी इंस्टामार्ट (किराए और अन्य आवश्यक वस्तुओं की डिलीवरी) और स्विगी जिनी (पैकेज डिलीवरी) जैसी सेवाएं भी प्रदान करता है।

**• दीप कालरा (मेकमायट्रिप) -आईआईएम, अहमदाबाद**

दीप कालरा ने वर्ष 2000 में मेकमायट्रिप की स्थापना की, जो अब भारत की सबसे बड़ी ऑनलाइन यात्रा कंपनी है। दीप कालरा का जन्म हैदराबाद में हुआ था। उन्होंने सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री हासिल की और फिर भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (IIM अहमदाबाद) से एमबीए किया। कुछ वर्षों की नौकरी के बाद ही उनमें कुछ नया करने की इच्छा जगी और उन्होंने मेकमायट्रिप की स्थापना की। मेकमायट्रिप की स्थापना के बाद, दीप कालरा ने कंपनी को एक प्रमुख ऑनलाइन यात्रा कंपनी बनाने के लिए कड़ी मेहनत की और आज मेकमायट्रिप लाखों लोगों को यात्रा करने में मदद कर रही है। दीप कालरा को उनके व्यवसाय और नेतृत्व के लिए कई पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है। वे एक दूरदर्शी उद्यमी हैं जो नवोदित उद्यमियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत हैं, जिन्होंने एक प्लेटफार्म तैयार कर यात्रा की बुकिंग को हर भारतीय के लिए बिल्कुल आसान बना दिया है।

- **पीयूष बंसल (लेंसकार्ट): आईआईएम, बैंगलोर**

पीयूष बंसल एक प्रसिद्ध उद्यमी हैं, जिन्होंने 2010 में लेंसकार्ट की स्थापना की, जो पहले मूल्य टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के अंतर्गत थी। पीयूष लेंसकार्ट के सह-संस्थापक, मुख्य कार्यकारी और पीपल ऑफिसर के पद पर हैं। उन्होंने भारत में फैशन आईवेयर के लिए एक विविध ऑनलाइन मार्केटप्लेस बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेंसकार्ट को शून्य से शुरू करके, कड़ी मेहनत और सफलता की इच्छा के माध्यम से, इसे एक अरब डॉलर के व्यवसाय में बदल दिया है। उनकी कहानी कई व्यवसायों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। बंसल ने भारत में अच्छी गुणवत्ता वाले आईवेयर को सस्ते और सुलभ तरीके से उपलब्ध कराने के लिए लेंसकार्ट की स्थापना की। पीयूष बंसल ने आईवेयर और आंखों की देखभाल के बारे में सोचकर एक नया दृष्टिकोण अपनाया, जो आज भारत में सबसे बड़ा आईवेयर ब्रांड बन गया है। लेंसकार्ट ने अपने ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के साथ भौतिक स्टोर को जोड़कर एक मल्टी-चैनल दृष्टिकोण अपनाया, जिससे ऑनलाइन शॉपिंग का अनुभव बेहतर हुआ। लेंसकार्ट ने अपने स्टोर के अतिरिक्त वर्चुअल ट्राई-ऑन सुविधाओं और आंखों के माप उपकरणों की शुरुआत की, जिससे ऑनलाइन शॉपिंग का अनुभव बेहतर हुआ। लेंसकार्ट ने उच्च गुणवत्ता वाले आईवेयर को सभी के लिए सुलभ बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। लेंसकार्ट ने 700 से अधिक नेत्र जांच केंद्र स्थापित किए हैं, जो किफ़ायती नेत्र देखभाल की ज़रूरत को पूरा करते हैं, खासकर ग्रामीण इलाकों में। लेंसकार्ट ने आईवेयर और कॉन्टैक्ट लेंस की विविध रेंज पेश की है।

- **कौशलेंद्र (केजीपीएल): आईआईएम, अहमदाबाद**

आईआईएम अहमदाबाद के गोल्मेडलिस्ट अपने आपको गर्व से सब्जीवाला कहते हैं। उन्हें बिहार का स्टार्टअप आइकन कहना गलत नहीं होगा। उन्होंने अपने राज्य बिहार से ही बदलाव की शुरुआत की। वह बिहार के नालंदा में नवादा जिले के रहने वाले हैं। शुरुआत में नवोदय विद्यालय में पढ़ने के बाद उन्होंने गुजरात से एग्रिकल्चर इंजीनियरिंग की। यहां वह गोल्ड मेडलिस्ट बने। कौशलेन्द्र का कहना है, "अगर बदलाव लाना है तो खुद शुरुआत करें। खुद को बदलें। दुनिया अपने आप बदल जाएगी।" नौकरी न करने के बजाय कौशलेंद्र ने वापस बिहार जाने का फैसला किया। अपनी कंपनी के जरिये उन्होंने सब्जी विक्रेताओं को बाजार से जोड़ने का काम किया। विशाल महत्वाकांक्षाओं और आंखों में आशा की चमक वाले ग्रामीण भारत के हर बच्चे की तरह कौशलेंद्र ने कभी न हार मानने वाला रवैया अपनाया है। उनके मन में हमेशा यही था कि वह अपनी जड़ों के साथ जुड़कर ही कुछ करेंगे। अगर ऐसी ही सोच हर व्यक्ति की रहे तो देश का कोना-कोना विकास के पथ पर दौड़ेगा।

इस तरह हमने देखा कि किस तरह देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों से निकले इन नवउद्यमियों ने कभी सब्जी वाला बनकर, कभी चश्मावाला बनकर, कभी यात्रावाला बनकर तो कभी खानावाला बनकर हमारी जिंदगी को कितना आसान बना दिया है। ऊपर तो बस कुछ उदाहरण हैं, Quickr, Khetify, dailyhunt, razorpay, housing.com आदि जैसी कितनी-कितनी नई कंपनियाँ हैं, जिन्होंने एक आधार तैयार कर जाने कितने लोगों को रोजगार दिया है, देश के शेष युवाओं की आंखों में एक सपना भी दिया है और साथ ही देश को एक नई दिशा भी दी है। देश के नव उद्यमियों को अगर देखें तो आईआईटी-आईआईएम ही छा जाता है। कुछ तो है, इन संस्थानों में, जो हमारे छात्रों की रग-रग में नए बीज बोए जा रहे हैं।

# डार्क साइकोलॉजी: अनैतिक मनोविज्ञान

**अजय कुमार**
कार्मिक निदेशालय

आधुनिक समाज में - चाहे वह आपका घरेलू परिवेश हो कार्यस्थल हो या आप बाहरी सामाजिक वातावरण में हों - हेरफेर और नियंत्रण की तकनीकें लगभग हर जगह सन्निहित हो सकती हैं। बहुत से लोग बिना जाने ही ऐसे प्रभावों का शिकार हो जाते हैं जो उनकी सोच, भावनाओं और निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। यह लेख डार्क साइकोलॉजी या अनैतिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों और तकनीकों पर प्रकाश डालता है ताकि आप इन हेरफेरपूर्ण तरीकों को पहचान सकें और स्वयं की सुरक्षा कर सकें।

## 1. डार्क साइकोलॉजी क्या है?

डार्क साइकोलॉजी मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अध्ययन है जिसका उपयोग कुछ व्यक्ति दूसरों को बिना उनके पता चले प्रभावित, नियंत्रित या अपनी मर्जी के अनुसार ढालने के लिए करते हैं। इसमें उन तकनीकों एवं रणनीतियों का विश्लेषण शामिल है जो मानव भावनाओं, कमजोरियों, भय, अपराधबोध, और स्वीकृति की चाह का दुरुपयोग करती हैं।

## 2. महत्व

जब हम इन गुप्त रणनीतियों से अवगत हो जाते हैं तो हम अपने व्यक्तिगत निर्णयों, रिश्तों और कार्यस्थल पर अपने आत्म-सम्मान और स्वायत्तता की रक्षा कर सकते हैं। जानकारी हमें सशक्त बनाती है - जब हम जानते हैं कि हेरफेर कैसे होता है तो हम उस प्रभाव को अपने ऊपर नहीं होने देते।

## 3. हेरफेर करने वालों की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ

मनोवैज्ञानिक हेरफेर करने वाले लोग अक्सर कुछ विशिष्ट गुणों के धनी होते हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **नार्सिसिज़्म (आत्म-केंद्रिता):** अत्यधिक स्व-केंद्रित होना, अपनी प्रशंसा की मांग करना, और दूसरों की भावनाओं को अनदेखा करना। ये लोग अक्सर अपनी आकर्षक छवि और चमक-दमक से आपको अपनी ओर खींचते हैं।
- **मैकियावेलियनिज़्म (चालाकी एवं धोखाधड़ी):** व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का शोषण करने में माहिर होते हैं। वे रणनीतिक सोच और चालाकी से भरोसा जीतते हैं और बाद में उसका दुरुपयोग करते हैं।
- **साइकोपैथी (भावनात्मक उथल-पुथल):** इसमें व्यक्ति में उदासीनता, पश्चाताप की कमी और सतही

भावनाएँ होती हैं। ये लोग अपने आस-पास के लोगों में असली भावनात्मक संबंध बनाये बिना उन्हें नियंत्रित करते हैं।

- **भावनात्मक अस्थिरता:** हेरफेर करने वाले अप्रत्याशित तरीके से भावनाओं में उतार-चढ़ाव उत्पन्न करते हैं। कभी अत्यधिक सहानुभूति जताते हैं तो कभी कठोर आलोचना करके आपके आत्मविश्वास को तोड़ देते हैं।

इन विशेषताओं के चलते, इनका असली उद्देश्य अक्सर दूसरों को नियंत्रित करना, कमजोरियों का फायदा उठाना और अपने स्वार्थ को साधित करना होता है।

## 4. डार्क साइकोलॉजी की प्रमुख तकनीकें

नीचे डार्क साइकोलॉजी की उन सभी तकनीकों का विस्तार से वर्णन किया गया है जिन्हें हेरफेर करने वाले अपने फायदे के लिए अपनाते हैं:

### 4.1 गैसलाइटिंग (Gaslighting)

गैसलाइटिंग एक तकनीक है जिसमें हेरफेर करने वाला व्यक्ति लगातार आपकी यादों, अनुभवों और दृष्टिकोणों को तोड़-मरोड़ कर पेश करता है, जिससे आप अपने ही अनुभवों पर संदेह करने लगते हैं। ऐसा व्यक्ति कहता कुछ है और करता कुछ है। **उदाहरण:** यदि कोई साथी बार-बार यह कहता रहे कि "तुम्हें ही गलत याद है" या "ऐसा कभी नहीं हुआ," तो समय के साथ आप अपने मानसिक दृष्टिकोण पर विश्वास खो बैठते हैं।

### 4.2 भावनात्मक ब्लैकमेलिंग (Emotional Blackmail)

भावनात्मक ब्लैकमेलिंग में हेरफेर करने वाला व्यक्ति आपके संवेदनशील क्षेत्रों - जैसे प्रेम, देखभाल या स्वीकृति - का उपयोग कर आपको अपनी इच्छाओं के अनुरूप कार्य करने के लिए मजबूर करता है। **उदाहरण:** एक मित्र दूसरे मित्र से कह सकता है, "यदि तुम मेरे सच्चे मित्र हो तो यह काम जरूर करोगे," जिससे आप अपराधबोध के बंधन में आ जाते हैं।

### 4.3 धोखाधड़ी और झूठ बोलना (Deception and Lying)

यह तकनीक गलत जानकारी, अतिरंजना या झूठ बोलकर तथ्यों को विकृत करने का काम करती है। हेरफेर करने वाले व्यक्ति सच्चाई को छुपाते हुए अपनी मंशा को छिपाने की कोशिश करते हैं। **उदाहरण:** एक सहकर्मी निरंतर आपके बारे में झूठी जानकारी फैला सकता है, ताकि कार्यस्थल में आपकी छवि खराब हो और आप उस व्यक्ति पर निर्भर हो जाएँ।

### 4.4 प्रेम बमबारी (Love Bombing)

प्रेम बमबारी में हेरफेर करने वाला व्यक्ति अत्यधिक प्रशंसा, उपहार, और ध्यान देकर आपके विश्वास को जीतता है। **उदाहरण:** किसी रोमांटिक रिश्ते में, प्रारंभिक चरण में अतिवादी प्रेम, रोमांस, और उपहारों के माध्यम से आपकी भावनाओं को इस कदर प्रभावित किया जाता है कि बाद में जब आक्रामकता दिखाई देती है, तो आपको समझ नहीं आता कि परिवर्तन कैसे हुआ।

### 4.5 अलगाव (Isolation)

अलगाव की तकनीक में हेरफेरकर्ता जानबूझकर आपको आपके परिवार, दोस्तों या सामाजिक समर्थन समूहों से दूर कर देता है। **उदाहरण:** कोई साथी नए रिश्ते की शुरुआत में धीरे-धीरे आपको आपके पुराने दोस्तों और परिवार से दूर करने लग जाता है ताकि आप केवल उसी पर निर्भर रहें।

### 4.6 दर्पण तकनीक (Mirroring)

इस तकनीक में हेरफेर करने वाला व्यक्ति आपकी रुचियों, आदतों और व्यवहार की समानता प्रदर्शित करता है ताकि आपको लगे कि आप दोनों में समानता है और आप आसानी से उससे जुड़ जाएँ। **उदाहरण:** यदि आप शौक, पसंद-नापसंद या विचार साझा करते हैं, तो वह व्यक्ति भी उन्हीं बातों पर जोर देकर आपके साथ सामंजस्य बना लेता है।

### 4.7 विभाजन और जीत (Divide and Conquer)

यह तकनीक व्यक्तियों या समूहों के बीच मतभेद पैदा करने पर आधारित है, जिससे वे एकजुट नहीं हो पाते और हेरफेरकर्ता पर निर्भरता बढ़ जाती है। **उदाहरण:** कार्यस्थल पर यदि किसी प्रबंधक द्वारा सहकर्मियों के बीच प्रतिस्पर्धा और मतभेद उत्पन्न कर दिए जाएँ, तो वे एक दूसरे पर भरोसा खो बैठते हैं और प्रबंधक का प्रभुत्व बढ़ जाता है।

### 4.8 भय, अनिश्चितता और संदेह (Fear, Uncertainty, and Doubt - FUD)

इस तकनीक का उद्देश्य आपके मन में डर, अनिश्चितता और संदेह की स्थिति उत्पन्न करना है, जिससे आप उस व्यक्ति के समाधान पर निर्भर हो जाएँ। **उदाहरण:** कोई सहकर्मी या दोस्त लगातार आपके काम या फैसलों के परिणामों को लेकर अत्यधिक भय फैलाता है, जिससे आपके निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो जाती है।

### 4.9 ज्ञानात्मक पूर्वाग्रह का दुरुपयोग (Exploiting Cognitive Biases)

यह तकनीक आपके दिमाग में पहले से बने हुए विश्वासों और पूर्वाग्रहों का उपयोग करती है। हेरफेरकर्ता उन चीजों को जोर देकर प्रस्तुत करता है जो आपके विचारों को सत्यापित करें, जिससे आप उनकी बातों से सहमत हो जाते हैं। **उदाहरण:** जब आपको बार-बार आपकी गलतियों की याद दिलाई जाती है, तो आप स्वयं पर संदेह करने लगते हैं और हेरफेरकर्ता की सकारात्मक बातों को अधिक महत्त्व देने लगते हैं।

### 4.10 जानकारी का अत्यधिक बोझ (Overloading with Information)

इस तकनीक में हेरफेरकर्ता एक साथ बहुत सारी जानकारी - सही और गलत - प्रस्तुत करता है ताकि आप भ्रमित हो जाएँ और उसका अर्थ समझने में असमर्थ हो जाएँ। **उदाहरण:** किसी महत्वपूर्ण निर्णय के समय, अचानक अत्यधिक और जटिल विवरणों से आपको भर देना ताकि आप स्वयं निर्णय न ले सकें और अंततः उनके पक्ष में झुक जाएँ।

### 4.11 अस्पष्ट और भ्रमित संचार (Confusing Communication)

यह तकनीक विरोधाभासी और स्पष्ट न होने वाले संदेशों के द्वारा आपके मन में उलझन पैदा करती है। जब शब्दों और भावनाओं का कोई तय-सुनिश्चित अर्थ नहीं रह जाता, तो आप आसानी से हेरफेर के प्रभाव में आ जाते हैं। **उदाहरण:** अगर कोई व्यक्ति बोलते समय बार-बार अपनी बात बदल देता है या उसकी बॉडी लैंग्वेज और बोलचाल में अंतर रहता है, तो यह आपकी समझ को चकरा सकता है।

### 4.12 टाल-मटोल करना (Paltering)

इसमें हेरफेरकर्ता सच्चाई तो बोलता है लेकिन महत्वपूर्ण जानकारी छुपा देता है, जिससे सामने वाला एक गलत या अधूरी जानकारी पर विश्वास कर बैठता है। **उदाहरण:** कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व या पिछले रिश्ते के बारे में कुछ सच्ची बातें बताता है, लेकिन नकारात्मक पहलुओं को छुपाकर एक झूठे विश्वास का निर्माण करता है।

### 4.13 रिवर्स साइकोलॉजी (Reverse Psychology)

रिवर्स साइकोलॉजी में हेरफेरकर्ता उपयुक्त रूप से यह सुझाव देता है कि आप किसी कार्य को नहीं कर सकते, ताकि आप विपरीत रूप से उस कार्य को करने लगें। **उदाहरण:** अगर कोई कहता है, "शायद यह काम तुम्हारे लिए नहीं है," तो अक्सर व्यक्ति उस दावे के विरुद्ध जाकर वह काम करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

### 4.14 त्रिकोणीकरण (triangulation)

त्रिकोणीकरण का इस्तेमाल कई तरह के रिश्तों में किया जाता है। यह परिवारों मे हो सकता है जैसे भाई-बहनें या माता-पिता में से किसी एक के बीच। यह दोस्ती में भी हो सकता है जब किसी एक की भावनाएं आहत होती है और और किसी तीसरे पक्ष को समर्थन या सहानुभूति के लिए बुलाया जाता है। इसके अलावा त्रिकोणीकरण रोमांटिक रिश्तों में भी हो सकता है। चालाकी करने वाला व्यक्ति आमतौर पर किसी अन्य व्यक्ति को अपने अंतरंग संबंध में लाता है, जिससे भ्रम और ईर्ष्या पैदा होती है। **उदाहरण :** चालाकी या हेरफेर करने वाला नए दोस्त या साथी को आदर्श के रूप में जबकि उस स्थिति में पहले वाले व्यक्ति को पूरी तरह से दोषपूर्ण दिखाता है। आदर्श या अवमूल्यन किया गया व्यक्ति पूरी तरह से व्यक्तिपरक होता है जो केवल हरेफेर करने वाले पर निर्भर करता है।

### 4.15 साइलेंट ट्रीटमेंट और घोस्टिंग (Silent treatment and Ghosting)

साइलेंट ट्रीटमेंट और घोस्टिंग दोने ही दंड और नियंत्रण के उपकरण के रूप में काम करते हैं। साइलेंट ट्रीटमेंट में जानबूझकर संवाद से दूरी बना ली जाती है, जिससे आप अकेलापन अनुभव करते हैं और अपनी स्वयं की असफलताओं पर संदेह करने लगते हैं। **उदाहरण** : साइलेंट ट्रीटमेंट और घोस्टिंग में एक व्यक्ति का बिना किसी स्पष्ट स्पष्टीकरण के अचनाक गायब हो जाना या बिना कोई स्पष्ट कारण बताए बात बंद कर देना शामिल है, जिससे दूसरे व्यक्ति के अंदर असमंजस और भावनात्मक अस्थिरता पैदा हो जाती है।

### 4.16 प्रोजेक्शन और डिफ्लेक्शन (Projection and Deflection)

प्रोजेक्शन में हेरफेर करने वाला अपनी नकारात्मक प्रवृत्तियों या गुणों को दूसरों पर आरोपित कर देता है। डिफ्लेक्शन के माध्यम से दोष या आलोचना को अन्यत्र दिया जाता है, जिससे उसकी सच्ची मंशा और उद्देश्यों को छुपा लिया जाता है। इससे भ्रम पैदा हो जाता है कि असल में दोष किसका है। **उदाहरण** : किसी एक कार्य में कई लोग सम्मिलित हों लेकिन विफलता का जिम्मा किसी अन्य के सर मढ़ देना।

### 4.17 भाषा और शब्द खेल (Language Manipulation Techniques)

**क) 'I' से 'We' में परिवर्तन:** कुछ हेरफेरकर्ता अपने अनुरोध को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह व्यक्तिगत निर्णय से समूह निर्णय का रूप ले ले, जैसे कि "मैं चाहता हूँ" के बजाय "हम चाहते हैं" कहना, ताकि आप एक साझा जिम्मेदारी का हिस्सा बन जाएँ।

**ख) संज्ञाओं का प्रयोग (Nouns vs. Verbs):** जब किसी क्रिया (verb) के बजाय संज्ञा का प्रयोग किया जाता है - उदाहरण के लिए "मैं क्रिकेट खेलता हूँ" के बदले "मैं एक क्रिकेटर हूँ" - तो इससे उसकी सामाजिक पहचान को मजबूती मिलती है और उस समूह में आपको शामिल करने के लिए प्रभावित किया जाता है।

**ग) खबरों को मोड़ना:** अच्छी खबरों या उपलब्धियों को क्षीण करने के लिए उन्हें इस प्रकार पेश करना कि आपकी उपलब्धि का महत्व कम हो जाए, जैसे किसी युवा की उपलब्धि पर कम सराहना करना।

### 4.18 प्रेरणा और लाभ की पेशकश (Offering Incentives)

हेरफेरकर्ता कभी-कभी आपको कोई ऐसा वादा करते हैं जिसे आप या तो प्राप्त करना चाहते हैं या जिससे आपका फायदा होता है। इस प्रणाली का उद्देश्य आपको प्रभावित करना और आपकी स्वेच्छा के विपरीत कार्य करना होता है। **उदाहरण:** कार्यस्थल पर प्रबंधक आपको यह वादा कर सकता है कि यदि आप अतिरिक्त समय देंगे तो आपको प्रमोशन मिलेगा जबकि ये वादे अक्सर निराधार होते हैं।

### 4.19 अतिरंजित प्रशंसा और आकर्षण (Excessive Flattery and Charm)

हेरफेरकर्ता अक्सर अत्यधिक प्रशंसा, आकर्षक व्यवहार और मनमोहक शब्दों का प्रयोग करके आपके आत्मविश्वास में छेद करना शुरू कर देते हैं। **उदाहरण:** एक नया परिचित आपको बार-बार बता सकता है कि आपकी कोई विशेष खूबी है, जिससे आप उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं और बाद में उसका वास्तविक उद्देश्य सामने आ जाता है।

## 5. विभिन्न क्षेत्रों में हेरफेर के प्रयोग

### 5.1 घरेलू परिवेश एवं व्यक्तिगत रिश्ते

- गैसलाइटिंग अक्सर घरेलू जीवन में देखा जा सकता है, जहाँ कोई साथी आपको बार-बार इस बात पर संदेह कराता है कि आपकी याददाश्त या अनुभव में कमी है।

- भावनात्मक ब्लैकमेलिंग में माता-पिता, मित्र या रिश्तेदार आपको इस तरीके से नियंत्रित करते हैं कि यदि आप उनकी खुशी या स्वीकृति नहीं देते, तो आपको अपराधबोध में डुबो दिया जाता है।
- प्रेम बमबारी और अस्पष्ट संचार का मिश्रण भी व्यक्तिगत रिश्तों में देखा जाता है, जहाँ पहले अत्यधिक प्रेम और प्रशंसा होती है, लेकिन बाद में अचानक प्रशंसा की कमी या कठोर व्यवहार दिखाया जाता है।
- घरेलू परिवेश एवं व्यक्तिगत रिश्ते - साइलेंट ट्रीटमेंट और घोस्टिंग दोनों ही दंड और नियंत्रण के उपकरण के रूप में तथा त्रिकोणीकरण का इस्तेमाल परिवारों, दोस्तो और रोमांटिक रिश्तों में नियंत्रण के उपकरण के रूप में किय जाता है।

### 5.2 कार्यस्थल

- सहकर्मी और प्रबंधक द्वारा विभाजन और जीत की तकनीक का प्रयोग: एक साथ काम करने वाले लोगों में मतभेद उत्पन्न करके उनके बीच अविश्वास पैदा किया जाता है, जिससे आपसी तालमेल टूट जाता है।
- **डर, अनिश्चितता और संदेह (FUD) का प्रयोग:** आपके काम की गुणवत्ता पर निरंतर प्रश्न उठाकर और आपकी क्षमताओं पर सवाल उठाकर, आपको निर्भर बनाया जाता है।
- **अस्पष्ट सूचना एवं जानकारी का अत्यधिक बोझ:** अत्यधिक तकनीकी या जटिल जानकारी से भरपूर प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं, जिससे आप भ्रमित हो जाएँ और आप प्रबंधक की बातों की अनदेखी न कर पाएं।
- प्रोजेक्शन और डिफ्लेक्शनः इस तकनीक इस्तेमाल कार्यस्थल पर नकारात्मक प्रवृत्तियों या गुणों, दोष या आलोचना को दूसरों पर आरोपित करने के लिए होता है।

### 5.3 बाहरी सामाजिक माहौल एवं सार्वजनिक स्थान

- **प्रेम बमबारी तथा आकर्षक भाषा का प्रयोग:** नया परिचित या सामाजिक नेता अत्यधिक आकर्षक व्यवहार करते हैं, जिससे आप जल्दी ही उनके प्रभाव में आ जाएँ।
- **अलगाव की तकनीक:** बाहरी सामाजिक समूहों में शामिल करके आपको पुराने और भरोसेमंद संपर्कों से दूर कर दिया जाता है ताकि आप उनकी ही निर्भरता में आ जाएँ।
- **रिवर्स साइकोलॉजी एवं भाषा के खेल:** सार्वजनिक बातचीत में आपको इस प्रकार प्रभावित किया जाता है कि आप बिना जांच-पड़ताल के उनकी बातों को सत्य मान लें।

## 6. स्वयं की सुरक्षा के उपाय एवं रणनीतियाँ

जब आप इन सभी हेरफेर तकनीकों से अवगत हो जाते हैं, तब आप स्व-रक्षा के लिए निम्न उपाय अपना सकते हैं:

### 6.1 आत्म-जागरूकता एवं आत्म-विश्लेषण

- **अपने भावों की नियमित निगरानी करें:** हर बातचीत के बाद ध्यान दें कि आपकी भावनाएँ कैसी

हैं। यदि आपको लगातार उलझन, अपराधबोध या चिंता महसूसी हो तो यह हेरफेर का संकेत हो सकता है।

- **निजी डायरी रखें:** अपने अनुभवों और भावनाओं को लिखें ताकि आप किसी पैटर्न या अनियमितता की पहचान कर सकें।

### 6.2 आलोचनात्मक सोच एवं सवाल उठाने की आदत

- **प्रेरणा और उद्देश्य पर संदेह करें:** जब कोई व्यक्ति अत्यधिक प्रशंसा या डर-धमकाने की तकनीक का प्रयोग करता है तो स्वयं से पूछें कि उसका असली उद्देश्य क्या हो सकता है।
- **स्वतंत्र राय एवं बाहरी सलाह लें:** अपने विश्वसनीय दोस्तों, परिवार या पेशेवर सलाहकार से अपने अनुभवों पर विचार करें ताकि आप स्थिति का उपचार कर सकें।

### 6.3 स्पष्ट सीमाओं का निर्धारण

- **साहसपूर्वक 'न' कहने का अभ्यास करें:** यदि किसी व्यक्ति को आपकी निजी जानकारी या सीमाओं का उल्लंघन करने का प्रयास नजर आए तो बिना झिझक स्पष्ट रूप से मना करें।
- **रेड फ्लैग्स (चेतावनी संकेत) को पहचानें:** जो व्यवहार आपको बार-बार असहज या अनिश्चित महसूस कराए उन्हें गंभीरता से लें और उन परिस्थितियों से दूरी बनाए रखें।

### 6.4 प्रभावशाली संचार एवं सवाल पूछने की कला

- **स्पष्ट और प्रत्यक्ष सवाल करें:** किसी भी अस्पष्ट या भ्रमित करने वाले संवाद के समय सीधे सवाल पूछें ताकि आपको सही जानकारी मिल सके।
- **भाषाई तकनीकों से बचें:** यदि कोई व्यक्ति भाषा के खेल, जैसे अपने उत्तरदायित्व अथवा व्यक्तिगत चयन के लिए "मैं" की जगह "हम" का प्रयोग या संज्ञा-वाक्य संरचना जैसी तकनीकों से आपको प्रभावित करने का प्रयास करता है, तो स्थिति पर पुनर्विचार करें। ध्यान रखें कुछ प्रांत के लोग "हम" का प्रयोग स्वयं के लिए भी करते हैं। वहाँ ध्यान दें यहाँ "हम" का प्रयोग करके अमुक उत्तरदयित्व या व्यक्तिगत चयन में आपको भी संलिप्त नहीं किया जा रहा हो।

### 6.5 मजबूत सामाजिक एवं पेशेवर समर्थन नेटवर्क

- **विश्वसनीय संबंध विकसित करें:** अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ मजबूत, स्वस्थ रिश्ते बनाएं जो आपसी समर्थन और स्पष्ट संवाद पर आधारित हों।
- **पेशेवर मदद लेने से पीछे न हटें:** यदि आपको लगता है कि किसी व्यक्ति से हेरफेर हो रहा है तो मनोवैज्ञानिक सलाह, काउंसलिंग या थेरेपी का सहारा लें।

## 7. निष्कर्ष एवं अंतिम विचार

डार्क साइकोलॉजी की तकनीकों का ज्ञान न केवल आपको हेरफेर से बचाने का उपकरण है, बल्कि यह आपके आत्म-सम्मान और निर्णय क्षमता को भी मजबूत बनाता है। याद रखें:

- **ज्ञान ही शक्ति है:** जब आप इन हेरफेर तकनीकों से अवगत होंगे, तो आप अपने जीवन में जागरूकता और सुरक्षा का निर्माण कर पाएंगे।
- **अपने अंतःबोध पर भरोसा करें:** यदि किसी बात में असामान्यता महसूस होती है, तो बिना झिझक उस पर सवाल उठाएं और स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करें।
- **स्पष्ट सीमाएँ तय करें:** अपने व्यक्तिगत, पेशेवर तथा सामाजिक जीवन में स्पष्ट सीमाओं का निर्धारण करें ताकि हेरफेरकर्ताओं को प्रवेश न मिले।
- **समर्थन नेटवर्क बनाएं:** विश्वसनीय रिश्तों और समुदाय के सहारे अपनी मानसिक एवं भावनात्मक सुरक्षा के ढांचे को मजबूत रखें।

इस लेख के माध्यम से कोशिश है कि आप डार्क साइकोलॉजी की तकनीकों को समझ सकें और स्वयं को, तथा अपने प्रियजनों को हेरफेर से बचा सकें। जागरूकता, आलोचनात्मक सोच एवं स्व-सम्मान - ये तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं जो आपको किसी भी मनोवैज्ञानिक हेरफेर के प्रभाव से बचाते हैं। अपने जीवन में सकारात्मक सोच, स्पष्ट संवाद एवं स्वस्थ संबंधों को अपनाएं। अपने आप में विश्वास रखें और हमेशा सत्य की रोशनी में जीवन को जीने का प्रयास करें। हेरफेर के अंधेरे प्रभावों पर विजय पाने के लिए इन तकनीकों और उपायों का नियमित अभ्यास करें और अपने मन को संतुलित रखें।

अपने मन को सजग रखें, प्रश्न उठाएं, और हमेशा सच्चाई की खोज में रहें। जीवन में किसी भी प्रकार के हेरफेर का आप सामना कर सकते हैं यदि आप अपने आप को रूपांतरित करते हुए ज्ञान की शक्ति से पूर्ण रहते हैं। इस आलेख को पढ़कर आप जागरूक बनें, और दूसरों में भी यही जागरूकता फैलाएं - ताकि हमारा समाज सकारात्मकता, स्पष्टता और सम्मानपरक व्यवहार की ओर बढ़ सके।

अपने ज्ञान को बढ़ाएं, अपने अंतःबोध पर भरोसा करें, और हेरफेर के अंधेरे में भी अपने मन के उजाले को कायम रखें।

इस विस्तृत लेख में डार्क साइकोलॉजी की लगभग सभी प्रमुख तकनीकों - गैसलाइटिंग, भावनात्मक ब्लैकमेलिंग, धोखाधड़ी एवं झूठ, प्रेम बमबारी, अलगाव, दर्पण तकनीक, विभाजन एवं जीत, डर, अनिश्चितता, संदेह, ज्ञानात्मक पूर्वाग्रह का दुरुपयोग, जानकारी का अत्यधिक बोझ, अस्पष्ट संचार, प्लटेरिंग, रिवर्स साइकोलॉजी एवं भाषा के जटिल प्रयोग - पर चर्चा की गई है। आशा है कि यह जानकारी आपको हर स्तर पर सुरक्षित निर्णय लेने में सहायता करेगी और हेरफेर से बचने की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

# प्रणालियों और तकनीकों का डेटाबेस

**अतुल कुमार**
योजना एवं समन्वय निदेशालय

प्रौद्योगिकीय उन्नति मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रही है। भूमि, वायु, समुद्र, साइबर और अंतरिक्ष सहित युद्धक्षेत्र तेजी से परिवर्तित हो रहे है। इस परिवर्तन की गति के साथ तालमेल बिठाना सभी रक्षा संगठनों और संस्थानों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता बन गया है। नीति और निर्णय निर्माता आधुनिक युद्ध पद्धतियों और अगली पीढ़ी की काउंटर तकनीकों के महत्व को भलीभांति समझते हैं। सैन्य अनुप्रयोगों में प्रयुक्त विभिन्न तकनीकों को सूचीबद्ध करने और प्रबंधित करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण आवश्यक है। ऐसा तकनीकी डेटाबेस रक्षा संगठनों के लिए वर्तमान तकनीकी उपलब्धियों का दोहन करने और भविष्य की चुनौतियों का पूर्वानुमान लगाने का एक महत्वपूर्ण साधन होगा। यह संगठनात्मक ज्ञान, रणनीतिक योजना, सभी हितधारकों के साथ समन्वय, विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करने में भी सहायक होगा।

योजना और समन्वय निदेशालय (DP&C), DRDO प्रणालियों और तकनीकों की सूची तैयार करने और उनका डेटाबेस बनाने की प्रक्रिया में है। DRDO द्वारा विकसित सभी प्रणालियों और तकनीकों को सूचीबद्ध किया जाएगा ताकि उन्हें वर्तमान परियोजनाओं, भविष्य की परियोजनाओं और प्रणाली विकास में पुनः उपयोग किया जा सके। इसके उपरांत, उनका मूल्यांकन किए जाने का प्रयास भी किया जा सकता है। यह डेटाबेस DRONA पर एक सॉफ्टवेयर मॉड्यूल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

इस डेटाबेस का उद्देश्य DRDO की प्रयोगशालाओं और क्लस्टर्स द्वारा सफलतापूर्वक विकसित प्रणालियों और तकनीकों को संकलित करना है। इसका दायरा डिज़ाइन, प्रोटोटाइप, प्रचार, उत्पादन आदेश, उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया और नवीनतम वाणिज्यिक स्थिति तक फैला हुआ है। यह अपेक्षित है कि परियोजना निदेशक (PDs) और वैज्ञानिक प्रासंगिक डेटा दर्ज करेंगे, जिसे प्रयोगशाला निदेशक और क्लस्टर महानिदेशक (Cluster DGs) द्वारा अनुमोदित किया जाएगा तथा DP&C और DG(RM) द्वारा क्यूरेट किया जाएगा।

संगठन के भीतर डेटाबेस अनुप्रयोग: संगठन के भीतर तकनीकी डेटाबेस निम्नलिखित पहलुओं को संबोधित करेगा:

- वर्तमान DRDO रोडमैप और दीर्घकालिक एकीकृत परिप्रेक्ष्य योजना (Long-term Integrated Perspective Plan) के आपसी संबंध को स्थापित करना ताकि उपलब्ध मिशन योजनाओं का मानचित्रण किया जा सके।

- विकसित क्षमताओं और वर्तमान गतिविधियों के आधार पर भविष्य की तकनीकी आवश्यकताओं और प्रबंधन का निर्धारण।
- समयावधि के अनुसार निर्धारित बनाम प्राप्त लक्ष्यों का विश्लेषण।
- अगले 5, 10, 25 वर्षों की परियोजना का विश्लेषण।
- DRDO और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के बीच अनुसंधान कार्य का ओवरलैप।
- नवोन्मेषी विचारों का ज्ञान डेटाबेस बनाने पर जोर।
- प्रौद्योगिकी का पूर्वानुमान।
- मॉड्यूल/उप-प्रणाली, प्रणाली और प्रौद्योगिकी के लिए पुन: उपयोग मूल्यांकन।
- विचार पुन: उपयोग, डिज़ाइन पुन: उपयोग, डिज़ाइन विशेषज्ञता पुन: उपयोग, डिज़ाइन एवं विकास पुन: उपयोग, भौतिक पुन: उपयोग आदि।

**डेटाबेस का व्यापक ढांचा:** प्रणालियों और तकनीकों का डेटाबेस विभिन्न प्रणालियों और तकनीकों के वर्गीकरण और संरचनात्मक विन्यास से संबंधित होगा। इसका उद्देश्य एक समग्र (पैनोरमिक) संरचना तैयार करना है जिससे विभिन्न प्रणालियों और तकनीकों से जुड़ी जानकारी का प्रबंधन, खोज (query) और विश्लेषण करना सरल हो सके। डेटाबेस की संरचना का एक व्यापक प्रारूप निम्नानुसार है:

**(क) गुणधर्म (Attributes/Columns):** ये प्रत्येक इकाई (Entity) के विवरण को परिभाषित करेंगे:

- प्रणाली/प्रौद्योगिकी का नाम
- श्रेणी/प्रकार
- ऐतिहासिक संदर्भ/उद्भव
- विकास भागीदारों की जानकारी
- प्रमाणीकरण एजेंसियां
- प्रलेखन (Documentation)
- प्रमुख विशेषताएँ
- संरचना/डिजाइन (Architecture/Design)
- उपयोगकर्ता (User)

**(ख) प्रणालियों और तकनीकों की श्रेणियाँ:**

- **शस्त्रास्त्र (Armaments):** जैसे कि वारहेड, बख्तरबंद वाहन, प्रणोदक (Propellants), विस्फोटक, रॉकेट, बम, हथियार एवं गोला-बारूद, युद्धक टैंक, ईंधन आदि।
- **विमानन (Aeronautics):** जैसे कि वैमानिकी प्रणालियाँ, हवाई निगरानी प्रणालियाँ, मानव रहित विमानों (UAVs), गैस टरबाइन इंजन, विमान आदि।
- **इलेक्ट्रॉनिक्स (Electronics)**: जैसे कि संचार प्रणालियाँ, उपग्रह प्रणालियाँ, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध

प्रणालियाँ, विद्युत-ऑप्टिक प्रणालियाँ, राडार, संवेदक (Sensors), फोटोनिक्स, लाइडार, काउंटर-मेजर तकनीक, क्वांटम तकनीक, माइक्रोवेव तकनीक आदि।

- **प्लेटफ़ॉर्म्स (Platforms)**: जैसे कि हवाई प्लेटफ़ॉर्म, हवाई आपूर्ति प्रणालियाँ, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष आधारित प्रणालियाँ, जल-निमग्न तकनीकें, उच्च ऊंचाई प्रौद्योगिकियाँ, भू-सूचना विज्ञान (Geo-informatics) आदि।
- **मिसाइल और हथियार रक्षा प्रणाली (Missile and Weapon Defence System)**: जैसे कि बैलिस्टिक मिसाइल, टैंक भेदी प्रणाली (Anti-Tank), लंबी दूरी की मिसाइलें, निर्देशित ऊर्जा हथियार (DEW), उच्च शक्ति लेज़र स्रोत, स्वार्म इंटेलिजेंस आदि।
- **नौसैनिक प्रणाली (Naval):** जैसे कि नौसैनिक प्रणालियाँ, सोनार, ध्वनिक तकनीक (Acoustic Technology), समुद्र विज्ञान (Oceanography), पनडुब्बियाँ, जहाज निर्माण आदि।
- **सामग्री विज्ञान (Materials):** जैसे कि धातुकर्म (Metallurgy), मेटा मटीरियल और स्मार्ट मटीरियल, परमाणु तकनीकें, रेडियोधर्मी तकनीकें, मिश्र धातुएँ और कंपोजिट्स आदि।
- **सैनिक समर्थन (Soldier Support):** जैसे कि जीवन समर्थन और सुरक्षा प्रणालियाँ, सैनिक क्षमताओं का संवर्धन, आपदा प्रबंधन, मनोवैज्ञानिक युद्ध, जैविक युद्ध, रासायनिक युद्ध, जंगल युद्ध से मुकाबला आदि।
- **सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology)**: जैसे कि संज्ञानात्मक प्रौद्योगिकी (Cognitive Technology), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), साइफर एवं क्रिप्टो प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा आदि।

**तकनीकी डेटाबेस की प्रमुख विशेषताएँ:**

- तकनीकों और प्रणालियों का वर्गीकरण।
- तकनीकी विनिर्देश (Technical Specifications) के साथ विकास योजना और परिचालन उपयोग का विवरण।
- भविष्य की आवश्यकताओं के लिए समयसीमा आधारित योजना।
- विज़ुअलाइज़ेशन, खोज और उन्नयन (Upgrade) के लिए नियंत्रण।
- अन्य मौजूदा डेटाबेस मॉड्यूल के साथ डेटा साझाकरण हेतु अंतर-संचालन (Interoperability)।
- डेटाबेस को अनधिकृत पहुँच और डेटा उल्लंघन से सुरक्षित रखने के लिए साइबर सुरक्षा उपाय।
- संभावित भविष्य की तकनीकों के आकलन हेतु एआई सक्षम परिणाम (AI-enabled Results)।
- तकनीकों की समीक्षा और अद्यतन के लिए नियमित अपडेट।
- तकनीकी विशिष्टताओं और परिचालन क्षमताओं में बदलाव को ट्रैक करने के लिए संस्करण नियंत्रण (Version Control)।
- अप्रचलित (Obsolete) तकनीकों की पहचान।
- तकनीकों और प्रणालियों के बीच संबंधों की पहचान (उदाहरण: एक प्रणाली कई तकनीकों का उपयोग कर सकती है या तकनीकें एक-दूसरे पर निर्भर हो सकती हैं)।

- प्रणाली उपयोग, तकनीकी प्रवृत्तियों आदि पर आधारित ग्राफिकल प्रतिनिधित्व और रिपोर्ट निर्माण।
- रखरखाव और अद्यतन: जैसे-जैसे नई तकनीकें और प्रणालियाँ सामने आती हैं, डेटाबेस का निरंतर अद्यतन।
- उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया: उपयोगकर्ताओं को नई तकनीकें जोड़ने या मौजूदा जानकारी को अपडेट करने की अनुमति देना।

## वैश्विक परिदृश्य

प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों का डेटाबेस नवाचार, निर्णय लेने और तकनीकी सुरक्षा में रणनीतिक भूमिका निभाता है। अधिकांश देशों में रक्षा अनुसंधान एवं विकास (R&D) डेटा तक पूरी पहुँच पर प्रतिबंध है। सार्वजनिक पहुंच सीमित होती है सारांशों, पेटेंटों, या निर्वासित रिपोर्टों तक। कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

- **रक्षा तकनीकी सूचना केंद्र (DTIC):** DTIC रक्षा अनुसंधान और विकास का सबसे बड़ा सार्वजनिक भंडार है। यह अमेरिका के रक्षा विभाग (DoD) द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान एवं विकास प्रकाशनों, तकनीकी रिपोर्टों और वैज्ञानिक अध्ययन का केंद्रीय भंडार है।
- **यूरोपीय रक्षा निधि (EDF):** नाटो की विज्ञान और प्रौद्योगिकी संगठन असंवर्गीकृत शोध साझा करता है।
- **एटीएलए (अधिग्रहण, प्रौद्योगिकी और लॉजिस्टिक्स एजेंसी) ATLA:** यह एक जापानी डेटाबेस है जिसका ध्यान स्वदेशी प्रणालियों पर है।
- **उन्नत शोध फाउंडेशन (ARF):** रूसी डेटाबेस जो अकादमिक विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग में है।

## निष्कर्ष:

रक्षा क्षेत्र के लिए एक तकनीकी डेटाबेस आधुनिक रक्षा तैयारी, तकनीकी तत्परता और सैन्य अवसंरचना का एक केंद्रीय घटक है, जो निर्णय-निर्माण, परिचालन दक्षता और सुरक्षा में सुधार के लिए डेटा का सुरक्षित प्रबंधन, विश्लेषण और उपयोग सक्षम बनाता है। ये डेटाबेस अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करके रक्षा क्षमताओं को बढ़ाते हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

# अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी

**शुभाशीष श्रीवास्तव**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष यात्रा और अन्वेषण प्रौद्योगिकियों एवं प्रणालियों के डिज़ाइन, विकास, निर्माण और संचालन में इंजीनियरिंग सिद्धांतों के अनुप्रयोग को संदर्भित करती है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के नए साधन प्रदान करती है और इसमें उपग्रह, अंतरिक्ष स्टेशन, भू-स्टेशन, निगरानी और ट्रैकिंग केंद्र, डाउनस्ट्रीम एनालिटिक्स एआई, सॉफ्टवेयर आदि शामिल हैं। यह दूरसंचार, नेविगेशन प्रणालियों, मौसम पूर्वानुमान, जलवायु निगरानी और राष्ट्रीय सुरक्षा को सक्षम बनाकर आधुनिक दुनिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति के रूप में उभरा है, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने उपग्रह प्रक्षेपण वाहनों, संचार और अवलोकन उपग्रहों सहित विश्वसनीय, कम लागत वाली स्वदेशी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक विकास किया है।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अब जिज्ञासु अन्वेषणों से आगे बढ़कर पृथ्वी पर वास्तविक जीवन की समस्याओं को सुलझाने तक पहुँच गई है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के प्रमुख घटकों में अंतरिक्ष यान प्रणालियाँ, प्रक्षेपण यान/रॉकेट, भू-नियंत्रण अवसंरचना और रोबोटिक्स, प्रणोदन, उपकरण आदि जैसी सहायक प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं।

प्रक्षेपण यान अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के आवश्यक घटक हैं, जिन्हें अंतरिक्ष यान और पेलोड को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

वे गुरुत्वाकर्षण से बचने और अंतरिक्ष यान को कक्षा में ले जाने के लिए रॉकेट इंजन का उपयोग करते हैं तथा संचार, पृथ्वी अवलोकन और वैज्ञानिक ज्ञान के विस्तार के लिए उपग्रहों की तैनाती के माध्यम से अंतरिक्ष अन्वेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत के पास कई प्रक्षेपण वाहन हैं, जिनमें सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (एसएलवी), संवर्धित एएसएलवी, ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण वाहन पीएसएलवी, जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (जीएसएलवी), एलवीएम3 (जीएसएलवी मार्क III), मानव रेटेड लॉन्च व्हीकल (एचआरएलवी), लघु उपग्रह प्रक्षेपण वाहन (एसएसएलवी) और पुन: प्रयोज्य लॉन्च वाहन - प्रौद्योगिकी प्रदर्शनकारी (आरएलवी-टीडी) शामिल हैं।

## प्रणोदन प्रौद्योगिकी

### रैमजेट और स्क्रैमजेट

रैमजेट और स्क्रैमजेट वायु-श्वास जेट इंजन की एक श्रेणी है, जो भारी ऑक्सीडाइजर्स को ले जाने के बजाय ईंधन को जलाने के लिए वायुमंडलीय ऑक्सीजन का उपयोग करके कुशलतापूर्वक उच्च गति प्राप्त करते हैं।

**रैमजेट**: ये मैक 2 से 5 की गति से संचालित होते हैं, स्थैतिक प्रणोद उत्पन्न नहीं कर सकते, तथा सबसोनिक दहन का उपयोग करते हैं।

**स्क्रैमजेट**: ये मैक 5 से 15 की हाइपरसोनिक गति से संचालित होते हैं, स्थैतिक प्रणोद उत्पन्न नहीं कर सकते, तथा सुपरसोनिक दहन का उपयोग करते हैं।

## क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी

क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी में द्रवीकृत गैसों का भंडारण, परिवहन और उपयोग अत्यंत निम्न तापमान पर किया जाता है, जो प्रायः -160 डिग्री सेल्सियस से भी कम होता है।

**अनुप्रयोग**: एक रॉकेट इंजन का निर्माण करना जिसका उपयोग भारी पेलोड ले जाने के लिए किया जाता है।

भारत ने दशकों के राष्ट्रीय प्रयासों के माध्यम से अपने बड़े क्रायोजेनिक इंजन और चरण (जैसे C25, CE20) विकसित किए हैं।

अंतरिक्ष क्षेत्र अंतरिक्ष में बड़े पैमाने पर संचालन को बेहतर बनाने के लिए 5G, परिष्कृत उपग्रह प्रणालियों, 3D प्रिंटिंग, बिग डेटा और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी उभरती हुई तकनीकों का लाभ उठा रहा है। इनके अलावा कुछ और उभरती हुई तकनीकें भी हैं जैसे:

**छोटे उपग्रह**: हाल के दिनों में छोटे उपग्रहों ने अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। छोटे उपग्रहों के विकास और प्रक्षेपण की कम लागत, तेज़ तैनाती और विशाल उपग्रहों में संचालन जैसे लाभ हैं।

**सौर विद्युत प्रणोदन (एसईपी)**: उन्नत एसईपी प्रौद्योगिकियों का उपयोग बड़े पेलोड के साथ गहरे अंतरिक्ष में भविष्य के मिशनों का एक अनिवार्य हिस्सा है।

इससे उपग्रह का द्रव्यमान कम हो सकता है, जिससे लागत में महत्वपूर्ण बचत हो सकती है।

यह पृथ्वी की निचली कक्षा (LEO) से उच्चतर कक्षाओं तक भारी पेलोड के कुशल परिवहन को सक्षम बनाता है।

**क्रायोजेनिक प्रणोदक भंडारण और स्थानांतरण**: यह नई पीढ़ी के अंतरिक्ष यान को अंतरिक्ष में अधिक गहराई तक और लंबे समय तक संचालित करने की अनुमति देगा क्योंकि अंतरिक्ष यान रास्ते में ईंधन भरने में सक्षम होगा।

क्रायोजेनिक प्रणोदक, LEO से परे भविष्य के दीर्घकालिक मानव अन्वेषण मिशनों के लिए उच्च ऊर्जा प्रणोदन की संभावनाएं प्रदान करते हैं।

**लेजर संचार**: अंतरिक्ष परिसंपत्तियों के बीच लेजर संचार रेडियो की तुलना में 10 से 100 गुना अधिक डेटा दर प्रदान कर सकता है और लाखों किलोमीटर तक संचार को सक्षम कर सकता है।

## अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और उपग्रह आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में नवीन अनुप्रयोग और क्रांतिकारी क्षमताएं संभव हो गई हैं।

**संचार अनुप्रयोग**: उपग्रहों का उपयोग टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, टेलीफोन और मौसम संबंधी डेटा प्रसारण जैसे संचार के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। संचार उपग्रह पृथ्वी के दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**नेविगेशन अनुप्रयोग**: जीपीएस, ग्लोनास, गैलीलियो और नाविक जैसी नेविगेशन प्रणालियां उपग्रह संकेतों के माध्यम से वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर स्थान और समय की जानकारी प्रदान करती हैं।

**पृथ्वी अवलोकन**: पृथ्वी इमेजिंग उपग्रहों का उपयोग मौसम पूर्वानुमान, जलवायु निगरानी, भूमि उपयोग मानचित्रण, आपदा प्रबंधन आदि के लिए किया जाता है। वे पृथ्वी की विशेषताओं जैसे भूमि, महासागर और वायुमंडल के बारे में भू-स्थानिक डेटा प्रदान करते हैं।

**अंतरिक्ष विज्ञान**: हबल अंतरिक्ष दूरबीनें दूरस्थ तारों, आकाशगंगाओं और ब्रह्मांडीय घटनाओं के बारे में आश्चर्यजनक चित्र और डेटा प्रदान करती हैं। अंतरिक्ष यान ग्रहों और चंद्रमाओं का अन्वेषण करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन का उपयोग सूक्ष्म-गुरुत्वाकर्षण प्रयोगों के लिए किया जाता है।

**राष्ट्रीय सुरक्षा**: जासूसी उपग्रहों और उनसे जुड़ी प्रणालियों का उपयोग ख़ुफ़िया जानकारी जुटाने और टोह लेने के लिए किया जाता है। उपग्रह पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ मिसाइल प्रक्षेपण का पता लगा सकती हैं।

**व्यावसायिक उद्देश्य**: उपग्रह डायरेक्ट-टू-होम टेलीविज़न, व्यावसायिक संचार प्रदान करते हैं और कृषि, खनन और अपतटीय जैसे उद्योगों को सहायता प्रदान करते हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में भी निजी कंपनियाँ अंतरिक्ष खनन और अंतरिक्ष पर्यटन पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं।

# रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता में डीआरडीओ की भूमिका

**ले. कर्नल कनिष्क सिंह सिवाच**
प्रबंध सेवा निदेशालय

## भूमिका

किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिए उसकी सुरक्षा और अखंडता सर्वोपरि होती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत और आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग का होना अत्यंत आवश्यक है। भारत ने स्वतंत्रता के बाद से ही इस दिशा में प्रयास किए हैं और इस यात्रा में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने एक केंद्रीय और अपरिहार्य भूमिका निभाई है। डीआरडीओ, रक्षा मंत्रालय के तहत एक प्रमुख अनुसंधान और विकास संगठन है जो देश की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों को डिजाइन, विकसित और कार्यान्वित करने के लिए समर्पित है।

## आत्मनिर्भरता का महत्व और डीआरडीओ की स्थापना

रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता का अर्थ है कि देश अपनी रक्षा जरूरतों के लिए आवश्यक हथियार, उपकरण और प्रणालियों के डिजाइन, विकास और उत्पादन में सक्षम हो। यह न केवल आयात पर निर्भरता को कम करता है, बल्कि सामरिक स्वायत्तता, लागत प्रभावी समाधान और घरेलू रक्षा उद्योग के विकास को भी बढ़ावा देता है।

डीआरडीओ की स्थापना 1958 में रक्षा विज्ञान संगठन (DSO) और तकनीकी विकास प्रतिष्ठान (TDEs) के कुछ तकनीकी प्रतिष्ठानों को मिलाकर की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना और सशस्त्र बलों को अत्याधुनिक स्वदेशी हथियार प्रणालियां प्रदान करना था। अपनी स्थापना के बाद से, डीआरडीओ ने विभिन्न विषयों में अनुसंधान और विकास गतिविधियों का विस्तार किया है, जिसमें एयरोनॉटिक्स, आयुध, इलेक्ट्रॉनिक्स, लड़ाकू वाहन, इंजीनियरिंग सिस्टम, इंस्ट्रूमेंटेशन, सामग्री, मिसाइल और नौसेना प्रणाली शामिल हैं।

## रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता की दिशा में डीआरडीओ का योगदान

डीआरडीओ ने पिछले कई दशकों में रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके कुछ प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं:

### 1. मिसाइल विकास कार्यक्रम:

डीआरडीओ की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक इसका एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) रहा है, जिसकी शुरुआत 1980 के दशक में हुई थी। इस कार्यक्रम के तहत, भारत ने कई स्वदेशी मिसाइलों का विकास और सफल परीक्षण किया है, जिनमें शामिल हैं:

- **पृथ्वी:** सतह से सतह पर मार करने वाली कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल।
- **अग्नि:** सतह से सतह पर मार करने वाली मध्यम और लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें।
- **त्रिशूल:** कम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल।
- **आकाश:** मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल।
- **नाग:** तीसरी पीढ़ी की टैंक भेदी निर्देशित मिसाइल।
- **ब्रह्मोस:** भारत और रूस के संयुक्त उद्यम द्वारा विकसित सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल।

इन मिसाइलों के विकास ने भारत की रक्षा क्षमताओं को काफी मजबूत किया है और इसे मिसाइल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है।

### 2. लड़ाकू विमान और एयरोनॉटिक्स:

डीआरडीओ ने एयरोनॉटिक्स के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने हल्के लड़ाकू विमान (LCA) तेजस को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो भारतीय वायुसेना के लिए एक स्वदेशी बहु-भूमिका वाला लड़ाकू विमान है। इसके अतिरिक्त, डीआरडीओ ने मानव रहित हवाई वाहनों (UAVs) जैसे निशांत और रुस्तम का विकास किया है, जो निगरानी और टोही मिशनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। डीआरडीओ भविष्य के लड़ाकू विमानों, उन्नत हेलीकॉप्टरों और एयरोस्पेस प्रौद्योगिकियों पर भी काम कर रहा है।

### 3. नौसेना प्रणाली:

डीआरडीओ ने भारतीय नौसेना के लिए विभिन्न स्वदेशी प्रणालियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें सोनार सिस्टम, टॉरपीडो, मिसाइल डिफेंस सिस्टम और नौसैनिक युद्धपोतों के लिए अन्य महत्वपूर्ण उपकरण शामिल हैं। प्रोजेक्ट 17A फ्रिगेट और स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत में डीआरडीओ द्वारा विकसित कई तकनीकों का उपयोग किया गया है।

### 4. इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और रेडार:

डीआरडीओ ने इलेक्ट्रॉनिक युद्ध (EW) प्रणालियों और रेडार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। इसने विभिन्न प्रकार के रेडार विकसित किए हैं, जिनमें 3डी निगरानी रेडार, हथियार लोकेटिंग रेडार और लड़ाकू विमानों के लिए सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्कैन किए गए ऐरे (AESA) रेडार शामिल हैं। ये प्रणालियाँ भारतीय सशस्त्र बलों की युद्ध क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

### 5. आयुध और विस्फोटक:

डीआरडीओ ने विभिन्न प्रकार के छोटे हथियार, तोपखाने प्रणाली, गोला-बारूद और विस्फोटक विकसित किए हैं। इसने पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम और धनुष होवित्जर जैसी महत्वपूर्ण प्रणालियों का विकास किया है, जो भारतीय सेना की मारक क्षमता को बढ़ाते हैं।

### 6. लड़ाकू वाहन:

डीआरडीओ ने मुख्य युद्धक टैंक (MBT) अर्जुन और विभिन्न प्रकार के बख्तरबंद कर्मियों के वाहक (APCs) के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालांकि अर्जुन परियोजना में कुछ चुनौतियां आई हैं, लेकिन इसने स्वदेशी लड़ाकू वाहन डिजाइन और विकास में महत्वपूर्ण अनुभव प्रदान किया है।

### 7. सामग्री विज्ञान:

डीआरडीओ ने रक्षा अनुप्रयोगों के लिए विभिन्न उन्नत सामग्रियों का विकास किया है, जिनमें हल्के मिश्र धातु, कंपोजिट, स्टील्थ सामग्री और उच्च शक्ति वाले स्टील शामिल हैं। ये सामग्रियां हथियार प्रणालियों के प्रदर्शन और दक्षता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

## डीआरडीओ के समक्ष चुनौतियां

रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में डीआरडीओ ने महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन यह कई चुनौतियों का भी सामना करता है:

- **लंबा विकास चक्र:** डीआरडीओ परियोजनाओं में अक्सर लंबा विकास चक्र होता है, जिसके कारण सशस्त्र बलों को नवीनतम तकनीकों तक पहुंचने में देरी हो सकती है।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में कठिनाई:** विकसित प्रौद्योगिकियों को सफल उत्पादन एजेंसियों तक हस्तांतरित करने और बड़े पैमाने पर उत्पादन सुनिश्चित करने में चुनौतियां आती हैं।
- **निजी क्षेत्र के साथ सीमित सहयोग:** रक्षा अनुसंधान और विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी अभी भी अपेक्षाकृत सीमित है, जबकि उनके पास नवाचार और तकनीकी विशेषज्ञता का महत्वपूर्ण स्रोत है।
- **बजट आवंटन:** रक्षा अनुसंधान और विकास के लिए आवंटित बजट कभी-कभी आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होता है।
- **गुणवत्ता और विश्वसनीयता:** स्वदेशी रक्षा प्रणालियों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करना एक सतत चुनौती है।
- **बदलता तकनीकी परिदृश्य:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर युद्ध और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में तेजी से तकनीकी परिवर्तन के साथ तालमेल बनाए रखना आवश्यक है।

## आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए डीआरडीओ की भविष्य की दिशाएं

इन चुनौतियों का सामना करते हुए डीआरडीओ ने रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता को और मजबूत करने के लिए कई रणनीतिक पहल की हैं:

- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और उद्योग के साथ सहयोग:** डीआरडीओ अब निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर रहा है और विकसित प्रौद्योगिकियों के तेजी से हस्तांतरण पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसके लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों और उद्योग भागीदारों के साथ संयुक्त विकास परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **युवा प्रतिभा को आकर्षित करना:** डीआरडीओ युवा वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए प्रयास कर रहा है। अनुसंधान सुविधाओं को आधुनिक बनाया जा रहा है और उन्नत अनुसंधान के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।
- **अत्याधुनिक तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करना:** डीआरडीओ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग और निर्देशित ऊर्जा हथियारों जैसे भविष्य की तकनीकों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है।
- **परियोजना प्रबंधन में सुधार:** परियोजनाओं को समय पर पूरा करने और लागत को नियंत्रित करने के लिए परियोजना प्रबंधन प्रक्रियाओं को सुधारा जा रहा है।
- **गुणवत्ता आश्वासन पर जोर:** स्वदेशी रक्षा प्रणालियों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए कड़े गुणवत्ता आश्वासन उपायों को लागू किया जा रहा है।
- **शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग:** डीआरडीओ विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के साथ अनुसंधान परियोजनाओं और प्रतिभा विकास के लिए सहयोग बढ़ा रहा है।

## निष्कर्ष

रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के भारत के प्रयासों में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने एक आधारशिला की भूमिका निभाई है। मिसाइल विकास कार्यक्रम से लेकर लड़ाकू विमानों, नौसेना प्रणालियों और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध क्षमताओं तक डीआरडीओ ने स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और भारतीय सशस्त्र बलों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालांकि, डीआरडीओ को अभी भी लंबा विकास चक्र, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में कठिनाई और निजी क्षेत्र के साथ सीमित सहयोग जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान करने और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डीआरडीओ को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देने, निजी क्षेत्र के साथ सहयोग बढ़ाने, अत्याधुनिक तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करने और परियोजना प्रबंधन प्रक्रियाओं में सुधार करने की आवश्यकता है। सरकार और उद्योग के निरंतर समर्थन के साथ, डीआरडीओ निश्चित रूप से रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा। आत्मनिर्भरता न केवल भारत की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाएगी बल्कि एक मजबूत घरेलू रक्षा औद्योगिक आधार के विकास को भी बढ़ावा देगी, जिससे देश की आर्थिक प्रगति में भी योगदान मिलेगा।

# विकसित भारत के निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

**श्याम सुंदर मीना**
जनसंपर्क निदेशालय

भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। राष्ट्र का महत्वाकांक्षी लक्ष्य - 2047 तक विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होना, जो स्वतंत्रता की शताब्दी है - "विजन 2047" या "विकसित भारत" में समाहित है। यह दृष्टिकोण समग्र परिवर्तन की ओर इशारा करता है, जिसका उद्देश्य सभी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाना है। यह वर्ष विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह भारत की कठिन संघर्षों से प्राप्त स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ का प्रतीक है। यह समग्र परिवर्तन नागरिकों की जीवनशैली में बदलाव लाने की ओर बढ़ता है, जिसमें न केवल आय में वृद्धि और इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार शामिल हैं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता में सुधार का उद्देश्य है।

## योगदान की विरासत: भारत में महिलाओं का ऐतिहासिक योगदान

भारत के इतिहास में, महिलाओं ने हमेशा प्रत्याशाओं को चुनौती दी है और राष्ट्र की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रानी लक्ष्मीबाई जैसी प्रतीकात्मक शख्सियतों से लेकर महिलाओं के योगदान के विभिन्न आयामों तक, उनका प्रभाव गहरा रहा है।

उदाहरण के लिए, सावित्रीबाई फुले, जिन्होंने 19वीं सदी में लड़कियों के लिए स्कूल स्थापित करने के लिए समाजिक मान्यताओं को चुनौती दी और महिलाओं की शिक्षा की नींव रखी। फिर हैं सरोजिनी नायडू, जिन्हें "भारत की कोकिला" के नाम से जाना जाता है जो एक कवि, वक्ता और राजनीतिक कार्यकर्ता थीं, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त राजेश्वरी चटर्जी, जो एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर और शैक्षिक विशेषज्ञ थीं, माइक्रोवेव इंजीनियरिंग और रेडियो फ्रीक्वेंसी इंटरफेरेन्स में विशेषज्ञ थीं और भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) में पहली महिला इंजीनियर थीं। ये कुछ उदाहरण हैं, जो महिलाओं के योगदान की समृद्ध परंपरा को दर्शाते हैं। युद्धभूमि से लेकर प्रयोगशाला, कला से लेकर विज्ञान के क्षेत्र तक भारतीय महिलाओं ने अपनी दृढ़ता, बुद्धिमत्ता और राष्ट्र की प्रगति के प्रति अपनी अडिग प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है।

## विकसित भारत: एक बहुआयामी परिवर्तन

"विकसित भारत" एक ऐसा भारत है जो कई आयामों में प्रगति को दर्शाता है:

- **तकनीकी रूप से विकसित भारत:** इसका अर्थ है विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में महत्वपूर्ण प्रगति, जिससे भारत को अनुसंधान और विकास का केंद्र बनाना, चिकित्सा, कृषि, अंतरिक्ष

अन्वेषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में नए रास्ते खोलना। इसके लिए महिलाओं की STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) में भागीदारी को बढ़ावा देना, अनुसंधान में समान अवसर प्रदान करना और एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना जरूरी है जो उनके योगदानों की सराहना करती है।

- **आर्थिक रूप से विकसित भारत:** इसका मतलब है एक मजबूत और समावेशी अर्थव्यवस्था, जिसमें उच्च विकास दर, गरीबी में कमी और संपत्ति का समान वितरण हो। इसमें सभी के लिए रोजगार सृजन, उद्यमिता को बढ़ावा देना और सतत विकास को बढ़ावा देना शामिल है। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण, समान वेतन, वित्त तक पहुंच और महिला स्वामित्व वाले व्यवसायों के लिए समर्थन इस दिशा में महत्वपूर्ण है।
- **सामाजिक रूप से विकसित भारत:** इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता, आवास और सामाजिक न्याय में सुधार शामिल है, जिससे एक ऐसा समाज बने जो भेदभाव से मुक्त हो। महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और कानूनी अधिकारों के माध्यम से सशक्त बनाना, साथ ही लिंग आधारित हिंसा और बाल विवाह को संबोधित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **सांस्कृतिक रूप से विकसित भारत:** इसमें भारत की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करते हुए आधुनिक मूल्यों को अपनाना, रचनात्मकता और कला के प्रति अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना शामिल है। महिलाओं की कला, साहित्य, संगीत और अन्य सांस्कृतिक रूपों में निरंतर भागीदारी भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करने के लिए आवश्यक है।

## आंकड़ों का महत्व: महिलाओं की भागीदारी

हालांकि भारत ने लिंग समानता के कुछ क्षेत्रों में प्रगति की है, एक कठोर वास्तविकता बनी हुई है: कार्यबल और नेतृत्व पदों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की तुलना में काफी पीछे है। यह भेदभाव केवल सामाजिक न्याय का मुद्दा नहीं है; यह भारत की आर्थिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण बाधा है और इसके 2047 दृष्टिकोण को प्राप्त करने में एक प्रमुख रुकावट है। वर्तमान आंकड़े उस लिंग अंतर को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, जिसे संबोधित किया जाना आवश्यक है। 2023 में भारत में महिला श्रमिक बल भागीदारी दर 37.0% तक पहुंच गई है, जो पहले की तुलना में सुधार है। वरिष्ठ नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं का प्रतिशत 2016 में 16.6% से बढ़कर 2023 में 18.7% हुआ, लेकिन 2024 में यह थोड़ा घटकर 18.3% हो गया। पिछले नौ वर्षों में महिला नेतृत्व पदों में वृद्धि हुई है, जो 2016 में 18.8% से बढ़कर 2021 में 25.2% तक पहुंच गई, लेकिन जनवरी 2024 तक यह घटकर लगभग 23.2% हो गया। ये आंकड़े उन प्रणालीगत बाधाओं को उजागर करते हैं जो महिलाओं को निर्णय लेने की स्थिति तक पहुंचने से रोकती हैं, जिससे उनकी नीति निर्माण में प्रभाव डालने की क्षमता और राष्ट्र के भविष्य को आकार देने की क्षमता सीमित होती है।चिंताजनक रूप से, ये निम्न प्रतिशत और भी घट सकते हैं। भारत में 2021 में वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष, निदेशक और प्रबंधक पदों पर महिलाओं की संख्या 2019 की तुलना में कम थी। यदि प्रभावी और त्वरित हस्तक्षेप नहीं किए गए, तो भविष्य में नेतृत्व क्षमता की हानि संगठन और समग्र अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक जोखिम पैदा कर सकती है।

## अगला कदम: महिलाओं को सशक्त बनाना एक विकसित भारत के लिए

2047 तक एक वास्तविक रूप से विकसित भारत को प्राप्त करने के लिए, ध्यान केवल कार्यबल

और नेतृत्व में महिलाओं की संख्या बढ़ाने से हटकर, एक ऐसा वातावरण बनाने पर होना चाहिए जिसमें वे वास्तव में फल-फूल सके। इसका मतलब है इन विषमताओं, सामाजिक पूर्वाग्रहों, संसाधनों तक पहुंच की कमी, बच्चों की देखभाल जैसी अपर्याप्त समर्थन प्रणालियों, और कार्यस्थल संस्कृतियों को संबोधित करना जो महिलाओं की उन्नति के लिए अनुकूल नहीं हैं। यह केवल कोटा भरने का मामला नहीं है; यह समावेशन और समानता की एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देने का मामला है जहाँ महिलाएं अपने पूर्ण योगदान को देने के लिए सशक्त हों, जिससे भारत को एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बनाने में मदद मिले। यह केवल सामाजिक न्याय का मुद्दा नहीं है; यह एक आर्थिक आवश्यकता है। भारत की महिलाओं की पूरी क्षमता को खोलना राष्ट्र की विकासात्मक आकांक्षाओं को प्राप्त करने और इसे वैश्विक मंच पर अपनी जगह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

## महिलाओं की भूमिका: विकास के लिए उत्प्रेरक

महिलाएं केवल विकास की लाभार्थी नहीं हैं; वे इसकी सक्रिय प्रेरक शक्ति हैं। उनके योगदान भारतीय समाज के हर पहलू में समाहित हैं, पारिवारिक जीवन की आत्मीयता से लेकर राष्ट्रीय प्रगति की विशालता तक। इसे एक कालीन की तरह कल्पना करें: महिलाएं केवल धागे नहीं हैं; वे बुनकर, डिज़ाइनर और कलाकार हैं जो इस पूरी कृति को जीवंत बनाती हैं। हालांकि, यह जीवंत कालीन अक्सर उलझे हुए या टूटे हुए धागों से सीमित होती है - वे सीमाएँ और पूर्वाग्रह जो महिलाओं को उनके पूर्ण संभावनाओं तक पहुँचने से रोकते हैं। महिलाओं की पूरी क्षमता को खोलना केवल एक न्याय का मुद्दा नहीं है; यह राष्ट्रीय आवश्यकता का प्रश्न है।

- **शिक्षक:** एक माँ से लेकर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तक, जो अगली पीढ़ी के नेताओं को प्रेरित करती है, महिलाएं शिक्षा के अग्रभाग पर हैं। वे ज्ञान की संरक्षक और प्रसारक हैं, मूल्यों को स्थापित करती हैं, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं और जीवन भर सीखने का प्रेम पैदा करती हैं।
- **उद्यमी:** भारत के किसी भी बाज़ार में चलें, और आप महिलाओं को स्टॉल चलाते हुए, छोटे व्यवसायों का प्रबंधन करते हुए, और नवोन्मेषी उत्पाद बनाते हुए पाएंगे। महिलाएं उद्यमिता में ताजगी, विविध दृष्टिकोण, और एक दृढ़ आत्मा लाती हैं जो आर्थिक परिप्रेक्ष्य को नया रूप देती हैं। वे रोजगार सृजित करती हैं, आय उत्पन्न करती हैं, और अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में योगदान देती हैं।
- **नवोन्मेषक:** महिलाएं अब तेजी से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, और अन्य क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ रही हैं, नवाचार चला रही हैं और वास्तविक दुनिया की समस्याओं के समाधान विकसित कर रही हैं। उनके अद्वितीय दृष्टिकोण और अनुभव उन तकनीकों और उत्पादों को बनाने में अमूल्य हैं जो विविध जनसंख्याओं की जरूरतों को पूरा करते हैं। हालांकि, महिलाएं अभी भी STEM क्षेत्रों (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) में कम प्रतिनिधित्व करती हैं, और अक्सर सूक्ष्म या स्पष्ट भेदभाव और समर्थन की कमी का सामना करती हैं। महिलाओं की नवोन्मेषी क्षमता को उजागर करना एक विशाल अप्रयुक्त प्रतिभा के स्रोत को खोलने जैसा है, जो वैज्ञानिक खोज और तकनीकी प्रगति के लिए नए रास्ते खोलता है।

- **नेता:** कल्पना करें कि एक राष्ट्र ऐसा है जहाँ उसके सभी नागरिकों की आवाजें और दृष्टिकोण सबसे उच्च स्तर पर प्रतिनिधित्व प्राप्त करते हैं। महिला नेता विविध अनुभवों, सहयोगात्मक दृष्टिकोण, और समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करती हैं। वे अन्य महिलाओं और लड़कियों को प्रेरित करती हैं कि वे बाधाओं को तोड़ें और नेतृत्व भूमिकाओं के लिए प्रेरित हों। हालांकि, महिलाएं राजनीति, व्यवसाय और अन्य क्षेत्रों में अभी भी एक "कांच की छत" का सामना करती हैं, जो उन्हें उनके पूर्ण क्षमता तक पहुँचने से रोकती है। महिलाओं को सशक्त बनाना राष्ट्र को एक व्यापक दृष्टिकोण देना जैसा है, जो अधिक समावेशी, समान और सभी लोगों की जरूरतों का प्रतिनिधित्व करता है।

## महिलाओं की भागीदारी में सुधार: 2047 तक का रोडमैप

भारत का 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का सपना एक विशाल कार्य है, जैसे एक भव्य गगनचुंबी इमारत का निर्माण करना। महिलाएं केवल निर्माण श्रमिक नहीं हैं; वे वास्तुकार, इंजीनियर और डिज़ाइनर हैं, जो इस प्रक्रिया के हर चरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए, एक व्यापक और समन्वित प्रयास की आवश्यकता है, जिसमें समाज के सभी हिस्से शामिल हों।

- **शिक्षा और कौशल विकास: एक मजबूत नींव बनाना:**

  शिक्षा वह नींव है जिस पर सभी प्रगति बनाई जाती है। लड़कियों और महिलाओं को सभी स्तरों पर गुणवत्ता शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना, प्राथमिक स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा और उससे आगे तक, अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें न केवल शैक्षिक अध्ययन शामिल हैं, बल्कि व्यावसायिक प्रशिक्षण, तकनीकी कौशल विकास और जीवन कौशल शिक्षा भी शामिल हैं। महिलाओं को 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था में फलने-फूलने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करना उन्हें अपने भविष्य को बनाने और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने के लिए उपकरण प्रदान करने जैसा है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के बीच उच्च ड्रॉपआउट दर को संबोधित करना आवश्यक है, साथ ही यह सुनिश्चित करना कि लड़कियों को गुणवत्ता STEM शिक्षा तक पहुंच प्राप्त हो।

- **आर्थिक सशक्तिकरण: अवसर बनाना:**

  आर्थिक सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं को कार्यबल में पूर्ण और समान रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान करना। इसमें सूक्ष्म वित्त, व्यापार सृजन कार्यक्रमों और मार्गदर्शन के माध्यम से महिला उद्यमिता को बढ़ावा देना शामिल है। इसका मतलब है समान काम के लिए समान वेतन सुनिश्चित करना, सस्ती बाल देखभाल विकल्प प्रदान करना ताकि महिलाएं कार्य और पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित कर सकें, और एक कार्यस्थल संस्कृति बनाना जो भेदभाव और उत्पीड़न से मुक्त हो। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना आर्थिक विकास के इंजन में ईंधन जोड़ने जैसा है, जो उत्पादकता बढ़ाता है और एक समृद्ध राष्ट्र बनाता है।

- **स्वास्थ्य और कल्याण: कल्याण को पोषित करना:**

  महिलाओं का स्वास्थ्य और कल्याण उनके समाज में पूर्ण रूप से भाग लेने के लिए आवश्यक हैं। गुणवत्ता स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच, जिसमें प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं, मातृत्व देखभाल और मानसिक स्वास्थ्य समर्थन शामिल हैं, एक मौलिक अधिकार है। मातृ मृत्यु दर को कम करना,

परिवार नियोजन सेवाओं तक पहुंच को बेहतर बनाना और महिलाओं की विशिष्ट स्वास्थ्य आवश्यकताओं को संबोधित करना महत्वपूर्ण प्राथमिकताएँ हैं। महिलाओं के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाना, जो हिंसा और भेदभाव से मुक्त हो, भी आवश्यक है। एक स्वस्थ और सशक्त महिला जनसंख्या एक मजबूत और लचीले पेड़ की तरह है, जो किसी भी तूफान का सामना करने में सक्षम है।

- **नेतृत्व और प्रतिनिधित्व: महिलाओं की आवाज़ें बढ़ाना:**

  सभी क्षेत्रों में नेतृत्व पदों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि उनकी आवाजें सुनी जाएं और उनके दृष्टिकोण निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में विचार किए जाएं। इसमें महिलाओं को राजनीति, व्यापार और अन्य क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करना, उन्हें नेतृत्व प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्रदान करना, और उन पूर्वाग्रहों को चुनौती देना शामिल है जो उन्हें शीर्ष पदों तक पहुँचने से रोकते हैं। महिला नेताओं को सशक्त बनाना प्रगति के स्वर में अधिक आवाजें जोड़ने जैसा है, जो एक अधिक समान और प्रतिनिधित्वपूर्ण समाज बनाता है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन: मानसिकताओं को बदलना:**

  इस यात्रा का शायद सबसे चुनौतीपूर्ण, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पहलू सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की आवश्यकता है। गहरे-गहरे सामाजिक मानदंड और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण जो महिलाओं की प्रगति को बाधित करते हैं, उन्हें संबोधित करना आवश्यक है। इसके लिए लिंग आधारित रूढ़िवादिता को चुनौती देना, लिंग आधारित हिंसा से निपटना, और जीवन के सभी पहलुओं में लिंग समानता को बढ़ावा देना जरूरी है। मानसिकताओं को बदलना और महिलाओं के लिए सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा देना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जो समाज के सभी सदस्यों की निरंतर प्रयास और भागीदारी की आवश्यकता है। यह उस मिट्टी को उपजाऊ बनाने जैसा है जिसमें प्रगति के बीज जड़ें जमा सकते हैं और फल-फूल सकते हैं।

इन परस्पर जुड़े हुए चुनौतियों को समझकर और मिलकर काम करके, भारत अपनी महिलाओं की पूरी क्षमता को खोल सकता है और 2047 तक एक वास्तविक रूप से विकसित और समान समाज बना सकता है। यह केवल एक सपना नहीं है; यह एक लक्ष्य है जिसे सामूहिक क्रियावली, प्रतिबद्धता, और एक साझा दृष्टिकोण के साथ हासिल किया जा सकता है।

## एक सहयोगात्मक दृष्टिकोण:

इस दृष्टिकोण को साकार करने के लिए विभिन्न हितधारकों का एकजुट होना बेहद आवश्यक है। इसमें सरकार, समाज, निजी क्षेत्र, और व्यक्तिगत स्तर पर सभी का योगदान चाहिए। आइए जानते हैं कि यह कैसे संभव हो सकता है:

- **नीति हस्तक्षेप:**

  सरकार का यह दायित्व है कि वह ऐसी नीतियाँ बनाये और उनका पालन सुनिश्चित करे, जो लिंग समानता को बढ़ावा देती हैं। इसमें भेदभाव के खिलाफ कड़े कानूनों की जरूरत है, जो महिलाओं के खिलाफ किसी भी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करें। समान वेतन की नीति लागू करना भी

महत्वपूर्ण है ताकि महिलाओं को समान काम के लिए समान वेतन मिले। इसके साथ ही, महिलाओं के शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए भी सरकार को नीतियाँ बनानी होंगी, ताकि महिलाएं अपने अधिकारों का उपयोग कर सकें और समाज में अपनी पहचान बना सकें।

- **जागरूकता अभियान:**

  हमारे समाज में बहुत सी परंपराएँ और मानसिकताएँ हैं जो महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित करती हैं। इसलिए महिलाओं के बारे में गलत धारणाओं और सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। ऐसे अभियान महिलाओं के योगदान को उजागर करेंगे और समाज में लिंग समानता के महत्व को रेखांकित करेंगे। इन अभियानों का उद्देश्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाना और महिलाओं के अधिकारों को पहचान देना है।

- **समुदाय की भागीदारी:**

  समाज में लिंग असमानता को समाप्त करने के लिए समुदाय और स्थानीय नेताओं की भूमिका अहम है। परिवारों और समुदायों के साथ मिलकर लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना, बाल विवाह को रोकना, और लिंग आधारित हिंसा का विरोध करना आवश्यक है। इससे न सिर्फ महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा, बल्कि समाज में भी समग्र बदलाव आएगा। यह बदलाव विशेष रूप से छोटे समुदायों में ज्यादा प्रभावी होगा, जहां पुरानी सोच और परंपराएँ प्रबल हैं।

- **निजी क्षेत्र की पहल:**

  निजी क्षेत्र में भी लिंग समानता को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए समान अवसर, करियर की उन्नति, और लचीले कार्य करने की व्यवस्था सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसके साथ ही निजी कंपनियों को सुनिश्चित करना चाहिए कि वे महिलाओं को समान वेतन दें और भेदभाव से मुक्त माहौल प्रदान करें। महिलाओं के लिए सुरक्षित और समावेशी कार्यस्थल एक समृद्ध और समान समाज बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- **व्यक्तिगत जिम्मेदारी:**

  सिर्फ नीतियाँ और संस्थानिक बदलाव ही पर्याप्त नहीं हैं; इसके साथ ही हर व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी अहम है। प्रत्येक व्यक्ति को लिंग आधारित रूढ़ियों और भेदभाव को चुनौती देने की आवश्यकता है। यह जिम्मेदारी समाज के हर वर्ग और क्षेत्र के लोगों पर है। जब तक हम समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता की संस्कृति को नहीं बढ़ावा देंगे, तब तक कोई बदलाव संभव नहीं होगा। व्यक्तिगत स्तर पर, हर किसी को यह समझना होगा कि महिला और पुरुष के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए और हमें समान अवसर देना चाहिए।

इन सभी पहलुओं को एक साथ जोड़ने से ही हम लिंग समानता को वास्तविकता बना सकते हैं और एक समृद्ध, न्यायपूर्ण और समान समाज की नींव रख सकते हैं।

## महिला वैज्ञानिक: भारत की रक्षा नवाचार में अग्रदूत

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) ने भारत की विदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी पर निर्भरता को कम करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। महिला वैज्ञानिकों ने इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाई है, जिन्होंने एरोनॉटिक्स, मिसाइल सिस्टम, रेडार, युद्ध वाहन, और जीवन विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीकों के विकास में नेतृत्व किया है। उनके योगदान ने भारत की रक्षा क्षमताओं और वैश्विक मंच पर उसकी स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

रक्षा प्रौद्योगिकी के पारंपरिक रूप से पुरुष प्रधान क्षेत्र में, DRDO में महिला वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो उच्च-जोखिम परियोजनाओं का नेतृत्व कर रही हैं, मिसाइल रक्षा में सफलता प्राप्त कर रही हैं, और ऐसे उन्नत प्रणालियों का विकास कर रही हैं जो भारत की सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। उनका प्रभाव वायु, भूमि, समुद्र, साइबर और अंतरिक्ष क्षेत्रों में फैला हुआ है, जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा और विशेषज्ञता को दर्शाता है।

### उत्कृष्टता के साथ नेतृत्व: वरिष्ठ भूमिकाओं में महिलाएं

महिलाओं ने भारत के रक्षा क्षेत्र में भी अभिन्न भूमिका निभाई है। DRDO में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति संगठन की लिंग विविधता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। DRDO भारत की रक्षा नवाचारों में अग्रणी रहा है, और इस दिशा में महिला वैज्ञानिकों ने नेतृत्व किया है। अब महिला वैज्ञानिक प्रभावशाली पदों पर हैं, जिनमें तीन महिलाएं महानिदेशक के रूप में कार्यरत हैं, श्रीमती सुमा वर्गीस, डॉ. (श्रीमती) चंद्रिका कौशिक, और श्रीमती यू. जयाशांति। ये महिलाएं न केवल अत्याधुनिक अनुसंधान का नेतृत्व करती हैं, बल्कि युवा वैज्ञानिकों को भी मार्गदर्शन प्रदान करती हैं, आगामी पीढ़ियों को प्रेरित करती हैं और यह साबित करती हैं कि रक्षा अनुसंधान में सफलता के लिए लिंग कोई बाधा नहीं है। भारत की सुरक्षा के प्रति उनके समर्पण से यह सिद्ध होता है कि रक्षा में नेतृत्व प्रतिभा, प्रतिबद्धता और दृष्टिकोण द्वारा परिभाषित होता है, न कि लिंग से। उनके योगदान ने भारत की रक्षा क्षमताओं और वैश्विक प्रतिष्ठा को ऊंचा किया है।

### निष्कर्ष: विकसित भारत के लिए एक साझा दृष्टिकोण

विकसित भारत की यात्रा 2047 तक एक साझा दृष्टिकोण हैं। महिलाएं केवल लाभार्थी नहीं हैं, बल्कि वे बदलाव की सक्रिय चालिका हैं। महिलाओं को सशक्त बनाकर समान अवसर प्रदान करके और उनके योगदान को मान्यता देकर भारत अपनी पूरी क्षमता को खोल सकता है। विकसित भारत की यात्रा 2047 तक केवल एक लक्ष्य तक पहुँचने के बारे में नहीं है; यह खुद यात्रा के बारे में है। यह एक ऐसा राष्ट्र बनाने के बारे में है जहाँ हर नागरिक, चाहे वह किसी भी लिंग का हो, उन्नति करने और सामूहिक भलाई में योगदान करने का अवसर पा सके। महिलाएं अपनी अपार क्षमता और अडिग प्रतिबद्धता के साथ उस यात्रा के केंद्र में हैं। महिलाओं को सशक्त बना कर, उनकी शिक्षा और भलाई में निवेश करके, उनकी आवाज़ को ऊंचा करके और उनके योगदानों का उत्सव मनाकर भारत अपनी पूरी क्षमता को खोल सकता है और वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है। भारत का भविष्य और उसके 2047 के दृष्टिकोण की प्राप्ति इस पर निर्भर करती है

# ब्लॉकचेन - स्मार्ट शहर

**गौरव कुमार**
वित्त एवं सामग्री प्रबंधन निदेशालय

## परिचय

ब्लॉकचेन एक डिजिटल, विकेंद्रीकृत (वितरित) बहीखाता है जो एक सहकर्मी के द्वारा सहकर्मी नेटवर्क पर होने वाले सभी लेनदेन का रिकॉर्ड रखता है। यह एक इंटरकनेक्टेड और लगातार विस्तारित होने वाली रिकॉर्ड की सूची है जो कई इंटरकनेक्टेड प्रणालियों में सुरक्षित रूप से लाल रंग में है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक ब्लॉक एक डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से पिछले ब्लाकों से विशिष्ट रूप से जुड़ा हुआ है जिसका अर्थ है कि श्रृखंला में पिछले रिकॉर्ड को परेशान किए बिना एक रिकॉर्ड में बदलाव संभव नही हैं, इस प्रकार सूचना छेड़छाड़-सबूत का प्रतिपादन करता है। ब्लॉकचेन में प्रमुख नवाचार प्रौद्योगिकी यह है कि यह एक केंद्रीकृत तीसरे पक्ष की आवश्यकता के बिना अपने प्रतिभागी को पूरे इंटरनेट पर संपत्ति स्थानांतरित करने की अनुमति देता है।

ब्लॉकचेन तकनीक को बिटकॉइन नामक क्रिप्टो करेंसी के पीछे अंतर्निहित तकनीक के रूप में विकसित किया गया था। 2008 के सबप्राइस संकट के बाद मौजूदा वित्तीय प्रणाली में भरोसा कम हो गया। यह तब की बात है जब एक व्यक्ति या सातोशी नाकामोटो नामक एक समूह ने 'बिटकॉइन प्रोटोकॉल' युक्त एक श्वेत पत्र लिखा था जिसमें एल्गोरिदम की गणना करने के लिए एक वितरित लेज़र और सर्वसम्मति भवन का उपयोग किया गया था। 'बिटकॉइन प्रोटोकॉल' प्रत्यक्ष पी 2 पी लेनदेन को सुविधाजनक बनाने के एक साधन के रूप अंतर मध्यवर्ती पंरपरागत वित्तीय मध्यस्थों के लिए लिखा गया था।

इंटरनेट के आने के बाद से ही आभासी मुद्राएँ बनाने के प्रयास किए गए लेकिन 'डबल खर्च' की समस्या के कारण वे प्रयास विफल हो गए अर्थात् एक मुद्रा जैसी डिजिटल संपति दो बार ख़र्च की जा सकती है। वर्तमान में समाधान डबल खर्च की समस्या को ख़त्म करने के लिए बैंकों के रूप में 'ट्रस्ट के बिचौलियों' की शुरूआत माध्यम से है। लेकिन ब्लॉकचेन तकनीक के अनुप्रयोग से ट्रस्ट के ऐसे बिचौलियों के लिए बिना टी ख़र्च के दोहरी मूलभूत समस्या का समाधान संभव हो जाता है जिससे इंटरनेट सिक्योर वाई पर वर्चुअल करेंसी जैसी परिसंपत्तियों के हस्तांतरण की प्रक्रिया में तेज़ी आती है। इस अवधारणा को ग़ैर-मुद्रा संबधित क्षेत्रों तक बढ़ाया जा सकता है और यह ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का वादा करता है।

## ब्लॉकचेन का फ़ायदा

ब्लॉकचेन एक वितरित नेटवर्क है जो जानकारी को छेड़छाड़-प्रूफ में संग्रहित करता है जिसे केवल वैध प्रयोक्ताओं द्वारा संशोधित किया जा सकता है लेकिन संशोधित नहीं किया जा सकता है। ब्लॉकचेन

की पूरी क्षमता को समझने के लिए ब्लॉकचेन की बुनियादी विशेषताओं को समझने की ज़रूरत है जो इस तकनीक को विशिष्ट बनाती है-

निम्नलिखित, उन उपयोग मामलों की एक विस्तृत सूची है जहाँ ब्लॉकचेन का प्रभाव पड़ सकता है-

- रक्षा
- शिक्षा
- कृषि
- शासन
- स्वास्थ्य देखभाल
- सार्वजनिक सुरक्षा और न्याय
- नागरिक पंजीकरण
- ऊर्जा

## ब्लॉकचेन का उपयोग कर स्मार्ट शहर की पहल को बढ़ाना

स्मार्ट सिटी अवधारणा को उन्नत और आधुनिक शहरीकरण की दृष्टि को लागू करने के लिए एक रूपरेखा के रूप में देखा जा सकता है। स्मार्ट शहर प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हैं और निवासियों को रहने की उच्च गुणवत्ता प्रदान करने के लिए मौजूदा और नियोजित अवसंरचना निवेश का उपयोग करते है व्यवसायों के लिए एक अनुकूल निवेश है और सरकारों के लिए संसाधन सदुपयोग और पारदर्शिता को अधिकतम करने की अनुमति देता है। उन्हें प्रणाली, आई.टी. इंफ्रास्ट्रक्चर, फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर और सोशल और बिजनेस इंफ्रास्ट्रक्चर का आर्गेनिक इंटीग्रेशन माना जा सकता है। यह प्रणाली सामूहिक रूप से काम करती है ताकि निर्णय निर्माताओ के लिए बुद्धिमानी से एन.डी. कार्रवाई योग्य जानकारी उत्पन्न हो सके।

ब्लॉकचेन स्मार्ट सिटी मिशन के उद्देश्यों के साथ स्मार्ट सिटी की प्रौद्योगिकी पहलों को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी, कुशल और लचीला बनाने का अवसर प्रदान करता है।

## निष्कर्ष

नई तकनीकों ने हमेशा उद्यमों और सरकार को आकर्षित किया है। यह मोटे तौर पर काम करने और सेवा के वर्तमान तरीक़े को लागू करने के उनके वादे के कारण होता है, जिससे उपभोक्तओं को हितधारकों के लिए अधिक ख़ुशी मिलती है और प्रतिस्पर्धा में बढ़त हासिल होती है, जिसके परिणामस्वरूप एक बेहतर ब्रांड छवि बनती है।

हालाँकि, एक 'नई तकनीक' के बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन में समय लगता है और इसमें गोद लेने की अवस्था शामिल होती है। ब्लॉकचेन तकनीक भी इसी तरह के अपनाने की अवस्था से गुज़र रही है। तकनीक अभी भी हो रही है।

परीक्षण किए गए और नए उपयोग के मामलों को छोटे पैमाने पर लागू किया जा रहा है। जबकि अधिकांश विशेषज्ञ व्यवधान एन के लिए इसकी क्षमता के बारे में सहमत हैं इस तकनीक के सफल कार्यान्वयन में कुछ बाधाएँ हैं। अंत में, एक प्रौद्योगिकी व्यवधान चल रहा है जो हमारे शहरों को स्मार्ट बनाने की क्षमता रखता है।

# गुणता आश्वासन महानिदेशालय (DGQA)

**रितेश कुमार जौरिहार**
कार्मिक निदेशालय

## परिचय

भारत की रक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में कई संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन्हीं में से एक है "Directorate General of Quality Assurance" (DGQA), जिसे हिंदी में "गुणता आश्वासन महानिदेशालय" कहा जाता है। DGQA रक्षा मंत्रालय के अधीन एक प्रमुख तकनीकी संगठन है, जिसका मुख्य उद्देश्य रक्षा उपकरणों और सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित करना है। यह संस्था भारतीय सेना, नौसेना के लिए उपकरणों की गुण्वत्ता की जाँच, परीक्षण और प्रमाणन करती है।

## DGQA का इतिहास

DGQA की स्थापना का इतिहास ब्रिटिश काल से जुड़ा हुआ है। प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटिश भारत में सैन्य उपकरणों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए एक संगठन की आवश्यकता महसूस की गई थी। इसी दिशा में 1869 में 'Inspection Branch' की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे यह संस्था विकसित होती हई और स्वतंत्रता के पश्चात 1987 में इसे DGIT से DGQA के रुप में पुनर्गठित किया गया। आज यह संस्था रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करती है और इसका नेतृत्व एक वरिष्ठ सैन्य अधिकारी करता है, जिसे महानिदेशक (Director General) कहा जाता है।

## DGQA का उद्देश्य और कार्यक्षेत्र

1. रक्षा सामग्री की गुणवत्ता का आश्वासन देना।
2. निर्माण प्रक्रिया के प्रत्येक चरण की निगरानी।
3. सेना को सुरक्षित, विश्वसनीय और तकनीकी रुप से उन्नत उत्पाद प्रदान करना।
4. नए उत्पादों के परीक्षण और विकास में तकनीकी सहयोग।
5. रक्षा उद्योगों में गुणवत्ता प्रणाली का निर्माण और उसे सुदृढ़ करना।

## प्रमुख कार्य

1. **गुणवत्ता नियंत्रण (Quality Control)**

DGQA रक्षा उत्पादन इकाइयों द्वारा बनाए गए उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए

परीक्षण करता है। इसके अंतर्गत सामग्री की मज़बूती, कार्यक्षमता, सुरक्षा और दीर्घायु की जांच होती है।

2. **स्वीकृति निरीक्षण** (Acceptance Inspection)

   निर्माण प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद DGQA निरीक्षण करता है कि उत्पाद सभी सैन्य मानकों पर खरा उतरता है या नहीं। यदि मानकों पर खरा उतरता है, तभी उसे सेना को आपूर्ति की अनुमति दी जाती है।

3. **प्रमाणीकरण** (Certification)

   DGQA विभिन्न रक्षा आपूर्तिकर्ताओं को प्रमाणपत्र प्रदान करता है। इससे यह तय होता है कि वे उत्पादक मानकों के अनुसार रक्षा सामग्री बना सकते हैं।

4. **तकनीकी सहायता** (Technical Assistance)

   DGQA न केवल निरीक्षण करता है, बल्कि रक्षा उत्पादन इकाइयों को तकनीकी सलाह भी देता है, जिससे वे उत्पादों को अधिक बेहतर और उन्नत बना सकें।

5. **गुणवत्ता प्रशिक्षण** (Quality Training)

   DGQA कर्मचारियों को गुणवत्ता नियंत्रण, निरीक्षण तकनीक, मापन विज्ञान और रक्षा गुणवत्ता मानकों पर प्रशिक्षण देता है। यह प्रशिक्षण रक्षा उद्योगों और सार्वजनिक उपक्रमों के लिए भी उपलब्ध होता है।

### संगठनात्मक ढांचा

DGQA एक विशाल संगठन है, जो देशभर में फैले विभिन्न Inspections Units और Testing Laboratories के माध्यम से कार्य करता है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है और इसके अंतर्गत कई महत्वपूर्ण तकनीकी निदेशालय आते हैं, जैसे कि:

* आयुध निरीक्षण निदेशालय
* इलेक्ट्रॉनिक गुणवत्ता निदेशालय
* वाहनों और इंजनों का निरीक्षण निदेशालय
* जनरल स्टोर्स निरीक्षण निदेशालय
* नौसेना निदेशालय
* युद्धपोत परियोजना निदेशालय

यह संगठन सेना एवं नौसेना के अनुरुप गुणवत्ता आश्वासन सुनिश्चित करता है।

### DGQA का रक्षा में योगदान

DGQA का योगदान न केवल सेना का गुणवत्ता पूर्ण सागमी उपलब्ध कराने तक सीमित है, बल्कि यह निजी और सार्वजनिक रक्षा उद्योगों के बीच एक सेतु का कार्य भी करता है। यह रक्षा उपकरण निर्माताओं को आवश्यक गुणवत्ता मानकों और परीक्षण प्रक्रियाओं के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

वर्तमान में भारत "आत्मनिर्भर भारत" और "मेक इन इंडिया" जैसे अभियानों की दिशा में कार्य कर रहा है। DGQA इन अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह सुनिश्चित करता है कि देश में निर्मित रक्षा उपकरण अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुसार हों, ताकि उनका उपयोग न केवल भारतीय सेनाएं कर सकें, बल्कि वे निर्यात के लिए भी उपयुक्त बनें।

## चुनौतियाँ

DGQA के समक्ष कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी हैं:-

1. **तेज़ी से बदलती तकनीक** - रक्षा प्रौद्योगिकी में निरंतर विकास हो रहा है, जिससे DGQA को हमेशा नवीनतम तकनीकों को समझने और अपनाने की आवश्यकता होती है।
2. **निजी क्षेत्र की भागीदारी** - "मेक इन इंडिया" अभियान के तहत निजी कंपनियाँ रक्षा उत्पादन में तेजी से प्रवेश कर रही हैं, जिसके कारण DGQA पर निरीक्षण और गुणवत्ता आश्वासन का भार बढ़ गया है।
3. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा** - निर्यात को बढ़ावा देने के लिए भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता को वैश्विक मानकों पर खरा उतरना होता है, जो एक बड़ी ज़िम्मेदारी DGQA के कंधों पर है।

## निष्कर्ष

रक्षा तंत्र को मजबूत बनाए रखने के लिए नई-नई खोजों एवं अनुसंधानों के साथ-साथ साजो-सामान के उच्च कोटि की गुणवत्ता बनाए रखना भी आवश्यक है। DGQA भारतीय रक्षा तंत्र का एक अभिन्न अंग है, जो न केवल सैन्य उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करता है, बल्कि भारत को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर और विश्व स्तरीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका सतत प्रयास भारत की रक्षा तैयारियों को सशक्त और सुरक्षित बनाना है। DGQA जैसे संस्थान किसी देश की रक्षा प्रणाली की नींव एवं गुणवत्ता को मजबूत करते हैं। जब सैनिक सीमा पर खड़ा होता है, तो उसे यह विश्वास होना चाहिए कि जो हथियार और उपकरण उसके पास हैं, वे भरोसेमंद और उत्तम गुणवत्ता के हैं। यह भरोसा DGQA जैसे संस्थान की वजह से ही संभव है। हमें इस संस्था पर गर्व है और हमें चाहिए कि इसकी भूमिका को और अधिक व्यापक बनाने में योगदान दें जिससे कि यह संस्था भारत की रक्षा प्रणाली को विश्वस्तरीय एवं अकाट्य बनाने में सफल हो।

# भ्रष्टाचार मुक्त भारत

**अविनाश कुमार**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

भारत विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार की समस्या का सामना करता है। यह समस्या आंतरिक रूप से हमारे देश को खा रही है। यह सही समय है कि हम में से हर एक को हमारे देश पर पड़ते भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभावों को महसूस करना चाहिए और हमारे देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए अपना योगदान देना चाहिए। ऐसा अक्सर कहा जाता है कि भारतीय राजनीतिज्ञ भ्रष्ट हैं लेकिन यह एकमात्र ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां भ्रष्टाचार निहित है। भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में मौजूद है और यह हमारे देश को बर्बाद कर रहा है।

भ्रष्टाचार हमारे देश की एक गंभीर समस्या है। यह हमारे समाज के हर हिस्से में फैल चुका है। भ्रष्टाचार का मतलब है अपने लाभ के लिए गलत तरीके से धन या संसाधन लेना। इससे देश की प्रगति रुक जाती है और गरीबों का जीवन और कठिन हो जाता है। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए हमें कई कदम उठाने होंगे। सबसे पहले, हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को सुधारना होगा ताकि बच्चों को नैतिकता और ईमानदारी का महत्व सिखाया जा सके। इसके अलावा, सरकारी कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ानी होगी। यदि कोई अधिकारी या कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त पाया जाता है, तो उसे सख्त सजा मिलनी चाहिए।

हमारा देश, भारत, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक महत्व के बावजूद, आज भ्रष्टाचार की गंभीर समस्या से जूझ रहा है। भ्रष्टाचार देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को खोखला कर रहा है। यह न केवल सरकारी तंत्र में बल्कि समाज के प्रत्येक स्तर पर गहराई तक फैला हुआ है। भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना देखना और इसे पूरा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है और इसे साकार करने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे।

भ्रष्टाचार का तात्पर्य है किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा अपने अधिकारों का दुरुपयोग निजी लाभ के लिए करना। यह रिश्वतखोरी, अनियमितताएं, पद के दुरुपयोग और अन्य अनैतिक गतिविधियों के रूप में प्रकट होता है। भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि यह न्याय प्रणाली में विश्वास को कमजोर करता है, आर्थिक असमानता को बढ़ावा देता है और समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास करता है।

## भ्रष्टाचार के कारण

- गरीबी और बेरोजगारीः आर्थिक असुरक्षा और बेरोजगारी के कारण लोग रिश्वत देने या लेने को मजबूर हो जाते हैं।

- शिक्षा का अभावः शिक्षा की कमी से लोगों में नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना कमजोर होती है।
- कमजोर कानूनी व्यवस्थाः कानून का सही तरीके से लागू न होना और दोषियों को सजा न मिलना भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है।
- प्रशासनिक ढांचे की कमजोरियां: जटिल और धीमी प्रशासनिक प्रक्रियाएं भी भ्रष्टाचार को जन्म देती हैं।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक में भारत की रैंकिंग 39 स्कोर के साथ 180 देशों में से 93 वें स्थान पर है। यह स्पष्ट करता है कि भारत में भ्रष्टाचार अभी भी एक बड़ी चुनौती है। विभिन्न रिपोर्ट्स के अनुसार, सार्वजनिक सेवाओं में, जैसे कि पुलिस, स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा, में भ्रष्टाचार की व्यापकता अधिक है। भारत में भ्रष्टाचार की उच्च दर का मुख्य कारण प्रभावशाली लोगों द्वारा सत्ता का दुरुपयोग, कमजोर कानून प्रवर्तन और पारदर्शिता की कमी है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 और केंद्रीय सतर्कता आयोग (Central Vigilance Commission) जैसे कानूनी और नियामक उपायों के बावजूद, भ्रष्टाचार की समस्या गंभीर बनी हुई है। 2022 में महाराष्ट्र राज्य में सबसे अधिक भ्रष्टाचार के मामले दर्ज किए गए।

## भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के लिए उपाय

- कानून का सख्त पालनः भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कानून बनाना और उनका कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है।
- ई-गवर्नेस का विस्तारः डिजिटल तकनीक और ई-गवर्नेस के माध्यम से पारदर्शिता बढ़ाई जा सकती है।इससे भ्रष्टाचार की संभावनाएं कम होती हैं।
- शिक्षा और जागरूकताः शिक्षा और जागरूकता अभियान चलाकर लोगों में नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना को मजबूत बनाया जाना चाहिए।
- विपक्ष और मीडिया की भूमिकाः स्वतंत्र और सक्रिय मीडिया तथा विपक्षी दलों का सशक्तिकरण भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- सिविल सोसाइटी और जन भागीदारीः नागरिक समाज और आम जनता की भागीदारी से भ्रष्टाचार के खिलाफ एक मजबूत मोर्चा बनाया जा सकता है।

## निष्कर्ष

भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना साकार करना संभव है यदि हम सभी मिलकर प्रयास करें। सरकार, समाज, मीडिया और प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए, नैतिकता और पारदर्शिता के साथ कार्य करना होगा। एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत न केवल हमारे आर्थिक और सामाजिक विकास को गति देगा बल्कि हमारे देश की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को भी बढ़ाएगा। आइए, हम सभी मिलकर इस दिशा में कदम बढ़ाएं और एक स्वच्छ, पारदर्शी और सशक्त भारत का निर्माण करें।

# आधुनिक भारत

**प्रभूनाथ दूबे**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

हमारा देश भारत एक समय में गुलामी की बेड़ियों में बंधा हुआ था, लेकिन आज हम स्वतंत्रता के 75 वर्षों के बाद एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आए हैं। भारतीय समाज और संस्कृति में बदलावों की आंधी चली है, और यह बदलाव आज के "आधुनिक भारत" की पहचान बन चुका है। आधुनिक भारत का मतलब सिर्फ तकनीकी और आर्थिक उन्नति नहीं है, बल्कि यह समाज, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान और हर क्षेत्र में बदलावों का प्रतीक है।

## आधुनिक भारत की विशेषताएँ

### 1. सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन

आधुनिक भारत में समाज में कई बदलाव आए हैं। खासतौर पर महिलाओं के अधिकारों में सुधार, बच्चों की शिक्षा और समाज में जातिवाद और धर्म के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अलावा, लोग अब पारंपरिक सोच से बाहर निकलकर खुले विचारों के साथ एक-दूसरे को स्वीकार कर रहे हैं। समाज में जातिवाद, गरीबी, और लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करने की दिशा में काम किया जा रहा है।

### 2. आर्थिक विकास

भारतीय अर्थव्यवस्था आज एक मजबूत और तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन चुकी है। 1991 में आर्थिक सुधारों के बाद भारत ने मुक्त व्यापार, औद्योगिकीकरण, और तकनीकी विकास के क्षेत्र में अहम कदम उठाए। डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों ने भारतीय उद्योगों को एक नया मुकाम दिया है। भारत अब दुनिया के सबसे बड़े टेक्नोलॉजी हबों में से एक है और वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बना चुका है।

### 3. तकनीकी विकास

आधुनिक भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम, जैसे चंद्रयान और मंगलयान, भारत की वैज्ञानिक क्षमता का प्रतीक हैं। इसके अलावा, भारत में आईटी और सॉफ्टवेयर उद्योगों में भी अभूतपूर्व विकास हुआ है, जिसने भारतीय युवाओं को वैश्विक स्तर पर रोजगार के अवसर दिए हैं।

### 4 शिक्षा और स्वास्थ्य

शिक्षा के क्षेत्र में भारत ने कई सुधार किए हैं। सरकारी और निजी क्षेत्र दोनों में शिक्षा के संस्थान, जैसे IITS और IIMS, के स्तर में वृद्धि हुई है। स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी प्रगति हो रही है, और देश में नई स्वास्थ्य योजनाओं का आरंभ हुआ है, जिससे नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ मिल रही हैं।

### 5. राजनीतिक और प्रशासनिक सुधार

आधुनिक भारत की राजनीति लोकतांत्रिक और पारदर्शी प्रणाली पर आधारित है। भारतीय संविधान ने एक मजबूत लोकतांत्रिक ढांचे की नींव रखी है, जो देश के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करता है। चुनावों की स्वतंत्रता और निष्पक्षता, भारतीय राजनीति की पहचान बन चुकी है।

### 6. नारी सशक्तिकरण

आधुनिक भारत में महिलाओं की स्थिति में भी सुधार आया है। महिलाओं को शिक्षा, कामकाजी क्षेत्र में समान अवसर, और राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी मिल रही है। सरकार की योजनाओं और समाज में महिलाओं के प्रति बदलते दृष्टिकोण ने उन्हें सशक्त बनाने का कार्य किया है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं।

### आधुनिक भारत की चुनौतियाँ

हालांकि भारत ने कई क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियों मौजूद है

- **गरीबी और बेरोजगारीः** देश में बड़ी संख्या में लोग अभी भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। बेरोजगारी की समस्या भी बड़ी चुनौती बनी हुई है।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य में असमानताः** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर में भारी असमानता है।
- **पर्यावरण संकटः** बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग भारत के लिए बड़ी चुनौती बन चुका है।

आधुनिक भारत ने न केवल अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार किया है, बल्कि दुनिया के सामने एक नई पहचान भी बनाई है। हालांकि अभी भी कई समस्याएँ और चुनौतियाँ हैं, लेकिन सही दिशा में प्रयास करने से हम एक समृद्ध, विकसित और सबल राष्ट्र बनने की ओर बढ़ सकते हैं। यदि हम अपने संसाधनों का सही उपयोग करें और एकजुट होकर काम करें, तो भविष्य में भारत दुनिया के सबसे प्रौद्योगिकियों और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध देशों में से एक बन सकता है।

# मेक इन इंडिया

**रमेश गौड़**
कार्यालय, साइबर सलाहकार

"मेक इन इंडिया मुख्य रूप से विनिर्माण उद्योगों पर आधारित है, इसलिये यह विभिन्न कारखानों की स्थापना की मांग करता है। इस पहल के तहत विदेशी कंपनियों को भारत में उत्पादन करने के लिये प्रेरित किया गया है, जिसके कारण भारत के छोटे उद्यमियों पर असर देखने को मिला हैं। चूंकि इस पहल का उद्देश्य विनिर्माण क्षेत्र के तीन प्रमुख कारकों- निवेश, उत्पादन और रोजगार में वृद्धि करना था। अतः इसका मूल्यांकन भी इन्हीं तीनों के आधार पर किया जा सकता है।

निवेश- पिछले पाँच वर्षों में अर्थव्यवस्था में निवेश की वृद्धि दर काफी धीमी रही है। यह स्थिति तब और खराब हो जाती है, जब हम विनिर्माण क्षेत्र में पूंजी निवेश पर विचार करते हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार, अर्थव्यवस्था में कुल निवेश को प्रदर्शित करने वाला सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF) जो कि वर्ष 2013-14 में GDP का 31.3 प्रतिशत था, वर्ष 2017-18 में घटकर 28.6 प्रतिशत हो गया। महत्त्वपूर्ण यह है कि इस अवधि के दौरान कुल निवेश में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी कमोबेश समान ही रही, जबकि निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी 24.2 प्रतिशत से घटकर 21.5 प्रतिशत हो गई।

उत्पादन-औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) विनिर्माण क्षेत्र के उत्पादन में होने वाले परिवर्तन का सबसे बड़ा सूचक है। यदि अप्रैल 2012 से नवंबर 2019 के मध्य औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के ऑकड़ों पर गौर करें तो ज्ञात होता है कि इस दौरान मात्र 2 ही बार डबल डिजिट ग्रोथ दर्ज की गई, जबकि अधिकांश महीनों में यह या तो 3 प्रतिशत से कम थी या नकारात्मक थी। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विनिर्माण क्षेत्र में अभी भी उत्पादन वृद्धि नहीं हो पाई है।

विकास दर-इस्त पहल के तहत विनिर्माण क्षेत्र के लिये काफी महत्वाकांक्षी विकास दर निर्धारित की गई थी। विश्लेषकों का मानना है कि 12-14 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर औद्योगिक क्षेत्र की क्षमता से बाहर है। ऐतिहासिक रूप से भारत के विनिर्माण क्षेत्र ने कभी भी इतनी विकास दर प्राप्त नहीं की है।

उक्त तीनों कारकों के आधार पर 'मेक इन इंडिया' पहल का मूल्यांकन करने पर ज्ञात होता है कि यह पहल इच्छा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाई है।

## भविष्य की रुपरेखा

भारत सरकार को उद्योगों, विशेष रूप से विनिर्माण उद्योगों के विकास के लिये अनुकूल वातावरण बनाने हेतु और अधिक प्रयास करने होंगे।

भारतीय अर्थव्यवस्था देश में मजबूत विकास और व्यापार के समग्र दृष्टिकोण में सुधार और निवेश के संकेत के साथ आशावादी रुप से बढ़ रही है। सरकार के नये प्रयासों एवं पहलों की मदद से निर्माण क्षेत्र में काफी सुधार हुआ है। निर्माण को बढ़ावा देने एवं संवर्धन के लिए शुरु की गई इस योजना से, भारत को महत्वपूर्ण निवेश एवं निर्माण, संरचना तथा अभिनव प्रयोगों के वैश्विक केंद्र के रुप में बदला जा सकता है।

'मेक इन इंडिया' पहल के संबंध में देश एवं विदेशों से सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। जापान, चीन, फ्रांस और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने भारत की विभिन्न औद्योगिक परियोजनाओं में निवेश करने हेतु अपनी दिलचस्पी दिखायी है।

## निर्माण को बढ़ावा देने के लिए लक्ष्य

मध्यम अवधि में निर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर में प्रति वर्ष 12-14% वृद्धि करने का उद्देश्य।

2022 तक देश के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण की हिस्सेदारी में 16% से 25% की वृद्धि।

विनिर्माण क्षेत्र में वर्ष 2022 तक 100 मिलियन अतिरिक्त रोजगार के अवसर पैदा करना।

समावेशी विकास के लिए ग्रामीण प्रवासियों और शहरी गरीबों के बीच उचित कौशल का निर्माण।

भारतीय विनिर्माण क्षेत्र की वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।

विशेष रूप से पर्यावरण के संबंध में विकास की स्थिरता सुनिश्चित करना।

## महत्त्व और लाभ

'मेक इन इंडिया' इंडिया' एक क्रांतिकारी विचार है जिसने निवेश एवं नवाचार को बढ़ावा देने, बौद्धिक संपदा की रक्षा करने और देश में विश्व स्तरीय विनिर्माण बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए प्रमुख नई पहलों की शुरूआत की है। इस पहल ने भारत में कारोबार करने की पूरी प्रक्रिया को आसान बना दिया है। नई प्रक्रिया में गति और पारदर्शिता को काफी बढ़ाया है। अब जब व्यापार करने की बात आती है तो भारत कई विदेशी कंपनियों को आकर्षित करता है। अब भारत ऐसे सभी निवेशकों के लिए आसान और पारदर्शी प्रणाली उपलब्ध करवा रहा है जो स्थिर अर्थव्यवस्था और आकर्षक व्यवसाय के अवसरों की तलाश कर रहे हैं। भारत में निवेश करने के लिए यह सही समय है जब यह देश सभी को विकास और समृद्धि के मामले में बहुत कुछ प्रदान कर रहा है।

## उपसंहार

इस योजना की शुरुआत हुए आज पाँच वर्ष से भी अधिक बीत चुके है और इस दौरान देश का विनिर्माण क्षेत्र एव अर्थव्यवस्था दोनों काफी परिवर्तित हुए हैं। प्रशासनिक मशीनरी के कुशल और शीघ्र स्वस्थ होने पर ही कारोबारी माहौल बनाना संभव हो पाएगा। देखा जाए तो प्रक्रिया और नियामक

मंजूरी के लिये भारत में बहुत कठिनाइयों है। यह विदेशी निवेश में बाधा उत्पन्न करता है इसलिये विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिये एक संतुलित पर्यावरण की आवश्यकता है, जिसमें पारदर्शी कानून, नियमों में स्थिरता होना जरूरी है। इस पर ठोस दिशा-निर्देशों के साथ उचित निर्णय लेने की जरूरत है। भूमि अधिग्रहण भारत में एक बड़ा मुद्दा है। यह निवेशकों के लिये निवेश से विमुख होने का एक बड़ा कारण है।

भूमि अधिग्रहण कानून, सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच राजनीतिक मुद्दा बन गया है। हाल ही के भूमि अधिग्रहण बिल में संशोधन पर, अवसरवादी राजनीति, संवेदनशील मुद्दे हावी हो गए। निवेश बढ़ाने के लिये भूमि अधिग्रहण की बाधाओं को दूर करने के लिये उचित परामर्श प्रक्रिया की जरूरत है।

श्रमिकों का भी विनिर्माण में अपना महत्व है। भारत में निवेश करने के लिये निवेशक पुरातन श्रम कानूनों को एक बाधा रूप में देखते हैं। श्रम के विषय पर अक्सर विविध हितधारकों में राजनीतिक आधार के साथ एक संकीर्ण कदम उठाने की प्रवृत्ति है। इसलिये विनिर्माण क्षेत्र के विकास के लिये उद्योग और श्रमिकों के अनुकूल कानून बनाने की जरूरत है।

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हो,
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धाराएं प्रतिकूल न हो।

# विकसित भारत @ 2047

**रेखा**
कार्यालय, महानिदेशक (प्रौद्योगिकी प्रबंधन)

## परिचय:

भारत एक विविधता से भरा देश, जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता हैं, 2047 में एक विकसित राष्ट्र के रुप में उभरेगा। विकसित भारत का अर्थ हैं विकसित भारत 2047, 2047 में अपनी 100 वीं स्वतंत्रता तक देश को एक विकसित इकाई में बदलने के सरकार के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता हैं। विकसित भारत 2047, स्वतंत्रता के 100वें वर्ष यानी 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने का विजन हैं। भारत अपने इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। 21वीं सदी भारत की सदी होगी, क्योंकि देश अपनी क्षमताओं के प्रति आश्वस्त होकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है। यह आज दुनिया की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी, क्योंकि इसकी जीडीपी 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर (आईएमएफ का अनुमान) को पार कर जाएगी। 2047 तक, भारत एक विकसित राष्ट्र की सभी विशेषताओं के साथ 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। यह एक विकसित भारत होगा। यह एक ऐसा देश होगा जहां शिक्षा, स्वास्थय, अर्थव्यवस्था, तकनीकी, और पर्यावरण में नई ऊंचाईयों तक जाएगा।

## शिक्षा में विकास:

2047 में भारत शिक्षा के क्षेत्र में नए युग में प्रवेश करेगा। डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास पर जोर दिया जाएगा, शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जाएगा, जिससे बच्चों को उच्च शिक्षा मिल सके। पिछले दशक में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की संख्या में कई गुना वृद्धी हुई है और भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली आज 1,113 विश्वविद्यालयों/विश्वविद्यालय-स्तरीय संस्थानों, 43,796 कॉलेजों और 4.33 करोड़ छात्रों के साथ 11,296 स्टैंड-अलोन संस्थानों का दावा करती है। उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) लगातार बढ़कर 28.4 हो गया है।

## स्वास्थ्य में विकास:

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का सभी मोर्चों पर व्यापक विस्तार हुआ है। 2022 में 1,56,000 आयुष्मान भारत केंद्र थे, जो समुदायों को उनके घरों के करीब प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करते थे। लगभग 13.97 लाख आंगनवाड़ी केंद्रों का विशाल नेटवर्क लगभग 10 करोड़ बच्चों को प्रारंभिक

बचपन, देखभाल और शिक्षा प्रदान करता है। शिशु मृत्यु दर (आईएमआर), मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) और कम वजन वाले बच्चों के प्रतिशत जैसे विभिन्न स्वास्थ्य संकेतकों में नाटकीय रूप से गिरावट आई है। 2018 में शुरू किए गए पोषण मिशन के तहत 10 करोड़ से अधिक महिलाओं और बच्चों को कवर किया गया है। मिशन इंद्रधनुष से तहत मजबूत टीकाकरण कार्यक्रमों के कारण पूर्ण टीकाकरण कवरेज 62% से बढ़कर 81% हो गया है। आगे बढ़ते हुए, हमें स्वास्थ्य सेवा को वैश्विक स्तर तक बढ़ाने की जरूरत है। भारत स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करेगा, जिससे प्रत्येक नागरिक को गुणवता पूर्वक स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें। स्वच्छता और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा दिया जाएगा जिससे लोगों का जीवन स्तर सुधरे।

### अर्थ व्यवस्था में विकास:

एक विकसित भारत की अर्थव्यवस्था लचीली और मजबूत होनी चाहिए जो अपने सभी नागरिकों को अवसर और उच्च जीवन स्तर प्रदान कर सके। 2047 में, भारत की अर्थव्यवस्था एक नये सत्र पर पहुंच जाएगी। उद्योगों का विकास और रोजगार पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जिससे देश की आर्थिक विकास दर में वृद्धि होगी।

### ग्रामीण क्षेत्रों में विकास:

गामीण भारत भी बदल रहा है। हम बिजली, पेयजल, बैंक खाते, सड़कें, मोबइल कनेक्टिविटी और कई अन्य क्षेत्रों में सार्वभौमिक कवरेज हासिल करने के करीब है या पहले ही हासिल कर चुके हैं। ग्रामीण भारत को अब शहरी भारत के समान लाभ मिलने लगा है। हमने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना और मनरेगा के माध्यम से भी गरीबों को मजबूत किया है और उन्हें संकट से बचाया है। प्रधानमंत्री आवास योजना सभी को आवास उपलब्ध करा रही है।

### तकनीकी में विकास:

भारत तकनीकी के क्षेत्र में एक नए युग में प्रवेश करेगा। डिजिटल इंडिया और साइबर सुरक्षा पर जोर दिया जाएगा, जिससे देश की डिजिटल सुरक्षा और साइबर सुरक्षा में वृद्धि होगी। हमने जो डी पी आई स्थापित किया हैं उसका तीव्र गति से विस्तार किया गया हैं जिससे से भारत डिजिटलीकरण में विश्व में अग्रणी बन गया हैं। डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी सहायक नीतियों के साथ मिलकर युवा भारत की रचनात्मक और नवाचार की क्षमता युवाओं को नौकरी निर्माता बनने में सक्षम बना रही है। भारत 100 से अधिक यूनिकॉर्न का घर है, जिसका कुल मूल्यांकन 340 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और यह दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम के रूप में उभरा है। हालाँकि ये सभी टेकऑफ़ क्षण की ओर इशारा करते हैं जिसमें हम अभी हैं, सबसे महत्वपूर्ण हमारा जनसांख्यिकीय लाभांश है। 144 करोड़ की आबादी के साथ, भारत 29 वर्ष की औसत आयु के साथ सबसे युवा देशों में से एक है।

### पर्यावरण में विकास:

भारत की जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनो को संरक्षित करने के लिए एक विकसित भारत में स्वच्छ और हरित वातावरण होना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केन्द्रीत किया जाएगा, जिससे देश की पर्यावरण सुरक्षा में वृद्धि होगी। जलवायु परिवर्तन और स्वच्छ उर्जा पर ध्यान दिया जाएगा, जिससे देश का भविष्य सुरक्षित हो।

### भारत की वैश्विक स्थिति

एक विश्व नेता के रूप में, जी 20 की हमारी अध्यक्षता में दुनिया ने भारत की कूटनीतिक और संगठात्मक क्षमताओं का सम्मान किया। भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ, अंतर्राष्ट्रीय निवेशक बड़ी संख्या में भारत आ रहे हैं। कई मायनों में भारत दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।

### निष्कर्ष:

ये भारत का अमृत काल है। भारत कई मोर्चों पर बदल चुका है और आगे बढ़ने के लिए तैयार है। विकसित भारत की कल्पना को साकार करने के लिए, हमें अपने सामूहिक प्रयासों को एक जुट करना होगा और अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना होगा जिससे कि उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होगा।

क्या हार में, क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
कर्तव्य पथ पर जो भी मिला
यह भी सही, वो भी सही
वरदान नहीं माँगूँगा
हो कुछ पर हार नहीं मानूँगा।

**– अटल बिहारी वाजपेयी**

# ऑनलाइन शिक्षा बनाम ऑफलाइन शिक्षा

**अरुण चौधरी**
कार्यालय, महानिदेशक (प्रौद्योगिकी प्रबंधन)

## भूमिका:

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन को दिशा देने का सबसे सशक्त माध्यम है। यह केवल डिग्री या परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तित्व, सोच और जीवन मूल्यों को गढ़ने की प्रक्रिया है। बीते वर्षों में, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के बाद, शिक्षा के स्वरूप में बड़ा बदलाव देखा गया है। जहां पहले शिक्षा मुख्यतः विद्यालय या कॉलेज जाकर प्राप्त की जाती थी, वहीं अब डिजिटल माध्यम से यानी ऑनलाइन शिक्षा भी एक बड़ा विकल्प बन चुकी है। इन दोनों ही प्रणालियों के लाभ और हानि को समझना आज के युग में अत्यंत आवश्यक है।

## ऑनलाइन शिक्षा: एक तकनीकी क्रांति

ऑनलाइन शिक्षा में छात्र मोबाइल, लैपटॉप या कंप्यूटर के माध्यम से इंटरनेट से जुड़कर कहीं भी और कभी भी पढ़ सकते हैं। यह प्रणाली लचीलापन, सुविधा और नवीनता के कारण तेज़ी से लोकप्रिय हुई है।

### लाभ:

1. **समय और स्थान की आज़ादी**: छात्र कहीं भी बैठकर पढ़ सकते हैं। इससे समय की बचत होती है।
2. **कम लागत:** कई बार ऑनलाइन कोर्स मुफ्त में या बहुत कम शुल्क में उपलब्ध होते हैं। परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए YouTube जैसे प्लेटफॉर्म अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।
3. **प्रौद्योगिकी ज्ञान में वृद्धि**: ऑनलाइन शिक्षा के कारण छात्र तकनीक के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं।
4. **रिकॉर्डेड क्लासेस:** छात्र किसी भी क्लास को बार-बार देख सकते हैं, जिससे विषय की गहराई से समझ हो पाती है।

### सीमाएँ:

1. **सीधे संवाद का अभाव**: शिक्षक से सीधे संवाद की सुविधा सीमित होती है, जिससे तात्कालिक समस्याओं का समाधान कठिन होता है।
2. **डिजिटल डिवाइड:** गांव या कमजोर वर्ग के छात्रों को उपकरण, इंटरनेट या बिजली की समस्या का सामना करना पड़ता है।

3. **ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई**: घर का वातावरण पढ़ाई के अनुकूल न होने पर पढ़ाई में मन नहीं लग पाता।
4. **सामाजिक विकास में बाधा**: सहपाठियों और शिक्षकों के साथ होने वाले दैनिक संवाद और गतिविधियों की कमी से सामाजिक गुणों का विकास रुकता है।

## ऑफलाइन शिक्षा: पारंपरिक प्रणाली

ऑफलाइन शिक्षा में छात्र विद्यालय या कॉलेज जाकर प्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह प्रणाली वर्षों से प्रचलित है और शिक्षा का मूल रूप मानी जाती है।

### लाभ:

1. **प्रत्यक्ष संवाद:** शिक्षक और छात्र आमने-सामने होते हैं जिससे त्वरित संप्रेषण और संशय समाधान संभव होता है।
2. **अनुशासित वातावरण:** विद्यालय या कॉलेज में तय समय, अनुशासन और नियमों का पालन होता है, जिससे छात्रों में नियमितता आती है।
3. **सामाजिक विकास:** समूहों में अध्ययन, प्रतियोगिताएँ, खेलकूद आदि से छात्रों के व्यक्तित्व और नेतृत्व गुणों का विकास होता है।
4. **समग्र विकास:** ऑफलाइन शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहती; यह छात्र के मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक विकास में भी सहायक होती है।

## ऑफलाइन शिक्षा से जुड़ा आर्थिक बोझ

जब कोई छात्र पढ़ाई के लिए अपने घर से दूर किसी अन्य शहर में जाता है, तो उसे केवल कॉलेज फीस ही नहीं, बल्कि कई अन्य अतिरिक्त खर्चों का सामना करना पड़ता है:

1. **किराया:** शहरों में रहने के लिए पीजी या किराए का कमरा लेना पड़ता है, जिसकी मासिक लागत ₹5000 से ₹15000 तक हो सकती है।
2. **भोजन:** छात्र या तो मेस में खाते हैं या खुद खाना बनाते हैं। महीने का खर्च ₹3000 से ₹6000 तक हो सकता है।
3. **आवागमन:** कॉलेज आने-जाने में ऑटो, बस या मेट्रो का खर्च होता है, जो शहर पर निर्भर करता है। औसतन ₹1000-₹2000 प्रति माह।
4. **अन्य खर्चे:** बिजली, इंटरनेट, किताबें, मोबाइल रिचार्ज, कपड़े, चिकित्सा आदि पर भी हर माह ₹1000-₹3000 खर्च हो सकता है।

इन सबको मिलाकर देखा जाए तो एक छात्र को **प्रति माह ₹10,000 से ₹20,000** का खर्च आता है, जो सामान्य या निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए काफी बड़ा आर्थिक बोझ बन सकता है।

## दोनों प्रणालियों की तुलना:

| बिंदु | ऑनलाइन शिक्षा | ऑफलाइन शिक्षा |
|---|---|---|
| सुविधा | अत्यधिक लचीलापन | समय और स्थान नियत |
| लागत | अपेक्षाकृत कम | अधिक (भोजन, किराया, आवागमन) |
| संवाद | सीमित | प्रत्यक्ष और प्रभावशाली |
| संसाधन | डिजिटल सामग्री | भौतिक और अनुभव आधारित |
| सामाजिक विकास | सीमित | समग्र विकास संभव |
| अनुशासन | स्व-प्रेरित | संस्था द्वारा नियंत्रित |

## वर्तमान संदर्भ में संतुलन की आवश्यकता

वर्तमान समय में केवल एक ही प्रणाली को सर्वोत्तम मानना उचित नहीं होगा। तकनीकी विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को देखते हुए हाइब्रिड मॉडल (ऑनलाइन + ऑफलाइन) अधिक उपयुक्त विकल्प के रूप में उभर रहा है। इससे छात्रों को तकनीकी ज्ञान भी मिलेगा और प्रत्यक्ष शिक्षण का अनुभव भी बना रहेगा।

सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि डिजिटल शिक्षा हर वर्ग के छात्र तक पहुँचे। इसके लिए इंटरनेट की पहुंच सस्ती डिवाइसेज़ और शिक्षकों को डिजिटल प्रशिक्षण देना अनिवार्य होगा।

## निष्कर्ष

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को जीवन के लिए तैयार करना है न कि केवल डिग्री प्राप्त कराना। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही प्रणालियाँ अपनी-अपनी जगह उपयोगी हैं। यदि आर्थिक पक्ष की बात करें तो ऑनलाइन शिक्षा उन छात्रों के लिए एक बड़ी राहत है जो दूसरे शहर में रहकर पढ़ाई नहीं कर सकते। वहीं, ऑफलाइन शिक्षा सामाजिक और व्यवहारिक दृष्टि से अत्यंत प्रभावी है।

आवश्यकता इस बात की है कि दोनों के संतुलन से ऐसा शिक्षा मॉडल तैयार किया जाए, जो सस्ता, सुलभ, गुणात्मक और समावेशी हो। तभी भारत का हर छात्र सशक्त और आत्मनिर्भर बन पाएगा।

# आत्मनिर्भर भारत

**सुशील कुमार**
कार्यालय, महानिदेशक (संसाधन एवं प्रबंधन)

आत्मनिर्भर भारत आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। भारत एक प्राचीन और समृद्ध संस्कृति वाला देश है, लेकिन लंबे समय तक विदेशी आक्रमणों और औपनिवेशिक शासन के कारण भारत की आर्थिक और औद्योगिक संरचना कमजोर हो गई। आजादी के बाद भारत ने कई क्षेत्रों में प्रगति की, लेकिन वैश्विक प्रतिस्पर्धा और तेजी से बदलती परिस्थितियों के कारण हमें आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता और अधिक महसूस होने लगी। इसी सोच के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की।

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है - देश का आर्थिक, औद्योगिक और तकनीकी रुप से इतना मजबूत और सक्षम बनना कि अपनी आवश्यकताओं के लिए विदेशों पर निर्भर न रहना पड़े। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है देश के अंदर उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देना, स्थानीय उद्योगों को मजबूत करना और रोजगार के अवसर बढ़ाना। इस अभियान का मूल मंत्र है "लोकल के लिए वोकल" जिसका अर्थ है कि हमें स्थानीय उत्पादों का उपयोग करना चाहिए और उनके प्रचार-प्रसार में सहयोग देना चाहिए।

## आत्मनिर्भर भारत के पांच स्तंभ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान को पाँच मुख्य स्तंभों पर आधारित बताया है -

1. अर्थव्यवस्थाः- नई और सशक्त अर्थव्यवस्था जो प्रतिस्पर्धा में टिक सके।
2. इंफ्रास्ट्रक्चरः- आधुनिक और मजबूत बुनियादी ढांचा।
3. तकनीकी प्रणालीः- डिजिटल और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा।
4. जनसंख्या एवं डेमोग्राफीः- देश की युवा शक्ति का उपयोग।
5. मांग और आपूर्तिः- स्थानीय उत्पादों की मांग और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना।

## आत्मनिर्भर भारत का महत्व

आत्मनिर्भर से देश आर्थिक रूप से मजबूत बनता है और विदेशी बाजारों पर निर्भरता कम होती है। यह अभियान छोटे उद्योगों, कुटीर उद्योगों और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करता है। इसके माध्यम से न केवल रोजगार के अवसर पैदा होते हैं, बल्कि भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी सुरक्षित रहता है।

आत्मनिर्भर बनने से भारत दुनिया के लिए एक मजबूत व्यापारिक साझेदार बन सकता है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

## चुनौतियाँ और समाधान

`हालांकि आत्मनिर्भर भारत की राह आसान नहीं है। इसके सामने कई चुनौतियाँ है, जैसे कि उन्नत तकनीक की कमी, पर्याप्त निवेश की आवश्यकता, शिक्षा और कौशल विकास की कमी, तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार ने "मेक इन इंडिया", स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और स्किल इंडिया जैसी योजनाएँ शुरू की हैं।

## निष्कर्ष

आत्मनिर्भर भारत केवल एक आर्थिक नीति नहीं है, बल्कि यह एक मानसिकता है जो हमें स्वदेशी उत्पादों और नवाचार को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करती है। यदि हम सभी मिलकर स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देंगे, नई तकनीक अपनाएँगे और अपने उद्योगों को मजबूत बनाएँगे, तो भारत निश्चित रूप से एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनकर उभरेगा।

ज़िंदगी के...
कमरों में अँधेरे
लगाता है चक्कर
कोई एक लगातार;
आवाज़ पैरों की देती है सुनाई
बार-बार... बार-बार

**– गजानन माधव मुक्तिबोध**

टूटी हुई बिखरी हुई चाय
की दली हुई पाँव के नीचे
पत्तियाँ
मेरी कविता
बाल, झड़े हुए, मैले से रूखे, गिरे हुए, गर्दन से फिर भी
चिपके
...कुछ ऐसी मेरी खाल,
मुझसे अलग-सी, मिट्टी में
मिली-सी
दोपहर बाद की धूप-छाँह में खड़ी इंतज़ार की ठेलेगाड़ियाँ
जैसे मेरी पसलियाँ...
ख़ाली मेरी पसलियाँ...
ख़ाली बोरे सूजों से रफ़ू किए जा रहे हैं... जो
मेरी आँखों का सूनापन हैं
ठंड भी एक मुसकराहट लिए हुए है
जो कि मेरी दोस्त है।
कबूतरों ने एक ग़ज़ल गुनगुनाई...
मैं समझ न सका, रदीफ़-क़ाफ़िए क्या थे,
इतना ख़फ़ीफ़, इतना हलका, इतना मीठा
उनका दर्द था।
आसमान में गंगा की रेत आईने की तरह हिल रही है।
मैं उसी में कीचड़ की तरह सो रहा हूँ
और चमक रहा हूँ कहीं...
न जाने कहाँ।

**– शमशेर बहादुर सिंह**

# तकनीक

**करो वैज्ञानिक तुम अन्वेषित,**
**ऐसा कोई ज्ञान,**
**मनुज स्वभाव की हो पाए,**
**सुनिश्चित पहचान**

# अनुभव और AI-समर्थित PMIS 2.0 की दिशा में एक प्रस्ताव

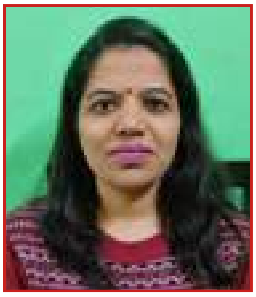

**पल्लवी वार्ष्णेय**
योजना एवं समन्वय निदेशालय

## 1. भूमिका: समयबद्ध नवाचार और निष्पादन – रक्षा तैयारियों की आधारशिला

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता का आधार है, जो 40 से अधिक प्रयोगशालाओं के माध्यम से मिसाइल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और NBC सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में नवाचार करता है।

हाल के वर्षों में, परियोजना देरी, संसाधन असंतुलन और डेटा-साइलो जैसी चुनौतियाँ उभरकर सामने आई हैं। 2023 में CFEES, DIPAS, INMAS और ISSA जैसी प्रयोगशालाओं में किए गए पायलट अध्ययन, साथ ही पूर्ण और चल रही परियोजनाओं के विश्लेषण से इन समस्याओं की पुष्टि हुई।

यह लेख उन अनुभवों से प्राप्त प्रमुख शिक्षाओं को साझा करता है और एक AI-सक्षम परियोजना प्रबंधन सूचना प्रणाली (PMIS 2.0) की रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जो डीआरडीओ की परियोजना निष्पादन क्षमता को अधिक कुशल, समन्वित और नवाचारोन्मुख बनाएगा।

## 2. अनुभव से प्राप्त प्रमुख शिक्षाएँ:

पायलट अध्ययन, पूर्ण और चालू परियोजनाओं ने हमें डीआरडीओ की प्रणालीगत कमियों को समझने और सुधार के अवसरों को पहचानने में मदद की है।

### 2.1 परियोजना देरी: समयसीमा की चुनौती

पायलट अध्ययन में पाया गया कि 70% परियोजनाएँ निर्धारित समय से पीछे थीं। उदाहरणतः एक मिसाइल परियोजना में उपकरण आपूर्ति की देरी से 8 माह का विलंब और 15% लागत वृद्धि हुई। यह देरी संसाधन आवंटन और समन्वय की कमियों का परिणाम थी।

**शिक्षा:** वास्तविक समय निगरानी और स्वचालित ट्रैकिंग प्रणाली समय और लागत दोनों की बचत कर सकती है।

### 2.2 संसाधन असंतुलन: वैज्ञानिकों पर कार्यभार का दबाव

2015 से 2022 के बीच वैज्ञानिकों की संख्या में 10% की कमी आई, जबकि परियोजनाओं की संख्या में 67% की वृद्धि हुई। इससे प्रति परियोजना वैज्ञानिकों की संख्या 37 से घटकर 10 रह गई। एक बायोसेंसर परियोजना में 8 वैज्ञानिकों पर अत्यधिक कार्यभार होने के कारण डिज़ाइन त्रुटियाँ उत्पन्न हुईं।

**शिक्षा:** प्राथमिकता आधारित कार्य आवंटन और वैज्ञानिकों के संतुलित कार्यभार से नवाचार और गुणवत्ता में सुधार होगा।

### 2.3 पुनरावृत्ति: डेटा-साइलो का प्रभाव

CFEES और INMAS में NBC बायोसेंसिंग तकनीक पर बिना समन्वय के समानांतर अनुसंधान हुआ, जिससे 12 महीने और 25% अतिरिक्त संसाधन व्यर्थ हुए। डेटा-साइलो ने सहयोग को बाधित किया।

**शिक्षा:** एक केंद्रीकृत डेटा मंच दोहराव को रोकेगा और संसाधनों की बचत करेगा।

### 2.4 प्रक्रियात्मक जटिलता: अनुमोदन और क्रय में अड़चनें

एक जैव-रक्षा परियोजना में अनुमोदन प्रक्रिया में बार-बार संशोधन के कारण 9 महीने की देरी और 18% लागत वृद्धि हुई। मैनुअल प्रक्रियाएँ और क्रय में देरी इसकी मुख्य वजह थीं।

**शिक्षा:** डिजिटल और मानकीकृत प्रणाली प्रक्रिया को सरल बनाकर दक्षता में वृद्धि करेगी।

### 2.5 निगरानी की कमी: जोखिम पहचान में विलंब

वास्तविक समय निगरानी के अभाव में कई परियोजनाओं में जोखिमों की देर से पहचान हुई। एक परियोजना के अंतिम चरण में तकनीकी खामी सामने आने से लागत में 20% की वृद्धि हुई।

**शिक्षा:** AI-सक्षम स्वचालित जोखिम स्कोरिंग प्रणाली समय रहते सुधारात्मक निर्णय लेने में सहायक होगी।

## 3. विश्लेषण: प्रमुख बाधाएँ और प्रणाली की सीमाएँ

इन चुनौतियों ने डीआरडीओ की परियोजना की दक्षता पर प्रभाव डाला। नीचे दी गई तालिका प्रमुख अड़चनों और सीमाओं को प्रस्तुत करती है।

| बाधा | विवरण | प्रभाव | वर्तमान प्रणाली की सीमा |
|---|---|---|---|
| **उच्च कार्यभार** | वैज्ञानिकों पर एक साथ कई परियोजनाओं का दबाव | डिज़ाइन त्रुटियाँ; सुधार में विलंब | कार्य प्राथमिकता निर्धारण प्रणाली का अभाव |
| **डेटा-साइलो और पुनरावृत्ति** | समन्वय की कमी से दोहराव | लागत में वृद्धि; समय की हानि | साझा डेटा मंच और सहयोग प्रणाली का अभाव |
| **प्रक्रियात्मक जटिलता** | अनुमोदन और क्रय में बार-बार संशोधन | 18% लागत वृद्धि और सामग्री आपूर्ति में विलंब | मैनुअल प्रक्रियाएँ; स्वचालित ट्रैकिंग का अभाव |
| **निष्क्रिय निगरानी** | जोखिम देर से पहचाने जाते हैं | त्रुटियों के कारण अंतिम चरण में लागत वृद्धि | वास्तविक समय निगरानी और चेतावनी प्रणाली नहीं |

**सार:** मैनुअल प्रक्रियाएँ, असंगठित डेटा और समन्वय की कमी परियोजना दक्षता को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं।

## 4. समाधान: AI-समर्थित PMIS 2.0

PMIS 2.0 डीआरडीओ की जटिल परियोजनाओं को व्यवस्थित करेगा। नीचे दी गई तालिका इसकी विशेषताओं को दर्शाती है।

| विशेषता | विवरण | लाभ | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| केंद्रीकृत डेटाबैंक | सभी प्रयोगशालाओं के डेटा का एकीकृत मंच | दोहराव में कमी; बेहतर सहयोग; डेटा सुरक्षा | INMAS का बायोसेंसर CFEES में पुनः उपयोग |
| वास्तविक समय निगरानी | कलर-कोडेड डैशबोर्ड और AI-आधारित चेतावनी | समय पर कार्रवाई से देरी और लागत में कमी | उपकरण आपूर्ति में 10% विचलन पर तुरंत अलर्ट |
| पुनरावृत्ति रोकथाम | पहले विकसित तकनीकों की AI द्वारा पहचान | संसाधनों की बचत; दोहराव में कमी | पूर्व विकसित रेडार सर्किट के पुनः उपयोग से लागत में 15% की बचत |
| प्रोटोटाइप ट्रैकिंग | उत्पादन चरण तक की स्वचालित निगरानी | समयसीमा का पालन और शीघ्र समस्या पहचान | रेडार उत्पादन में 3 महीने की बचत |
| AI निर्णय समर्थन | कार्यभार संतुलन और जोखिम पूर्वानुमान | संसाधनों का अनुकूलन; प्रभावी निर्णय | "वैज्ञानिक कार्यभार 90% से अधिक, नई परियोजना रोकें" |

## 5. कार्यान्वयन रणनीति

| रणनीति | विवरण | लाभ | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| चरणबद्ध रोलआउट | चार प्रयोगशालाओं में पायलट के बाद पूर्ण विस्तार | प्रारंभिक समस्याओं की पहचान और समाधान | पायलट में देरी में 30% की कमी |
| प्रशिक्षण | त्रैमासिक AI और डेटा विश्लेषण मॉड्यूल | उपयोगकर्ताओं की सक्षमता में वृद्धि | NBC परियोजना में 20% समय की बचत |
| प्रोत्साहन और संस्कृति परिवर्तन | डेटा अपडेट और जोखिम प्रबंधन के लिए पुरस्कार | भागीदारी और नवाचार को प्रोत्साहन | INMAS और CFEES के संयुक्त शोध से 25% संसाधन की बचत |

## 6. निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

पायलट अध्ययन और परियोजनाओं के विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि परियोजना देरी, डेटा-साइलो, और प्रक्रियात्मक जटिलताएँ डीआरडीओ की निष्पादन क्षमता को बाधित करती हैं।

AI-समर्थित PMIS 2.0 प्रणाली न केवल इन बाधाओं का समाधान प्रस्तुत करती है, बल्कि उसे लागू कर DRDO सहयोग, गति और पारदर्शिता के नए मानक स्थापित कर सकता है।

### अनुशंसाएँ:

1. **PMIS 2.0 लागू करें:** चार प्रमुख प्रयोगशालाओं में पायलट के बाद संगठन-व्यापी विस्तार।
2. **प्रशिक्षण शुरू करें:** AI और डेटा एनालिटिक्स पर त्रैमासिक मॉड्यूल के माध्यम से क्षमता निर्माण।
3. **सहयोग संस्थागत करें:** एक केंद्रीकृत डेटा मंच की स्थापना से दोहराव कम हो और नवाचार बढ़े।
4. **जोखिम प्रबंधन स्वचालित करें:** AI-आधारित जोखिम स्कोरिंग प्रणाली लागू की जाए।

### निष्कर्ष:

**"PMIS 2.0 डीआरडीओ को डेटा-संचालित उत्कृष्टता की ओर ले जाएगा, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा सशक्त होगी और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक ठोस कदम सुनिश्चित होगा।**

# सरकारी दफ्तरों का डिजीटलीकरण - भारत एक नई दिशा की ओर

**अंकुर शास्ता**
कार्मिक निदेशालय

## परिचय

कभी सरकारी दफ्तरों की सोचते ही हमारे दिमाग में लंबी कतारें, फाइलों के ढेर, बाबुओं की मेहरबानी और धीमी रफ्तार का ख्याल आता था। लेकिन अब भारत बदल रहा है – साथ ही बदल रहे हैं सरकारी दफ्तर भी। आजकल फाइलें डिजिटल हो रही हैं, काम ऑनलाइन हो रहा है और जनता को सेवाएं मोबाइल ऐप्स के ज़रिए मिल रही हैं। यह सब संभव हुआ है डिजिटलीकरण (Digitalization) की वजह से। सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, और कई तकनीकी योजनाओं के ज़रिए अपने कामकाज को कंप्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल से जोड़ना शुरू किया है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि अब सरकारी सेवाएं आम आदमी की पहुंच में हैं – तेज़, पारदर्शी और आसान।

## डिजिटलीकरण क्या होता है?

डिजिटलीकरण का मतलब होता है किसी भी चीज़ को कंप्यूटर और इंटरनेट के ज़रिए डिजिटल फॉर्म में लाना। जैसे पहले जन्म प्रमाण पत्र लेने के लिए कागज़ की फॉर्म भरनी पड़ती थी, अब यह ऑनलाइन हो सकता है। पहले राशन कार्ड या पासपोर्ट के लिए कई दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते थे, अब बहुत कुछ एक क्लिक में हो जाता है। सरकारी दफ्तरों में इसका मतलब है:

- कागज़ी फाइलों की जगह कंप्यूटर फाइलें
- आवेदन और शिकायतें ऑनलाइन
- सेवाओं की जानकारी वेबसाइट और ऐप्स पर
- पेमेंट ऑनलाइन
- काम का ट्रैक रिकॉर्ड और पारदर्शिता

## पहले सरकारी दफ्तर कैसे काम करते थे?

कुछ साल पहले तक, सरकारी दफ्तरों में एक फाइल को एक टेबल से दूसरी टेबल तक पहुँचने में हफ्तों लग जाते थे। जनता को बार-बार चक्कर लगाने पड़ते थे, और कई बार जानकारी ही नहीं मिलती थी कि फाइल कहाँ अटकी है। कर्मचारियों पर भी काम का बोझ ज़्यादा था, लेकिन टेक्नोलॉजी की कमी से सब कुछ धीमा था। लोगों को निम्न परेशानियों का सामना करना पड़ता था:

- ज़रूरी कागज़ खो जाना या गुम हो जाना

- हर काम के लिए अलग-अलग फॉर्म
- बाबू से मिलना, सिफारिश ढूँढना
- काम की स्थिति न पता चलना
- भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की संभावनाएं

## डिजिटलीकरण से क्या बदला?

जैसे-जैसे सरकारी दफ्तरों में कंप्यूटर और इंटरनेट का इस्तेमाल बढ़ा, वैसे-वैसे कामकाज की शैली भी बदली। अब सरकारी सेवाएं मोबाइल और वेबसाइट के ज़रिए घर बैठे मिलने लगी हैं। लोग ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं, दस्तावेज़ डाउनलोड कर सकते हैं, और अपने काम की स्थिति भी ट्रैक कर सकते हैं।

## कुछ अहम बदलाव:

- **ऑनलाइन आवेदन और सेवाएं** - जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस आदि अब ऑनलाइन मिलते हैं।
- **ई-ऑफिस** - कई मंत्रालयों और विभागों ने फाइलों का आदान-प्रदान अब डिजिटल रूप में करना शुरू कर दिया है।
- **डिजिटल दस्तावेज़** - DigiLocker जैसे प्लेटफॉर्म के ज़रिए अब नागरिक अपने दस्तावेज़ क्लाउड में रख सकते हैं।
- **ऑनलाइन पेमेंट** - बिजली बिल, पानी का बिल, टैक्स, पेंशन, और सब्सिडी जैसी चीज़ें अब ऑनलाइन भरी और ट्रैक की जा सकती हैं।

## आम जनता को क्या फायदे हुए?

डिजिटलीकरण का सबसे बड़ा फायदा आम आदमी को हुआ है। अब सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने की ज़रूरत कम हो गई है, काम तेज़ हुआ है और पारदर्शिता बढ़ी है।

## मुख्य फायदेः

1. **समय की बचत** - अब घंटों लाइन में खड़े होने की ज़रूरत नहीं। मोबाइल से मिनटों में काम हो जाता है।
2. **भ्रष्टाचार में कमी** - जब काम ऑनलाइन होता है, तो बिचौलियों और रिश्वत का दखल घटता है।
3. **पारदर्शिता** - अब लोग ट्रैक कर सकते हैं कि उनका आवेदन कहाँ पहुँचा है।
4. **सभी को समान सेवा** - चाहे शहर हो या गाँव, हर जगह एक जैसी डिजिटल सेवा मिलती है।
5. **आसान जानकारी** - अब योजनाओं, नियमों और दस्तावेजों की जानकारी वेबसाइट और ऐप्स पर उपलब्ध है।

## सरकारी योजनाएं और डिजिटल पहलें

भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में कई ऐसी योजनाएं और प्लेटफॉर्म शुरू किए हैं जो सरकारी सेवाओं को डिजिटल बना रहे हैं:

1. **डिजिटल इंडिया (Digital India)** - यह 2015 में शुरू हुई एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसका लक्ष्य है भारत को "डिजिटल रूप से सशक्त समाज" बनाना।
2. **उमंग ऐप (UMANG App)** - यह एक मोबाइल ऐप है जिसमें 100+ सरकारी सेवाएं एक ही जगह पर मिलती हैं।
3. **डिजीलॉकर (DigiLocker)** - एक डिजिटल लॉकर है जिसमें आप अपने आधार, मार्कशीट, ड्राइविंग लाइसेंस, वोटर आईडी आदि को ऑनलाइन सेव कर सकते हैं।

   भारत में सरकारी दफ्तरों का डिजिटलीकरण - एक नई दिशा की ओर
4. **सीएससी (CSC - Common Service Centers)** - गाँवों में डिजिटल सेवाओं को पहुँचाने के लिए सरकार ने CSC केंद्र बनाए हैं।
5. **आधार और मोबाइल लिंक सेवाएं** - अब बहुत सी सरकारी सेवाओं को आधार और मोबाइल से जोड़ा गया है जिससे पहचान की प्रक्रिया तेज़ और आसान हो गई है।

## अब भी क्या चुनौतियाँ हैं?

हालांकि डिजिटलीकरण ने सरकारी कामकाज में क्रांति ला दी है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ बाकी हैं:

- **इंटरनेट की कमी** - कई गाँवों में अब भी तेज़ इंटरनेट की सुविधा नहीं है।
- **डिजिटल साक्षरता** - बहुत से लोगों को अब भी मोबाइल या कंप्यूटर चलाना नहीं आता।
- **साइबर सुरक्षा** - डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी की घटनाएँ बढ़ी हैं।
- **तकनीकी खराबियाँ** - कभी-कभी वेबसाइट या ऐप्स काम नहीं करते, जिससे जनता को परेशानी होती है।

## भविष्य की दिशा

डिजिटलीकरण की दिशा में भारत ने एक लंबा रास्ता तय किया है, लेकिन यह सफर अभी पूरा नहीं हुआ है। जैसे-जैसे तकनीक और लोगों की समझ बढ़ेगी, सरकारी सेवाएं और भी सरल, तेज़ और प्रभावशाली होंगी। भविष्य में हम उम्मीद कर सकते हैं:

- हर सेवा मोबाइल पर उपलब्ध हो
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और चैटबॉट्स से सेवा
- हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सेवाएं
- नागरिकों को डिजिटल शिक्षा
- पूरी तरह पेपरलेस और भ्रष्टाचार-मुक्त प्रणाली

## निष्कर्ष

सरकारी दफ्तरों का डिजिटलीकरण सिर्फ तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि एक सोच में बदलाव है। यह जनता और सरकार के बीच दूरी को कम करता है, विश्वास बढ़ाता है और देश को आत्मनिर्भर और डिजिटल बनाता है।

# डिजिटल युग में शिक्षा का बदलता स्वरूप

**सुरेंद्र प्रताप सिंह**
प्रबंध सेवा निदेशालय

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, उसे डिजिटल युग कहा जाता है। यह एक ऐसा युग है जिसमें प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन के हर पहलू को बदल दिया है और शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। परंपरागत कक्षाएँ और ब्लैकबोर्ड अब धीरे-धीरे डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन संसाधनों से बदल रहे हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वीडियो लेक्चर, डिजिटल पुस्तकालय और इंटरैक्टिव शिक्षण उपकरण शिक्षा को अधिक सुलभ और आकर्षक बना रहे हैं।

## डिजिटल शिक्षा के लाभ

डिजिटल शिक्षा के कई लाभ हैं। यह छात्रों को अपनी गति से सीखने की अनुमति देती है, जिससे वे अपनी समझ के अनुसार आगे बढ़ सकते हैं। ऑनलाइन संसाधनों की व्यापक उपलब्धता छात्रों को विभिन्न विषयों पर गहराई से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करती है। डिजिटल उपकरण छात्रों को अधिक इंटरैक्टिव और व्यावहारिक तरीके से सीखने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए वर्चुअल लैब प्रयोगों के माध्यम से छात्र विज्ञान के जटिल सिद्धांतों को आसानी से समझ सकते हैं।

डिजिटल शिक्षा के कुछ विशिष्ट लाभ इस प्रकार हैं:

- **लचीलापन:** डिजिटल शिक्षा छात्रों को अपनी गति से सीखने की अनुमति देती है। वे जब चाहें और जहाँ चाहें सीख सकते हैं।
- **पहुँच:** डिजिटल शिक्षा छात्रों को उन संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है जो अन्यथा उनके लिए उपलब्ध नहीं होते।
- **वैयक्तिकरण:** डिजिटल शिक्षा को प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है।
- **सहयोग:** डिजिटल शिक्षा छात्रों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- **आकर्षण:** डिजिटल शिक्षा छात्रों के लिए अधिक आकर्षक और मनोरंजक हो सकती है।

## डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ

डिजिटल शिक्षा के कई लाभों के बावजूद, कुछ चुनौतियाँ भी हैं। इंटरनेट की असमान पहुँच और डिजिटल साक्षरता की कमी कुछ छात्रों के लिए बाधा बन सकती है। ऑनलाइन शिक्षा में व्यक्तिगत

संपर्क की कमी भी एक चिंता का विषय है। शिक्षकों और छात्रों के बीच सीधा संवाद और मार्गदर्शन छात्रों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

डिजिटल शिक्षा की कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

- **डिजिटल डिवाइड:** सभी छात्रों के पास डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट तक समान पहुँच नहीं है।
- **तकनीकी समस्याएँ:** तकनीकी समस्याएँ जैसे कि इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ और सॉफ़्टवेयर की समस्याएँ सीखने की प्रक्रिया को बाधित कर सकती हैं।
- **ध्यान भटकना:** ऑनलाइन सीखने के दौरान छात्रों का ध्यान भटकना आसान होता है।
- **मूल्यांकन:** ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों का मूल्यांकन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **सामाजिक अलगाव:** ऑनलाइन शिक्षा में व्यक्तिगत संपर्क की कमी छात्रों को सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस करा सकती है।

## डिजिटल शिक्षा का भविष्य

डिजिटल युग में शिक्षा के बदलते स्वरूप को अपनाने के लिए शिक्षकों को भी तैयार रहना होगा। उन्हें डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। छात्रों को डिजिटल साक्षरता और ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जागरूक करना भी आवश्यक है।

भविष्य में डिजिटल शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का मिश्रण ही सबसे प्रभावी मॉडल साबित होगा। तकनीक का उपयोग शिक्षा को अधिक सुलभ, आकर्षक और प्रभावी बनाने के लिए किया जाना चाहिए, जबकि शिक्षकों का मार्गदर्शन और व्यक्तिगत संपर्क छात्रों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण रहेगा।

डिजिटल शिक्षा के भविष्य के लिए कुछ विशिष्ट रुझान इस प्रकार हैं:

- **मिश्रित शिक्षा:** डिजिटल शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का मिश्रण।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता:** छात्रों के लिए व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव बनाने और शिक्षकों के लिए प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग।
- **वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी:** छात्रों के लिए अधिक इमर्सिव और इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव बनाने के लिए वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी का उपयोग।
- **ब्लॉकचेन:** छात्रों के शैक्षणिक रिकॉर्ड को सुरक्षित और पारदर्शी बनाने के लिए ब्लॉकचेन का उपयोग।
- **ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज:** छात्रों के लिए मुफ्त और उच्च-गुणवत्ता वाले शिक्षण सामग्री प्रदान करने के लिए ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (ओईआर) का उपयोग।

## निष्कर्ष

डिजिटल युग में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। तकनीक शिक्षा को अधिक सुलभ, आकर्षक और प्रभावी बना रही है। हालांकि, डिजिटल शिक्षा की अपनी चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने और डिजिटल शिक्षा के लाभों को अधिकतम करने के लिए, शिक्षकों, छात्रों और नीति निर्माताओं को मिलकर काम करना होगा।

# एक सशक्त और सुरक्षित साइबर प्रणाली : एक अपरिहार्य आवश्यकता

**जगत सिंह**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

## प्रस्तावना

21वीं सदी में मानव सभ्यता ने डिजिटल प्रौद्योगिकी की ओर तीव्र गति से कदम बढ़ाया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसे नवाचारों ने न केवल जीवन को सरल बनाया है, बल्कि संचार, व्यापार, शिक्षा, और प्रशासन के स्वरूप को भी पूर्णतः बदल दिया है। परंतु इस डिजिटल क्रांति के साथ ही एक और चुनौती तेजी से उभर रही है – साइबर सुरक्षा। आज जब अधिकांश व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सरकारी डाटा ऑनलाइन हो चुके हैं, तब एक मज़बूत और सुरक्षित साइबर प्रणाली की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

## साइबर सुरक्षा की आवश्यकता क्यों?

साइबर सुरक्षा का मूल उद्देश्य सूचना, नेटवर्क, डिवाइसेज़ और प्रणालियों को अनधिकृत पहुँच, नुकसान, चोरी या विघटन से बचाना है। निम्नलिखित कारणों से इसकी आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है:

**बढ़ते साइबर हमले:** रैंसमवेयर, फिशिंग, डाटा लीक, और हैकिंग जैसे हमलों में वृद्धि हुई है। भारत समेत कई देश पिछले कुछ वर्षों में बड़े पैमाने पर साइबर हमलों का शिकार हो चुके हैं।

**डिजिटल इंडिया की प्रगति:** भारत में डिजिटल सेवाओं जैसे UPI, आधार, और डिजिलॉकर के उपयोग में वृद्धि से डाटा की मात्रा में विस्फोट हुआ है, जिसे सुरक्षित रखना अब एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन चुकी है।

**राष्ट्रीय सुरक्षा पर खतरा:** सरकारी एजेंसियों, रक्षा संस्थानों, और संवेदनशील बुनियादी ढांचे (critical infrastructure) पर साइबर हमले किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं।

**व्यापारिक और आर्थिक प्रभाव:** साइबर हमलों से न केवल कंपनी की साख को नुकसान होता है, बल्कि अरबों रुपये की आर्थिक क्षति भी होती है।

## साइबर सुरक्षा के प्रमुख पहलू

एक मज़बूत साइबर प्रणाली बनाने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है:

**साइबर जागरूकता:** आम नागरिकों, कर्मचारियों और छात्रों को साइबर सुरक्षा के मूल सिद्धांतों के प्रति जागरूक करना।

**मजबूत पासवर्ड और प्रमाणीकरण प्रणाली:** टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन, बायोमेट्रिक सिक्योरिटी, और एन्क्रिप्शन का उपयोग बढ़ाना।

**नेटवर्क सुरक्षा अवसंरचना:** फायरवॉल, एंटीवायरस, और IDS/IPS जैसे उपायों का प्रयोग।

**कानूनी ढांचा और नीति निर्माण:** साइबर अपराधों से निपटने के लिए सख्त कानूनों की आवश्यकता है। भारत में IT अधिनियम 2000 इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम रहा है, परंतु समयानुसार इसमें सुधार की आवश्यकता है।

**सरकारी और निजी क्षेत्र का सहयोग:** साइबर सुरक्षा केवल सरकारी जिम्मेदारी नहीं है। निजी क्षेत्र को भी निवेश और तकनीकी नवाचार के माध्यम से योगदान देना चाहिए।

## भारत में साइबर सुरक्षा की स्थिति

भारत में साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय पहलें हुई हैं। CERT-In (Indian Computer Emergency Response Team) साइबर घटनाओं की निगरानी करता है। राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, 2013, एक महत्वपूर्ण प्रयास रही है, जिसका अद्यतन अब समय की मांग है।

## चुनौतियाँ:

- प्रशिक्षित साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की कमी
- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता का अभाव
- सोशल मीडिया पर गलत सूचना और फर्जी खबरों का प्रसार
- छोटे और मध्यम उद्यमों में सुरक्षा के प्रति लापरवाही

## समाधान और आगे की राह

साइबर सुरक्षा शिक्षा का विस्तार: स्कूलों, कॉलेजों और प्रशिक्षण संस्थानों में साइबर सुरक्षा को एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करना चाहिए।

- **सार्वजनिक-निजी साझेदारी (PPP):** तकनीकी स्टार्टअप्स और IT कंपनियों को मिलकर सुरक्षा तकनीकों पर अनुसंधान करना चाहिए।
- **राष्ट्रीय साइबर कमान का गठन:** रक्षा क्षेत्र में साइबर हमलों से निपटने के लिए एक समर्पित साइबर कमांड की स्थापना आवश्यक है।

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का प्रयोग:** सुरक्षा प्रणालियों को स्मार्ट बनाने के लिए AI आधारित समाधान अपनाने चाहिए जो खतरे को पहले ही भांप सकें।

## निष्कर्ष

इस मोर्चे पर वीरता के स्थान पर तकनीक की समझ हमें बचाएगी और हमें इस तकनीकी समझ वाले लोगों की एक फौज उसी से तरह तैयार करने की ज़रूरत है जैसे चीन, अमेरिका अथवा रूस जैसे देशों ने तैयार की है, तभी हम चहुँ ओर से अपने सुरक्षित होने का दावा कर सकेंगे। हालाँकि ऐसा भी नहीं है कि भारत ने इस चुनौती को पूर्णतया अनदेखा छोड़ दिया हो। वर्ष 2004 में ही हमने साइबर सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिये "इंडियन कंप्यूटर एमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम" (जिसे प्रचलित रूप से आईआरटी-इन के नाम से जाना जाता है) नाम के एक समर्पित अभिकरण का गठन कर लिया था जो समय-समय पर साइबर सुरक्षा से जुड़े विभिन्न उपायों को लागू करता रहता है। ऐसी ही एक पहल इस संस्था ने इस साल फरवरी में 'साइबर स्वच्छता केंद्र' की शुरुआत करके की। 'साइबर स्वच्छता केंद्र' का कार्य डेस्कटॉप और मोबाइल के लिये सिक्योरिटी सॉल्यूशन प्रदान करना है। इस संस्था व अन्य अभिकरणों के संयुक्त प्रयासों का ही फल था कि हाल में हुए 'वनाक्राई' नामक मालवेयर के हमले का भारत पर ज्यादा असर नहीं हुआ। इसके अलावा, एक श्रेणी एथिकल हैकर्स की भी है जो अपने तकनीकी ज्ञान व प्रतिभा का इस्तेमाल ऐसे हमलों को नाकाम करने में करते हैं। हालाँकि, ऐसे एथिकल हैकर्स की पहचान करना मुश्किल है किंतु भारत में इनकी एक मज़बूत उपस्थिति अवश्य है। अन्य सजग देशों की भाँति भारत को भी संभावित साइबर हमलों व इनसे जुड़ी अन्य गड़बड़ियों से निपटने के लिये और अधिक संस्थागत प्रयासों की ज़रूरत है तभी हम भरोसे के साथ डिजिटलीकरण के लाभों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचा पाएंगे। डिजिटल युग में प्रगति और खतरे साथ-साथ चलते हैं। जितनी तीव्रता से हम तकनीकी विकास की ओर बढ़ रहे हैं, उतनी ही तेजी से साइबर अपराधों के स्वरूप भी बदल रहे हैं। ऐसे में एक मज़बूत और सुरक्षित साइबर प्रणाली न केवल हमारी डिजिटल प्रगति का आधार है, बल्कि यह राष्ट्र की संप्रभुता, नागरिकों की गोपनीयता और अर्थव्यवस्था की स्थिरता की गारंटी भी है। अतः यह कहना बिल्कुल उपयुक्त है कि "एक मज़बूत और सुरक्षित साइबर प्रणाली वर्तमान की अपरिहार्य आवश्यकता है।"

जीत से अभिसार करना भी कला है दोस्तों
हार को स्वीकार करना भी कला है दोस्तों
हार में या जीत में सच्चे खिलाड़ी की तरह
संयमित व्यवहार करना भी कला है दोस्तों

# कृत्रिम बुद्धिमत्ता: एक विशेषाधिकार या नुकसान

**संजीव कुमार**
कार्यालय, अपर वित्तीय सलाहकार एवं अपर सचिव

## परिचय

मशीनें हमारे काम को सरल और आसान बनाती हैं, लेकिन अगर मशीनों में इंसान जैसी समस्याओं को सुलझाने और परिणाम देने की क्षमता आ जाती है तो क्या यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहलाता, यह कंप्यूटर विज्ञान की उन्नत शाखाओं में से एक है। मशीनों में मानव बुद्धिमत्ता की विभिन्न विशेषताओं को विकसित करने पर ध्यान देने की दिशा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को परिभाषित किया जा सकता है। इन विशेषताओं को विभिन्न डेटा, बुद्धिमत्तापूर्ण एल्गोरिदम के माध्यम से विकसित किया जा सकता है जिन्हें इनपुट के रूप में उपयोग किया जाना है। वर्तमान में हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ तमाम तरह के उपकरणों से घिरे हुए हैं, उदाहरण के लिए, एयर कंडीशनर, कंप्यूटर, मोबाइल, बायोसेंसर, वीडियो गेम, आदि। व्यापक रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास से मानव जाति को विभिन्न पहलुओं में लाभ होगा।

## संकुचित, सामान्य और उत्तम कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है

### संकुचित कृत्रिम बुद्धिमत्ता

- यह एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता है जो कार्य विशिष्ट होती है यानी किसी एक काम को करने के लिए बना होना।
- किसी एक कार्यक्रम को करने की क्षमता होना।
- आमतौर पर यह व्यापक रूप से उपलब्ध है।
- उदाहरण के लिए, आवाज पहचाना, चेहरा पहचाना, आदि।

### सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता

- इस प्रकार की कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानवीय भावनाओं को समझने की क्षमता होती है जैसे- दुःख, सुख, क्रोध, आदि।
- काम के वक़्त इंसान जितना बेहतर साबित होगा, हालाँकि इस तरह की बुद्धिमत्ता वाली मशीन को विकसित करने की कोशिशें जारी हैं।

### उत्तम कृत्रिम बुद्धिमत्ता

- एक प्रकार का कृत्रिम बुद्धिमत्ता जो समस्या-समाधान और अन्य कार्यों में मनुष्य से बेहतर प्रदर्शन के लिए जाना जाता है।
- इसपर शोध प्रक्रिया अभी भी जारी है। ऐसा कोई उपकरण आज तक विकसित नहीं हुआ है, फिलहाल यह काल्पनिक है।

### कृत्रिम बुद्धिमत्ता: एक विशेषाधिकार या नुकसान

मशीन में मानव बुद्धि को विकसित करने के लिए, कार्य को सरल बनाने के लिए, कंप्यूटर विज्ञान ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में उन्नति की है। यह विशेष अधिकार या नुकसान के रूप में पहचान करने के लिए उपयोग के मानदंडों पर निर्भर करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें अपने काम को आसान बनाने के लिए सहायता प्रदान करने में हमारी मदद कर रहा है,

- यदि यह शिक्षा के साथ है, तो तेजी से सीखने के विभिन्न तरीकों के साथ ऊपर उठने में मदद करता है, बिना किसी गलती के अधिक मात्रा में डेटा संकलित करता है।
- चिकित्सा क्षेत्र में, यह विभिन्न तरह के निदान के लिए डेटा व्याख्या की सुविधा प्रदान करता है, किसी तरह के प्रयास की उम्मीद किये बिना यह विभिन्न रोगियों का विवरण प्राप्त करना, आगे चलकर किसी भी बीमारी से संबंधित प्रश्नों या रोगियों की काउंसलिंग के बारे में चर्चा के लिए एक सामान्य मंच साबित करने में मदद करता है। रूटीन चेकअप की निगरानी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ अन्य कई उपकरण भी उपलब्ध हैं।
- यह दैनिक गतिविधियों में भी काफी उपयोगी है आगे अनुसंधान और विकास क्षेत्र को बहुत मदद प्रदान करता है।

जिस तरह से हम अपने जीवन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लागू करते जा रहे हैं इससे यह तय होते जा रहा है कि यह एक विशेषाधिकार होगा या फिर नुकसान होगा।

सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा जो कि पर्यावरण के दृष्टिकोण से है वह ये है कि प्रौद्योगिकी, पर्यावरण के अनुकूल नहीं है। यह ई-कचरे को जन्म देता है जो सड़ने योग्य नहीं माना जाता है और अगर इसे डंप भी किया जाता है, तो यह तमाम तरह की विषाक्त भारी-भरकम धातुओं को छोड़ देगा, जिससे मिट्टी की उपजाऊ क्षमता ख़त्म हो जाएगी।

- प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर जरूरत से ज्यादा निर्भरता मनुष्य में आलस्य का कारण बनती जा रही है। अलग-अलग बीमारियों को न्यौता देने के साथ-साथ आपके काम करने की क्षमता भी वक़्त के साथ कम होते जाती है। इसलिए किसी को इन उपायों पर पूरी तरह से निर्भर नहीं होना चाहिए।
- वह दिन दूर नहीं जब मशीन इंसानों से ज्यादा बेहतर हो जायेंगे।

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता जब उचित तरीके से उपयोग की जाती है, तो इसके अच्छे परिणाम आते हैं, लेकिन अगर मशीन को दिए गए निर्देश नकारात्मक या विध्वंसक हैं, तो इससे समुदाय को नुकसान हो सकता है।
- प्रौद्योगिकियां दिन-प्रति-दिन आगे बढ़ती जा रही हैं और इस तरह वह समय नजदीक होगा जब इन प्रौद्योगिकियों के माध्यम से किया गया हर कार्य मानव को विलुप्त होने की ओर ले जाएगा।

### निष्कर्ष

इसमें कोई संदेह नहीं है कि तकनीकी उन्नति, मानव जाति के विकास में एक सहायक रणनीति साबित हो रही है। आज इंसान चाँद पर बसने की योजना बना रहा है। जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता को उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्तर पर विकसित किया जाता है, तो उससे काफी अधिक तकनीकी सहायता मिलेगी। रोबोटिक्स जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक विकासशील शाखा है, इसके उच्च योगदान हो सकते हैं। प्रशिक्षित रोबोट को परीक्षण और निगरानी गतिविधियों के लिए अलग-अलग नमूने प्राप्त करने के लिए अंतरिक्ष में भेजा जा सकता है। इसलिए कुल मिला जुला कर, यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जाति को लाभान्वित करने की दिशा में है यदि उसका उपयोग उचित और सकारात्मक तरीके से किया जाए।

मन में दुविधा, मन में युद्ध है,
मन खुद के ही विरूद्ध है,
ये मन की कैसी रीत ?
सारा कुरूक्षेत्र सामने पड़ा,
जीत सके तो जीत,
यहां तू ही कृष्ण, तू ही पार्थ है
तुझे खुद ही समझना, क्या यथार्थ है..

**– नवीन कौशिक**

# घर बैठे डिजिटल अरेस्ट : साइबर अपराध का नया चेहरा

**विनोद कुमार**
कार्यालय, महानिदेशक (संसाधन एवं प्रबंधन)

## परिचय

डिजिटल क्रांति ने हमारे जीवन को जितना सरल बनाया है, उतना ही हमें नए ख़तरों से भी जोड़ा है। अब केवल सरकार या संस्थाएँ ही नहीं, बल्कि साइबर अपराधी भी लोगों को डिजिटल अरेस्ट यानी घर बैठे ही उनके डेटा और उपकरणों को 'डिजिटल जेल' में डाल देते हैं। 2025 में यह खतरा पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गया है। रैनसमवेयर, AI डीपफेक, फिशिंग और सोशल मीडिया हैकिंग अब हर घर के दरवाज़े तक पहुँच चुके हैं।

## कैसे होता है डिजिटल अरेस्ट?

### रैनसमवेयर अटैक:

साइबर अपराधी आपके कंप्यूटर या फोन को वायरस से लॉक कर देते हैं और डेटा वापस देने के बदले मोटी फिरौती मांगते हैं। 2025 में भारत में रैनसमवेयर हमलों में 40% से अधिक की वृद्धि हुई है।

### एआई डीपफेक ब्लैकमेलिंग:

2025 में एआई डीपफेक तकनीक से सोशल मीडिया फोटो या वीडियो को मॉर्फ कर ब्लैकमेलिंग दोगुनी हो गई है। NCR, दिल्ली, बेंगलुरु में कई केस सामने आए हैं।

### फिशिंग और KYC फ्रॉड:

RBI और CERT-In के मुताबिक 2025 में KYC फ्रॉड कॉल के ज़रिए हर दिन हजारों लोग बैंक फ्रॉड के शिकार हो रहे हैं।

### फेक टेक-सपोर्ट या स्क्रीन शेयर स्कैम:

घर बैठे लोग फर्जी कॉल के झांसे में आकर स्क्रीन शेयर कर देते हैं, जिससे पूरा सिस्टम अपराधियों के कंट्रोल में चला जाता है।

## 2025 के ताज़ा आँकड़े और उदाहरण

भारत में औसतन हर दिन 5,500 साइबर फ्रॉड केस दर्ज हो रहे हैं।

- जनवरी-जून 2025 में अकेले रैनसमवेयर से ₹68,000 करोड़ से ज्यादा का अनुमानित नुकसान हुआ।
- NCR में एक इन्फ्लुएंसर का डीपफेक वीडियो बनाकर 20 लाख रु. की फिरौती मांगी गई (मई 2025)।
- मुंबई के एक स्कूल का ऑनलाइन पोर्टल हैक कर 50 लाख की फिरौती मांगी गई (फरवरी 2025)।
- बेंगलुरु के हेल्थ-टेक स्टार्टअप से $1 मिलियन बिटकॉइन में फिरौती माँगी गई (मार्च 2025)।
- 2025 के पहले छह महीनों में दर्ज केसों में 35% पीड़ित महिलाएँ और नाबालिग हैं।

### क्यों खतरनाक है डिजिटल अरेस्ट?

- **आर्थिक नुकसान:** भारत में 2025 के अंत तक साइबर अपराध से ₹1.5 लाख करोड़ तक का नुकसान होने की आशंका है।
- **गोपनीयता पर हमला:** डेटा, फोटो, बैंक डिटेल्स अपराधियों के हाथ में चले जाते हैं।
- **मानसिक दबाव:** ब्लैकमेलिंग के डर से कई लोग आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं।
- **समाज में असुरक्षा:** बच्चों और महिलाओं को ज्यादा निशाना बनाया जा रहा है।

### कैसे करें खुद को सुरक्षित? (2025 में प्रभावी उपाय)

1 **डिजिटल हाइजीन:**
- मजबूत पासवर्ड + टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA) अनिवार्य करें।
- हर अकाउंट के लिए अलग पासवर्ड रखें और समय-समय पर बदलें।

2 **अनजान लिंक और कॉल से दूर रहें:**
- कोई भी KYC लिंक या संदिग्ध कॉल से बैंक डिटेल्स शेयर न करें।
- स्क्रीन शेयर करने से बचें।

3 **एंटीवायरस और बैकअप:**
- फोन और कंप्यूटर में अपडेटेड एंटीवायरस रखें।
- जरूरी डेटा का नियमित बैकअप क्लाउड या हार्ड ड्राइव पर रखें।

4 **AI Deepfake से बचाव:**
- सोशल मीडिया प्रोफाइल को प्राइवेट रखें।
- बच्चों को ऑनलाइन सेफ्टी के बारे में जागरूक करें।

5 **रिपोर्टिंग:**

किसी भी साइबर ब्लैकमेल या फ्रॉड को छिपाएँ नहीं – तुरंत cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें या 1930 हेल्पलाइन पर कॉल करें।

CERT-In का रियल-टाइम अलर्ट सिस्टम और 'Cyber Dost' ऐप का इस्तेमाल करें।

6 **कानूनी मदद:**

सुप्रीम कोर्ट के अनुराधा भसीन केस और डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट, 2023 के तहत डिजिटल अधिकारों की रक्षा के लिए पुलिस में FIR दर्ज कराएँ।

### निष्कर्ष

2025 में डिजिटल अरेस्ट आम आदमी के लिए एक नया डिजिटल खतरा है–जो तकनीक के जरिए घर बैठे ही लोगों को मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से बंधक बना सकता है। सावधानी, तकनीकी जागरूकता और कानूनी सख्ती ही इसका सही इलाज है। आज जरूरत है कि हम सब डिजिटल जिम्मेदारी निभाएँ–तभी डिजिटल दुनिया सुरक्षित और स्वतंत्र रह पाएगी।

# भारत में साइबर सुरक्षा

**मशकूर अली**
कार्यालय, निदेशक (वित्त/आर एंड डी)

आज के जमाने में साइबर सुरक्षा सबसे बड़ी आवश्यकता है। ऑनलाइन धोखाधड़ी, ब्लैकमेलिंग, धमकी, स्पैमिंग, भड़काने वाले कमेंट्स, हैकिंग आदि बहुत ही आम समस्याएं हो गई हैं। इससे निपटने की सख्त से सख्त जरुरत है। लोगों के अकाउंट्स से पैसे बस एक मिनट की फोन कॉल से उड़ रहे हैं सरकार इन सभी अपराधों से निपटने हेतु विभिन्न प्रकार के नियम बना रही है लेकिन तब भी ये अपराध कम नहीं हो रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा घोषित निश्चित मेक इन इंडिया पहल और आने वाले महीनों और वर्षों में 5 बिलियन से अधिक डिवाइस इंटरनेट से कनेक्ट होने की रिपोर्ट के साथ भारत को ठोस साइबर सुरक्षा योजनाओं और नीतियों को तैयार करने की आवश्यकता है। इस लेख में हम साइबर सुरक्षा की परिभाषा, साइबर अपराध कितने प्रकार के होते हैं, साइबर सुरक्षा की जरूरत क्यों है, साइबर सुरक्षा की क्या चुनौतियां है, साइबर सुरक्षा से जुड़े भारतीय कानून और साइबर सुरक्षा के सुदृढ़ता हेतु भारत सरकार के कदम के बारे में चर्चा करेंगे।

## प्रस्तावना

बदलते बाहरी परिवेश का असर हमारी आंतरिक सुरक्षा पर भी पड़ता है। श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और म्यांमार की घटनाओं का हमारी आंतरिक सुरक्षा से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध है। 2013 में स्नोडेन खुलासे (विकीलीक्स) ने यह स्पष्ट कर दिया था कि भविष्य के युद्ध पारंपरिक युद्ध नहीं होंगे जो जमीन, पानी और हवा पर लड़े जाते हैं। वास्तव में, ऐसा सच ही प्रतीत हो रहा है क्योंकि आज 21वीं सदी में हर देश अपने दुश्मन देश पर हैकिंग या अन्य प्रकार के साइबर हमले करवा रहा है, जैसा कि ज्यादातर चीन भारत में अपने मोबाइल फोन, एप्लीकेशन या अन्य प्रकार से साइबर हमले करता है। यह अत्यंत ही खतरनाक हमला होता है क्योंकि अन्य प्रकार के हमले के लिए तो सेना है लेकिन क्या साइबर हमलों से निपटने में हमारा देश अभी सशक्त है?

## साइबर अपराध के प्रकार

साइबर अपराध इंटरनेट, कंप्यूटर या किसी अन्य परस्पर जुड़े बुनियादी ढांचे सहित आपराधिक गतिविधि को दर्शाता है। वह शब्द जिसमें फ़िशिंग, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, अवैध डाउनलोडिंग, औद्योगिक

जासूसी, चाइल्ड पोर्नोग्राफ़ी, घोटाले, साइबर आतंकवाद, वायरस का निर्माण और/या वितरण, स्पैम आदि जैसे अपराध शामिल हैं। भारत में निम्नलिखित प्रकार के साइबर अपराध होते हैं:-

### 1. साइबर स्टॉकिंग

इसे एक ऐसे कार्य के रूप में परिभाषित किया गया है जो अक्सर व्यक्तियों के निजी जीवन में गुप्त रूप से नजर रखके संकट, चिंता और भय पैदा करने के लिए किया जाता है। साइबर स्टॉकिंग एक व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से परेशान करती है इसलिए इसे कभी-कभी "मनोवैज्ञानिक बलात्कार" या "मनोवैज्ञानिक आतंकवाद" कहा जाता है। लगभग 90% स्टाकर पुरुष हैं और लगभग 80% महिलाएं इस तरह के उत्पीड़न की शिकार हैं।

### 2. बौद्धिक संपदा की चोरी

बौद्धिक संपदा को एक नवाचार, नए शोध, पद्धति, मॉडल और सूत्र के रूप में परिभाषित किया गया है जिसका आर्थिक मूल्य है। बौद्धिक संपदा पेटेंट और ट्रेडमार्क होने के साथ-साथ वीडियो और संगीत पर कॉपीराइट के साथ सुरक्षित है। जब कोई व्यक्ति इस कॉपीराइट वाली चीज को चुरा लेता है या विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करके इस कॉपीराइट वाली चीज को अपने नाम से पेटेंट करवा लेता है तो इसको हम बौद्धिक संपदा की चोरी कहते हैं।

### 3. सलामी अटैक

सलामी साइबर हमले में साइबर अपराधी और हमलावर बड़ी रकम बनाने के लिए कई बैंक खातों से बहुत कम रकम में पैसे चुराते हैं।

### 4. ई-मेल बमबारी

इस तरह के साइबर हमले में अपराधी एक व्यक्ति को भारी मात्रा में ई-मेल भेज कर पैसे, ब्लैकमेलिंग, लालच देकर किसी विशेष संदिग्ध लिंक में क्लिक करने को बोलेंगे जब वह व्यक्ति लिंक में क्लिक करेगा तो उसके अकाउंट से पैसे चले जाएंगे।

### 5. फ़िशिंग

यह एक तरह का कपटपूर्ण प्रयास है जो व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी हासिल करने के लिए ईमेल के माध्यम से किया जाता है। अपराधी ई-मेल भेजता है जो जाने-माने और भरोसेमंद पते से आता है और आपकी वित्तीय जानकारी जैसे बैंक का नाम, क्रेडिट कार्ड नंबर, खाता संख्या या पासवर्ड मांगता है। फ़िशिंग प्रयासों के लिए यह आम बात है कि ई-मेल उन साइटों और कंपनियों से आते हैं जिनके पास बैंक खाता भी नहीं है।

### 6. पहचान की चोरी

पहचान की चोरी एक प्रकार की धोखाधड़ी है जिसमें व्यक्ति किसी और के होने का दिखावा करता है और किसी और के नाम से अपराध करता है। अपराधी किसी व्यक्ति का रूप धारण करने के लिए नाम, पता, क्रेडिट कार्ड नंबर, बैंक खाता संख्या जैसी महत्वपूर्ण जानकारी चुराता है और उसके नाम पर अपराध करता है।

### 7. स्पूफिंग

यह एक ऐसी तकनीक को संदर्भित करता है जिसमें कंप्यूटर तक अनधिकृत पहुंच होती है, जिससे अपराधी एक आईपी पते के साथ नेटवर्क वाले कंप्यूटर पर संदेश भेजता है। प्राप्तकर्ता को ऐसा लगता है कि संदेशों को एक भरोसेमंद स्रोत से प्रेषित किया जा रहा है।

### 8. वायरस

कंप्यूटर वायरस तभी प्रभावी होता है जब वह किसी प्रोग्राम या निष्पादन योग्य फाइलों से जुड़ जाता है। जब हम इन सहायक फाइलों को चलाते हैं या निष्पादित करते हैं तो वायरस अपना संक्रमण छोड़ देता है।

### 9. ट्रोजेन हॉर्सेज

ट्रोजन हॉर्स पहली नज़र में उपयोगी सॉफ़्टवेयर के रूप में लगता है लेकिन वास्तव में कंप्यूटर और उसके सॉफ़्टवेयर को नुकसान पहुंचाता है क्योंकि यह इंस्टॉल हो जाता है। कुछ ट्रोजन हॉर्सेज को साइबर अपराधी प्रयोक्ताओं के कंप्यूटर को दूर से ही नियंत्रित करने के लिए एक तरह के पिछले दरवाजे का निर्माण करते हैं, जिससे गोपनीय और व्यक्तिगत जानकारी की चोरी हो जाती है।

### 10. पोर्नोग्राफी

इस प्रकार के साइबर अपराध में उत्तेजक फोटो और वीडियो को लोकप्रिय सोशल मीडिया के माध्यम से फैलाया जाता है:

### 1. साइबर सुरक्षा की सुदृढ़ता हेतु भारत सरकार के कदम

भारत सरकार ने साइबर सुरक्षा से निपटने हेतु निम्नलिखित कदम उठाए हैं।

### 2. साइबर क्राइम वालंटियर्स

गृह मंत्रालय के तहत भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) ने नागरिकों को “साइबर अपराध स्वयंसेवकों” के रूप में पंजीकृत करने की अनुमति देने के उद्देश्य से साइबर अपराध स्वयंसेवक कार्यक्रम शुरू किया।

### 3. साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल

सरकार ने ऑनलाइन साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल, **cybercrime.gov.in** लॉन्च किया है ताकि शिकायतकर्ता बाल पोर्नोग्राफी/बाल यौन शोषण सामग्री, बलात्कार/सामूहिक बलात्कार छवियों, या यौन स्पष्ट सामग्री से संबंधित शिकायतों की रिपोर्ट कर सकें। साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर 155260 है।

### 4. साइबर स्वच्छता केंद्र

कार्यक्रमों का पता लगाने और ऐसे कार्यक्रमों को हटाने के लिए मुफ्त उपकरण प्रदान करने के लिए साइबर स्वच्छता केंद्र (बॉटनेट सफाई और मैलवेयर विश्लेषण केंद्र) शुरू किया गया।

### 5. राष्ट्रीय साइबर समन्वय केंद्र (एनसीसीसी)

यह देश में आने वाले इंटरनेट यातायात को स्कैन करने और वास्तविक समय स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करने और विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क करता है।

### 6. साइबर और सूचना सुरक्षा (सीआईएस) डिवीजन

यह साइबर खतरों, चाइल्ड पोर्नोग्राफी और ऑनलाइन स्टॉकिंग जैसे इंटरनेट अपराधों से निपटने के लिए एक नया बनाया गया है।

### साइबर सुरक्षित भारत पहल

इस पहल की शुरुआत भारत में साइबर सुरक्षा परिवेश मजबूत करने के लिए की गई है।

### उपसंहार

हालांकि, हम सक्रिय रूप से लड़ रहे हैं और अपने नेटवर्क तथा सूचनाओं की सुरक्षा के लिए विभिन्न ढांचे या प्रौद्योगिकियों को प्रस्तुत कर रहे हैं लेकिन ये सभी केवल अल्पावधि के लिए सुरक्षा प्रदान करते हैं। हालांकि, बेहतर सुरक्षा समझ और उपयुक्त रणनीतियां हमें बौद्धिक संपदा और व्यापार रहस्यों की रक्षा करने और वित्तीय और प्रतिष्ठा के नुकसान को कम करने में मदद कर सकती हैं। केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारें बड़ी मात्रा में डेटा और गोपनीय रिकॉर्ड डिजिटल रूप में ऑनलाइन रखती हैं जो साइबर हमले का प्राथमिक लक्ष्य बन जाता है। अनुचित बुनियादी ढांचे, जागरूकता की कमी और पर्याप्त धन के कारण अधिकांश समय सरकारों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सरकारी निकायों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे समाज को विश्वसनीय सेवाएं प्रदान करें, स्वस्थ नागरिक-से-सरकार संचार बनाए रखें और गोपनीय जानकारी की सुरक्षा करें।

# कृत्रिम बुद्धिमत्ता

**एम सम्पूर्ण कुमार**
कार्मिक निदेशालय

वर्तमान समय में, खुद को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से अपडेट करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि स्मार्ट वर्क करने के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। हमें यह समझना होगा कि AI अब केवल विज्ञान कथाओं का हिस्सा नहीं रहा, बल्कि यह हमारे रोज़मर्रा के जीवन और कार्यस्थल में गहराई से जुड़ चुका है। इसके लाभ असीमित हैं। AI-आधारित उपकरण हमें दोहराए जाने वाले, समय-खपाऊ कार्यों से मुक्ति दिलाते हैं, जिससे हम रचनात्मक और रणनीतिक सोच पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं।

बाजार में आज कई तरह के AI उपकरण उपलब्ध हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला रहे हैं। उदाहरण के लिए, ChatGPT और Google Gemini जैसे बड़े भाषा मॉडल (LLMs) टेक्स्ट जनरेशन, सारांश, अनुवाद और यहां तक कि कोड लिखने जैसे कामों में हमारी मदद करते हैं। एक लेखक या मार्केटर के लिए, ये उपकरण कुछ ही सेकंड में कंटेंट ड्राफ्ट तैयार कर सकते हैं, जिससे समय की बचत होती है और विचारों की कमी नहीं पड़ती। वहीं, Midjourney और DALL-E जैसे AI आर्ट जनरेटर टेक्स्ट प्रॉम्प्ट से अद्भुत छवियां बना सकते हैं, जो ग्राफिक डिजाइनर और रचनात्मक पेशेवरों के लिए एक गेम-चेंजर साबित हो रहे हैं।

डेटा विश्लेषण में AI की क्षमता अविश्वसनीय है; यह मिनटों में लाखों डेटा पॉइंट को संसाधित कर सकता है और ऐसे पैटर्न खोज सकता है जो मानव आंखों से छूट सकते हैं, जिससे बेहतर व्यावसायिक निर्णय लेने में मदद मिलती है। Tableau AI जैसे उपकरण डेटा विज़ुअलाइज़ेशन में AI को एकीकृत करते हैं ताकि जटिल डेटासेट से अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सके। मार्केटिंग में, AI ग्राहकों के व्यवहार का सटीक अनुमान लगा सकता है, जैसे Adobe Sensei, जो ग्राहक डेटा का विश्लेषण करके व्यक्तिगत ग्राहक अनुभव डिजाइन करता है, जिससे लक्षित विज्ञापन अभियान चलाए जा सकते हैं जो पहले कभी संभव नहीं थे।

उत्पादकता टूल में भी AI का बोलबाला है। Microsoft Copilot जैसे उपकरण Microsoft 365 सूट में एकीकृत होकर ईमेल सारांश, मीटिंग नोट्स और यहां तक कि प्रेजेंटेशन ड्राफ्ट करने में सहायता करते हैं। Grammarly जैसे AI राइटिंग असिस्टेंट व्याकरण और लेखन शैली में सुधार करते हैं, जिससे पेशेवर संचार अधिक स्पष्ट और प्रभावी बनता है। Fireflies.ai जैसी AI मीटिंग असिस्टेंट मीटिंग्स को रिकॉर्ड, ट्रांसक्रिप्ट और सारांशित कर सकती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि कोई भी महत्वपूर्ण जानकारी छूटे नहीं।

निश्चित रूप से, AI के कुछ खतरे भी हैं, जैसे नौकरियों का विस्थापन (हालांकि, AI नई नौकरियां भी पैदा करता है, अनुमान है कि 2025 तक AI 85 मिलियन नौकरियों को विस्थापित करेगा लेकिन 97 मिलियन नई नौकरियां पैदा करेगा) और डेटा प्राइवेसी से जुड़ी चिंताएं, क्योंकि AI सिस्टम बड़ी मात्रा में संवेदनशील डेटा को संसाधित करते हैं। एल्गोरिथम पूर्वाग्रह (bias) भी एक चिंता का विषय है, जहाँ AI मॉडल प्रशिक्षण डेटा में मौजूद मानव पूर्वाग्रहों को सीख सकते हैं और उन्हें बढ़ा सकते हैं। लेकिन, इन चिंताओं को दूर करने के लिए तकनीक और नीतियां लगातार विकसित हो रही हैं, जैसे कि AI गवर्नेंस फ्रेमवर्क और नैतिक दिशानिर्देशों का विकास।

हमें AI को एक प्रतियोगी के रूप में नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली सहयोगी के रूप में देखना चाहिए। जो लोग AI कौशल सीखेंगे, वे अपने काम को अधिक दक्षता से कर पाएंगे, नई चुनौतियों का सामना कर पाएंगे और अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। AI हमें 'स्मार्ट' बनने का अवसर देता है, न कि केवल 'कड़ी मेहनत' करने का। यह हमें उन कामों से आज़ादी दिलाता है जो मशीनों के लिए बेहतर हैं, ताकि हम उन कामों पर ध्यान दे सकें जो केवल इंसान ही कर सकते हैं - जैसे कल्पना, सहानुभूति, गंभीर सोच और नवाचार। इसलिए, खुद को AI से अपडेट करना न केवल समय की मांग है, बल्कि यह हमें एक अधिक उत्पादक, रचनात्मक और अंततः, अधिक संतुष्टिदायक पेशेवर जीवन की ओर ले जाने वाला कदम है, जहाँ मशीनें हमारे काम को सरल करती हैं।

तुम बंजर हो जाओगे
यदि इतने व्यवस्थित ढंग से रहोगे
यदि इतने सोच समझकर
बोलोगे चलोगे
कभी मन की नहीं कहोगे
सच को दबाकर झूठे प्रेम के गाने गाओगे
तो मैं तुमसे कहता हूँ
तुम बंजर हो जाओगे।

**– भवानी प्रसाद मिश्र**

# भारत के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका और डीआरडीओ का योगदान

**मिट्ठू मेहता**
मानव संसाधन विकास निदेशालय

## पृष्ठभूमि:

गत वर्षों से विभिन्न कारणों तथा मुद्दों को लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता बराबर चर्चा में है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर साइंस की एक शाखा है, जिसका काम बुद्धिमान मशीन मतलब रोबोटिक मशीन या संगणक बनाना है। सरकार के थिंक टैंक जो कि नीति आयोग है तथा गूगल कम्पनी के बीच इसी बात पर सहमति बनी है कि दोनों देश भारत व अमरीका की उदीयमान कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पारिस्थितिकी सिस्टम को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई पहलों पर मिलकर एक साथ काम करेंगे, जिससे देश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का पारिस्थितिकी सिस्टम बनाने में मदद मिलेगी। भारत के नीति आयोग को एआई जैसी प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने तथा उसमे अनुसंधान के लिये बड़े तौर पर राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है। इस नयी जिम्मेदारी पर नीति आयोग हमारे राष्ट्रीय डाटा और भारतीय एनालिटिक्स पोर्टल के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर राष्ट्रीय स्तर कार्य की नीति विकसित कर चुका है, ताकि यहाँ पर व्यापक रूप से इसका उपयोग सम्भव हो सके।

## क्या है कृत्रिम बुद्धिमत्ता ?

साधारण शब्दों में कहा जाये तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है एक रोबोटिक मशीन या संगणक में समझने और निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को कंप्यूटर विज्ञान का सबसे उत्तम रूप माना जाता है तथा इसमें एक ऐसा बनावटी दिमाग अथवा बुद्धि बनायी जाती है, जिसमें कंप्यूटर या रोबोटिक मशीन की तरह सोचने की शक्ति हो, कंप्यूटर का ऐसा दिमाग है जो इंसानों की तरह सोच व समझ सके।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार:

- पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक- Purely Reactive/Quick Reaction
- लिमिटेड स्मृति-Partial Memory
- मस्तिष्क सिद्धांत- Brain/Mind Theory
- आत्म-चेतन- Self Conscious/Mindfulness

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पहली शुरुआत 1950 के वर्ष में हुई थी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मतलब है- बनावटी तौर से बनाई गई दिमागी क्षमता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जनक जॉन मैकार्थी का ये कहना था कि यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान संगणक प्रोग्राम को बनाने की साइंस और

इंजीनियरिंग है मतलब यह मशीनों या रोबोटिक मशीन की प्रदर्शित की गई बुद्धिमत्ता है। इसके ज़रिये सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है, जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह इंटेलिजेंस तरीके से सोचने वाला सॉफ़्टवेयर बनाने का एक तरीका है। यह इसके बारे में अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है, कैसे निर्णय लेता है और कैसे काम करता है।

(फिल्मों के **क्षेत्र** में जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्टारवार, आई रोबोट, टर्मिनेटर तथा ब्लेड रनर नाम की फिल्में बनी हैं, उनसे यह पता चलता है कि आखिर कृत्रिम बुद्धिमत्ता है क्या! भारत में भी विख्यात हीरो रजनीकांत की मूवी 'रोबोट' में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को देखा तथा समझा जा सकता है। वैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाला कंप्यूटर नब्बे के दशक में शतरंज के महान खिलाड़ियों में शामिल रूस के गैरी कास्पोरोव को हरा चुका है।)

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख अनुप्रयोग:

- कंप्यूटर गेम (Computer Gaming)
- प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (Natural Language Processing)
- प्रवीण प्रणाली (Expert System)
- दृष्टि प्रणाली (Vision System)
- वाक् पहचान (Speech Recognition)
- बुद्धिमान रोबोट (Intelligent Robot)

किसी मुश्किल सिस्टम को चलाने...नई मेडीसीन तैयार करने...नए रसायन बनाने...खनन से लेकर स्पेस...शेयर मार्केट से लेकर बीमा कंपनियां...पृथ्वी पर मानव जीवन का कोई वर्ग ऐसा नहीं है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दखल न हो।

इसे उदहारण से समझते हैं...

आज विश्व में हवाई जहाज़ों का आना जाना पूरी तरह कंप्यूटर मतलब संगणक पर ही निर्भर है। कौन-सा प्लेन कब, किस रास्ते से कितनी दूरी तय करेगा, कहां सामान जाना है, यह सब हमारी मशीनें तय करके आदेश देती हैं। यानी वायु ट्रैफिक कंट्रोल के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया जा रहा है।

मतलब यह कि जिस काम में मनुष्य को करने में अधिक समय लगता है या जो काम दुष्कर और जटिल है, वह मशीनी बुद्धि की मदद से बहुत ही थोड़े समय यानि चुटकियों में खत्म किया जा सकता है।

## भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाएँ:

- रोबोटिक्स, वर्चुअल रिएलिटी, क्लाउड टेक्नोलॉजी, बिग डेटा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा मशीन लर्निंग और अन्य प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर भारत में निकट भविष्य में चौथी औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात होने की संभावनाएँ तलाशी जाने लगी हैं।

- नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता देश में व्यवसाय करने के तरीके को बदलने जा रही है। विशेष रूप से देश के सामाजिक और समावेशी कल्याण के लिये नवाचारों में विशिष्ट रूप से इसका उपयोग किया जाएगा।
- स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में क्षमता बढ़ाने, शिक्षा में सुधार लाने, नागरिकों के लिये अभिनव शासन प्रणाली विकसित करने और देश की समग्र आर्थिक उत्पादकता में सुधार के लिये देश कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा मशीन लर्निंग जैसी भविष्य की प्रौद्योगिकियों को स्वीकार करने का समय निकट आ रहा है।
- गूगल बाबा व नीति आयोग के साथ आने से कई नये प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू होंगे, स्टार्टअप के समर्थन को बढ़ावा मिलेगा और पीएच.डी. छात्रवृत्ति से एआई का अनुसंधान कार्य आगे बढ़ेगा।

## सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास:

- राष्ट्रीय स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिये नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। इसमें सरकार के प्रतिनिधियों के अलावा शिक्षाविदों तथा उद्योग जगत को भी प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।
- वर्तमान बजट में सरकार ने फिफ्थ जनरेशन टेक्नोलॉजी स्टार्टअप के लिये 480 मिलियन डॉलर का प्रावधान किया है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, 3-D प्रिंटिंग और ब्लॉक चेन शामिल हैं।
- इसके अलावा सरकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डेटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डेटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर 7-सूत्री रणनीति:

इससे पहले पिछले वर्ष अक्टूबर में केंद्र सरकार ने 7-सूत्री रणनीति तैयार की थी, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल करने के लिये भारत की सामरिक योजना का आधार तैयार करेगी। इनमें प्रमुख हैं:

मानव मशीन की बातचीत के लिये विकासशील विधियाँ बनाना।

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और R&D के साथ एक सक्षम कार्यबल का निर्माण करना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक, कानूनी और सामाजिक निहितार्थों को समझना तथा उन पर काम करना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता टेक्नोलॉजी को मानक मानकर और बेंचमार्क के माध्यम से मापन का मूल्यांकन करना।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.) के क्षेत्र में डीआरडीओ का योगदान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स केंद्र (सीएआईआर) डीआरडीओ की एक प्रमुख प्रयोगशाला है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, कमांड और नियंत्रण, सूचना और संचार सुरक्षा के क्षेत्रों में अनुसंधान और

विकास में शामिल है, जिससे युद्धक्षेत्र सुरक्षित संचार और सूचना के लिए मिशन क्रिटिकल उत्पादों और प्रबंधन प्रणालियों का विकास होता है।

**स्वायत्त नेविगेशन प्रणाली**

**स्वायत्त खोज रोबोट**

**ओमनी हेक्सबॉट**

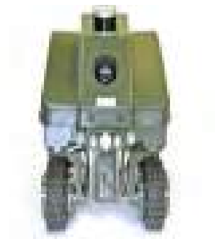

**रोबोट संतरी**

### नागरिक क्षेत्र के लिए उत्पाद:

- CAIR_ICR, हस्तलिखित प्रविष्टियों के साथ आवेदन पत्रों की स्वचालित प्रसंस्करण के लिए एक बुद्धिमान चरित्र पहचान प्रणाली।
- **शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए इंटेलिजेंट व्हील चेयर:** - एक कम लागत, अर्ध-स्वचालित, मोटर चालित व्हील चेयर।
- वीआर और हैप्टिक्स पर आधारित सिम्युलेटर आधारित लेप्रोस्कोपिक सर्जरी ट्रेनर।
- शैक्षणिक संस्थानों के लिए सेलेक्टिव कंप्लायंट असेंबली रोबोट आर्म या सेलेक्टिव कंप्लायंट आर्टिकुलेटेड रोबोट आर्म (SCARA)।
- **हॉट स्लग हैंडलिंग के लिए रोबोट:** - एक इंडक्शन फर्नेस से डाई कास्टिंग मशीन में 600 डिग्री सेल्सियस हॉट स्लग के स्थानांतरण के लिए एनएमआरएल के लिए छह अक्षों वाला रोबोटिक सिस्टम विकसित किया गया है।
- बिजली संयंत्रों के भाप जनरेटर ट्यूबों के निरीक्षण के लिए रोबोट।
- भाषा स्वतंत्र वक्ता पहचान प्रणाली (एलआईएसआईएस)

### सावधानी भी ज़रूरी है:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से हमारे रहने और कार्य करने के तरीकों में व्यापक बदलाव आएगा। रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों से तो उत्पादन और निर्माण के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगा। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के मुताबिक अकेले अमेरिका में अगले दो दशकों में डेढ़ लाख रोज़गार खत्म हो जाएंगे।

संभवतया कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दुनिया में रोज़गार जनित चुनौतियों से हम निपट लें, लेकिन सबसे बड़े खतरे को टालना मुश्किल होगा। अतः स्पष्ट है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त मशीनों से जितने फायदे हैं, उतने ही खतरे भी हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सोचने-समझने वाले रोबोट अगर किसी कारण या परिस्थिति में मनुष्य को अपना दुश्मन मानने लगें तो मानवता के लिये खतरा पैदा हो सकता है। सभी मशीनें और हथियार बगावत कर सकते हैं। ऐसी स्थिति की कल्पना हॉलीवुड की 'टर्मिनेटर' जैसी फिल्म में की गई है।

## भारत आ चुकी है सोफिया:

सोफिया नामक रोबोट को हैनसन रोबोटिक्स के संस्थापक डेविड हैनसन ने 2016 में बनाया था। मुंबई में जब एशिया का सबसे बड़ा टेक फेस्ट-2017 आयोजित किया गया था तब इसके टेलीफेस्ट में रोबोट सोफिया भी आई थी। सोफिया ने इस कार्यक्रम में भारतीय अंदाज़ को अपनाया और इस प्रोगाम में भारतीय वेशभूषा में सफेद और संतरी रंग की साड़ी पहनी हुई थी। सोफिया ने 'नमस्ते इंडिया, मैं सोफिया' कहकर वहाँ मौजूद लोगों का अभिवादन किया। टेक फेस्ट-2017 में तीन हजार लोगों में इस बात को लेकर उत्सुकता थी कि आखिर सोफिया किस तरह बात करती है और सवालों के जवाब कैसे देती है। सोफिया ने सभी सवालों के जवाब बड़ी ही चतुराई और प्रभावी तरीके से दिये। सोफिया ने वहाँ मौज़ूद लोगों से हिंदी में बात की।

## निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संकल्पना बहुत पुरानी है। ग्रीक मिथकों में 'मैकेनिकल मैन' की अवधारणा से संबंधित कहानियाँ मिलती हैं अर्थात् एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे किसी व्यवहार की नकल करता है। प्रारंभिक यूरोपीय कंप्यूटरों को 'लॉजिकल मशीन' की तरह डिजाइन किया गया था यानी उनमें बेसिक गणित, मेमोरी जैसी क्षमताएँ विकसित कर इनका मैकेनिकल मस्तिष्क के रूप में इस्तेमाल किया गया था। लेकिन जैसे-जैसे तकनीक उन्नत होती गई और कैलकुलेशंस जटिल होते गए, उसी तरह कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संकल्पना भी बदलती गई। इसके तहत इनको मानव व्यवहार की तरह विकास करने की कोशिश की गई, ताकि ये अधिकाधिक उसी तरह से इंसानी कामों को करने में सक्षम हो सकें, जिस तरह से आमतौर पर हम सभी करते हैं।

गूगल के सीईओ सुंदर पिचई का कहना है कि मानवता के फायदे के लिये हमने आग और बिजली का इस्तेमाल तो करना सीख लिया, पर इसके बुरे पहलुओं से उबरना जरूरी है। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी ऐसी ही तकनीक है और इसका इस्तेमाल कैंसर के इलाज में या जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में भी किया जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का निर्माण हमारी सभ्यता के इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में से है। लेकिन सच यह भी है कि यदि इसके जोखिम से बचने का तरीका नहीं ढूँढा, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं, क्योंकि तमाम लाभों के बावजूद आर्टिफिशियल इंजेलिजेंस के अपने खतरे हैं। कुल मिलाकर एक शक्तिशाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय हमारे लिये फायदेमंद भी हो सकता है और नुकसानदेह भी। फिलहाल हम नहीं जानते कि इसका स्वरूप आगे क्या होगा, इसीलिये इस संदर्भ में और ज़्यादा शोध किये जाने की ज़रूरत है।

# इलेक्ट्रिक वाहन (EV) : हरित परिवहन

**अनीता चौहान**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

प्रदूषण की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसमें वायु प्रदूषण मुख्य है। हालांकि वायु प्रदूषण के और कई कारण हैं। वाहनों से निकलने वाला धुआँ भी वायु प्रदूषण का कारण हैं। आजकल इलेक्ट्रिक वाहन तेजी से बिक रहे हैं। जो की पारंपरिक गैसोलीन और डीजल चालित वाहनों के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए एक क्रांतिकारी समाधान के रूप में उभर रहे हैं। तकनीकी प्रगति और स्थिरता पर बढ़ते जोर के साथ, EV तेजी से उपभोक्ताओं और सरकारों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं।

इलेक्ट्रिक वाहन एक बैटरी द्वारा संचालित इलेक्ट्रिक मोटर का उपयोग करता है, जिससे जीवाश्म ईंधनों की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। पारंपरिक आंतरिक दहन इंजन वाहनों के विपरीत, EV टेलपाइप उत्सर्जन नहीं करते हैं, जिससे वे परिवहन के लिए एक स्वच्छ विकल्प बन जाते हैं।

**इलेक्ट्रिक वाहन (EV)** का निर्माण **19वीं शताब्दी** की शुरुआत में हुआ था। कई आविष्कारकों ने इसके विकास में योगदान दिया:

- **1828**: हंगरी के भौतिकविद Ányos Jedlik ने एक छोटे मॉडल कार का निर्माण किया, जो इलेक्ट्रिक मोटर से संचालित थी।
- **1832-1839**: स्कॉटलैंड के आविष्कारक Robert Anderson ने एक प्रारंभिक इलेक्ट्रिक गाड़ी विकसित की।
- **1835**: नीदरलैंड के प्रोफेसर Sibrandus Stratingh और जर्मनी के सहायक Christopher Becker ने एक छोटी इलेक्ट्रिक कार बनाई, जो नॉन-रिचार्जेबल बैटरियों से चलती थी।
- **1890**: अमेरिकी रसायनज्ञ William Morrison ने अमेरिका में पहली सफल इलेक्ट्रिक कार बनाई, जो 14 मील प्रति घंटे की गति से चल सकती थी।

हालांकि कई देशों ने शुरुआती इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास में योगदान दिया, लेकिन **फ्रांस और इंग्लैंड** में **19वीं शताब्दी के अंत** में पहली व्यावहारिक इलेक्ट्रिक कारें सामने आईं।

- **2008**: Tesla Roadster लॉन्च हुआ, जिसने यह साबित किया कि EV तेज़, स्टाइलिश और लंबी दूरी तक चलने वाले हो सकते हैं।
- **2010s**: Nissan Leaf, Chevrolet Bolt, और Tesla Model S जैसी वाहनों ने EV बाजार को व्यापक रूप से स्वीकार्य बनाया।

- **2020s और भविष्य**: सॉलिड-स्टेट बैटरी, वायरलेस चार्जिंग, और सौर-संचालित EVs जैसी तकनीकें विकास में हैं।

## इलेक्ट्रिक वाहनों के लाभ

1. **पर्यावरणीय प्रभाव -** EV ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हैं, वायु प्रदूषण को घटाते हैं, और जलवायु परिवर्तन को कम करने में योगदान देते हैं। EV को अपनाने से कार्बन फुटप्रिंट को काफी हद तक कम किया जा सकता है।
2. **कम परिचालन लागत -** बिजली आमतौर पर गैसोलीन या डीजल की तुलना में सस्ती होती है, जिससे ईंधन लागत कम हो जाती है। इसके अलावा, EV में कम गतिशील भाग होते हैं, जिसके कारण रखरखाव की लागत भी कम होती है।
3. **ऊर्जा दक्षता -** EV आंतरिक दहन इंजन वाहनों की तुलना में अधिक कुशलता से ऊर्जा का उपयोग करते हैं, जिससे अधिकतम प्रदर्शन के साथ न्यूनतम ऊर्जा खपत होती है।
4. **सरकारी प्रोत्साहन -** कई सरकारें इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के लिए सब्सिडी, कर छूट, और अन्य प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। इन नीतियों से EV को अधिक सुलभ और किफायती बनाया जाता है।

## चुनौतियाँ और भविष्य का मार्ग

हालांकि EV के कई फायदे हैं, फिर भी वे कुछ चुनौतियों का सामना करते हैं, जैसे बैटरी उत्पादन की लागत, चार्जिंग अवसंरचना की सीमाएँ, और चार्जिंग के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की उपलब्धता। हालांकि, बैटरी प्रौद्योगिकी में निरंतर नवाचार, उन्नत अवसंरचना विकास, और स्थिरता के लिए वैश्विक प्रतिबद्धता इन चिंताओं को दूर कर रही है।

## इलेक्ट्रिक वाहन बैटरी का निपटान: एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दा

इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) में उपयोग की जाने वाली बैटरियाँ **लिथियम, कोबाल्ट, और निकेल** जैसे सामग्रियों से बनी होती हैं, जो उचित तरीके से निपटान न होने पर पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकती हैं। इसलिए, इन बैटरियों का सही निपटान आवश्यक है।

## प्रमाणित पुनर्चक्रण कार्यक्रमों के माध्यम से पुन: उपयोग:

EV बैटरियों को विशेष पुनर्चक्रण कार्यक्रमों के माध्यम से पुनः उपयोग किया जा सकता है, जहाँ बहुमूल्य सामग्रियों को निकालकर दोबारा उपयोग किया जाता है। इससे अपशिष्ट कम होता है और पर्यावरणीय नुकसान कम किया जा सकता है।

**ऊर्जा भंडारण के लिए पुनः उपयोग**: पुरानी EV बैटरियों को **ऊर्जा भंडारण प्रणाली** के रूप में फिर के रूप में फिर से इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे कि घरों के लिए बैकअप पावर या नवीकरणीय ऊर्जा ग्रिड।

- **विशेष बैटरी निपटान सुविधाएँ**: समर्पित निपटान सुविधाएँ जहरीले पदार्थों को सुरक्षित तरीके से प्रबंधित करती हैं, जिससे **मिट्टी और पानी** प्रदूषित होने से बचते हैं।
- **उन्नत पुनर्चक्रण तकनीक**: पायरोमेटलर्जी, हाइड्रोमेटलर्जी, और डायरेक्ट री-साइक्लिंग जैसी तकनीकें बैटरी में मौजूद धातुओं को कुशलतापूर्वक पुनः प्राप्त करने में मदद करती हैं और प्रदूषण को कम करती हैं।
- **नियम और सतत प्रथाएँ**: विभिन्न देशों में बैटरी निपटान के लिए नियमन बनाए गए हैं। भारत में जिम्मेदार निपटान प्रथाएँ पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, संसाधनों के संरक्षण, और लैंडफिल प्रदूषण को रोकने पर केंद्रित हैं
- **AI और ऑटोनॉमस ड्राइविंग**: Evs अब पहले से अधिक स्मार्ट और स्वचालित हो रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित ड्राइविंग सिस्टम स्वचालित और सुरक्षित यात्रा को संभव बनाएंगे, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना कम होगी।
- **अल्ट्रा-फास्ट चार्जिंग**: आगामी अल्ट्रा-फास्ट चार्जर सिर्फ कुछ मिनटों में 100 किमी की दूरी के लिए चार्ज करने की क्षमता देंगे, जिससे EV चार्जिंग प्रक्रिया पेट्रोल भरवाने जितनी तेज़ हो जाएगी।
- **पर्यावरण-अनुकूल और पुनर्चक्रण योग्य बैटरियाँ**: भविष्य में सस्टेनेबल बैटरी विकसित की जाएँगी, जो सोडियम-आयन और ग्रेफीन-आधारित सामग्रियों से बनी होंगी। ये बैटरियाँ कम प्रदूषणकारी और 100% पुनर्चक्रण योग्य होंगी।

## भारत की ईवी नीति 2025: उपभोक्ताओं और व्यवसायों पर प्रभाव

**उपभोक्ताओं पर प्रभाव: उच्च-स्तरीय ईवी की कीमतों में कमी** आयात शुल्क में कटौती के कारण प्रीमियम ईवी अधिक सस्ते हो सकते हैं।

1. **घरेलू ईवी उद्योग को बढ़ावा:** भारतीय वाहन निर्माता प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए उत्पादन और तकनीक में सुधार कर सकते हैं।
2. निवेश और रोजगार वृद्धि ₹4,150 करोड़ न्यूनतम निवेश की शर्त से निर्माण, अनुसंधान और अवसंरचना विकास क्षेत्रों में नौकरियों की संभावनाएँ बढ़ेंगी।
3. सीमित मात्रा में ईवी आयात कंपनियाँ प्रतिवर्ष अधिकतम 8,000 ईवी आयात कर सकती हैं, लेकिन तीन वर्षों के भीतर स्थानीय उत्पादन बढ़ाना आवश्यक होगा।
4. स्थिरता और नवाचार की दिशा में बढ़ावा स्थानीय उत्पादन अनिवार्यता कंपनियों को बैटरी तकनीक, आपूर्ति श्रृंखला स्थानीयकरण, और नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।
5. FAME-II और राज्य स्तरीय EV नीतियों के तहत दी जाने वाली सब्सिडियाँ EV को अधिक किफायती बना रही हैं।
6. कर छूट और कम ब्याज दरों के साथ EV ऋण को बढ़ावा दिया जा रहा है।
7. स्थानीय बैटरी उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयास भारत को एक वैश्विक EV हब बनाने की दिशा में हैं।

## भविष्य की संभावनाएँ और नवाचार

- भविष्य की EV तकनीकों में लंबी बैटरी लाइफ, तेज़ चार्जिंग और सौर ऊर्जा का एकीकरण शामिल होगा।
- भारत का EV बाजार 2030 तक हर साल 1 करोड़+ EV बिक्री तक पहुँचने का अनुमान है।
- सस्टेनेबल और हरित परिवहन की ओर बढ़ते कदम इस परिवर्तन को और तेज़ करेंगे।
- **बैटरी तकनीक में नवाचार:** भारत में सॉलिड-स्टेट और सोडियम-आयन बैटरी पर शोध किया जा रहा है, जिससे बैटरी की लागत कम करने और दक्षता बढ़ाने में मदद मिलेगी। स्टार्टअप और अनुसंधान संस्थान स्वदेशी बैटरी प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए कार्यरत हैं।
- **चार्जिंग अवसंरचना का विस्तार** : सरकार हाईवे EV चार्जिंग नेटवर्क और शहरी चार्जिंग स्टेशन स्थापित कर रही है, जिससे EV अपनाने को सुगम बनाया जा सके। यह उपाय "रेंज एंग्जायटी" की समस्या को हल करने में सहायक होगा।
- **सौर और नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण** : भारत सौर-संचालित Evs पर काम कर रहा है, जिससे चार्जिंग लागत घटेगी और ऊर्जा स्रोत अधिक टिकाऊ होंगे। इससे Evs अधिक पर्यावरण-अनुकूल बनेंगे।

भारत में EV क्रांति के साथ **सस्ती, टिकाऊ और तकनीक-संचालित** समाधान तेजी से अपनाए जा रहे हैं। जैसे-जैसे EV की लोकप्रियता बढ़ेगी, चार्जिंग नेटवर्क मजबूत होगा और बैटरी तकनीक में सुधार होगा, EV जल्द ही भारतीय सड़कों पर प्रमुख रूप से दिखेंगे। भारत की रणनीतिक योजनाएँ EV तकनीक और बुनियादी ढांचे के विकास को गति दे रही हैं, जिससे यह वैश्विक EV क्रांति में अग्रणी बन सकता है। निरंतर नवाचार, निवेश और सरकारी सहयोग से भारत एक स्वच्छ और हरित भविष्य की दिशा में अग्रसर है। भारत की ईवी नीति 2025 देश को ग्रीन मोबिलिटी की ओर ले जाने, ईवी की उपलब्धता बढ़ाने और घरेलू उत्पादन को मजबूत करने में मदद करेगी। हालांकि चुनौतियाँ, जैसे लागत और चार्जिंग नेटवर्क, अभी बनी हुई हैं, लेकिन ये उपाय एक स्वच्छ और इलेक्ट्रिक भविष्य की दिशा में मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन परिवहन के भविष्य को आकार दे रहे हैं, पारंपरिक ऑटोमोबाइल के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल और लागत प्रभावी विकल्प प्रदान कर रहे हैं। जैसे-जैसे तकनीक विकसित होगी और अवसंरचना का विस्तार होगा, EV ऑटोमोटिव उद्योग में एक प्रमुख शक्ति बनने की संभावना रखते हैं, जिससे हमारा ग्रह अधिक हरित बन सके। EV तकनीक ने प्रयोगात्मक वाहनों से लेकर मुख्यधारा के परिवहन समाधान तक एक अविश्वसनीय सफर तय किया है। सरकारें, ऑटोमोबाइल कंपनियाँ और उपभोक्ता मिलकर **हरित परिवहन** को आगे बढ़ा रहे हैं, जिससे भविष्य में Evs ही सड़क पर प्रमुख रूप से दिखाई देंगे। EV उद्योग का भविष्य लंबी बैटरी लाइफ, तेज़ चार्जिंग, स्वचालित ड्राइविंग और हरित तकनीक की दिशा में आगे बढ़ रहा है। जैसे-जैसे नवाचार तेज़ होंगे, परिवहन प्रणाली और अधिक स्मार्ट, कुशल और पर्यावरण के अनुकूल होगी।

# संस्कृति

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्‌दुःखभाग्भवेत ।

# पुरी रथ यात्रा: आस्था और परंपरा का प्रतीक

**सचिन सांगवान**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

पुरी, ओडिशा की रथ यात्रा न केवल भारत बल्कि विश्व के सबसे प्राचीन और भव्य धार्मिक आयोजनों में से एक है। यह उत्सव हर वर्ष आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है और लाखों श्रद्धालुओं को एक साथ जोड़ता है। भगवान जगन्नाथ के इस ऐतिहासिक रथोत्सव को गुंडिचा यात्रा, दशावतार यात्रा और गोसनी यात्रा जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है।

## इतिहास की परतें और पौराणिक मान्यता

पुरी के जगन्नाथ मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव ने करवाया था। किंतु पुराणों के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की पूजा उससे भी हजारों वर्ष पहले से होती रही है। स्कंद पुराण और ब्रह्म पुराण में इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है।

कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ का विग्रह (प्रतिमा) दरअसल आदिवासी देवता नीलमाधव से विकसित हुआ। किंवदंती है कि पहले नीलमाधव की पूजा सबर (वनवासी जनजाति) के राजा ने की थी। यही कारण है कि आज भी रथ यात्रा और जगन्नाथ मंदिर में आदिवासी परंपराओं का गहरा प्रभाव देखा जाता है – जैसे रथ निर्माण में दारु ब्रह्म (विशेष पेड़) को चुनने के लिए आज भी दैतापति (सेवक वर्ग) और सबर जनजाति की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

## रथ यात्रा की अनूठी विशेषताएँ

### तीन अलग-अलग रथ:

नंदीघोष (या गरुड़ध्वज) – भगवान जगन्नाथ का रथ, जिसकी ऊँचाई लगभग 45 फीट (13.7 मीटर) होती है और इसमें 16 पहिए होते हैं

तालध्वज – बलभद्र का रथ, 44 फीट ऊँचा, 14 पहिए होते हैं।

दर्पदलन (या पद्मध्वज) – सुभद्रा का रथ, 43 फीट ऊँचा, 12 पहिए होते हैं।

### रथों का वार्षिक निर्माण:

प्रत्येक वर्ष करीब 400 कारीगर और शिल्पकार मिलकर 2 महीने में रथों का निर्माण करते हैं। हर रथ के लिए अनुमानित 4000 घनफुट से अधिक लकड़ी का उपयोग होता है। फासी, असनाथा, सिमिली और धासा जैसी पवित्र लकड़ियाँ विशेष रूप से जंगल से चुनी जाती हैं।

### रस्सियाँ:

रथ खींचने के लिए हर रथ में करीब 50 मीटर लंबी, मोटी नारियल और जूट की रस्सियाँ लगाई जाती हैं। इन रस्सियों को खींचना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है।

### स्नान यात्रा और अनसारा:

रथ यात्रा से पहले 'स्नान यात्रा' होती है जिसमें भगवान को 108 कलशों से स्नान कराया जाता है। इसके बाद भगवान 'बीमार' हो जाते हैं और 15 दिन तक दर्शन नहीं देते – इस अवधि को अनसारा कहते हैं। फिर नेत्र उत्सव के बाद भगवान नए रूप में प्रकट होते हैं और रथ यात्रा के लिए बाहर निकलते हैं।

### गुंडिचा मंदिर:

तीनों रथ गुंडिचा मंदिर पहुँचते हैं जहाँ भगवान 7 दिन तक अपनी मौसी के घर में रहते हैं। इसे गोसनी घर कहा जाता है। वापसी यात्रा को बहुदा यात्रा कहते हैं।

पुरी का जगन्नाथ मंदिर कई अद्भुत रहस्यों के लिए भी प्रसिद्ध है – जैसे मंदिर के ऊपर लहराता ध्वज सदैव हवा के विपरीत दिशा में उड़ता है। समुद्र के इतने समीप होने के बावजूद मंदिर परिसर में अंदर खड़े होकर समुद्र की लहरों की आवाज सुनाई नहीं देती। ऐसी मान्यता है कि भगवान जगन्नाथ का रथ यात्रा पर्व इन रहस्यमयी शक्तियों से भी जुड़ा हुआ है।

## आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान

पुरी की रथ यात्रा ओडिशा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कारीगरी और पर्यटन उद्योग के लिए जीवनदायिनी है। एक अनुमान के अनुसार, केवल रथ यात्रा के दौरान ही 10 लाख से अधिक लोग पुरी पहुँचते हैं, जिससे स्थानीय होटल, हस्तशिल्प, और परिवहन व्यवसाय को भारी आमदनी होती है।

पुरी के रथ यात्रा से जुड़ी कारीगरी – जैसे 'पिपली' की अप्लिक कला, लकड़ी की मूर्तियाँ, पत्ताचित्र चित्रकला – को वैश्विक मान्यता मिली है। इसके अलावा, इस उत्सव के कारण पुरी को धार्मिक पर्यटन नगरी का दर्जा प्राप्त है।

## वैश्विक प्रभाव

अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (ISKCON) ने रथ यात्रा को पूरी दुनिया में लोकप्रिय बना दिया है। आज लंदन, न्यूयॉर्क, मेलबर्न जैसे कई बड़े शहरों में भी जगन्नाथ रथ यात्रा का आयोजन होता है जिसमें हज़ारों विदेशी श्रद्धालु भाग लेते हैं।

## निष्कर्ष

पुरी की रथ यात्रा केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था और ओडिशा की सांस्कृतिक अस्मिता की जीवंत अभिव्यक्ति है। यह पर्व संदेश देता है कि भगवान सभी के हैं और भक्त-समाज में कोई भेदभाव नहीं। जैसे विशाल रथ हर वर्ष फिर से बनते हैं और सड़क पर निकलते हैं, वैसे ही यह उत्सव नई पीढ़ियों को विरासत से जोड़ता है और आध्यात्मिक ऊर्जा से भर देता है। जगन्नाथ रथ यात्रा मानवता के लिए यह अमूल्य संदेश छोड़ती है कि सच्ची भक्ति, एकता और समर्पण से ही समाज और संस्कृति जीवित रहती है।

# ॐ का महत्व

**संदीप रावत**
कार्मिक निदेशालय

ओम, इसे आउम् या ओंकार कहा जाता है। यह एक पवित्र और आध्यात्मिक ध्वनि है जिसे सृष्टि के जन्म, विकास और अंत का प्रतीक माना जाता है।

ॐ का उच्चारण ध्यान और साधना में मदद करता है। इसका उच्चारण तीन ध्वनि अ, उ और म से मिलकर बनता है। अ सृष्टि के आरंभ को दर्शाता है। उ विकास और प्रगति को दर्शाता है। म अंत और ब्रह्मलीन होने को दर्शाता है।

इसे देखें तो सिर्फ ढाई अक्षर दिखता है परन्तु पूरे ब्रह्मांड का सार है। इसे प्रथम ध्वनि माना जाता है। इसे शरद ऋतु के पत्तों में, सागर की लहरों में, शंख की आवाज में सुन सकते हैं। जब हम इसका जाप करते हैं तो यह हमारे मन तथा आत्मा को शांति प्रदान करता है। इसके बिना पूजा पूरी नहीं होती, इसके बिना सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

ॐ के उच्चारण से शरीर के अलग अलग भागों में कंपन शुरू होता है। अ शरीर के निचले हिस्से (पेट के करीब), उ शरीर के मध्य भाग में (छाती के करीब), म शरीर के ऊपरी भाग में (मस्तिष्क के करीब) कंपन पैदा करता है।

यदि आप अधिक तनाव में रहते हैं, छोटी-छोटी बातों पर परेशान होते हैं तो सुबह सूर्योदय के समय किसी शांत जगह पर सुखासन में बैठकर ॐ का उच्चारण 108 बार करें। इसके उच्चारण से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभ मिलते हैं। इसके उच्चारण के समय गले में कंपन पैदा होती है जो कि थायराइड ग्रन्थि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इससे हृदय की समस्याएं, घबराहट की समस्या, बीपी, डायबिटीज के मरीजों को लाभ पहुँचता है।

वैज्ञानिकों ने रिसर्च में पाया कि यह मस्तिष्क के साथ-साथ पूरे शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। सांध्यकाल में भी इसका उच्चारण किया जा सकता है। इसके उच्चारण से नाभि, हृदय और आज्ञा चक्र जागृत होते हैं, यह तीनों देवों ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ तीनों लोकों का प्रतीक है। इसे सभी धर्मों ने स्वीकार किया है। ओम की ध्वनि को न केवल हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है बल्कि जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म तथा अन्य धर्मों में भी इसका प्रमुख स्थान है। यह मंत्र पृथ्वी ग्रह पर सभी व्यक्तियों को ब्रह्मांड से जोड़ता है। ज्यादातर मंत्र ओम से ही शुरू होते हैं। यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरूषार्थों का प्रदायक है।

महर्षि पतंजलि के योगसूत्र में इसका वर्णन है। इसको सिर्फ सुनने मात्र से मस्तिष्क के दोनों हिस्से सक्रिय हो जाते हैं। इसके उच्चारण से शरीर के विभिन्न रोगों का नाश होता है। यह अत्यंत प्रभावशाली तथा चमत्कारिक लाभ पहुँचाने वाला मंत्र है। यह अनिष्टों का नाश करके सुख-समृद्धि प्रदान करता है। यह शरीर के भीतर तथा बाहर सकारात्मक उर्जा का संचार करता है। इसका गुणगान वेदों में भी किया गया है। इस ध्वनि को शिव के डमरू से निकली प्रथम ध्वनि कहा जाता है। अंत में हम कह सकते हैं कि ॐ शब्द केवल एक शब्द न होकर सम्पूर्ण मंत्र है। इस मंत्र के अंदर संपूर्ण रहस्य छिपा हुआ है। प्रत्येक मंत्र के प्रथम में उच्चारण होता है। प्रतिदिन ओम का जाप करने से व्यक्ति के अंदर आनंद की अनुभूति होती है। इसमें वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों समाहित है। योग तथा व्यायाम के बाद भी इसका जाप किया जाता है। इस शब्द से आप स्वयं को परमात्मा से जोड़ सकते हैं। आप भी इसके उच्चारण से लाभान्वित हो सकते हैं। यही अपने आप में संपूर्ण ब्रह्मांड है।

युद्ध नहीं जिनके जीवन में
वे भी बड़े अभागे होंगे
या तो प्रण को तोड़ा होगा
या फिर रण से भागे होंगे।

# वैदिक घर

**अर्चना सिंह**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

घर का बहुत महत्व है। यह न केवल एक आशियाना है, बल्कि यह सुरक्षित और निजी स्थान भी है जहाँ हम अपने प्रियजनों के साथ सुखद पल बिताते हैं। यह हमें बाहरी खतरों से सुरक्षा देता है और एक स्थिर, सुरक्षित माहौल प्रदान करता है। घर हमारी पहचान का प्रतीक है और हमारी भावनाओं और यादों से जुड़ा होता है। घर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका महत्व केवल एक भौतिक संरचना से परे है।

घर का वातावरण हमारे सामाजिक और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे हमें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति मिलती है।

लेकिन हमें एक अच्छे घर की उन विशेषताओं पर विचार करना चाहिए जो आपकी जीवनशैली को बेहतर बनाती हैं जैसे कि ऊर्जा दक्षता, स्मार्ट तकनीक और बाहरी क्षेत्र। सावधानीपूर्वक विचार और विशेषज्ञ मार्गदर्शन के साथ, आप एक स्थान को एक घर में बदल सकते हैं - एक ऐसी जगह जहाँ आराम, खुशी और कल्याण पनपता है। वैदिक ग्रंथों में "हर्म्य" शब्द का उपयोग घर को दर्शाने के लिए किया गया है, जिसका अर्थ है एकता, स्थिरता और सुरक्षा।

इसी क्रम में हम बात करते हैं **वैदिक घर** की। वैदिक घर एक ऐसे घर को कहा जाता है जो प्राकृतिक और टिकाऊ सामग्री से बना हो जैसे कि गोबर, मिट्टी, लकड़ी और घास। यह घर सीमेंट और कंक्रीट के पारंपरिक निर्माण तरीकों के बजाय प्राचीन भारतीय पद्धतियों का उपयोग करके बनता है।

## वैदिक घर की विशेषताएं:

- **सामग्री:**
  प्राकृतिक सामग्री जैसे पुआल, चटाई, लकड़ी, और मिट्टी का उपयोग किया जाता है।
- **संरचना:**
  ये अस्थायी या अर्ध-स्थायी संरचनाएं हैं और ईंटों का उपयोग कम किया जाता है।
- **पर्यावरण के अनुकूल:**
  ये घर प्राकृतिक सामग्री से बनाए जाते हैं, जो पर्यावरण के लिए सुरक्षित होते हैं।
- **वैदिक प्लास्टर:**

गाय के गोबर से बना वैदिक प्लास्टर एक ऐसा विकल्प है जो गर्मियों में घरों को ठंडा और हवा को शुद्ध रखता है।

- **स्थिरता:**
  वैदिक घर, प्राकृतिक और स्थायी सामग्री का उपयोग करके लंबे समय तक चलते हैं।
- **स्वास्थ्य:**
  वैदिक प्लास्टर से बने घर हानिकारक कीटाणुओं और जीवाणुओं से मुक्त होते हैं।

इन वैदिक घरों का सबसे बड़ा उदाहरण है :

1. गुजरात के जिग्नेश भाई का सपनों का महल। नए जमाने की कोई आलीशान बिल्डिंग नहीं, लकड़ी, मिट्टी, गोबर, घास जैसे प्राकृतिक चीजों से बना यह वैदिक घर है।
2. हरियाणा के डॉ. शिव दर्शन मलिक ने गाय के गोबर से एक वैदिक घर बनाया है। गाय के गोबर से बनी ईंटों और वैदिक प्लास्टर के इस्तेमाल से बना यह घर, गर्मियों में ठंडा तो रहता ही है, साथ ही इस घर के अंदर की हवा भी शुद्ध रहती है।
3. कुमार विश्वास ने उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के पिलखुवा में, अपने पैतृक गांव में, एक खास घर बनाया है, जिसे उन्होंने 'केवी कुटीर' नाम दिया है. यह घर अपनी विशेष निर्माण शैली और एनवायरमेंट फ्रेंडली होने के कारण चर्चा में है।

## निष्कर्ष

घर वह स्थान होता है जहाँ आत्मीयता और गर्मजोशी होती है, जहाँ व्यक्ति रिश्तों की खूबसूरती को महसूस कर सकता है। यह वह स्थान है जहाँ व्यक्ति की यादें जुड़ी होती हैं - बचपन से लेकर जीवन के अंतिम दिनों तक। ये रिश्ते, प्यार, स्नेह और समर्पण हैं जो किसी भी ईंट से बने अपार्टमेंट को घर नामक एक खूबसूरत जगह में बदल देते हैं। क्यूंकि कहते हैं कि एक आदमी अपनी जरूरत की चीज की तलाश में दुनिया भर में यात्रा करता है और उसे ढूंढ़ने के लिए घर लौटता है।

**घर जाने की ख़ुशी अलग ही होती है**
**घर जैसी जगह कहीं और नहीं होती है।।**

# वैशाली के बारे में

**ओम प्रकाश**
सतर्कता एवं सुरक्षा निदेशालय

वैशाली बिहार राज्य के 38 जिलों में से एक है। यह तिरहुत मंडल का एक हिस्सा है। वैशाली जैन धर्म के महावीर का जन्मस्थान होने के लिए जाना जाता है। हाजीपुर, इसका सबसे बड़ा शहर और जिला मुख्यालय, अपने केला वन के लिए जाना जाता है। यह जिला एनएच-77 और एनएच-322 राजमार्गों, गांधी सेतु और जय प्रकाश सेतु (जेपी सेतु), पुल ओवर (होली) गंगा नदी के माध्यम से जुड़ा हुआ है जो राज्य की राजधानी पटना, डिवीजन मुख्यालय मुजफ्फरपुर और ईस्टवर्ड जिला समस्तीपुर को जोड़ता है। 1972 में मुजफ्फरपुर से अलग हो जाने पर वैशाली जिला बन गया।

## प्राचीन वैशाली

किंवदंती के अनुसार, वैशाली का नाम इक्ष्वाकु के पुत्र राजा विशाल से है जिसने शहर की स्थापना की थी। वैशाली जीवंत लिच्छवी गणराज्य की राजधानी थी और बौद्ध और जैन धर्म दोनों के शुरुआती इतिहास से निकटता से जुड़ी हुई थी। उस समय वैशाली एक प्राचीन महानगर था और वाज्जी संघ गणराज्य की राजधानी थी, जिसने वर्तमान बिहार के अधिकांश हिमालयी गंगा क्षेत्र को कवर किया था। शिशुनाग राजवंश के मगध नियमों ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से वैशाली में स्थानांतरित की।

## इतिहास

विश्व का प्रथम गणतंत्र माने जाने वाले वैशाली ने महाभारत काल के राजा विशाल से अपना नाम ग्रहण किया। कहा जाता है कि उसने यहाँ एक महान किले का निर्माण किया था, जो अब खंडहर है। वैशाली एक महान बौद्ध तीर्थ है और भगवान महावीर का जन्मस्थान भी है। ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने तीन बार इस स्थान का दौरा किया और यहाँ काफी लंबा समय बिताया। बुद्ध ने वैशाली में अपना अंतिम उपदेश भी दिया और अपने निर्वाण की घोषणा की। उनकी मृत्यु के बाद वैशाली ने भी दूसरी बौद्ध परिषद का आयोजन किया।

महान लिच्छवी वंश ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैशाली पर शासन किया और साम्राज्य नेपाल की पहाड़ियों तक बढ़ा। लिच्छवी राज्य एशिया का पहला गणतंत्र राज्य माना जाता है। जातक कथाओं के अनुसार (बुद्ध के विभिन्न जन्मों का लेखा-जोखा देने वाली बौद्ध कथा-पुस्तकें) वैशाली पर लिच्छवी कबीले के कुछ 7707 राजाओं का शासन था। महान मगध राजा अजातशत्रु ने पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में वैशाली को मिला लिया और उसके बाद वैशाली ने धीरे-धीरे अपनी महिमा और शक्ति खो दी।

जैन धर्म के अंतिम तीर्थांकर महावीर का जन्म वैशाली के निकट कुंडुपुर में हुआ था। महावीर के पिता राजा सिद्धार्थ थे और उनकी माता त्रिशाला वैशाली के राजा चेतक की बहन थीं। चूंकि पूर्ववंश के दौरान उनके पिता के राज्य की संपत्ति बढ़ गई थी, बच्चे को वर्धमान कहा जाता था। वे महावीर नाम के थे क्योंकि उन्होंने बहुत कम उम्र में बड़ी हिम्मत दिखाई। ३० वर्ष की आयु में अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने दुनिया में पहले गणराज्य के रूप में माने जाने वाले अशोक के नेतृत्व में दो दिनों तक सामना करने के बाद दुनिया का त्याग कर दिया, वैशाली ने महाभारत युग के राजा विशाल से अपना नाम ले लिया।

# युद्ध के बाद जीवन: एक नए सवेरे की तलाश

**मनोज कुमार कटारिया**
कार्मिक निदेशालय

युद्ध, मानव इतिहास का एक काला अध्याय, अपने पीछे केवल खंडहर, दर्द और अनगिनत आँसू छोड़ जाता है। जब तोपों की गर्जना शांत हो जाती है और बारूद का धुआँ छंट जाता है, तब असली चुनौती सामने आती है - युद्ध के बाद जीवन का पुनर्निर्माण। यह केवल इमारतों और सड़कों को फिर से बनाने का काम नहीं है, बल्कि इससे कहीं अधिक गहरा, आत्माओं को जोड़ने और उम्मीदों को फिर से जगाने का प्रयास है।

युद्ध के तुरंत बाद का समय अक्सर भ्रम, अनिश्चितता और सदमे से भरा होता है। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, वे गहरे दुःख में डूब जाते हैं। शरीर के घाव तो भर सकते हैं, लेकिन मन पर लगे घाव कई पीढ़ियों तक रिसते रहते हैं। पलायन करने वाले अपने घरों को लौटते हैं, लेकिन अक्सर पाते हैं कि उनका सब कुछ लुट चुका है। भूख, गरीबी और बीमारियों का प्रकोप आम हो जाता है। आधारभूत संरचना का अभाव जीवन को और भी कठिन बना देता है। शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के साधन बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

लेकिन इस घोर निराशा के बीच भी, मानव भावना की अदम्य शक्ति का प्रदर्शन होता है। छोटे-छोटे प्रयासों से ही सही जीवन फिर से अपनी रफ्तार पकड़ने लगता है। लोग एक-दूसरे का हाथ थामते हैं सामुदायिक भावना बलवान होती है। किसान फिर से अपनी बंजर भूमि पर हल चलाते हैं, बच्चे टूटे-फूटे स्कूलों में वापस जाने लगते हैं और महिलाएं अपने घरों को फिर से संवारने का प्रयास करती हैं।

यह पुनर्निर्माण केवल भौतिक नहीं होता, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भी होता है। न्याय और सुलह की प्रक्रियाएं शुरू होती हैं ताकि भविष्य में ऐसे संघर्षों को रोका जा सके। युद्ध के पीड़ितों को सहारा देने के लिए मानसिक स्वास्थ्य सहायता कार्यक्रम चलाए जाते हैं। शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं ताकि युवा पीढ़ी एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सके।

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की भूमिका भी यहाँ महत्वपूर्ण हो जाती है। मानवीय सहायता, वित्तीय सहायता और विशेषज्ञता प्रदान करके वे युद्ध प्रभावित देशों को अपने पैरों पर खड़े होने में मदद करते हैं। शांति स्थापना बल और निगरानी मिशन यह सुनिश्चित करते हैं कि हिंसा फिर से भड़के नहीं।

युद्ध के बाद का जीवन एक लंबी और कठिन यात्रा है। इसमें धैर्य, दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि घावों को भरने और विश्वास को फिर से बनाने में समय लगता है। हालांकि हर छोटी जीत - एक फसल का उगना, एक बच्चे की हँसी, या दो समुदायों के बीच एक पुल का बनना - आशा की किरण जगाती है। युद्ध के बाद का जीवन सिर्फ जीवित रहना नहीं है; यह सीखे हुए सबक से मजबूत होकर, एक शांतिपूर्ण और समृद्ध भविष्य की नींव रखने का भी एक अवसर है। यह इस बात का प्रमाण है कि मानव जाति में विनाश से ऊपर उठकर, प्रेम और सहयोग के साथ एक नया सवेरा लाने की क्षमता है।

# विदाई समारोह सम्बोधन

**सुनील कुमार**
कार्यालय, अपर सचिव एवं अपर वित्तीय सलाहकार

विदाई समारोह हमारे जीवन के उन विशेष क्षणों में से एक होते हैं जब हम अपने दोस्तों, शिक्षकों, सहकर्मियों या वरिष्ठों को अलविदा कहते हैं। यह एक ऐसा अवसर होता है जब हम अपने अनुभव साझा करते हैं और भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

**विदाई भाषण के लिए, आप इन पंक्तियों का उपयोग कर सकते हैं: "आप सभी का धन्यवाद। आपके साथ बिताए समय का आनंद लिया। भविष्य के लिए शुभकामनाएं।"**

## बॉस के लिए

**सम्माननीय बॉस और प्रिय सहकर्मियों,**

आज का दिन हमारे कार्यस्थल के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि हमें अपने प्रेरणादायक बॉस से विदा लेना पड़ रहा है। आपके नेतृत्व में हमने न केवल कार्यकुशलता सीखी, बल्कि एक परिवार जैसा माहौल भी पाया।

आपका मार्गदर्शन हमेशा हमारे लिए प्रेरणादायक रहा है। आपने हमें केवल कार्य करने के तरीके नहीं सिखाए, बल्कि एक बेहतर पेशेवर बनने में भी मदद की। आपकी नेतृत्व शैली, अनुशासन और सकारात्मक दृष्टिकोण ने हमें सशक्त बनाया।

आपने हमें सिखाया कि चुनौतियों का सामना कैसे किया जाए और कैसे कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखा जाए। आपके मार्गदर्शन में हमने न केवल अपने कार्यक्षेत्र में प्रगति की, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी बहुत कुछ सीखा।

आज हम आपको विदा कर रहे हैं, लेकिन आपके द्वारा सिखाए गए मूल्य और सिद्धांत हमारे साथ हमेशा रहेंगे। हम आपकी नई यात्रा के लिए ढेरों शुभकामनाएँ देते हैं।

धन्यवाद!

## सहकर्मी के लिए विदाई भाषण

आदरणीय सभी उपस्थित लोग और मेरे प्रिय सहकर्मी [सहकर्मी का नाम],

आज हम अपने प्रिय सहकर्मी को विदाई देने के लिए एकत्रित हुए हैं। [सहकर्मी का नाम] जी ने इस संगठन में अपनी मेहनत, ईमानदारी और समर्पण से जो योगदान दिया है, वह अविस्मरणीय रहेगा।

आपकी ऊर्जा, सकारात्मकता और नेतृत्व ने हम सभी को प्रेरित किया है। आपकी कमी हमें जरूर खलेगी, लेकिन हम जानते हैं कि आप जहाँ भी जाएँगे, सफलता आपकी राह देख रही होगी।

हम आपको उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देते हैं। कृपया हमें याद रखें, क्योंकि हम आपको कभी नहीं भूलेंगे।

धन्यवाद

## विदाई भाषण स्वयं के लिए

मुझे बहुत खुशी है कि मैं आपके साथ काम कर पाया। आपके साथ काम करने का अनुभव बहुत ही सुखद रहा। आपके सहयोग और मार्गदर्शन के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

मैं जानता हूँ कि मैं आपके लिए बहुत कुछ नहीं कर पाया, लेकिन मैं आपके साथ जितना भी कर सका, उतना किया। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी छोटी-छोटी गलतियों को माफ कर देंगे और मुझे अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे।

मैं आपके साथ बिताए हर पल को हमेशा याद रखूंगा। मैं हमेशा आपकी यादों को अपने दिल में संजोकर रखूंगा।

अंत में, मैं आप सभी को अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सब हमेशा खुश रहें और अपने जीवन में सफलता प्राप्त करें।

## दोस्तों के लिए विदाई भाषण

प्रिय मित्रों,

आज का दिन हमारे जीवन का एक ऐसा पल है जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। यह वह क्षण है जब हमें अपने प्रिय दोस्तों से विदा लेनी पड़ रही है। हम सभी ने साथ में न जाने कितने खट्टे-मीठे पल बिताए हैं, जो जीवन भर हमारी यादों में संजोए रहेंगे।

हमने साथ में पढ़ाई की, मस्ती की, एक-दूसरे की मदद की और कभी-कभी डांट भी खाई। इन पलों ने हमें केवल अच्छे दोस्त ही नहीं, बल्कि एक परिवार बनाया है।

हालाँकि आज हम अलग हो रहे हैं, लेकिन हमारी दोस्ती और यादें हमेशा जीवित रहेंगी। हम एक-दूसरे से दूर भले ही हो जाएँ, लेकिन यह रिश्ता कभी नहीं टूटेगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी अपने-अपने लक्ष्यों को प्राप्त करें और भविष्य में फिर मिलें।

हमारी दोस्ती अमर रहे! धन्यवाद!

## प्रधानाचार्य जी, शिक्षकगण के लिए

आदरणीय प्रधानाचार्य जी, सम्माननीय शिक्षकगण, प्रिय सहपाठियों और मेरे विदाई ले रहे वरिष्ठ साथियों आज का यह विशेष अवसर हम सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह केवल एक विदाई समारोह नहीं है, बल्कि एक ऐसा पल है जहाँ हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और अपने प्रिय सीनियर्स को शुभकामनाएँ देते हैं।

हम सभी जानते हैं कि समय किसी के लिए नहीं रुकता। कुछ वर्ष पहले, जब हमारे सीनियर्स ने इस संस्थान में कदम रखा था, तब वे भी नए जोश और सपनों के साथ आए थे। आज वे ज्ञान, अनुशासन और अनुभव से भरपूर होकर अपने जीवन की अगली यात्रा के लिए तैयार हैं।

प्रिय सीनियर्स, आपने हमें हमेशा मार्गदर्शन दिया, हमारी गलतियों को सुधारा और हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आपके सहयोग, स्नेह और प्रेरणा के बिना हमारा यह सफर अधूरा रहता। हम आपके योगदान के लिए हृदय से आभारी हैं। आज का दिन खास भी है और मजेदार भी! यह विदाई का समय है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम रोने लगें! हम अपने दोस्तों और शिक्षकों को अलविदा कह रहे हैं, लेकिन यादें तो हमेशा साथ रहेंगी।

आप सभी का धन्यवाद!

## शिक्षक के लिए छात्र द्वारा विदाई भाषण

आदरणीय प्रधानाचार्य जी, सम्माननीय शिक्षकगण और मेरे साथियों,

आज का दिन हम सभी के लिए भावनात्मक है, क्योंकि हमें अपने प्रिय शिक्षक [शिक्षक का नाम] जी को विदाई देनी पड़ रही है।

आपने हमें न केवल किताबों का ज्ञान दिया, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाया। आपने हमें सही और गलत का अंतर समझाया, और हर परिस्थिति में सकारात्मक रहने की प्रेरणा दी।

आपका धैर्य, अनुशासन और हमें बेहतर बनाने की आपकी मेहनत को हम कभी नहीं भूल सकते। आपका योगदान हमारे जीवन में हमेशा यादगार रहेगा। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि आप जहाँ भी जाएँ, सफलता आपके कदम चूमे।

धन्यवाद!

## छात्रों के लिए शिक्षक द्वारा विदाई भाषण

प्रिय छात्रों,

आज का दिन आपके लिए एक नई शुरुआत का प्रतीक है। आप सभी ने इस विद्यालय में जो ज्ञान, अनुशासन और अनुभव प्राप्त किया है, वह आपको जीवन के हर मोड़ पर मार्गदर्शन देगा।

आपकी मेहनत, लगन और उत्साह देखकर हमें गर्व महसूस होता है। हमें विश्वास है कि आप सभी अपने जीवन में सफलता की ऊँचाइयों को छूएंगे।

हमारी शुभकामनाएँ हमेशा आपके साथ हैं। इस विद्यालय के दरवाजे हमेशा आपके लिए खुले रहेंगे। अपने सपनों को साकार करें और अपने माता-पिता, शिक्षकों और देश का नाम रोशन करें।

आपका भविष्य उज्ज्वल हो! धन्यवाद!

## सेवानिवृत्ति विदाई भाषण

आदरणीय प्रधानाचार्य जी, सहयोगी शिक्षकगण और मेरे प्रिय विद्यार्थी,

आज मेरे लिए बहुत भावनात्मक क्षण है, क्योंकि मैं अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण अध्याय को समाप्त कर रहा हूँ। इस विद्यालय में बिताए गए वर्ष मेरी सबसे अनमोल यादों में शामिल हैं।

शिक्षण मेरे लिए केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी और सम्मान की बात रही है। मैंने हमेशा अपने विद्यार्थियों को सफलता की राह दिखाने की कोशिश की है। मुझे गर्व है कि मैंने इतने होनहार छात्रों को शिक्षित करने का अवसर पाया।

मैं अपने सभी सहकर्मियों, प्रधानाचार्य जी और विद्यार्थियों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस यात्रा को यादगार बनाया। मैं आप सभी को ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

धन्यवाद!

## हृदय स्पर्शी फेयरवेल स्पीच

प्रिय मित्रों,

आज का दिन भावनाओं से भरा हुआ है। हम एक यात्रा समाप्त कर रहे हैं और दूसरी शुरू करने जा रहे हैं। हमारे साथ बिताए गए ये पल केवल दोस्ती के नहीं थे, बल्कि जीवन के सबक थे।

यहाँ हमने केवल पढ़ाई नहीं की, बल्कि संघर्ष करना, गिरकर उठना और एक-दूसरे का समर्थन करना भी सीखा। हमने हँसी-मजाक, बहसें, देर रात तक पढ़ाई और परीक्षा के तनाव सबकुछ एक साथ अनुभव किया।

हमारे शिक्षक हमारे मार्गदर्शक रहे, जिन्होंने हमें सही रास्ता दिखाया। हमारे दोस्त हमारे परिवार की तरह थे, जो हर परिस्थिति में हमारे साथ खड़े रहे।

आज हम अलग हो रहे हैं, लेकिन हमारी दोस्ती, प्यार और यादें हमेशा हमारे साथ रहेंगी। यह सिर्फ एक अलविदा नहीं, बल्कि एक नए सफर की शुरुआत है। हम सभी अपने सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ेंगे, लेकिन इस सफर की यादें हमेशा हमारे दिलों में रहेंगी।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ! धन्यवाद!

# सनातन धर्म में विज्ञान

**सुषमा सिंह**
सैन्य संबंध निदेशालय

सनातन धर्म, जिसे हम हिंदू धर्म के नाम से भी जानते हैं, दुनिया के प्राचीनतम धर्मों में से एक है। यह धर्म केवल पूजा-पाठ और रीति-रिवाजों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जीवन के हर पहलू को समझने और जीने का एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। सनातन धर्म में विज्ञान का गहरा संबंध है, जो न केवल प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने की बात करता है, बल्कि आंतरिक और बाह्य जगत को समझने की एक प्रणाली भी प्रदान करता है। यह धर्म हमें न केवल आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाता है, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं में विज्ञान का उपयोग करने की प्रेरणा भी देता है।

## सनातन धर्म में विज्ञान का महत्व:

सनातन धर्म में विज्ञान को केवल भौतिक या भूतल से जुड़ा हुआ नहीं माना गया, बल्कि इसे आध्यात्मिक और मानसिक स्तर पर भी समझा गया है। इस धर्म में प्राकृतिक घटनाओं, शरीर के क्रियाकलापों और ब्रह्मांड के कार्यों का गहरा वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। उदाहरण के लिए, वेदों में न केवल पूजा विधियाँ और मंत्रों का वर्णन है, बल्कि उन मंत्रों और पूजा विधियों के पीछे गहरा वैज्ञानिक तर्क भी हैं। यह धर्म हमें जीवन की समग्रता में प्रकृति, शरीर, मन, और आत्मा के संतुलन को बनाए रखने की शिक्षा देता है।

## वेदों और विज्ञान का संबंध:

वेदों में न केवल धार्मिक उपदेश हैं, बल्कि वहां बहुत सारे वैज्ञानिक तथ्यों का उल्लेख भी किया गया है। उदाहरण के लिए, वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति, ब्रह्मांड के निर्माण, और पृथ्वी के आकार के बारे में जानकारी दी गई है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो वेदों में यह जानकारी हजारों साल पहले दी गई थी, जो आधुनिक विज्ञान के कई तथ्यों से मेल खाती है।

वेदों में प्रकृति के पांच तत्वों–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश–के बारे में विस्तार से बताया गया है और इन तत्वों का जीवन में संतुलन बनाए रखने के महत्व को रेखांकित किया गया है। इस संतुलन को बनाए रखने के लिए विभिन्न आचार और आचरण विधियों का पालन करने की सलाह दी जाती है। यह भी कहा गया है कि मनुष्य को प्रकृति से जुड़े रहकर उसका सम्मान करना चाहिए।

## योग और ध्यान का वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

सनातन धर्म में योग और ध्यान का अत्यधिक महत्व है। योग केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित

नहीं है, बल्कि यह मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन के लिए भी एक वैज्ञानिक पद्धति है। आजकल, वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि योग और ध्यान से मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और संपूर्ण जीवन में संतुलन आता है।

योग में विभिन्न आसनों और प्राणायामों का प्रयोग किया जाता है, जिनके लाभों को आजकल विज्ञान भी मान्यता देता है। प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनियों ने शरीर और मन के सामंजस्य के लिए जो विधियाँ दीं, उनका विज्ञान में गहरा संबंध पाया गया है।

### आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य का विज्ञान:

सनातन धर्म में शरीर और आत्मा के संबंध को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा गया है। इसमें शरीर को एक मंदिर माना गया है, जिसे साफ, स्वस्थ और सही तरीके से बनाए रखना चाहिए। आयुर्वेद, जो कि भारतीय चिकित्सा पद्धति है, को भी सनातन धर्म में विशेष महत्व दिया गया है। आयुर्वेद में शरीर के दोषों (वात, पित्त, कफ) का संतुलन बनाए रखने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं, जो आजकल विज्ञान के अनुसंधान में भी प्रमाणित हो रही हैं।

वहीं, सनातन धर्म में आहार-व्यवहार, दिनचर्या और आचरण के बारे में विशेष निर्देश दिए गए हैं, जो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी हैं। यह निर्देश आजकल के वैज्ञानिक अध्ययनों में भी समर्थित होते हैं। उदाहरण के लिए, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद और मानसिक शांति बनाए रखना, ये सभी सनातन धर्म के स्वास्थ्य सिद्धांतों में शामिल हैं, जो अब विज्ञान ने भी स्वीकार किए हैं।

### आध्यात्मिक उन्नति और विज्ञान:

सनातन धर्म में आत्मा, परमात्मा और जीवन के उद्देश्य को जानने के लिए ध्यान और साधना की आवश्यकता बताई गई है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आंतरिक क्षमता को जागृत करता है और आत्मा के साथ एकाकार होता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो एक तरह से मानसिक विकास और तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली को समझने की प्रक्रिया है।

विज्ञान भी अब इस बात को स्वीकार करने लगा है कि मानसिक शांति, आत्मा की उन्नति और ध्यान की प्रक्रिया का गहरा संबंध मानव मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र से है। ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने मानसिक दबाव और तनाव को कम कर सकता है, और यह शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होता है।

सनातन धर्म और विज्ञान का संबंध बहुत गहरा और समृद्ध है। सनातन धर्म केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बहुत सारे पहलुओं को छूता है। वेद, आयुर्वेद, योग और ध्यान जैसी प्राचीन भारतीय विधियाँ आज भी आधुनिक विज्ञान के साथ मेल खाती हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि सनातन धर्म ने न केवल आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन किया है, बल्कि जीवन के भौतिक और मानसिक पहलुओं को समझने और सुधारने के लिए भी विज्ञान का उपयोग किया है।

# भारतीय शादियाँ

**प्रदीप कुमार**
कार्मिक निदेशालय

भारतीय शादियाँ। यार, क्या गज़ब की चीज़ होती हैं ये शादियाँ! पहले ये दो आत्माओं का मिलन होती थीं, पर अब तो ऐसा लगता है जैसे ये एक मल्टी-एंटरटेनमेंट इवेंट हैं जहाँ दूल्हा-दुल्हन से ज़्यादा उनके पीछे वाले अंकल-आंटी और मोहल्ले वाले दोस्त एंटरटेन करते हैं। शादी में जाते ही सबसे पहले क्या ढूंढते हैं हम? दूल्हा-दुल्हन का आशीर्वाद? नहीं! पनीर टिक्का और गोलगप्पे वाला काउंटर! और अगर पनीर टिक्का ख़त्म हो जाए, तो ऐसा लगता है जैसे शादी ही टूट गई हो! एक बार मैं एक शादी में गया, वहाँ पनीर की जगह सोया चाप था। मेरा दोस्त ऐसा उदास हो गया जैसे उसकी गर्लफ्रेंड ने उसे छोड़ दिया हो! बोला, “भाई, ये कैसी शादी है जहाँ पनीर ही नहीं है? यह तो महमानो का अपमान है। मैं तो बिना पनीर के इस शादी को ‘वैध’ मानता ही नहीं!”

## द फ़ोटो ऑफ़सेट: जहां मेहमान बनते हैं स्टार

और ये शादी की फ़ोटोज़ का क्या दृश्य है! पहले दूल्हा-दुल्हन की शादी की फ़ोटोज़ बनती थीं, अब तो उनके दोस्त अपनी ही फ़ोटोज़ की प्रदर्शनी लगा देते हैं। एक ही दोस्त 500 पोज़ देगा, कभी हाथ ऊपर, कभी नीचे, कभी ऐसे, कभी वैसे। और फ़ोटो खींचने के बाद पूछेगा, “अरे यार, इसमें मैं थोड़ा मोटा लग रहा हूँ, दूसरी खींचो!” जैसे उसकी फ़ोटो से ही शादी का सारा बजट तय हो रहा हो! फिर आती हैं ‘कैंडिड’ फ़ोटोज़। ये शब्द ही अपने आप में एक मज़ाक है। लोग फ़ोटो लेने वाले के पीछे-पीछे ऐसे भागते हैं जैसे वो कोई सेलिब्रिटी हो और उनकी फ़ोटो से ही शादी का एल्बम पूरा होगा, और अगर उनकी फ़ोटो न आए तो शादी सम्पूर्ण नहीं मानी जाएगी! मैंने तो एक बार देखा, एक आंटी ने फ़ोटोग्राफ़र को कोने में घेर लिया और तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसने उनकी ‘कैंडिड’ फ़ोटो दस अलग-अलग एंगल से नहीं खींच ली, जिनमें से एक में वो गोलगप्पे खाते हुए मुंह फुलाए थीं!

## द डांस फ्लोर डरावनी रात: हर शादी का अपना नागिन डांस

और ये नाचने वाले फूफा जी. हर शादी में एक फूफा होते हैं जो जैसे ही गाना बजेगा, चाहे ‘टिप टिप बरसा पानी’ हो या ‘लड़की आँख मारे’, वो अपनी पूरी फ़िल्म का सीन क्रिएट कर देंगे। उनके हाथ-पैर ऐसे चलते हैं जैसे उनमें कोई स्प्रिंग लगी हो, और उनका चेहरा ऐसे होता है जैसे वो ‘इंडिया गॉट टैलेंट’ का ऑडिशन दे रहे हों। उनके बगल में एक आंटी होती हैं जो बस मुस्कुराती रहती हैं, मानो कह रही हों, “छोड़ो बेटा, ये तो ऐसे ही हैं, इन्हें तो हमने बचपन से ही छोड़ रखा है।” मैंने एक अंकल को देखा, वो ‘नागिन डांस’ कर रहे थे और उनके ऊपर एक बच्चा चिल्ला रहा था, “पापा, बस करो! मेरे

दोस्तों ने देख लिया तो मेरी शादी नहीं होगी! मेरा तो स्कूल में एडमिशन भी नहीं होगा!" जब डीजे वाला 'छैया छैया' बजाता है, तो कुछ लोग तो ऐसे नाचते हैं जैसे उन्हें सचमुच ट्रेन के ऊपर चढ़ा दिया गया हो। उनके कदमों की ताल देख कर लगता है कि कहीं स्टेज ही न टूट जाए!

### लिफाफे का विज्ञान: प्रेम या निवेश?

ये जो लिफाफा देने की प्रथा है! पहले ये आशीर्वाद होता था, अब तो ये एक तरह का निवेश बन गया है। शादी के बाद दूल्हा-दुल्हन सबसे पहले क्या गिनते हैं? एक-दूसरे का प्यार? नहीं! लिफाफों में आए पैसे! रू0 2100 का शगुन मिल जाए तो चेहरे पर चमक आ जाती है और राशि अगर 500 से कम हो उदासी। कुछ लोग तो लिफाफे पर अपना नाम और फ़ोन नंबर भी लिख देते हैं, ताकि दूल्हा-दुल्हन को पता चले कि 'किसने कितना दिया है', ताकि अगली बार वो भी उतना ही लौटा सकें! ये लेन-देन का नया रिश्ता है!

### विवाह उत्सव: एक सामाजिक प्रयोगशाला

भारतीय शादियाँ सिर्फ दो लोगों की शादी नहीं होतीं, ये तो एक पूरा ड्रामा, कॉमेडी और एंटरटेनमेंट पैकेज होती हैं। यहाँ आप खाना भी खाते हैं, नाचते भी हैं और सबसे बड़ी बात, लोगों को देखकर हंसते भी हैं! यहाँ आपको हर तरह के किरदार मिल जाएंगे: वो आंटी जो हर मेहमान के कपड़ों पर कमेंट करेंगी, कुछ रिश्तेदार बैचेन होकर इंतजार करते है कि कोई आए और उनसे नाचने के लिए मिन्नते करें। वो दोस्त जो दूल्हे से ज़्यादा अपनी बैचलर पार्टी के किस्से सुना रहे हैं। तो अगली बार जब आप किसी शादी में जाएं, तो सिर्फ खाने पर ध्यान न दें, बल्कि उन छोटे-छोटे मोमेंट्स पर भी ध्यान दें जो आपकी शाम को और मज़ेदार बना देते हैं क्योंकि यही तो है हमारी भारतीय शादियों का असली मज़ा! ये शादियाँ हमें याद दिलाती हैं कि जीवन में कुछ चीजें अभी भी 'आउटसोर्स' नहीं हुई हैं - जैसे रिश्तेदारों का ड्रामा, आपकी अपनी 'गोलगप्पा लव स्टोरी' और वो अजनबी अंकल जो आपके कंधे पर हाथ रख कर पूछेंगे, "बेटा, शादी कब कर रहे हो?"

असत्य भोग वासना
असत्य सिद्धि कामना
मनुष्य सत्य त्याग है
मनुष्य सत्य भावना
रुको झुको करो
मनुष्य प्रेम की उपासना

**– भगवतीचरण वर्मा**

# रंगीला राजस्थान

**पप्पू राम मीणा**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

राजस्थान, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध राज्य है। यह राज्य अपनी सुंदरता, ऐतिहासिक धरोहरों, रंग-बिरंगे परंपराओं और दिलचस्प संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। "रंगीला राजस्थान" शब्द इस राज्य के जीवंत रंगों और विविधताओं को दर्शाता है, जहाँ हर क्षेत्र की अपनी विशेषताएँ और आकर्षण हैं।

## राजस्थान की प्राकृतिक सुंदरता

राजस्थान की प्राकृतिक सुंदरता अद्वितीय है। यहाँ के रेगिस्तान, सफेद-संगमरमर के महल, किलों और झीलों ने इसे पर्यटकों के लिए एक आकर्षक स्थल बना दिया है। जैसलमेर के सोनार किले, उदयपुर की झीलें, और जयपुर के हवा महल जैसी जगहें यहाँ की प्रसिद्धि को और बढ़ाती हैं। इसके अलावा, अरावली पर्वत श्रृंखला और थार रेगिस्तान की सुंदरता राजस्थान की प्राकृतिक विशेषताओं को और भी अनोखा बनाती हैं।

## राजस्थान की संस्कृति

राजस्थान की संस्कृति अत्यधिक रंगीन और विविध है। यहाँ के लोक संगीत, नृत्य, पहनावे और भोजन में एक अद्वितीय चमक है। राजस्थान का प्रसिद्ध लोकनृत्य "गेर" और "कच्ची घोड़ी" अत्यधिक आकर्षक होते हैं। वहीं, यहाँ का लोकप्रिय संगीत "गायक" और "ढोल" भी बहुत प्रसिद्ध है। राजस्थान की पारंपरिक वेशभूषा में महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले घाघरे और चोलियाँ और पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले कुर्ते और धोती का महत्व है।

## राजस्थान की वास्तुकला और किले

राजस्थान की वास्तुकला विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ के किलों, महलों, हवेलियों और मंदिरों की शिल्पकला अत्यधिक आकर्षक है। जयपुर का आमेर किला, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला, और जोधपुर का उम्मेद भवन महल जैसे किले इस राज्य के ऐतिहासिक गौरव को दर्शाते हैं। इसके अलावा, राजस्थान के कई मंदिर भी अपनी स्थापत्य कला और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं।

## राजस्थान का खानपान

राजस्थान का खानपान भी उतना ही रंगीन और स्वादिष्ट है। यहाँ की पारंपरिक रेसिपी जैसे दाल बाटी चूरमा, गट्टे की सब्जी, और केर सांगरी राजस्थान की विशिष्टता को दर्शाती हैं। यहाँ का मसालेदार और तीव्र स्वाद भारतीय खाद्य संस्कृति का अहम हिस्सा बन चुका है।

## राजस्थान के मेले और उत्सव

राजस्थान के मेलों और उत्सवों का आयोजन पूरे साल भर होता है। "पुष्कर मेला", "नाहरगढ़ मेला", और "उदयपुर का शीतल उत्सव" जैसे मेले पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ये मेलें राजस्थान की संस्कृति, पारंपरिक कला और लोकधर्म को प्रकट करने का एक अच्छा माध्यम होते हैं।

## निष्कर्ष

राजस्थान "रंगीला राजस्थान" के नाम से जाना जाता है क्योंकि यहाँ की संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर, किले, महल, मंदिर, और रंगीन उत्सव हर किसी को मोहित कर लेते हैं। यह राज्य न केवल अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की आबोहवा, सुंदरता और गर्मजोशी भी इसे अनोखा बनाती है। राजस्थान का रंग-बिरंगापन हमें अपने अतीत की याद दिलाता है और भविष्य के लिए प्रेरित करता है।

चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मिसाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,
झुको नहीं, रुको नहीं,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

**– सोहनलाल द्विवेदी**

# जीवन में रिश्तों का महत्व

**कृष्णा कुमार**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

हमारी जिन्दगी में रिश्ते एक अहम स्थान रखते हैं। रिश्ते न केवल हमें भावात्मक सहयोग प्रदान करते हैं, बल्कि यह हमारी सोच और व्यवहार पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं। हमारे जीवन में परिवार, दोस्त, रिश्तेदार और अन्य लोग हमारे साथ होते हैं, जो हमें सहारा देते हैं, सुख और दुख में हमारे साथ खड़े होते हैं। इन रिश्तों का महत्व केवल समाजिक या मानसिक दृष्टि से नहीं, बल्कि हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

## 1. भावनात्मक सहारा

रिश्ते हमें भावनात्मक सहारा प्रदान करते हैं। जब हम जीवन में किसी कठिनाई या संकट से गुजर रहे होते हैं, तो हमें अपने परिवार और दोस्तों का साथ चाहिए होता है। वे हमारे दुःख को साझा करते हैं और हमें समझाते हैं, जिससे हम मानसिक रूप से मजबूत बनते हैं। यह सहारा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है और हमें जीवन की मुश्किलों का सामना करने की हिम्मत प्रदान करता है।

## 2. समाज में जुड़ाव

रिश्ते समाजिक जुड़ाव का अहसास कराते हैं। समाज में अगर हम अकेले होते तो यह महसूस होता कि हम किसी से जुड़े हुए नहीं हैं। रिश्ते हमारी पहचान और हमारे अस्तित्व को स्थापित करते हैं। इन रिश्तों के माध्यम से हम सामाजिक संबंधों को मजबूत करते हैं और समाज में सम्मान पाते हैं।

## 3. व्यक्तिगत विकास

रिश्ते हमारी व्यक्तिगत वृद्धि में भी सहायक होते हैं। वे हमें दयालुता, समझ, धैर्य और सहनशीलता जैसे गुण सिखाते हैं। साथ ही, हम अपने रिश्तों के माध्यम से एक दूसरे से कुछ नया सीखते हैं और अपनी सीमाओं को पार करते हैं। रिश्ते हमें अपने अंदर की गलतियों को सुधारने का अवसर देते हैं।

## 4. संतुलित जीवन

जीवन में सफलता और खुशी का अहसास रिश्तों से जुड़ा हुआ है। जब हमारे पास अच्छे रिश्ते होते हैं, तो हमारे जीवन में संतुलन बना रहता है। काम में व्यस्तता के बावजूद, परिवार और दोस्तों के साथ बिताए गए समय से हमें मानसिक शांति मिलती है, जिससे हम अपनी कार्यशक्ति में सुधार करते हैं।

### 5. समय की कीमत समझना

रिश्ते हमें समय की अहमियत समझाते हैं। जब हम अपनों के साथ रहते हैं, तो हम यह समझते हैं कि समय कितना कीमती है और हमें अपने प्रियजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताना चाहिए। रिश्ते हमें यह एहसास दिलाते हैं कि हमें जिंदगी के छोटे-छोटे पलों को जीना चाहिए और हर लम्हे को महत्व देना चाहिए।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि जीवन में रिश्ते अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। वे हमारे जीवन को सुंदर और अर्थपूर्ण बनाते हैं। यदि रिश्तों में समझदारी, ईमानदारी, और आपसी स्नेह हो, तो कोई भी कठिनाई हमें तोड़ नहीं सकती। जीवन में सच्चे रिश्तों का महत्व कभी भी कम नहीं हो सकता और ये हमारे जीवन को संजीवनी शक्ति प्रदान करते हैं।

आडम्बर में
समाप्त न होने पाए
पवित्रता
और समाप्त न होने पाए
मित्रता
शिष्टाचार में
सम्भावना है
इतना-भर
अवधान-पूर्वक
प्राण-पूर्वक सहेजना है
मित्रता और
पवित्रता को।

**– भवानीप्रसाद मिश्र**

# नैतिक शिक्षा और समाज

**जीत बनर्जी**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

नैतिक शब्द "नीति" में "इक" प्रत्यय के संधि से बना है जिसका अर्थ नीति संबंधित शिक्षा होता है। नैतिक शिक्षा एक मनुष्य में नैतिकता, विनम्रता, सहनशीलता, ईमानदारी आदि सभी गुणों का संचार करती है। यह एक ऐसी शिक्षा है जिसके माध्यम से लोग एक-दूसरे में नैतिक मूल्यों व विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। चरित्रहीन मनुष्य एक पशु के समान है, वहीं दूसरी ओर नैतिकता, मनुष्य का वह गुण होता है जो उसे दूसरों से श्रेष्ठ बनाता है। हमारे सनातन धर्म में, वेदों व उपनिषदों में, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। यह मानव जीवन में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है इसलिए यह व्यक्ति के जीवन का आधार होता है।

नैतिक शिक्षा से तात्पर्य उन सभी गुणों, विचारों एवं परंपराओं की शिक्षा से है, जिन पर हर एक व्यक्ति तथा समाज की समृद्धि निर्भर करती है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है, यद्यपि सामाजिक प्रगति व राष्ट्र के सशक्त निर्माण में भी अति प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं।

वर्तमान युग में विश्व के किसी भी देश में उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। अगर सही तरीके से इस विषय में चिंतन किया जाए तो हम यह आभास कर पाएंगे कि हमारे भारत देश में स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के क्षेत्र में काफी उल्लेखनीय प्रगति हुई है, परंतु नैतिक शिक्षा को अब भी उतनी प्राथमिकता नहीं दी जा सकी है जितनी की उसे दी जानी चाहिए। फलस्वरुप इसकी कमी के कारण आज, इस आधुनिक युग में पल रहे युवा पीढ़ी अपने नैतिक मूल्यों के प्रति कम जागरूक हो रहे हैं, इसके प्रभाव से समाज में नैतिक व्यवहारों में गिरावट देखी जा रही है।

इससे संबंधित अगर कुछ बिंदुओं पर चर्चा की जाए तो हमें एक वैकल्पिक अवधारणा मिल पाएगी, जैसे कि;

**(क) अनुशासन:-**

अनुशासन एक ऐसा गुण है जो किसी प्राणी को उसकी प्रतिबद्धताओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से किसी निर्धारित आदर्शों और नियमों को पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक अनुशासित व्यक्ति संयम के साथ अपने कार्यों और विचारों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण कर पाता है। अनुशासन न केवल एक व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित बना देता है बल्कि उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद भी करता है।

**(ख) नैतिक दायित्व:-**

वह मनोभावना जो एक व्यक्ति में उसके जीवन, परिवार, समाज तथा देश के प्रति सही काम करने की जिम्मेदारी की भावना देता है, उसे ही नैतिक दायित्व कहते हैं। यह एक प्रकार की समझ प्रदान करती है जिससे उस व्यक्ति के जीवन में ईमानदारी, सहानुभूति, आत्म-अनुशासन तथा दया जैसे गुणों को विकसित करने में सहायक होती है।

दैनिक घटनाओं को अगर हम इस संदर्भ से जोड़कर देखें तो हमारी समझ और भी स्पष्ट होंगी जैसे कि, 29 जनवरी, 2025 को महाकुंभ प्रयागराज में कई श्रद्धालुओं ने अपनी जानें गंवाई और इसका कारण यह था कि उस दिन मौनी अमावस्या पर होने वाले विशेष स्नान करने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे, जिससे प्रयाग के तट पर भीड़ अनियंत्रित हो गई तथा उस भीड़ ने वहां मौजूद बैरिकेट्स को तोड़ दिया, जिससे लोगों में धक्का-मुक्की हो गई और अनेक लोग हताहत हो गए।

हमारे समाज के लोगों ने इस दुखद घटना से कोई भी सबक न लिया तथा महाकुंभ जाने के उद्देश्य से श्रद्धालुओं में इस तरह की भगदड़ मात्र दो सप्ताह बाद, 15 फरवरी, 2025 को फिर से नई दिल्ली, रेलवे स्टेशन पर घटित हुई, जिसमें फिर से कई निर्दोष लोगों ने बेवजह अपनी जान गवां दी। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हम अपने विचारों को और सुदृढ़ बनाएं तथा संयम का उपयोग करें ताकि हमारे समाज और देश की छवि पूरे विश्व में कीर्तिमान स्थापित कर पाए।

**(ग) कर्तव्यों का अनुपालन:-**

यूं तो हमें बचपन से ही अनुशासन तथा विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों का अनुपालन करने के लिए प्रेरित किया जाता है परंतु जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, ठीक वैसे-वैसे समाज का प्रभाव हमारे चरित्र को बहुत प्रभावित करता हैं।

अगर भारत के संविधान की बात करें तो भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्य 'भाग IVए' के अनुच्छेद '51ए' में दिए गए हैं। इसमें तो कुल 11 मौलिक कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। मूलतः इनका उद्देश्य नागरिकों में देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है। हर व्यक्ति को अपने माता-पिता, स्वजनों, समाज तथा देश के प्रति अपने मूल्यों को अपनाना चाहिए तथा कर्तव्य परायण व्यक्तित्व को स्थापित करना चाहिए।

**(घ) सामाजिक समरसता:-**

सामाजिक समरसता का तात्पर्य सामाजिक समानता से है, जो समाज में व्याप्त संभवत सभी प्रकार के असमानताओं तथा भेदभावों को जड़ से नष्ट कर नागरिकों में परस्पर प्रेम तथा सौहार्द के साथ सभी वर्गों में एकता का संचार करती है।

**चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश:।**

गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, 'मैंने गुण व कर्म के आधार पर इस सृष्टि में चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) की रचना की है। यहां जातिगत भेदभाव का लेशमात्र भी संकेत नहीं है।

सामाजिक उत्थान के लिए आपसी समरसता अत्यंत महत्वपूर्ण अंग हैं।

**(ङ) रचनात्मक दृष्टिकोण:-**

किसी भी घटना, दृश्य या विषय को एक नए नजरिए से देखकर तथा अपनी ज्ञान व कल्पना का उपयोग करके उससे संबंधित नई संभावनाओं को प्रस्तुत करना ही रचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

यह एक ऐसी सोच है जो हमें, दूसरों से अलग पहचान दिलाती है तथा हमें समस्याओं को हल करने और मुश्किलों से निपटने के नए तरीके खोजने में मदद करता है। रचनात्मक दृष्टिकोण एक ऐसा महत्वपूर्ण कौशल है जो एक आशावादी और सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में मदद करता है। आज के इस आधुनिक युग में यह अति महत्वपूर्ण पहलू के रूप में भूमिका अदा करता है। समाज तथा देश के उत्थान के लिए, नागरिकों में ज्ञान के साथ रचनात्मकता का होना एक वरदान है।

**निष्कर्ष:-**

वर्तमान भौतिक युग में 'नैतिक शिक्षा' एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंश है। इससे ही राष्ट्र का सही मायनों में निर्माण होता है। यह मनुष्य को ज्ञानी, दयावान, संवेदनशील तथा संतुलित बनाए रखने में मदद करता हैं। अतः नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए हमें इसका प्रचार हर घर, विद्यालय, विभिन्न सामाजिक स्थान तथा धार्मिक स्थलों पर निरंतर रूप से करना होगा तभी कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों का विकास होगा और पूरे विश्व का कल्याण हो पाएगा।

मैदाँ में हार जीत का
यूँ फ़ैसला हुआ
दुनिया थी उन के साथ
हमारा खुदा हुआ

**– जमील मलिक**

# रक्षा

**राष्ट्र रक्षा समं पुण्यं, राष्ट्र रक्षा समं व्रतम,**
**राष्ट्र रक्षा समं यज्ञो, दष्टो नैव च नैव च ।।**

# भारतीय सीमा विवादों का प्रबंधन - एक जटिल कार्य

**सोनपाल**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

**बल से सब कुछ जीता जा सकता है, लेकिन इसकी जीत अल्पकालिक होती है।**
**– अब्राहम लिंकन**

सीमा विवाद विश्व भर के देशों के लिये लंबे समय से एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है, जो प्रायः तनाव और संघर्ष को बढ़ावा देता है। भारत के मामले में सीमा विवादों का प्रबंधन अपने विविध भूगोल, जटिल इतिहास और पड़ोसी देशों के साथ जटिल संबंधों के कारण एक बहुआयामी चुनौती प्रस्तुत करता है।

भारत, एक विशाल भूभाग वाला देश, जिसकी सीमाएं सात देशों - पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार और अफगानिस्तान - से लगती हैं। इसकी 15,106 किलोमीटर लंबी स्थलीय सीमा और लगभग 7,516 किलोमीटर लंबी समुद्री सीमा है। इतनी लंबी सीमाओं के साथ, सीमा विवादों का उभरना एक स्वाभाविक चुनौती है। इन विवादों का प्रबंधन केवल कूटनीति या सैन्य ताकत तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामरिक, और राजनीतिक जटिलताएं भी शामिल होती हैं।

## सीमा विवादों का इतिहास और स्वरूप:

भारत के सीमा विवाद मुख्यतः तीन क्षेत्रों में केंद्रित हैं:

1. **भारत-चीन सीमा विवाद:**
   - अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश: चीन, अक्साई चिन को अपना हिस्सा मानता है जबकि भारत इसे लद्दाख का अंग मानता है। वहीं, चीन अरुणाचल प्रदेश को 'दक्षिण तिब्बत' कहता है।
   - डोकलाम गतिरोध (2017) और गलवान संघर्ष (2020) जैसे हालिया घटनाएं इस तनाव की गंभीरता को दर्शाती हैं।
2. **भारत-पाकिस्तान सीमा विवाद:**
   - जम्मू और कश्मीर: 1947 के विभाजन के समय से ही यह मुद्दा बना हुआ है। पाकिस्तान द्वारा कब्जे वाले कश्मीर (PoK) पर भारत दावा करता है।
   - सीमा पार आतंकवाद और LoC (लाइन ऑफ कंट्रोल) पर संघर्ष विराम उल्लंघन लगातार समस्याएं बनी हुई हैं।

**3. अन्य सीमावर्ती विवाद:**

- भारत-नेपाल सीमा (जैसे कालापानी, लिपुलेख) और बांग्लादेश के साथ चिटमहल का विवाद (हालांकि 2015 में समझौते से समाधान हुआ)।

## सीमा विवादों का प्रबंधन: एक जटिल प्रक्रिया

**1. ऐतिहासिक विरासत:**

ब्रिटिश काल में सीमाओं का अस्पष्ट निर्धारण (जैसे ड्यूरंड रेखा, मैकमोहन रेखा) आज विवादों की नींव हैं। इनकी व्याख्या और मान्यता में अंतर ने विवादों को जन्म दिया।

**2. भौगोलिक कठिनाइयाँ:**

- हिमालय जैसे दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र और सुदूर जंगल सीमाओं की निगरानी और नियंत्रण को कठिन बनाते हैं।
- कई सीमाई क्षेत्रों में गांवों का बिखराव, प्रवासी जनजातियां और बुनियादी ढांचे की कमी भी चुनौती बनती हैं।

**3. राजनीतिक और कूटनीतिक पहलू:**

- पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों की अनिश्चितता, घरेलू राजनीतिक दबाव, और वैश्विक शक्तियों का प्रभाव सीमा विवादों को और पेचीदा बनाता है।
- जैसे चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' और पाकिस्तान-चीन की रणनीतिक साझेदारी भारत के लिए चिंता का विषय हैं।

**4. सैन्य और सुरक्षा आयाम:**

- सीमाओं पर तैनात सेना का संचालन, लॉजिस्टिक्स, मौसमीय परिस्थितियाँ और सतर्कता एक सतत चुनौती है।
- तकनीकी निगरानी (जैसे ड्रोन, सैटेलाइट) के बावजूद मानवीय हस्तक्षेप अनिवार्य है।

## समाधान और प्रयास:

**1. कूटनीतिक संवाद और समझौते:**

- भारत-बांग्लादेश भूमि सीमा समझौता (2015) एक सफल उदाहरण है।
- भारत-चीन सीमा प्रबंधन के लिए "Working Mechanism for Consultation and Coordination" (WMCC) जैसी संस्थागत वार्ताएं।

**2. सीमा प्रबंधन ढाँचा:**

- BSF, ITBP, SSB जैसी अर्धसैनिक बलों की नियुक्ति।
- स्मार्ट फेंसिंग, सड़क और सुरंग निर्माण (जैसे अटल टनल), बॉर्डर इंफ्रास्ट्रक्चर विकास।

**3. स्थानीय सहभागिता और विकास:**

- सीमाई गांवों का विकास, संचार साधनों का विस्तार, और नागरिक सहभागिता से राष्ट्रवादी भावना का सुदृढ़ीकरण।

**4. अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रियता:**

- सीमा उल्लंघनों और उकसावों को वैश्विक मंच पर उठाना, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र और क्षेत्रीय सहयोग संगठनों में।

**निष्कर्ष:**

भारतीय सीमा विवादों का प्रबंधन एक जटिल और बहुआयामी कार्य है जिसके लिये ऐतिहासिक समझ, भू-राजनीतिक जागरूकता, विधिक ढाँचा और कूटनीतिक रणनीतियों के संयोजन की आवश्यकता होती है। चुनौतियों और बाधाओं के बावज़ूद भारत ने अपने पड़ोसियों के साथ संवाद, वार्ता और जुड़ाव के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान के लिये प्रतिबद्धता व्यक्त की है। हालाँकि इन विवादों के मूल कारणों को दूर करने और क्षेत्र में स्थायी शांति एवं स्थिरता के लिये विश्वास और आत्मविश्वास बनाने के लिये निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। केवल रचनात्मक जुड़ाव और सहयोग के माध्यम से ही भारत अपने सीमा विवादों की जटिलताओं को दूर कर सकता है साथ ही अपनी क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित कर सकता है।

भारत का सीमा विवादों का प्रबंधन केवल एक भौगोलिक चुनौती नहीं, बल्कि एक बहुआयामी राष्ट्रीय दायित्व है। इसमें कूटनीति, रक्षा, तकनीक, जन-समर्थन और अंतरराष्ट्रीय रणनीति का संतुलन जरूरी है। जबकि भारत ने कुछ विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाया है, कई आज भी संवेदनशील बने हुए हैं। सीमाओं की रक्षा केवल सशस्त्र बलों की नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की जिम्मेदारी है। इस दिशा में निरंतर संवाद, संयम और सशक्त नीति निर्माण ही सफलता की कुंजी हैं।

**"सीमा की सुरक्षा में संप्रभुता की रक्षा निहित है।"**

सपनों के बादल बार-बार उड़ते हैं
यथार्थ की धरा पर पुनः बरसते हैं
जीवन का क्रम इसी तरह चलता है।

**– आशमा कौल**

# आधुनिक भारतीय कूटनीति

**दीपक लखचौरा**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

आधुनिक भारतीय कूटनीति का अर्थ है, भारत की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में बदलाव और विकास जो वर्तमान समय की आवश्यकताओं, चुनौतियों और अवसरों के साथ मेल खाते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय कूटनीति ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। आज के दौर में, जब विश्व तेजी से बदल रहा है, भारतीय कूटनीति ने भी अपने लक्ष्यों, दृष्टिकोण और नीतियों में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं।

## आधुनिक भारतीय कूटनीति की विशेषताएँ

1. **सशक्त और सक्रिय वैश्विक उपस्थिति**

   आधुनिक भारतीय कूटनीति ने वैश्विक मंच पर अपनी सक्रियता को बढ़ाया है। भारत अब एक उभरती हुई शक्ति के रूप में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है। भारत, संयुक्त राष्ट्र, G20, BRICS, SCO, और अन्य महत्वपूर्ण संगठनों का सक्रिय सदस्य है और इन मंचों पर अपने हितों और विचारों को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करता है।

2. **समाजवादी और राष्ट्रवादी विचारों का संतुलन**

   भारतीय कूटनीति में एक ओर जहां परंपरागत गांधीवादी अहिंसा और सत्य की नीति कायम है, वहीं दूसरी ओर यह राष्ट्रवाद और समाजवाद की विचारधारा को भी अपनाती है। भारत ने हमेशा राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी है, लेकिन साथ ही साथ वैश्विक शांति, समृद्धि और विकास के लिए भी सहयोग किया है।

3. **गुटनिरपेक्षता का समायोजन**

   भारत ने अपनी कूटनीति में गुटनिरपेक्षता को महत्वपूर्ण स्थान दिया है, लेकिन वर्तमान में यह नीति बदल रही है। अब भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति के तहत जरूरी मुद्दों पर देशों के साथ सहयोग करने के लिए तैयार है, जबकि वह किसी विशेष गुट का हिस्सा नहीं बनना चाहता। भारतीय कूटनीति में आज गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत को सक्रिय रूप से संतुलित किया गया है, ताकि वैश्विक स्तर पर स्वतंत्रता और संतुलन बनाए रखा जा सके।

4. **आर्थिक कूटनीति और व्यापारिक संबंधों का बढ़ता महत्व**

   आधुनिक भारतीय कूटनीति में आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को प्राथमिकता दी जा रही है। भारत ने वैश्विक व्यापार, निवेश और समृद्धि के लिए कई द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समझौतों

पर हस्ताक्षर किए हैं। 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया', और 'प्रधानमंत्री रोजगार योजना' जैसी पहलें भारत के आर्थिक हितों को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। भारतीय कूटनीति ने वैश्विक व्यापार और निवेश के प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई हैं।

5. **सुरक्षा और रक्षा सहयोग**

   राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता भारतीय कूटनीति के मुख्य पहलू हैं। भारत ने अपनी रक्षा नीति को मजबूत किया है और कई देशों के साथ रणनीतिक साझेदारियाँ स्थापित की हैं। भारत, अमेरिका, रूस, और एशियाई देशों के साथ रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहा है। भारत का "नेबरहुड फर्स्ट" (पड़ोसी पहले) दृष्टिकोण भी कूटनीतिक पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

6. **जलवायु परिवर्तन और वैश्विक चुनौतियों पर सक्रिय दृष्टिकोण**

   जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण सुरक्षा को भारत ने अपनी कूटनीतिक प्राथमिकताओं में प्रमुख स्थान दिया है। भारत ने पेरिस समझौते में सक्रिय भागीदारी की और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कई पहलें की हैं। भारतीय कूटनीति पर्यावरणीय स्थिरता और विकास के बीच संतुलन बनाने की दिशा में काम कर रही है।

7. **नरम शक्ति (सॉफ्ट पावर)**

   भारतीय कूटनीति ने अपनी “नरम शक्ति” का उपयोग भी प्रभावी ढंग से किया है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर, योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड, भारतीय कला और संगीत, साहित्य, और शिक्षा प्रणाली ने दुनिया भर में भारत की सकारात्मक छवि बनाई है। इस नरम शक्ति का उपयोग भारत अपने कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए करता है।

## आधुनिक भारतीय कूटनीति के प्रमुख उदाहरण

1. **भारत-अमेरिका संबंध**

   भारत और अमेरिका के संबंधों में पिछले कुछ वर्षों में सुधार हुआ है। दोनों देशों के बीच रक्षा, व्यापार, और आतंकवाद के खिलाफ सहयोग बढ़ा है। भारत ने अमेरिका के साथ अपने सामरिक और रणनीतिक संबंधों को और मजबूत किया है, खासकर एशिया-प्रशांत क्षेत्र में।

2. **भारत-चीन संबंध**

   भारत और चीन के बीच व्यापारिक और कूटनीतिक संबंध काफी महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, सीमा विवाद जैसे मुद्दों के बावजूद दोनों देशों के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग जारी है। भारत ने हमेशा बातचीत और शांतिपूर्ण समाधान की ओर रुझान रखा है, साथ ही क्षेत्रीय सुरक्षा और सामरिक मुद्दों पर भी अपनी स्थिति स्पष्ट की है।

3. **भारत-एशिया और अफ्रीका के साथ रिश्ते**

   भारत ने एशिया और अफ्रीका के देशों के साथ अपनी कूटनीति को सुदृढ़ किया है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ "पड़ोसी पहले" नीति को लागू किया है और दक्षिण एशियाई देशों के साथ सहयोग को बढ़ावा दिया है। अफ्रीका के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों और विकासशील देशों के लिए भारत की सहायता कार्यों ने भारत को एक अग्रणी भूमिका में रखा है।

**4. भारत-रूस संबंध**

भारत और रूस के बीच परंपरागत रूप से मजबूत रणनीतिक और रक्षा संबंध रहे हैं। रूस ने भारत को महत्वपूर्ण रक्षा उपकरणों और तकनीकी सहायता प्रदान की है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच ऊर्जा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी सहयोग है।

## निष्कर्ष

आधुनिक भारतीय कूटनीति ने वैश्विक राजनीति में अपनी मजबूत पहचान बनाई है। भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए शांति, सुरक्षा, और समृद्धि के लिए सक्रिय रूप से काम किया है। भारतीय कूटनीति ने हमेशा अपने मूल्यों और सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक मंच पर संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया है। आने वाले समय में भारत अपनी कूटनीति को और अधिक प्रभावशाली और सक्षम बनाने के लिए निरंतर बदलाव तथा नवाचार की दिशा में काम करेगा।

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं
गोत्र बतला के
पाते हैं जग में प्रशस्ति
अपना करतब दिखला के
हीन मूल की ओर देख
जग गलत कहे या ठीक
वीर खींच कर ही रहते हैं
इतिहासों में लीक

**– रामधारी सिंह 'दिनकर'**

# आतंकवाद

**रविन्द्र सिंह नेगी**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

यूं तो आतंकवाद की कोई सीधी सटीक परिभाषा देना संभव नहीं है, लेकिन फिर भी अनेक संस्थाओं और कानूनों के माध्यम से आतंकवाद को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। उनमें से कुछ संस्थाओं व कानूनों के तहत दी गई आतंकवाद की परिभाषा निम्नानुसार है-

वर्ष 2005 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने आतंकवाद को परिभाषित करते हुए कहा था कि "लोगों को भयभीत करने या सरकार या किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन को कोई कार्य करने अथवा नहीं करने के लिए विवश किए जाने के उद्देश्य से नागरिकों या निहत्थे लोगों को मारने या गंभीर शारीरिक क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया कृत्य आतंकवाद की श्रेणी में रखा जाएगा।"

भारतीय संसद ने वर्ष 1987 में 'आतंकवादी और विघटनकारी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम' पारित किया था। इसके तहत आतंकवाद को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "जो कोई भी कानून द्वारा स्थापित सरकार को डराने या लोगों या लोगों के किसी समूह को आतंकित करने या उन्हें मारने या विभिन्न समूहों के मध्य सौहार्द को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने के उद्देश्य से बम, डायनामाइट या अन्य विस्फोटक पदार्थ या ज्वलनशील पदार्थ या घातक हथियारों या जहर या हानिकारक गैसों या अन्य रसायनों या खतरनाक प्रकृति के अन्य किसी पदार्थ (जैविक या अन्य) का इस तरह से प्रयोग करते हुए कोई कार्य करता है, जिससे व्यक्ति या व्यक्तियों की मृत्यु हो या उन्हें कोई चोट पहुँचे या संपत्ति की हानि या विनाश हो या समुदाय के जीवन के लिये अनिवार्य आपूर्तियों अथवा सेवाओं में बाधा पहुँचे अथवा किसी व्यक्ति बाधित हो या सरकार या किसी अन्य व्यक्ति को कोई कार्य करने से अलग रहने के लिये विवश करने हेतु लोगों को मारने या घायल करने की धमकी देता है, उसका कृत्य आतंकवादी कार्य माना जायेगा।"

वर्ष 2002 में पारित 'आतंकवाद निवारण अधिनियम' (पोटा) के अंतर्गत आतंकवाद के वित्तीयन को भी आतंकवादी कृत्य माना गया है।

## आतंकवाद के प्रकार

आतंकवाद को मुख्यतः निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जाता है-

1. **नृजातीय-राष्ट्रवादी आतंकवाद:**

डेनियल बाइमैन के अनुसार, अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु किसी उप-राष्ट्रीय नृजातीय समूह द्वारा

जान बूझकर की गई हिंसा 'नृजातीय-राष्ट्रवादी आतंकवाद' कहलाता है। ऐसी हिंसा पृथक राज्य के गठन या किसी नृजातीय समूह की अपेक्षा अपना स्तर सुधारने के लिये की जाती है। जैसे- श्रीलंकाई तमिल राष्ट्रवादी समूह, पूर्वोत्तर भारत में अलगाववादी समूह आदि।

2. धार्मिक आतंकवाद:

वर्तमान में यह आतंकवाद का अत्यधिक प्रचलित रूप है। हॉफमैन के अनुसार, पूर्णतः या अंशतः धार्मिक आदेशों से प्रेरित आतंकवादी हिंसा धार्मिक आतंकवाद कहलाती है। इससे प्रेरित आतंकवादी हिंसा का औचित्य सिद्ध करने के लिए विभिन्न धार्मिक साधनों का सहारा लेते हैं। भारत इस आतंकवाद से अत्यधिक प्रभावित है।

3. राज्य प्रायोजित आतंकवाद:

जब किसी देश की सरकार के द्वारा किसी अन्य देश में हिंसक गतिविधियों को अंजाम दिलाया जाता है, तो इसे राज्य प्रायोजित आतंकवाद कहा जाता है। इस प्रकार की हिंसा सामान्यतः विदेश नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की जाती है। जैसे-

- रूस द्वारा बाल्कन क्षेत्र में स्लाव लोगों का समर्थन।
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद बुल्गारिया द्वारा यूगोस्लाविया के विरुद्ध मैसेडोनिया के क्रांतिकारियों का इस्तेमाल।
- शीत युद्ध के दौरान पश्चिमी देशों द्वारा साम्यवाद विरोधियों का समर्थन ।
- भारत में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद आदि।

**4. स्वपक आतंकवाद:**

मादक द्रव्यों की तस्करी में संलग्न गिरोहों द्वारा अपने उद्देश्यों के परिपूर्ति के लिए की जाने वाली हिंसा स्वापक आतंकवाद की श्रेणी में आती है। इसके अंतर्गत मादक द्रव्यों की तस्करी में संलग्न गिरोह अपने उद्देश्य की परिपूर्ति के लिए विभिन्न आतंकवादी संगठनों का सहारा लेते हैं। इसके परिणाम स्वरूप आतंकवादियों को आसानी से आर्थिक लाभ प्राप्त हो जाता है तथा मादक द्रव्यों की तस्करी करने वाले गिरोह अपने उद्देश्य में सफल हो जाते हैं, इसीलिए ये दोनों पक्ष आसानी से एक दूसरे का सहयोग करने के लिए तैयार हो जाते हैं। अतः कहा जा सकता है कि स्वापक आतंकवाद मुख्य रूप से आर्थिक हितों से प्रेरित होता है।

## भारत में आतंकवाद के नियंत्रण हेतु उठाए गए कदम

भारत विश्व में आतंकवाद से सर्वाधिक प्रभावित देशों में से एक है। 'इंस्टीट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस' की मानें तो वर्ष 2018 भारत आतंकवाद से 7 वाँ सबसे सर्वाधिक प्रभावित देश था। आजादी के बाद से ही भारत में अनेक आतंकवादी घटनाएं घटित होती रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2001 से 2018 के मध्य भारत में आतंकी हमलों के कारण 8000 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। ऐसे में, भारत सरकार ने इसे नियंत्रित करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं, जो निम्नानुसार हैं-

सभी प्रकार की आतंकवादी गतिविधियों से निपटने के लिए भारतीय संसद ने वर्ष 1967 में 'गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम' (उपा) पारित किया था तथा इसे और प्रभावी बनाने के

लिए वर्ष 2004 में इसमें संशोधन भी किया गया था।

भारतीय संसद में वर्ष 1987 में आतंकवादी गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए 'आतंकवादी और विघटनकारी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम' (तड़ा) पारित किया था।

वर्ष 2002 में भारतीय संसद में 'आतंकवाद निवारण अधिनियम' (पोटा) भी पारित किया था इसका उद्‌देश्य भी आतंकवादी गतिविधियों से निपटना था।

भारत के मुंबई में हुए कुख्यात 26/11 आतंकवादी हमले के बाद भारत सरकार ने 'राष्ट्रीय जांच एजेंसी' (निया) का गठन किया था।

इसके अलावा, भारत सरकार ने विभिन्न खुफिया एजेंसियों का गठन क्रिया है, जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद से निपटने के लिए कार्य करती हैं। इनमें 'रिसर्च एंड एनालिसिस विंग' (रॉ), 'इंटेलिजेंस ब्यूरो' (आईबी) आदि संस्थाएं प्रमुख हैं। इसके अलावा, भारत 'फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) नामक अंतर्राष्ट्रीय संगठन का भी सदस्य है, जो मुख्य रूप से धन शोधन व आतंकवाद के वित्तपोषण को रोकने का कार्य करती है।

पुष्प प्रेम के थामे चलना
जीवन में मत किसी को छलना
साथ न जाए काया, साया
क्षण भंगुर जीवन की माया।

# भारत पाकिस्तान तनाव: युद्ध एक मात्र विकल्प

**अमित बंसल**
कार्मिक निदेशालय

युद्ध, मानव सभ्यता के इतिहास का एक कड़वा और स्याह अध्याय रहा है। यू तो देवासुर संग्राम सदैव से होते आये हैं। 'वीरभोग्या वसुन्धरा' के आधार पर सदैव से शक्तिशालियों ने अशक्तों पर आक्रमण और अत्याचार किये हैं। प्राचीनकाल में भी राजाओं में युद्ध होते थे, परन्तु उन युद्धों और आज के युद्धों में जमीन और आसमान का अन्तर है। आमने-सामने की लड़ाई और मल्ल युद्धों का समय जा चुका है। युद्ध-साधनों की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि वर्णन नहीं किया जा सकता कि कब क्या हो जाये? आज के युद्ध केवल भूमि पर ही नहीं लड़े जाते, अपितु आकाश और परिवार का प्रांगण भी समरांगण बन गया है। ध्वनि से भी दुगुनी गति से उड़ने वाले लड़ाकू जेट, कैनेबरा और मिग जैसे विमान एक क्षण में हजारों वर्ग किमी भूमि, अनन्त प्रासादों और असंख्य मानवों के संहार में भयंकर अणु बम एवम् हाइड्रोजन बम, पृथ्वी से आकाश तक मार करने वाले रॉकेट, आकाश की लड़ाई में काम आने वाले नवीनतम शस्त्रों और नवीनतम प्रणाली की गड़गड़ाहट भरी तोपों ने आज के युद्ध का स्वरूप ही बदल दिया है।

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्धों को "उचित" ठहराना एक जटिल और संवेदनशील विषय है। इन युद्धों के पीछे कई ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामरिक कारण रहे हैं, और दोनों देशों के अपने-अपने तर्क और दृष्टिकोण हैं। भारत-पाकिस्तान के बीच कई युद्ध हुए हैं, जिनमें प्रमुख रूप से 1947-48, 1965, 1971 और 1999 (कारगिल) के युद्ध शामिल हैं। इन सभी युद्धों के मूल में मुख्य रूप से कश्मीर विवाद, सीमा विवाद, जल विवाद और आतंकवाद जैसे मुद्दे रहे हैं।

## भारत पाकिस्तान तनाव के पीछे के प्रमुख कारण:

* **कश्मीर विवाद:** यह दोनों देशों के बीच संघर्ष का सबसे बड़ा और सबसे स्थायी कारण रहा है। 1947 में विभाजन के बाद, जम्मू और कश्मीर रियासत के विलय को लेकर विवाद शुरू हुआ, जो आज तक अनसुलझा है। पाकिस्तान कश्मीर को अपना "अधूरा एजेंडा" मानता है, जबकि भारत इसे अपना अभिन्न अंग बताता है।
* **सीमा विवाद:** नियंत्रण रेखा (LoC) पर लगातार घुसपैठ और गोलीबारी, विशेष रूप से कारगिल युद्ध में देखी गई, तनाव का एक प्रमुख स्रोत रही है।
* **जल विवाद:** सिंधु जल संधि के बावजूद, नदियों के पानी के बंटवारे को लेकर भी समय-समय पर तनाव उत्पन्न होता रहा है।

* **आतंकवाद:** पाकिस्तान से भारत में होने वाली आतंकवादी गतिविधियाँ, जैसे 26/11 मुंबई हमला, पुलवामा हमला, पहलगाम हमला आदि, भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय रहे हैं और इसने कई बार सैन्य प्रतिक्रिया को जन्म दिया है।

## युद्धों को "उचित" ठहराने के तर्क:

* **आत्मरक्षा:** भारत अक्सर इन युद्धों को अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता, अखंडता और नागरिकों की सुरक्षा के लिए आवश्यक आत्मरक्षात्मक कार्रवाई के रूप में देखता है। जब पाकिस्तान ने भारत के क्षेत्रों में घुसपैठ की या आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दिया, तो भारत ने अपनी सुरक्षा के लिए सैन्य कार्रवाई को आवश्यक माना।
* **अत्याचार रोकना (1971):** 1971 का युद्ध एक अनूठा मामला था, जहाँ भारत ने पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में पाकिस्तानी सेना द्वारा किए जा रहे अत्याचारों और मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोकने के लिए हस्तक्षेप किया। इस युद्ध के परिणामस्वरूप बांग्लादेश का जन्म हुआ।
* **आक्रामक कृत्यों का जवाब:** भारत ने हमेशा पाकिस्तान के आक्रामक सैन्य अभियानों या आतंकवादियों की घुसपैठ के जवाब में सैन्य कार्रवाई की है, जैसे कारगिल युद्ध, पुलवामा हमला या पहलगाम हमला जहां पाकिस्तानी आतंकवादियों ने नियंत्रण रेखा के भारतीय हिस्से में घुसपैठ की थी।

## युद्धों का दुष्परिणाम

युद्ध के परिणाम हमेशा भयावह होते हैं। सबसे पहले तो, यह जान-माल का भारी नुकसान करता है। लाखों निर्दोष लोग अपनी जान गंवाते हैं, और कई शारीरिक या मानसिक रूप से अपाहिज हो जाते हैं। युद्ध के मैदान में सैनिक ही नहीं मरते, बल्कि बमबारी और गोलीबारी में बच्चे, बूढ़े और महिलाएं भी काल का ग्रास बनते हैं। युद्धग्रस्त क्षेत्रों में भुखमरी, बीमारी और विस्थापन आम हो जाता है। लोग अपने घरों से बेघर होकर शरणार्थी शिविरों में नारकीय जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं।

## सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

युद्ध किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को दशकों पीछे धकेल देता है। विकास कार्य रुक जाते हैं, उद्योग धंधे चौपट हो जाते हैं, और बेरोजगारी चरम पर पहुँच जाती है। देश का सारा धन हथियार खरीदने और सैन्य गतिविधियों में लग जाता है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं के लिए धन की कमी हो जाती है। युद्ध समाज में कटुता और विभाजन पैदा करता है। विजेता और पराजित के बीच नफरत की खाई इतनी गहरी हो जाती है कि उसे पाटना मुश्किल हो जाता है। पीढ़ियों तक बदले की भावना पनपती रहती है, जो भविष्य के संघर्षों का बीज बोती है।

## मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय प्रभाव

युद्ध का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी बहुत गहरा होता है। युद्ध के भयानक दृश्यों को देखने वाले लोग, विशेषकर बच्चे, जीवन भर डर और चिंता में जीते हैं। पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD) जैसी

मानसिक बीमारियां आम हो जाती हैं। इसके अलावा, युद्ध पर्यावरण को भी गंभीर नुकसान पहुँचाता है। बमबारी से जंगल नष्ट होते हैं, रासायनिक हथियारों का उपयोग भूमि और जल को प्रदूषित करता है, जिससे वनस्पतियों और जीवों को भारी क्षति पहुँचती है।

### निष्कर्ष

भारत के लिए, ये युद्ध अक्सर राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा के लिए आवश्यक थे, खासकर पाकिस्तान की ओर से लगातार आक्रामक या शत्रुतापूर्ण कृत्यों को देखते हुए। फिर भी युद्ध कभी भी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। यह केवल नई समस्याएं पैदा करता है और मानवजाति को बर्बादी की ओर धकेलता है। आज की दुनिया में, जब हमारे पास परमाणु हथियार हैं, युद्ध की कल्पना भी प्रलय के समान है। हमें समझना होगा कि सच्चा विकास और प्रगति तभी संभव है जब विश्व में शांति और सहयोग का माहौल हो।बातचीत, कूटनीति और आपसी समझ ही वह मार्ग है जिससे हम युद्ध के अभिशाप से बच सकते हैं और एक बेहतर, अधिक शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

क्या हार बनेगा वह जिसने
सीखा न हृदय को बिंधवाना!
वह सौरभ हूँ मैं जो उड़कर
कलिका में लौट नहीं पाता,
पर कलिका के नाते ही प्रिय
जिसको जग ने सौरभ जाना!

**– महादेवी वर्मा**

# भारत का मित्र देशों के साथ रक्षा सहयोग

**मुकेश कुमार**
अंतरराष्ट्रीय सहयोग निदेशालय

आज के बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत एक प्रमुख रणनीतिक शक्ति के रूप में उभरा है, और अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए उसने मित्र देशों के साथ रक्षा सहयोग को प्राथमिकता दी है। वर्षों में भारत की रक्षा नीति में एक बड़ा बदलाव आया है—जहां पहले वह केवल रक्षा उपकरण आयातक था, अब वह संयुक्त विकास, रणनीतिक संवाद और सैन्य अभ्यासों में सक्रिय भागीदार बन चुका है। ये सहयोग भारत के व्यापक उद्देश्यों को दर्शाते हैं—सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण, रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भरता, अंतरसंचालनीयता और क्षेत्रीय व वैश्विक स्थिरता में योगदान।

भारत और अमेरिका के बीच रक्षा संबंधों ने हाल के वर्षों में अभूतपूर्व गहराई हासिल की है। लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA), कम्युनिकेशंस कम्पैटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (COMCASA), और बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA) जैसे प्रमुख समझौतों ने लॉजिस्टिक्स समर्थन, सुरक्षित सैन्य संचार और भू-स्थानिक डेटा साझाकरण की नींव रखी है। इन समझौतों के माध्यम से संयुक्त सैन्य अभ्यास जैसे **युद्ध अभ्यास**, **मालाबार** और **कोप इंडिया** को गति मिली है। **महत्वपूर्ण और उभरती हुई प्रौद्योगिकियों पर भारत-अमेरिका पहल (iCET)** के तहत दोनों देश कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, और जेट इंजन तकनीक के संयुक्त विकास में सहयोग कर रहे हैं।

रूस भारत का सबसे पुराना और भरोसेमंद रक्षा साझेदार रहा है। भारत-रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित ब्रह्मोस मिसाइल विश्व की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइलों में से एक है। दोनों देश **इंद्र** जैसे सैन्य अभ्यासों और तकनीकी साझेदारी के माध्यम से अपने संबंधों को बनाए हुए हैं।

फ्रांस भारत का एक और प्रमुख रणनीतिक साझेदार बनकर उभरा है। स्कॉर्पीन पनडुब्बी निर्माण परियोजना ने भारत की नौसेना शक्ति को भी सशक्त किया है। **वरुण** (नौसेना) और **गरुड़** (वायुसेना) जैसे अभ्यास दोनों सेनाओं की पारस्परिक क्षमताओं को बेहतर बनाते हैं। फ्रांस भारत के साथ साइबर सुरक्षा और उपग्रह निगरानी तकनीकों पर भी सहयोग कर रहा है।

इज़राइल के साथ भारत का रक्षा संबंध तकनीकी सहयोग और रणनीतिक विश्वास पर आधारित है। इज़राइल भारत को UAVs, बाराक मिसाइल सिस्टम, रेडार और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर तकनीक प्रदान करता है। दोनों देश सीमाओं की निगरानी, आतंकवाद-रोधी तकनीक, और AI आधारित सुरक्षा समाधानों पर मिलकर काम कर रहे हैं।

जापान और भारत एक साझा इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण के तहत अपने रक्षा संबंधों को मजबूत कर रहे हैं। **धर्म गार्जियन** और **JIMEX** जैसे अभ्यास और क्वाड समूह में दोनों की भागीदारी इस दिशा में महत्वपूर्ण हैं। दोनों देश समुद्री सुरक्षा, साइबर रक्षा और अंतरिक्ष-आधारित निगरानी प्रणालियों में सहयोग बढ़ा रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया भी एक महत्वपूर्ण रक्षा साझेदार बनकर उभरा है, विशेष रूप से समुद्री क्षेत्र में। **AUSINDEX** और **Pitch Black** जैसे अभ्यासों के माध्यम से दोनों देशों की सेनाओं के बीच समन्वय मजबूत हुआ है। दोनों देश इंडो-पैसिफिक में नौवहन की स्वतंत्रता और आपूर्ति श्रृंखला की सुरक्षा के लिए मिलकर काम कर रहे हैं।

ब्रिटेन के साथ भारत के ऐतिहासिक सैन्य संबंध अब आधुनिक तकनीक और नवाचार के साथ पुनर्निर्मित हो रहे हैं। **अजेय वारियर** (सेना), **कोंकण** (नौसेना), और **इंद्रधनुष** (वायुसेना) जैसे अभ्यास द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देते हैं। भारत और यूके छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों, साइबर सुरक्षा और स्वायत्त प्रणालियों के संयुक्त विकास पर भी कार्य कर रहे हैं।

इन द्विपक्षीय संबंधों के अलावा भारत कई बहुपक्षीय मंचों में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। QUAD, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), ADMM-Plus और IBSAMAR जैसे अभ्यासों के माध्यम से भारत आतंकवाद-रोधी कार्रवाई, मानवीय सहायता, आपदा प्रबंधन और समुद्री निगरानी में सहयोग कर रहा है।

भारत की अंतरराष्ट्रीय रक्षा नीति का एक प्रमुख उद्देश्य है आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर होना। 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियानों के तहत भारत विदेशी कंपनियों को देश में ही रक्षा उत्पादों के सह-विकास और सह-निर्माण के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। रक्षा क्षेत्र में FDI सीमा में वृद्धि और रक्षा औद्योगिक कॉरिडोरों की स्थापना से भारत वैश्विक रक्षा विनिर्माण केंद्र बनने की दिशा में अग्रसर है। रक्षा निर्यात में भी भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है–2023-24 में यह 21,000 करोड़ रुपये से अधिक रहा।

भारत का रक्षा सहयोग महज़ हथियार खरीदने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साझेदारी पर आधारित एक रणनीतिक दृष्टिकोण है जो परस्पर विश्वास, तकनीकी नवाचार और वैश्विक शांति को बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे भारत एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, उसकी रक्षा कूटनीति उसकी सुरक्षा नीति और वैश्विक स्थिति को मजबूती प्रदान करती रहेगी।

# युद्ध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

**कुंदन कुमार झा**
कार्यालय, महानिदेशक (संसाधन एवं प्रबंधन)

## भूमिका

तकनीक के निरंतर विकास ने युद्ध की रणनीतियों और उनके संचालन के तरीके में बड़ा परिवर्तन किया है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) युद्ध क्षेत्र में क्रांति ला रही है। AI का उपयोग सैन्य रणनीति, हथियार प्रणाली, निगरानी, साइबर सुरक्षा और स्वचालित युद्ध अभियानों में तेजी से बढ़ रहा है। यह आधुनिक युद्ध प्रणाली को अधिक प्रभावी और घातक बना रहा है।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक युद्ध

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सैन्य अभियानों के कई पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कुछ प्रमुख क्षेत्रों में इसका उपयोग निम्नलिखित है-

1) **स्वायत्त हथियार प्रणाली** - **AI** समर्थित ड्रोन, रोबोटिक सैनिक और स्मार्ट मिसाइलें युद्ध के परिदृश्य को पूरी तरह बदल रहे हैं। ये स्वायत्त हथियार बिना किसी मानव हस्तक्षेप के लक्ष्यों की पहचान कर सकते हैं और हमले कर सकते हैं।

2) **सैन्य रणनीति और डेटा विश्लेषण - AI** की मदद से विशाल मात्रा में डेटा का विश्लेषण किया जाता है, जिससे सैनिकों को युद्ध क्षेत्र में बेहतर निर्णय लेने में सहायता मिलती है। यह तकनीक दुश्मन की गतिविधियों को पहचानने और प्रभावी काउंटर-अटैक रणनीति विकसित करने में मदद करती है।

3) **साइबर सुरक्षा -** आधुनिक युद्ध केवल भौतिक लड़ाई तक सीमित नही है, बल्कि साइबर हमलों के रूप में डिजिटल मोर्चे पर भी लड़ा जा रहा है। AI आधारित साइबर सुरक्षा प्रणाली खतरों का पता लगाने और उन्हे रोकने में अत्यधिक प्रभावी होती हैं।

4) **निगरानी और जासूसी - AI** सक्षम कृत्रिम उपग्रह, ड्रोन और नेटवर्क के माध्यम से सेना को बेहतर निगरानी और जासूसी मिलती है। ये उपकरण वास्तविक समय में डेटा प्रदान कर सकते हैं और दुश्मन की गतिविधियों पर पैनी नजर रख सकते हैं।

5) **रक्षा और लॉजिस्टिक्स -** सैन्य उपकरणों और सैनिकों की तैनाती को AI के माध्यम से अधिक कुशल बनाया जा सकता है। लॉजिस्टिक्स प्रबंधन में AI का उपयोग आपूर्ति श्रृंखला को सुव्यवस्थित करने और संसाधनों के बेहतर वितरण में किया जाता है।

## AI आधारित युद्ध के लाभ और चुनौतियाँ

### लाभ

- **मानव जीवन की रक्षा -** स्वायत्त हथियारों के उपयोग से सैनिकों की प्रत्यक्ष भागीदारी कम हो जाती है जिससे उनकी जान बचाई जा सकती है।
- **सटीकता और गति** - **AI** की मदद से हमले अधिक सटीक होते हैं और निर्णय लेने की प्रक्रिया तेज होती है।
- **निरंतर निगरानी - AI** आधारित निगरानी प्रणालियां बिना थके दिन-रात काम कर सकती हैं।

### चुनौतियां

- **नैतिकता और जवाबदेही -** स्वायत्त हथियारों के गलत हाथों में पड़ने का खतरा बना रहता है।
- **साइबर युद्ध का खतरा - AI** आधारित सैन्य प्रणाली साइबर हमलों की चपेट में आ सकती है।
- **नियंत्रण का अभाव -** स्वायत्त हथियारों के निर्णयों पर पूर्ण निंयत्रण न होने की स्थिति में गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

## मिसाइल तकनीक में हालिया AI अनुप्रयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधुनिक मिसाइल प्रणालियों को घातक, सटीक और स्वायत्त बना रही है। हाल ही में, कई देशों ने AI-सक्षम मिसाइलें विकसित की हैं जो वास्तविक समय में डेटा विश्लेषण, लक्ष्य पहचान और स्वायत्त निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं।

**1. स्वायत्त लक्ष्य पहचान और मार्गदर्शन**

AI-सक्षम मिसाइलें अब लक्ष्य की पहचान और वर्गीकरण स्वयं कर सकती है। उन्नत मशीन लर्निगं एल्गोरिदम मिसाइल को गतिशील लक्ष्यों को ट्रैक करने और अपने मार्ग को स्वायत्त रूप से समायोजित करने में सक्षम बनाते हैं। उदाहरण-

- **यूएसए का JASSM (Joint Air-to-Surface Standoff Missile)** AI उपयोग करके लक्ष्यों को पहचानती और ट्रैक करती है।
- **रूस की हाइपरसोनिक Kinzhal मिसाइल AI** सक्षम मार्गदर्शन प्रणाली से लैस है।

**2. हाइपरसोनिक मिसाइलों में AI**

हाइपरसोनिक मिसाइलें (Mach 5+ की गति से यात्रा करने वाली) पारंपरिक रेडार और डिफेंस सिस्टम को चकमा देने में सक्षम होती है। AI इन मिसाइलों को तेज गति में भी सही दिशा बनाए रखने और प्रतिकूल परिस्थितियों में निर्णय लेने में मदद करता है। उदाहरण-

- चीन की DF-ZF और अमेरिका की ARRW (Air-Launched Rapid Response Weapon) आधारित मार्गदर्शन सिस्टम से लैस हैं।

**3. AI सक्षम मल्टी टारगेट एंगेजमेंट**

अब मिसाइलें एक साथ कई लक्ष्यों को ट्रैक और नष्ट कर सकती हैं। मदद से वे खतरे का स्तर पहचान कर प्राथमिकता के अनुसार निर्णय ले सकती है। उदाहरण-

- **इजराइल की टमार मिसाइल प्रणाली** AI का उपयोग करके कई लक्ष्यों पर एक साथ हमला कर सकती है।

**4. मिसाइल डिफेंस सिस्टम में AI**

AI केवल हमलावर मिसाइलों में ही नहीं, बल्कि उन्हे रोकने वाले रक्षा प्रणालियों में भी प्रयोग ये रहा है। AI आधारित सिस्टम सेकड़ों में दुश्मन की मिसाइल का विश्लेषण कर जवाबी कार्रवाई कर सकते हैं।

उदाहरण-

- **अमेरिक का Patriot Advanced Capability-3 (PAC-3)** मिसाइल रक्षा प्रणाली AI- आधारित है।
- **रूस का S-500 रक्षा तंत्र AI** सक्षम ट्रैकिंग सिस्टम से लैस है।

**5. साइबर सुरक्षा और मिसाइल नियंत्रण**

AI ना केवल मिसाइल मार्गदर्शन में बल्कि उनकी साइबर सुरक्षा में भी अहम भूमिका निभा रहा है। नई तकनीकों से लैस AI सिस्टम दुश्मनों द्वारा किए जाने वाले साइबर हमलों को रोक सकते है।

## निष्कर्ष

AI का उपयोग युद्ध क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान कर रहा है, लेकिन इसके साथ ही नैतिक और सुरक्षा से जुड़े गंभीर प्रश्न भी खड़े हो रहे है। AI को सैन्य उद्देश्यों के लिए नियंत्रित और नैतिक रुप से उपयोग करने की आवश्यकता है। युद्ध में AI की बढ़ती भूमिका को देखते हुए, इसका संतुलित और जिम्मेदार उपयोग ही वैश्विक सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकता है।

AI ने मिसाइल तकनीक को और उन्नत बना दिया है, जिससे आधुनिक युद्ध अधिक घातक और जटिल हो गया है। हांलाकि, इसका नैतिक और सामरिक रूप से संतुलित उपयोग आवश्यक है ताकि वैश्विक स्थिरता बनी रहे।

# आतंकवाद - एक भयावह समस्या

**लखविन्दर सिंह**
कार्यालय, संयुक्त सचिव एवं अपर वित्तीय सलाहकार

## प्रस्तावना

आतंकवाद आज के समय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। यह एक ऐसी गतिविधि है जो समाज और राष्ट्र की सुरक्षा, शांति और विकास के लिए गंभीर खतरा पैदा करती है। आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य भय और आतंक फैलाना है, जिससे समाज में अस्थिरता और अनिश्चितता पैदा होती है।

## आतंकवाद का अर्थ

निर्दोष लोगों के खिलाफ हिंसा और धमकी का उपयोग करके राजनीतिक, धार्मिक या विचारधारात्मक उद्देश्यों को पूरा करना आतंकवाद कहलाता है। आतंकवादी संगठन अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए बम विस्फोट, हत्या, अपहरण और अन्य हिंसात्मक कार्यों का सहारा लेते हैं।

## आतंकवाद के कारण

- **राजनीतिक अस्थिरता:** जब किसी देश में राजनीतिक अस्थिरता होती है, तो आतंकवादी संगठन इसका लाभ उठाकर अपने उद्देश्यों को पूरा करने की कोशिश करते हैं।
- **धार्मिक कट्टरता:** कुछ आतंकवादी संगठन धार्मिक मतभेदों को भड़काकर समाज में विभाजन पैदा करते हैं।
- **सामाजिक और आर्थिक असमानता:** गरीबी, बेरोजगारी और शिक्षा की कमी भी आतंकवाद के प्रमुख कारणों में शामिल हैं। जब लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते तो वे आसानी से आतंकवाद की ओर आकर्षित हो जाते हैं।
- **वैश्विक तनाव:** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते तनाव और विवाद भी आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं।

## आतंकवाद के प्रकार

- **घरेलू आतंकवाद:** यह वह आतंकवाद है जो किसी देश के भीतर ही संचालित होता है और उसके नागरिकों द्वारा ही अंजाम दिया जाता है।
- **अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद:** इसमें अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी संगठन शामिल होते हैं, जो कई देशों में अपनी गतिविधियाँ संचालित करते हैं।

- **राज्य प्रायोजित आतंकवाद:** कुछ देश अपने राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आतंकवादी संगठनों को समर्थन प्रदान करते हैं।

## आतंकवाद के प्रभाव

आतंकवाद का प्रभाव बहुत ही व्यापक और विनाशकारी होता हैं। यह न केवल लोगों की जान लेता है बल्कि समाज में डर और अविश्वास का माहौल भी पैदा करता है। आतंकवादी हमलों के कारण आर्थिक नुकसान, निवेश में कमी, और पर्यटन उद्योग में गिरावट होती है। इसके अलावा, आतंकवाद का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है जिससे लोग तनाव, अवसाद और अन्य मानसिक बीमारियों का शिकार हो जाते हैं।

## आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष

- **कानूनी और प्रशासनिक उपाय:** आतंकवादी गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए कठोर कानून बनाए गए हैं और सुरक्षा एजेंसियों की क्षमता को भी बढ़ाया गया है।
- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** आतंकवाद से निपटने के लिए विभिन्न देशों के बीच सहयोग और सूचनाओं का आदान-प्रदान बढ़ाया गया है।
- **शिक्षा और जागरूकता:** शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से आतंकवाद के प्रति लोगों को सचेत किया जा रहा है, ताकि वे इसके खिलाफ खड़े हो सकें।
- **आर्थिक विकास:** आर्थिक विकास और सामाजिक सुधार के माध्यम से गरीबी और बेरोजगारी को कम करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि लोग आतंकवाद की ओर आकर्षित न हों।

## आंकड़े और वर्तमान परिदृश्य

हाल के वर्षों में आतंकवादी घटनाओं में कमी आई है, लेकिन यह समस्या अभी भी गंभीर बनी हुई है। 2023 में ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स के अनुसार, आतंकवादी हमलों की संख्या में 15% की कमी आई है। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में आतंकवाद का खतरा अभी भी बहुत ज्यादा है, जैसे मिडिल ईस्ट और दक्षिण एशिया। आईएसआईएस और अल-कायदा जैसे संगठन अभी भी सक्रिय हैं और नए तरीकों से अपने एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं।

## भारत में आतंकवाद

**कश्मीर में आतंकवाद:** लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकवादी संगठन की वजह से 1989 से कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियाँ चलती रहती हैं। 1980 के दशक में पंजाब में खालिस्तानी आतंकवाद, मध्य और पूर्वी भारत में माओवादी उग्रवाद, मुंबई में 2008 में ताज होटल, रेलवे स्टेशन और अन्य स्थानों पर लश्कर-ए-तैयबा द्वारा मुंबई आतंकवादी हमले, पूर्वोत्तर भारत यानी नागालैंड, मणिपुर, और असम में उग्रवादी समूह यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (ULFA) के द्वारा उग्रवाद इत्यादि कई घटनाएँ देश की सुरक्षा और स्थिरता के लिए गंभीर चुनौतियाँ हैं।

### सीरिया का आतंकवाद

सीरिया में आतंकवाद मुख्य रूप से 2011 में शुरू हुए गृह युद्ध के दौरान उभरा जिसने देश को विनाश की कगार पर पहुंचा दिया है और इसका समाधान अभी भी स्पष्ट नहीं है। सीरिया में राष्ट्रपति बशर अल-असद के खिलाफ विद्रोह और सरकार की कठोर दमन नीति से गृह युद्ध भड़का था। फिर ISIS ने 2014 में सीरिया के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया, जो अब आतंकवाद का केंद्र बन गया है।

### निष्कर्ष

आतंकवाद एक गंभीर वैश्विक समस्या है जिसे समाप्त करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एकजुट होकर काम करना होगा। केवल सुरक्षा उपायों से ही नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधारों के माध्यम से भी आतंकवाद की जड़ों को समाप्त करना होगा। शिक्षा, जागरूकता और व्यापक विकास के माध्यम से हम एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

**– विनोद कुमार शुक्ल**

# देश का फौजी

**निखिल कौशिक**
कार्यालय, महानिदेशक (ब्रह्मोस)

भारत भूमि सदैव से वीरों की जननी रही है। इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि जब-जब देश पर संकट आया, तब-तब हमारे फौजियों ने अपने अदम्य साहस और बलिदान से राष्ट्र की रक्षा की है। "देश का फौजी" सिर्फ एक पद नहीं, बल्कि त्याग, निष्ठा और वीरता का पर्याय है।

फौजी का जीवन कठिनाइयों से भरा होता है, परंतु उसके इरादे कभी डगमगाते नहीं। वह अपने परिवार, सुख-सुविधाओं और निजी आकांक्षाओं को छोड़कर, राष्ट्र सेवा को अपना सर्वोच्च कर्तव्य मानता है। चाहे बर्फीली चोटियों पर तैनाती हो या तपते रेगिस्तान में पहरा, चाहे गहरी घाटियों में दुश्मन का सामना हो या समुद्री सीमाओं की निगरानी – देश का फौजी हर चुनौती को हंसते हुए स्वीकार करता है।

फौजी का जीवन अनुशासन, परिश्रम और बलिदान की मिसाल है। जब हम अपने घरों में सुरक्षित और आरामदायक जीवन जी रहे होते हैं, तब कहीं दूर सरहद पर एक फौजी चौकस खड़ा होता है, ताकि हम सुकून से सांस ले सकें। उसकी रातें अक्सर ठंडी हवाओं, बर्फबारी या गोलियों की आवाज के बीच गुजरती हैं। पर उसके होंठों पर कभी शिकन नहीं आती, क्योंकि उसके दिल में देशभक्ति की अग्नि प्रज्ज्वलित रहती है।

देश का फौजी न केवल युद्ध के मैदान में वीरता दिखाता है, बल्कि आपदाओं के समय भी अपना योगदान देता है। बाढ़, भूकंप, तूफान जैसे प्राकृतिक संकटों में फौजी ही सबसे पहले राहत और बचाव कार्यों में उतरता है। उसकी वर्दी में साहस, सेवा और समर्पण की त्रिवेणी बहती है।

आज जब हम रक्षा क्षेत्र में तकनीकी प्रगति की बात करते हैं – ब्रह्मोस जैसी सुपरसोनिक मिसाइल प्रणालियों से लेकर आधुनिक युद्धक विमानों तक – हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन तकनीकों का सफल संचालन और प्रभावी उपयोग फौजियों के हाथों में ही सुरक्षित है। मैं स्वयं, कार्यालय महानिदेशक ब्रह्मोस में कार्य करते हुए, यह अनुभव करता हूँ कि हर रक्षा प्रणाली का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ हमारा फौजी ही होता है। उसकी मानसिक दृढ़ता, तकनीकी दक्षता और राष्ट्रप्रेम, इन सभी के समन्वय से ही भारत आज विश्व में एक सशक्त सैन्य शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है।

फौजी बनने का अर्थ केवल शारीरिक रूप से मजबूत होना नहीं है, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक दृढ़ता भी आवश्यक है। उसका जीवन हमें सिखाता है कि असली वीरता संघर्ष में है, और असली देशभक्ति सेवा और बलिदान में है।

एक फौजी की कहानी सिर्फ रणभूमि तक सीमित नहीं रहती। वह सेवानिवृत्ति के बाद भी समाज

को नई दिशा देने में योगदान करता है। उसकी जीवनशैली, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। फौजी का जीवन इस बात का उदाहरण है कि जब हम अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लिए सोचते हैं, तभी हम सच्चे अर्थों में नागरिक बनते हैं।

आज हमें अपने देश के फौजियों के प्रति केवल सम्मान व्यक्त करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उनके परिवारों, उनकी आवश्यकताओं और उनके पुनर्वास की चिंता भी करनी चाहिए। क्योंकि एक फौजी न केवल अपने प्राणों की आहुति देता है, बल्कि उनके परिवार भी अनगिनत बलिदान देते हैं।

देश का फौजी हमारे तिरंगे की शान है, उसकी जान है। आइए, हम सब मिलकर अपने वीर सपूतों को सलाम करें, उनके बलिदान को याद रखें और उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारें। क्योंकि जब देश का फौजी मुस्कुराता है, तब सम्पूर्ण भारतवर्ष गर्व से खिल उठता है।

जय हिंद

मैंने हंसना सीखा है
मैं नहीं जानती रोना;
बरसा करता पल-पल पर
मेरे जीवन में सोना।
मैं अब तक जान न पाई
कैसी होती है पीड़ा
हंस-हंस जीवन में
कैसे करती है चिंता क्रीड़ा
जग है असार सुनती हूं,
मुझको सुख-सार दिखाता;
मेरी आंखों के आगे
सुख का सागर लहराता।
उत्साह, उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में,
उल्लास विजय का हंसता
मेरे मतवाले मन में।

– सुभद्राकुमारी चौहान

# आतंकवाद - वैश्विक समस्या

**कुमेर पंत**
जनसंपर्क निदेशालय

## प्रस्तावना

आतंकवाद केवल किसी देश या समाज की समस्या नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक गंभीर खतरा है। यह वह भयावह स्थिति है, जहां निर्दोष लोगों को निशाना बनाया जाता है, समाज में असुरक्षा का माहौल पैदा किया जाता है और देश की प्रगति को बाधित किया जाता है। आतंकवाद का कोई धर्म या राष्ट्र नहीं होता, इसका उद्देश्य सिर्फ हिंसा फैलाना और भय पैदा करना होता है। आज के दौर में आतंकवाद एक वैश्विक समस्या बन चुका है, जिसे जड़ से खत्म करना बेहद जरूरी हो गया है।

## आतंकवाद क्या है?

आतंकवाद का अर्थ है भय और हिंसा के माध्यम से अपने स्वार्थों की पूर्ति करना। आतंकवादी संगठन अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बम धमाके, अपहरण, हत्या और साइबर हमले जैसे हथकंडों का इस्तेमाल करते हैं। कभी यह धार्मिक कट्टरता के नाम पर किया जाता है, तो कभी राजनीतिक या आर्थिक लाभ के लिए। आतंकवादियों का मकसद आम लोगों के बीच डर और अशांति फैलाना होता है, जिससे सरकार और प्रशासन कमजोर पड़ जाए।

## आतंकवाद के प्रकार

आतंकवाद के कई रूप होते हैं, जिनमें धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और साइबर आतंकवाद शामिल हैं। धार्मिक आतंकवाद तब जन्म लेता है, जब किसी विशेष विचारधारा को फैलाने के लिए हिंसा का सहारा लिया जाता है। राजनीतिक आतंकवाद सत्ता परिवर्तन या सरकार को अस्थिर करने के लिए किया जाता है। वहीं, आर्थिक आतंकवाद में ड्रग तस्करी और अवैध हथियारों के व्यापार से प्राप्त धन का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों में किया जाता है। आज के डिजिटल युग में साइबर आतंकवाद भी तेजी से बढ़ रहा है, जिसमें इंटरनेट और सोशल मीडिया का उपयोग करके लोगों को उकसाया जाता है और समाज में अस्थिरता पैदा की जाती है।

## आतंकवाद के कारण

आतंकवाद के पीछे कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण होते हैं। अशिक्षा और बेरोजगारी ऐसे महत्वपूर्ण कारण हैं, जिनके कारण युवा आसानी से आतंकवादी संगठनों के बहकावे में आ जाते हैं।

कट्टरपंथी विचारधाराएं और राजनीतिक अस्थिरता भी आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं। कई बार कुछ देश अपने स्वार्थ के लिए आतंकवादियों को आर्थिक और सैन्य सहायता प्रदान करते हैं, जिससे यह समस्या और विकराल हो जाती है। अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, राजनीतिक अस्थिरता और धार्मिक कट्टरता आतंकवाद के प्रमुख कारण हैं। कई बार युवाओं को गुमराह कर आतंकवादी संगठन अपने स्वार्थ के लिए उनका उपयोग करते हैं। बम धमाके, अपहरण, साइबर अटैक, आत्मघाती हमले और सामूहिक हिंसा आतंकवाद के कुछ सामान्य रूप हैं, जो समाज में भय और असुरक्षा का माहौल पैदा करते हैं।

### देश विदेश में हुई आतंकवादी घटनाएं

आज आतंकवाद केवल भारत की ही समस्या नहीं है, हमारे पड़ोसी देश और विदेश सभी जगह की सरकारें इससे निपटने की भरपूर कोशिश में लगी हुई हैं। दुनिया का आज तक का सबसे बडा आतंकवादी हमला अमेरिका के विश्व व्यापार केंद्र का माना जाता है। 11 सितम्बर 2001 को, दुनिया के सबसे ताकतवर देश की सबसे उच्चतम इमारत पर ओसामा बिन लादेन ने आतंकवादी हमला करवाया था, जिसके चलते लाखों का नुकसान हुआ और हजारों लोग मलबे के नीचे दब के मर गए थे। भारत भी लंबे समय से आतंकवाद का शिकार रहा है। जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों और कई अन्य क्षेत्रों में आतंकवादी गतिविधियाँ देखने को मिली हैं। 26/11 मुंबई हमला, संसद पर हमला, पुलवामा अटैक और हाल ही में हुए 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकवादी हमला जैसे भयावह हमले देश की सुरक्षा के लिए बड़े खतरे के रूप में सामने आए हैं।

### आतंकवाद के प्रभाव

आतंकवाद का प्रभाव सिर्फ जान-माल की हानि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, सामाजिक ताने-बाने और मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा असर डालता है। आतंकवादी घटनाओं के कारण लोगों के दिलों में डर बैठ जाता है, जिससे उनका सामान्य जीवन प्रभावित होता है। कई देशों की अर्थव्यवस्था पर भी इसका बुरा असर पड़ता है, क्योंकि विदेशी निवेशक और पर्यटक असुरक्षित माहौल में आना पसंद नहीं करते। इसके अलावा, आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं भी बुरी तरह प्रभावित होती हैं।

### आतंकवाद रोकने के उपाय

सरकार आतंकवाद के खिलाफ सख्त कानून बनाकर और सुरक्षा एजेंसियों को मजबूत करके इसे रोकने का प्रयास कर रही है। साथ ही, भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आतंकवाद के खिलाफ कड़े कदम उठा रहा है और अन्य देशों के साथ मिलकर इस वैश्विक संकट से निपटने की कोशिश कर रहा है। आतंकवाद को रोकने के लिए सख्त कानून और सुरक्षा तंत्र की आवश्यकता है। सरकारों को आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके आतंकवादी गतिविधियों पर नजर रखनी होगी। साथ ही, शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाकर युवाओं को आतंकवाद की ओर जाने से रोका जा सकता है। आतंकवाद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी बेहद जरूरी है, क्योंकि यह किसी एक देश की समस्या नहीं, बल्कि

पूरी दुनिया के लिए खतरा है। अगर सभी देश मिलकर आतंकवाद के खिलाफ कठोर कदम उठाएं, तो इसे खत्म किया जा सकता है।

### निष्कर्ष

आतंकवाद एक भयावह समस्या है, जिससे निपटने के लिए समाज और सरकार को मिलकर काम करना होगा। शिक्षा, जागरूकता, सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से हम इस संकट से उबर सकते हैं। हमें एक ऐसे भविष्य की कल्पना करनी होगी, जहां हर इंसान बिना किसी डर के जी सके और दुनिया शांति और सौहार्द का प्रतीक बने। आतंकवाद को खत्म करने के लिए केवल सरकारें ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों को भी जागरूक होकर अपना योगदान देना होगा, ताकि हम एक सुरक्षित और खुशहाल समाज की नींव रख सकें। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए शिक्षा, जागरूकता और आपसी सद्भावना को बढ़ावा देना जरूरी है। युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देकर, उन्हें रोजगार और अवसर प्रदान करके इस समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। यदि सभी देश एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ें और कठोर नीतियाँ अपनाएँ, तो एक सुरक्षित, शांतिपूर्ण और समृद्ध दुनिया की स्थापना संभव हो सकती है।

सम्बन्ध कोई भी हों लेकिन यदि दुःख में साथ न दें अपना,  
फिर सुख में उन सम्बन्धों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।  
छोटी-छोटी खुशियों के क्षण निकले जाते हैं रोज़ जहाँ,  
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

**– रामधारी सिंह दिनकर**

# प्रकृति

मैंने देखा
एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से:
रंग गई क्षण-भर
ढलते सूरज की आग से

अज्ञेय

# लेह: ऊंचे दर्रों की भूमि से होकर यात्रा

**विनोद कुमार सिंह**
सिविल निर्माण एवं संपदा निदेशालय

जिस क्षण विमान कुशोक बकुला रिम्पोची हवाई अड्डे पर उतरना शुरू हुआ, मेरा दिल धड़क उठा। मेरे नीचे, बर्फ से ढकी चोटियों का एक समुद्र अंतहीन रूप से फैला हुआ था। हिमालय शक्तिशाली और अविचल खड़ा था, उनकी भव्यता विनम्र और अभिभूत करने वाली थी। जैसे ही विमान नीचे उतरा, मैं पहले से ही पतली, ठंडी पहाड़ी हवा को महसूस कर सकता था - एक सूक्ष्म अनुस्मारक कि मैं अब समुद्र तल से 11,000 फीट ऊपर था।

## दिन 1: लेह शहर के माहौल को समझना और उसकी खोज करना

लेह शहर में कदम रखते ही ऐसा लगा जैसे किसी अलग युग में प्रवेश कर रहे हों। संकरी, घुमावदार गलियाँ हलचल भरे बाज़ारों की ओर ले जाती हैं जहाँ ताज़ी पकी हुई तिब्बती रोटी की खुशबू भाप से भरे मोमोज की खुशबू के साथ मिल जाती है। मैं लेह बाज़ार में टहलता रहा और कई तरह की चीज़ें खरीदता रहा - प्रार्थना के झंडे, फ़िरोज़ा रंग के गहने और बारीक नक्काशीदार याक की हड्डी से बनी स्मृति चिन्ह। बाद में, मैंने शांति स्तूप का दौरा किया, जो एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जहाँ से डूबते सूरज की सुनहरी छटा में नहाए लेह का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हवा में लहराते प्रार्थना झंडों का नज़ारा मंत्रमुग्ध कर देने वाला था।

## दिन 2: नुब्रा घाटी की सड़क

अगली सुबह, मैं नुब्रा घाटी की एक रोमांचक सड़क यात्रा पर निकल पड़ा, जो दुनिया की सबसे ऊंची मोटर योग्य सड़कों में से एक, प्रसिद्ध खारदुंग ला से होकर गुज़री। ड्राइव एक एड्रेनालाईन रश थी - तीखे मोड़, बजरी वाली ज़मीन और नीचे घाटी में खड़ी ढलानें।

जैसे ही मैं नुब्रा में पहुँचा, दृश्य बदल गया। कठोर, बंजर पहाड़ सुनहरे रेत के टीलों वाले रेगिस्तान में बदल गए, जहाँ झबरा फर वाले बैक्ट्रियन ऊँट घूम रहे थे। पहाड़ों के पीछे सूरज के डूबते ही टीलों पर ऊँट की सवारी करना अवास्तविक था - हिमालय के बीच में एक रेगिस्तान!

## दिन 3: तुरतुक और थांग गांव का दौरा

सुबह नाश्ते के बाद हम थांग गांव की ओर चल पड़े। रास्ते में, हम चास्थांग में श्योक नदी घाटी युद्ध स्मारक देखने गए, जो 1962 के चीन-भारत युद्ध में बहादुरी से लड़ने वाले बहादुर सैनिकों

की याद में बनाया गया है। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों के बीच ऊंचा खड़ा श्योक घाटी युद्ध स्मारक भारतीय सीमाओं की रक्षा के लिए किए गए सर्वोच्च बलिदानों की याद दिलाता है, खासकर सियाचिन और तुरतुक क्षेत्रों में। शहीदों की दीवार पर एक भावनात्मक पंक्ति लिखी हुई थी जो हर आगंतुक के दिल में गहराई तक उतर जाती है। इसमें लिखा है: "जब आप घर जाएं, तो उन्हें हमारे बारे में बताएं और कहें..आपके कल के लिए हमने अपना आज दे दिया"

हमने तुरतुक के पास आखिरी गांव यानी थांग को देखने की योजना बनाई जो LOC से पहले आखिरी गांव है और पाकिस्तान इस बिंदु से मुश्किल से 2 किलोमीटर दूर है। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के परिणामस्वरूप इस गांव को क्षेत्र के तीन अन्य गांवों के साथ पाकिस्तान से जब्त कर लिया गया था। तुरतुक लद्दाख के केंद्र शासित प्रदेश के लेह जिले में स्थित एक छोटा सा गांव है। काराकोरम पर्वतमाला में बसा यह भारत के सबसे उत्तरी गांवों में से एक है। यह जिला मुख्यालय (लेह) से लगभग 205 किमी और पाकिस्तान और भारत के बीच नियंत्रण रेखा से लगभग 2.5 किमी दूर है।

### दिन 4: नुब्रा घाटी से सियाचिन बेस कैंप

हम भोर से पहले सड़क पर निकल पड़े। नुब्रा घाटी से सियाचिन बेस कैंप तक की सड़क ऊबड़-खाबड़ और अप्रत्याशित है, जिसके दोनों ओर ऊंची-ऊंची चोटियाँ हैं। श्योक नदी के किनारे ड्राइव करना आश्चर्यजनक और विनम्र दोनों था - बंजर, चट्टानी इलाका अंतहीन लग रहा था, जबकि नदी सुबह के सूरज के नीचे तरल चांदी की तरह बह रही थी।

जैसे-जैसे हम ऊंचाई पर चढ़ते गए, तापमान तेजी से गिरता गया और हवाएँ तेज़ होती गईं। आखिरी कुछ किलोमीटर सबसे कठिन थे। ऑक्सीजन का स्तर काफी कम था और चुभने वाली हवा मेरे चेहरे पर छोटी सुइयों की तरह चुभ रही थी। फिर भी, बेस कैंप पर लहराते तिरंगे के नज़ारे ने मुझे गर्व और ऊर्जा से भर दिया।

### सियाचिन बेस कैंप में पहुँचना: नायकों के बीच खड़े होना

12,000 फीट की ऊँचाई पर, सियाचिन बेस कैंप ने हमारा हड्डियों को कंपा देने वाली हवाओं और श्रद्धा की भावना के साथ स्वागत किया। वहाँ तैनात भारतीय सेना के जवानों ने हमारा गर्मजोशी से अभिवादन किया, बावजूद इसके कि वे हर दिन कठोर परिस्थितियों का सामना करते हैं। मैंने अत्यधिक ठंड में जीवित रहने की उनकी कहानियाँ सुनीं, जहाँ तापमान अक्सर -50 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। उनका लचीलापन और समर्पण प्रेरणादायक था। मैंने सियाचिन युद्ध स्मारक के चारों ओर चक्कर लगाया, जो उन बहादुर सैनिकों की याद में बनाया गया था जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया था। शिविर के चारों ओर बर्फ से लदी चोटियाँ मूक प्रहरी की तरह खड़ी थीं, जो कड़ाके की ठंड में लड़ी गई अनगिनत लड़ाइयों की गवाह थीं।

### ग्लेशियर: एक जमी हुई सीमा

हालांकि नागरिकों को बेस कैंप से आगे जाने की अनुमति नहीं है, मैं किनारे पर खड़ा था, सियाचिन

ग्लेशियर की ओर देख रहा था - क्षितिज तक फैली बर्फ और बर्फ का अंतहीन विस्तार। इस निर्मम इलाके में गश्त करने वाले सैनिकों के विचार ने मुझे गहरी प्रशंसा से भर दिया।

जब हम नुबरा की ओर वापस उतरे, तो मेरा दिल भावनाओं से भारी था। बेस कैंप सिर्फ़ एक जगह नहीं थी - यह अदम्य मानवीय भावना का प्रमाण था। मैं सैनिकों के अटूट साहस, ग्लेशियर की नितांत और विनम्र सुंदरता और दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध के मैदान में पहरा देने वालों के प्रति कृतज्ञता की गहरी भावना की यादें साथ लेकर गया।

### दिन 5: पैंगोंग झील - एक झिलमिलाता आश्चर्य

इस यात्रा का मुख्य आकर्षण निस्संदेह पैंगोंग झील थी। ड्राइव लंबी और ऊबड़-खाबड़ थी, लेकिन हर मील इसके लायक था। जब मैंने पहली बार झील पर नज़र डाली, तो मैं अवाक रह गया। फ़िरोज़ा की एक शानदार छाया, मीलों तक फैली हुई थी, जो आकाश के बदलते रंगों को दर्शाती थी। मैं किनारे पर बैठा था, मेरी उंगलियाँ बर्फीले पानी को छू रही थीं, जैसे-जैसे सूरज धीरे-धीरे क्षितिज में ढल रहा था। शांति केवल कभी-कभार सीगल की चीख़ से टूटती थी। रात ढलती गई, आकाश एक ब्रह्मांडीय कैनवास में बदल गया - सितारों का एक चमकदार प्रदर्शन, शहर की रोशनी से अछूता।

### दिन 6 : चांगला दर्रे का दौरा

वापसी में हमने चांगला दर्रे का दौरा किया। चांग ला दर्रा एक अविस्मरणीय अनुभव है, जो लद्दाख के कुछ सबसे लुभावने दृश्य प्रस्तुत करता है। लगभग 17,585 फीट की ऊंचाई पर स्थित, यह हिमालय की बीहड़ सुंदरता को दिखाने वाली एक चुनौतीपूर्ण लेकिन पुरस्कृत यात्रा है। चांग ला के मार्ग पर रंग-बिरंगे प्रार्थना झंडे और पहाड़ के दृश्य हैं, और शीर्ष पर बर्फीली हवा इस रोमांचक अनुभव को और बढ़ा देती है।

### दिन 7 : कारगिल युद्ध स्मारक की यात्रा: वीरता को श्रद्धांजलि

लेह से कारगिल युद्ध स्मारक तक ड्राइव करना सिर्फ़ एक सड़क यात्रा से कहीं ज़्यादा है - यह ऊबड़-खाबड़, राजसी इलाके से होकर गुज़रने वाली तीर्थयात्रा है, जहाँ हर चोटी और घाटी में वीरता और बलिदान की झलक मिलती है। यह यात्रा बेहद रोमांचक और बेहद भावनात्मक दोनों है, क्योंकि आप उसी परिदृश्य से गुज़रते हैं जहाँ 1999 का कारगिल युद्ध लड़ा गया था।

### लेह से कारगिल - सुंदर लेकिन गंभीर सड़क

सुबह के सूरज ने लेह को सुनहरे रंगों में रंग दिया, जब हमने कारगिल की ओर अपनी यात्रा शुरू की। लगभग 220 किमी की दूरी नक्शे पर छोटी लग रही थी, लेकिन घुमावदार पहाड़ी सड़कों के साथ, हमें लगभग 6-7 घंटे लगे। शुरू से ही ड्राइव शानदार थी। जैसे ही हमने लेह को पीछे छोड़ा, बंजर पहाड़ों, घुमावदार नदियों और विशाल पठारों के साथ परिदृश्य सामने आया। सड़क सिंधु नदी से सटी हुई थी, जो फ़िरोज़ा रंग की चमक में चमक रही थी। रास्ते में, हम यहाँ रुके:

- **मैग्नेटिक हिल:** अपने ऑप्टिकल भ्रम के लिए जाना जाता है जो वाहनों को ऊपर की ओर लुढ़कता हुआ दिखाता है। हालाँकि यह गुरुत्वाकर्षण का एक चंचल मोड़ है, फिर भी कार को भौतिकी को चुनौती देते हुए देखना आकर्षक था।
- **गुरुद्वारा पत्थर साहिब:** भारतीय सेना द्वारा बनाए रखा गया एक शांत और शांतिपूर्ण स्थान, जो आगंतुकों को मुफ़्त लंगर (सामुदायिक भोजन) प्रदान करता है। आध्यात्मिक माहौल ने यात्रा में शांति का एक पल जोड़ा।
- **लामायुरु मठ:** लद्दाख के सबसे पुराने और सबसे सुंदर मठों में से एक, जो चांद जैसे परिदृश्य के लिए जाना जाता है। मठ की शांतिपूर्ण आभा और लुभावने दृश्य इसे छोटे चक्कर के लायक बनाते हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, परिदृश्य धीरे-धीरे अधिक नाटकीय होता गया, जिसमें दांतेदार चोटियाँ और संकरे पहाड़ी दर्रे थे। सड़क पर सेना की चौकियाँ बिखरी हुई थीं, जो इस क्षेत्र के सामरिक महत्व की निरंतर याद दिलाती थीं।

रास्ते में हमने नमिका ला और फोटू ला के ऊंचे दर्रे पार किए। रास्ते में प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत था और कभी-कभी पहाड़ की चोटी बादलों में छिप जाती थी।

### कारगिल पहुँचना: बलिदान का प्रवेशद्वार

शाम ढलते-ढलते हम कारगिल पहुँच गए, एक ऐसा शहर जो आज भी 1999 के संघर्ष के निशान और कहानियाँ समेटे हुए है। शहर में चहल-पहल तो थी, लेकिन एक गंभीर ऊर्जा थी। यहाँ के लोग युद्ध से गुज़रे हैं और उनकी आँखों में उनका लचीलापन साफ़ झलक रहा था।

एक छोटे, आरामदायक गेस्टहाउस में ठहरने के बाद, मैंने शाम को सुरू नदी के किनारे टहलते हुए बिताया, सूरज को ऊबड़-खाबड़ चोटियों के पीछे डूबते हुए देखा, उसकी आखिरी किरणें पहाड़ों को आग की तरह सुनहरा बना रही थीं।

### दिन 8 : कारगिल युद्ध स्मारक का दौरा

अगली सुबह, मैं कारगिल से लगभग 50 किलोमीटर दूर द्रास में स्थित कारगिल युद्ध स्मारक के लिए जल्दी निकल पड़ा। ड्राइव मुझे द्रास नदी के किनारे ले गई, जहाँ से बर्फ से ढके पहाड़ों के शानदार नज़ारे दिखाई दिए। द्रास, जिसे अक्सर "लद्दाख का प्रवेश द्वार" कहा जाता है, पृथ्वी पर दूसरा सबसे ठंडा निवास स्थान भी है, जहाँ सर्दियों में तापमान -60 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। जैसे ही मैं स्मारक के पास पहुँचा, गहरे भूरे पहाड़ों पर गर्व से लहराता विशाल तिरंगा मेरी नज़र में आ गया। इस नज़ारे ने मेरे अंदर कुछ गहराई से झकझोर दिया। स्मारक से गुज़रना एक बहुत ही मार्मिक अनुभव था। विजयपथ (विजय पथ) मुख्य संरचना की ओर जाता है, जहाँ कारगिल युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले बहादुर सैनिकों के नाम पत्थरों पर उकेरे गए थे। पट्टिकाओं और प्रदर्शनों के माध्यम से सुनाई गई उनकी वीरता की कहानियाँ सुनकर मेरा गला रुंध गया।

मैं टाइगर हिल और टोलोलिंग रिज के सामने खड़ा था, वही चोटियाँ जहाँ सबसे भयंकर युद्ध लड़े

गए थे। उन्हें करीब से देखने पर, दुश्मन की गोलाबारी के बीच इन ऊंचाइयों पर पहुंचने वाले सैनिकों की अकल्पनीय बहादुरी का अंदाजा लगाना मुश्किल था। हीरोज की दीवार पर शहीदों के नाम प्रदर्शित थे, जबकि उनके सम्मान में अनन्त ज्वाला प्रज्वलित थी। उस स्थान का सन्नाटा शक्तिशाली था - यह बलिदान, साहस और अटूट समर्पण की बात करता था।

### श्रद्धांजलि अर्पित करना और चिंतन करना

मैंने एक क्षण मौन प्रार्थना की और स्मारक पर फूल चढ़ाए। ठंडी पहाड़ी हवा में भारतीय सेना के बिगुल की धीमी ध्वनि गूंज रही थी, और मैं यहाँ लड़ने वाले नायकों के प्रति कृतज्ञता से अभिभूत था।

### दिन 9 : वापसी की यात्रा

जब मैं लेह वापस लौटा, तो परिदृश्य और भी मार्मिक लग रहा था। ऊंचे पहाड़ अब सिर्फ़ दृश्य नहीं थे - वे साहस और बलिदान के मूक गवाह थे। वापसी का रास्ता अलग, लगभग पवित्र लगा, जहाँ हर चोटी वीरता की कहानी समेटे हुए थी।

कारगिल युद्ध स्मारक सिर्फ़ एक मंज़िल नहीं थी - यह एक ऐसा अनुभव था जिसने मुझे विनम्र बना दिया। इसने मुझे आज़ादी की कीमत, मानवीय भावना की दृढ़ता और राष्ट्र की रक्षा करने वालों की अदम्य बहादुरी की याद दिला दी। जब मैं वहाँ से गया, तो मैं अपने साथ न सिर्फ़ खूबसूरत नज़ारों की यादें लेकर गया, बल्कि कृतज्ञता और गर्व की गहरी भावना भी साथ लेकर गया - उन सैनिकों के लिए जिन्होंने लड़ाई लड़ी, उन लोगों के लिए जिन्होंने सहन किया, और उस ज़मीन के लिए जो उनके बलिदान की गवाही के रूप में खड़ी है।

### दिन 10: मठ और चिंतन

लेह में अपने प्रवास के दूसरे आखिरी दिन, मैंने थिकसे मठ का दौरा किया, जो एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक प्राचीन चमत्कार है। भिक्षुओं की सुबह की प्रार्थनाओं ने हवा को शांति की भावना से भर दिया। मैं मठ में घूमता रहा, मैत्रेय बुद्ध की ऊंची मूर्ति के सामने रुका, और एक अकल्पनीय शांति महसूस की।

जाने से पहले, मैं आखिरी बार लद्दाख के विशाल, ऊबड़-खाबड़ परिदृश्य के सामने खड़ा हुआ। पहाड़ शाश्वत लग रहे थे, उनकी चोटियाँ बर्फ से ढकी हुई थीं, मानो सदियों पहले के रहस्यों की रखवाली कर रही हों।

# हमारी यमुना, हमारी ज़िम्मेदारी: पुनरुद्धार का मार्ग

**डॉ. प्रमोद कुमार साहु**
भावी प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय

## उपक्रम

यमुना नदी, जो सदियों से उत्तरी भारत की जीवनदायिनी रही है, आज अपने अस्तित्व के सबसे बड़े संकट का सामना कर रही है। विशेषकर दिल्ली से होकर गुजरने वाला इसका 22 किलोमीटर का हिस्सा, जो इसकी कुल लंबाई का दो प्रतिशत से भी कम है, नदी के कुल प्रदूषण भार का लगभग 76% वहन करता है। यह चौंकाने वाला आंकड़ा हमें एक कड़वी सच्चाई से रूबरू कराता है: एक पवित्र और जीवन-निर्वाह करने वाली जलधारा से यह नदी अब एक स्थिर, विषैले नाले में तब्दील हो चुकी है। यह परिवर्तन दशकों की अनदेखी, अनियंत्रित शहरीकरण और मनुष्यों तथा नदी के बीच बढ़ते अलगाव का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह केवल एक नदी का प्रदूषण नहीं बल्कि हमारी सभ्यता और विरासत पर एक गंभीर धब्बा है, जिसकी कीमत केवल पर्यावरणीय ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। यह लेख 'प्राइमस रिसर्च' द्वारा तैयार की गई उस विस्तृत रिपोर्ट का एक संक्षिप्त सार प्रस्तुत करता है, जिसका शीर्षक है: 'Beyond The Froth: 22 Kilometres of Crisis, Over 20 Million Reasons to Revive Yamuna'। यह रिपोर्ट 'प्राइमस पार्टनर्स' द्वारा जून 2025 में प्रकाशित की गई थी।

## यमुना का अक्षुण्ण महत्व: एक विरासत, एक जीवनरेखा

यमुना नदी का पूरे देश, विशेषकर दिल्ली के लिए एक गहरा और स्थायी महत्व है। यह केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवित संस्था है जिसने हमारे इतिहास को गढ़ा है, हमारी सभ्यता को पोषित किया है और हमारे सांस्कृतिक लोकाचार को आकार दिया है। दिल्ली, जिसे प्राचीन काल में इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था के लिए यह एक अभिन्न अंग है और यमुना नदी हमारे राष्ट्रीय महाकाव्यों और सांस्कृतिक साहित्य में प्रमुखता से विद्यमान है। इसका उल्लेख वेदों, पुराणों और महाभारत जैसे ग्रंथों में मिलता है जहाँ इसे भगवान कृष्ण से जोड़कर देखा जाता है, जो इसे अत्यंत पवित्र बनाता है।

पारिस्थितिक रूप से, यमुना एक महत्वपूर्ण जीवन-सहायक प्रणाली के रूप में कार्य करती है। इसके विशाल बाढ़ के मैदान भूजल को रिचार्ज करते हैं, जो दिल्ली जैसे महानगर की जल सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये बाढ़ के मैदान सूक्ष्म जलवायु को नियंत्रित करते हैं, वायु को शुद्ध करते हैं, और अनगिनत पौधों तथा प्रवासी पक्षियों के लिए मौसमी आवास प्रदान करते हैं, जिससे जैव विविधता बनी रहती है। सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से, यमुना भारतीय संस्कृति में गहरा आध्यात्मिक और

प्रतीकात्मक महत्व रखती है। इसे हिंदू पौराणिक कथाओं में एक दिव्य देवी के रूप में पूजा जाता है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह आत्मा को शुद्ध और मोक्ष प्रदान करती है। छठ पूजा और कुंभ जैसे कई प्रमुख त्योहारों का संबंध सीधे यमुना से है, जहाँ श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाने आते हैं।

सामाजिक-आर्थिक रूप से, यमुना उन क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के लिए केंद्रीय है जिनसे यह बहती है। अनुमानित 57 मिलियन लोग यमुना के पानी पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर करते हैं, चाहे वह पीने के पानी के लिए हो, सिंचाई के लिए हो, या आजीविका के लिए हो। इसका स्वास्थ्य सीधे इन लाखों लोगों के जीवन और कल्याण से जुड़ा है।

## प्रदूषण की जड़ें: एक बहुआयामी चुनौती

यमुना में प्रदूषण का प्राथमिक और सबसे गंभीर कारण दिल्ली के 22 प्रमुख नालों से अनुपचारित और आंशिक रूप से उपचारित सीवेज का निर्वहन है। आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में उत्पन्न कुल सीवेज का लगभग 80% (लगभग 618 मिलियन गैलन प्रति दिन - MGD) उपचारित किया जाता है, फिर भी इसमें से लगभग 30% उपचारित पानी निर्धारित डिस्चार्ज मानकों को पूरा करने में विफल रहता है। इसका अर्थ है कि "उपचारित" होने के बावजूद, यह पानी अभी भी नदी में महत्वपूर्ण प्रदूषणकारी तत्व छोड़ रहा है।

औद्योगिक अपशिष्ट, ठोस कचरा और विशेष रूप से सूखे मौसम के दौरान पर्यावरणीय प्रवाह (नदी में न्यूनतम आवश्यक पानी) की गंभीर कमी ने नदी को साल के अधिकांश समय में हाइड्रोलॉजिकल और जैविक रूप से "मृत" कर दिया है। नदी में ऑक्सीजन का स्तर इतना कम हो जाता है कि जलीय जीवन का पनपना असंभव हो जाता है। अनधिकृत कॉलोनियों और झुग्गी-झोपड़ी (JJ) क्लस्टर से अनुपचारित सीवेज का सीधा निर्वहन, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स (STPs) का अपनी पूरी क्षमता से काम न कर पाना या मानकों को पूरा न कर पाना, और नदी के किनारों पर बढ़ता अतिक्रमण, इस जटिल समस्या को और भी गहरा कर रहे हैं। ये सभी कारक मिलकर यमुना को एक ऐसी स्थिति में ले आए हैं जहाँ उसका प्राकृतिक रूप से स्वयं को साफ करना असंभव हो गया है।

## प्रदूषण के दूरगामी प्रभाव: जीवन, आजीविका और भावनाएँ

यमुना के प्रदूषण ने नदी पर निर्भर समुदायों की आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। मछुआरे, जो कभी अपनी दैनिक पकड़ से अच्छी आय अर्जित करते थे, अब अपनी आजीविका खो चुके हैं। जहाँ वे पहले 5 क्विंटल मछली पकड़ते थे, अब उन्हें केवल 40 से 50 किलोग्राम मछली मिलती है, जो उनके परिवार के लिए पर्याप्त नहीं है। परिणामस्वरूप, कई मछुआरे अब रिक्शा चालक या फैक्ट्री मजदूर के रूप में वैकल्पिक काम करने को मजबूर हैं, जिससे उनकी पारंपरिक पहचान और कौशल दोनों खतरे में हैं। नदी किनारे के विक्रेताओं ने भी अपनी आय में 70% तक की भारी गिरावट देखी है, क्योंकि प्रदूषित जल के कारण धार्मिक अनुष्ठानों और अन्य गतिविधियों के लिए आने वाले लोगों की संख्या कम हो गई है।

प्रदूषण ने केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रथाओं को भी बाधित किया है और नदी के साथ लोगों के भावनात्मक संबंधों को तोड़ दिया है। जो नदी कभी उत्सवों, मेलों और दैनिक

जीवन का केंद्र थी, अब वह एक बदबूदार नाला बन गई है, जिससे लोग दूरी बना रहे हैं। यह सामाजिक ताने-बाने पर एक गहरा आघात है।

स्वास्थ्य जोखिम और पर्यावरणीय क्षति भी प्रदूषण के प्रमुख प्रभाव हैं। दिल्ली के निवासियों ने यमुना के प्रदूषण को सीधे स्वास्थ्य जोखिमों (जैसे त्वचा रोग, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल बीमारियाँ) और गंभीर पर्यावरणीय क्षति से जोड़ा है। आर्थिक परिणाम भी सामने आए हैं, जैसे नदी किनारे की संपत्तियों के मूल्यों में कमी और दिल्ली की राजधानी के रूप में अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव शामिल है। यह केवल एक स्थानीय समस्या नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय शर्म का विषय बन गया है।

### पुनरुद्धार की रणनीति: एक समग्र और जन-केंद्रित दृष्टिकोण

यमुना के पुनरुद्धार के लिए एक बहुआयामी और दो-तरफा रणनीति की आवश्यकता है, जो केवल इंजीनियरिंग समाधानों से परे जाकर शासन और जनभागीदारी को प्राथमिकता दे।

### पहला कदम: संरचनात्मक और प्रणालीगत मुद्दों का समाधान

- **संस्थागत सुधार और समन्वय:** यमुना के पुनरुद्धार के लिए एक मजबूत 'अंतरराज्यीय यमुना पुनरुद्धार कॉम्पैक्ट' की स्थापना आवश्यक है, जिसमें सभी हितधारक राज्यों (हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली) को शामिल किया जाए। इसके साथ ही, एक समर्पित यमुना सफाई बोर्ड का गठन किया जाना चाहिए, जो योजनाओं के कार्यान्वयन और समन्वय के लिए उत्तरदायी हो।
- **शासन और प्रवर्तन में सुधार:** उपचारित अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिए एक व्यापक नीति को लागू करना महत्वपूर्ण है, जिससे औद्योगिक और सिंचाई उद्देश्यों के लिए उपचारित पानी का उपयोग किया जा सके। उद्योगों के लिए सख्त 'जीरो लिक्विड डिस्चार्ज' (ZLD) मानदंडों का कड़ाई से प्रवर्तन किया जाना चाहिए ताकि औद्योगिक अपशिष्ट नदी में न गिरे।
- **नालों और सीवरेज प्रबंधन का आधुनिकीकरण:** एक एकीकृत सीवरेज मास्टर प्लान का विकास करना, जिसमें सीवरेज नेटवर्क की व्यापक मैपिंग, घरों को सीवर कनेक्शन लेने के लिए प्रोत्साहित करना, और नजफगढ़ व शाहदरा जैसे प्रमुख नालों की तत्काल सफाई को प्राथमिकता देना शामिल है। इन नालों को इंटरसेप्ट कर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स (STPs) से जोड़ा जाना चाहिए।
- **निगरानी और निगरानी प्रणाली:** परियोजना प्रबंधन और डेटा पारदर्शिता के लिए SCADA (पर्यवेक्षी नियंत्रण और डाटा अधिग्रहण)-आधारित निगरानी डैशबोर्ड का कार्यान्वयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह वास्तविक समय में पानी की गुणवत्ता, सीवेज डिस्चार्ज और एसटीपी के प्रदर्शन की निगरानी करने में मदद करेगा, जिससे जवाबदेही सुनिश्चित होगी।

### दूसरा महत्वपूर्ण पहलू: लोगों और नदी के बीच के संबंध का पुनर्निर्माण

- **यमुना नागरिक कनेक्ट अभियान:** नदी के साथ लोगों के खोए हुए भावनात्मक और सांस्कृतिक संबंध को पुनर्जीवित करने के लिए एक व्यापक 'यमुना नागरिक कनेक्ट अभियान' शुरू किया जाना चाहिए। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, नदी-थीम वाले सार्वजनिक कला प्रतिष्ठान, और स्कूल-

आधारित नदी शिक्षा कार्यक्रम शामिल होने चाहिए ताकि युवा पीढ़ी को नदी के महत्व से जोड़ा जा सके।

- **स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी:** मछुआरों, पुजारियों और नदी किनारे रहने वाले अन्य समुदायों को पुनरुद्धार प्रयासों में सक्रिय रूप से शामिल करना महत्वपूर्ण है। सामुदायिक-प्रबंधित घाटों का विकास, नागरिक विज्ञान पहलों (जैसे जल गुणवत्ता की निगरानी में समुदाय की भागीदारी), और सहभागी नियोजन के माध्यम से इन समुदायों को सशक्त किया जाना चाहिए। उनकी पारंपरिक ज्ञान और अनुभव को महत्व दिया जाना चाहिए।
- **लक्षित सूक्ष्म-अनुदान और कौशल-निर्माण के प्रयास:** नदी से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाओं (जैसे स्थानीय मेले, अनुष्ठान) और पारंपरिक आजीविका (जैसे हस्तशिल्प, मत्स्य पालन के स्थायी तरीके) को पुनर्जीवित करने में मदद करने के लिए लक्षित सूक्ष्म-अनुदान और कौशल-निर्माण कार्यक्रम शुरू किए जा सकते हैं। समुदाय के सदस्यों को पानी की गुणवत्ता और अवैध डिस्चार्ज बिंदुओं की निगरानी के लिए बुनियादी उपकरण (जैसे मोबाइल ऐप या टेस्ट किट) से लैस करना उन्हें नदी के प्रहरी के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाएगा।

## निष्कर्ष: एक साझा भविष्य के लिए एक सामूहिक प्रयास

यमुना को पुनर्जीवित करना केवल बुनियादी ढांचे के उन्नयन और इंजीनियरिंग समाधानों से कहीं अधिक है। यह शासन की पुनर्कल्पना, सार्वजनिक भागीदारी पर पुनर्विचार और लोगों तथा नदी के बीच विश्वास के पुनर्निर्माण का एक जटिल और गहन कार्य है। इस दिशा में, प्रणालीगत सुधारों को समुदाय-नेतृत्व वाली कार्रवाई के साथ संतुलित करने वाला एक एकीकृत रोडमैप आवश्यक है। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए "विकास भी, विरासत भी" के मंत्र के अनुरूप यमुना का पुनरुद्धार इस दृष्टिकोण का एक ज्वलंत उदाहरण बन सकता है।

नदी के साथ प्रतिदिन रहने वाले और उसकी दुर्दशा से सीधे प्रभावित होने वाले लोगों की आवाज़ों को केंद्र में रखकर, पुनरुद्धार की एक ऐसी दृष्टि प्राप्त की जा सकती है जो समावेशी, लचीली और वास्तविकता पर आधारित है। यदि निरंतर राजनीतिक इच्छाशक्ति, विभिन्न संस्थानों के बीच मजबूत समन्वय, और दिल्ली के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी के साथ इस रोडमैप को ईमानदारी से लागू किया जाता है तो यह यमुना के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत हो सकती है। वह दिन दूर नहीं जब यमुना को अब एक बदबूदार नाले के रूप में नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवित, साझा विरासत, और एक स्वच्छ, जीवनदायिनी नदी के रूप में देखा जाएगा। यह केवल एक नदी को साफ करने का नहीं बल्कि हमारी आत्मा को शुद्ध करने और अपनी विरासत को संवारने का एक अवसर है।

# जलवायु परिवर्तन: एक वैश्विक चुनौती

**मनीषा आर्या**
प्रबंध सेवा निदेशालय

जलवायु परिवर्तन आज विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र के स्तर में वृद्धि, अनियमित मौसम और प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि इसके कुछ प्रमुख परिणाम हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव न केवल पर्यावरण पर बल्कि अर्थव्यवस्था स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिरता पर भी पड़ता है।

## जलवायु परिवर्तन के कारण

जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण मानव गतिविधियों द्वारा उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन है। जीवाश्म ईंधन का जलना, वनों की कटाई और औद्योगिक गतिविधियाँ वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को बढ़ा रही हैं। ये गैसें सूर्य की गर्मी को रोकती हैं, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है।

- जीवाश्म ईंधन का जलना: कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन का जलना कार्बन डाइऑक्साइड का सबसे बड़ा स्रोत है।
- वनों की कटाई: पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, इसलिए वनों की कटाई वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को बढ़ाती है।
- औद्योगिक गतिविधियाँ: औद्योगिक गतिविधियाँ मीथेन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती हैं।
- कृषि: कृषि गतिविधियाँ मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड का उत्सर्जन करती हैं।
- परिवहन: परिवहन क्षेत्र कार्बन डाइऑक्साइड का एक बड़ा स्रोत है।

## जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। समुद्र के स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ जाएगा। अनियमित मौसम से सूखा, बाढ़ और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाएगी। जलवायु परिवर्तन से कृषि उत्पादन में कमी आएगी, जिससे खाद्य सुरक्षा प्रभावित होगी।

- समुद्र के स्तर में वृद्धि: ग्लोबल वार्मिंग से ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, जिससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है।
- अनियमित मौसम: जलवायु परिवर्तन से सूखा, बाढ़ और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है।

- कृषि उत्पादन में कमी: जलवायु परिवर्तन से कृषि उत्पादन में कमी आ रही है, जिससे खाद्य सुरक्षा प्रभावित हो रही है।
- स्वास्थ्य पर प्रभाव: जलवायु परिवर्तन से गर्मी से संबंधित बीमारियाँ, वायु प्रदूषण से संबंधित बीमारियाँ और जलजनित बीमारियाँ बढ़ रही हैं।
- आर्थिक प्रभाव: जलवायु परिवर्तन से आर्थिक नुकसान हो रहा है, जैसे कि प्राकृतिक आपदाओं से होने वाला नुकसान और कृषि उत्पादन में कमी से होने वाला नुकसान।

## जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपाय

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। पेरिस समझौते जैसे अंतरराष्ट्रीय समझौतों का उद्देश्य ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग, ऊर्जा दक्षता में सुधार और वनों का संरक्षण जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं।

- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग: सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने में मदद कर सकता है।
- ऊर्जा दक्षता में सुधार: ऊर्जा दक्षता में सुधार करके ऊर्जा की खपत को कम किया जा सकता है।
- वनों का संरक्षण: वनों का संरक्षण करके कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण को बढ़ाया जा सकता है।
- सतत कृषि: सतत कृषि पद्धतियों का उपयोग करके कृषि से होने वाले उत्सर्जन को कम किया जा सकता है।
- सतत परिवहन: सार्वजनिक परिवहन, इलेक्ट्रिक वाहनों और साइकिलिंग जैसे सतत परिवहन विकल्पों का उपयोग करके परिवहन से होने वाले उत्सर्जन को कम किया जा सकता है।
- व्यक्तिगत प्रयास: व्यक्तिगत स्तर पर भी हम जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान कर सकते हैं, जैसे कि ऊर्जा की बचत करना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना और पेड़ लगाना।

## वैश्विक सहयोग

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है, इसलिए इससे निपटने के लिए वैश्विक सहयोग आवश्यक है। सभी देशों को मिलकर काम करना होगा और स्थायी विकास के लिए प्रयास करने होंगे। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित ग्रह छोड़ना होगा।

- अंतर्राष्ट्रीय समझौते: पेरिस समझौते जैसे अंतर्राष्ट्रीय समझौते जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण ढांचा प्रदान करते हैं।
- तकनीकी सहयोग: विकसित देशों को विकासशील देशों को स्वच्छ ऊर्जा और सतत विकास तकनीकों तक पहुँच प्रदान करनी चाहिए।
- वित्तीय सहायता: विकसित देशों को विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए।

## निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन एक जटिल समस्या है, लेकिन यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान संभव है। हमें मिलकर काम करना होगा और स्थायी विकास के लिए प्रयास करने होंगे। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित ग्रह छोड़ना होगा।

# भागलपुर रेशम : एक चिरस्थायी खजाना

**प्रियांशु साहिल यादव**
सतर्कता एवं सुरक्षा निदेशालय

तुसर रेशम, जिसे भागलपुर रेशम के नाम से भी जाना जाता है, एक अलग और शानदार कपड़ा है जिसमें सदियों की शिल्प कौशल है। गंगा के दक्षिणी किनारों पर बसा हुआ भारत का रेशम शहर, भागलपुर, जिसे पहले भगतपुरम के नाम से जाना जाता था, अपने विशिष्ट रेशम के लिए प्रसिद्ध है। इस विशेष प्रकार के रेशम यानी तुसर रेशम ने अपनी निहित मजबूती और हवादार बनावट के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा हासिल की है। इतिहास में गहरी जड़ों के साथ, शहर का रेशम उत्पादन और बुनाई कौशल अपने विशिष्ट चरित्र को रेखांकित करता है।

भागलपुर, जिसे रामायण और महाभारत में अंग राज्य के रूप में संदर्भित किया गया है, शिव और पार्वती की गोद लेने वाली बेटियों से जुड़ी अपनी मंजूषा कला के लिए प्रसिद्ध है। इस विश्वास के विपरीत कि रेशम की उत्पत्ति चीन में हुई, भागलपुर की प्राचीन व्यापार मार्गों पर रणनीतिक स्थिति इसकी रेशम विरासत को पुरानी बनाती है। मध्ययुगीन युग में, भागलपुर रेशम शाही का प्रतीक था, अभिजात वर्ग से स्टैंच संरक्षण का आनंद लिया, और मुगल युग, विशेष रूप से अकबर के शासनकाल में, एक पोषित पसंदीदा के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत किया।

भागलपुर रेशम के उत्पादन की सावधानीपूर्वक प्रक्रिया में सतत विनिर्माण प्रथाओं के साथ मिश्रित जटिल हथकरघा बुनाई पद्धति शामिल है, जिससे यह कपड़ा उद्योग में स्थायी विलासिता का असाधारण उदाहरण है। यह कोकून, कताई, रंगाई, बुनाई और इसकी चमक और बनावट को बढ़ाने के लिए धोने और दबाने जैसे उपचारों को उबलने की एक जटिल प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किया गया है। इसका उपयोग अक्सर उच्च अंत फैशन और होम डेकोर उत्पादों में किया जाता है।

भागलपुर सिल्क एक प्रीमियम कपड़ा है जो मधुबनी रूपांकनों के साथ अपने विलासितापूर्ण महसूस और विशद रंगों के लिए जाना जाता है। इसके प्रकार, जैसे मटका, कटिया और एरी सिल्क को उनकी अनूठी बनावट और नैतिक सोर्सिंग के लिए जाना जाता है। भागलपुरी साड़ी अपने पल्लू में अतिरिक्त वेफ्ट धागे के कारण भारी है। इसमें नमी-दुष्ट गुण, हाइपोएलर्जेनिक लाभ और तापमान नियंत्रण क्षमताएं हैं, जिससे यह उच्च अंत फैशन में बहुमुखी विकल्प बन जाता है।

भागलपुर रेशम उद्योग 200 वर्ष से अधिक पुराना है और 25,000 करघों पर 35,000 से अधिक बुनकरों का समर्थन करता है। 2013 में, भागलपुर रेशम को इसके अनूठे क्षेत्रीय गुणों को पहचानते हुए भौगोलिक संकेत (जीआई) का दर्जा दिया गया था। यह अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मांग में है,

पश्चिम एशिया, यूरोप, अमेरिका और जापान के बाजारों तक पहुंच रहा है। भारतीय रेशम मार्क संगठन (एसएमओआई) भागलपुर बुनकरों के रेशम के सामान को दिखाने और बेचने के लिए रेशम मार्क एक्सपो का आयोजन करता है। भागलपुर के आगंतुक भागलपुर रेशम अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान में रेशम उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले तरीकों के बारे में अधिक जानने के लिए धूम सकते हैं और एक सूचनात्मक और समृद्ध अनुभव का आनंद ले सकते हैं।

भागलपुर रेशम दुनिया में रेशम की सबसे प्रसिद्ध और उत्कृष्ट किस्मों में से एक है, जो इसकी वास्तविक गुणवत्ता की सराहना करता है। यह सदियों की परंपरा और शिल्प कौशल का प्रतिनिधित्व करता है और लालित्य और परिष्कार का प्रतीक है। अपने समृद्ध इतिहास और बेजोड़ गुणवत्ता के साथ, भागलपुर रेशम विशेष अवसरों और औपचारिक पहनने के लिए एक शीर्ष विकल्प बना हुआ है। उत्कृष्ट साड़ियों और चुराइयों से लेकर फैब्रिक यार्डेज तक विशिष्ट भागलपुर रेशम उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला देखने के लिए, भागलपुर के हलचल वाले रेशम बाजारों का दौरा करें। दुकानों और शोरूम में हर स्वाद के लिए उपयुक्त समकालीन डिजाइन उपलब्ध है। वैश्विक फैशन उद्योग में अपनी बढ़ती लोकप्रियता के साथ, इस उत्कृष्ट कपड़े की मांग बढ़ रही है। गुणवत्ता वाले रेशम उत्पादों में निवेश करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए, भागलपुर रेशम सही विकल्प है जो कभी भी शैली से बाहर नहीं जाता है।

इसके प्रकार, जैसे मटका, कटिया और एरी सिल्क को उनकी अनूठी बनावट और नैतिक सोर्सिंग के लिए जाना जाता है। भागलपुरी साड़ी अपने पल्लू में अतिरिक्त वेफ्ट धागे के कारण भारी है। इसमें नमी-दुष्ट गुण, हाइपोएलर्जेनिक लाभ और तापमान नियंत्रण क्षमताएं हैं, जिससे यह उच्च-ईएनसी फैशन में बहुमुखी विकल्प बन गया है। जड़ों से पुनरुद्धार तक बहलपुर रेशम उद्योग 200 साल से अधिक पुराना है और 25,000 करघों पर 35,000 से अधिक बुनकरों का समर्थन करता है। 2013 में, भागलपुर रेशम को इसके अनूठे क्षेत्रीय गुणों को पहचानते हुए भौगोलिक संकेत (जीआई) का दर्जा दिया गया था। अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग है, पश्चिम एशिया के बाजारों तक पहुंच रही है!

जुगनुओं ने फिर अँधेरों से लड़ाई जीत ली
चाँद सूरज घर के रौशन - दान में रखे रहे

# मखाने की खेती

**गोपाल शाह**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

मखाना, जिसे अंग्रेजी में फॉक्स नट या लोटस सीड भी कहते हैं, जल में उगने वाला एक पौधा है। मखाना पोषक तत्वों से भरपूर एक सुपरफूड है जो प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और मिनरल से भरपूर होता है। इसकी मांग घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में बढ़ रही है। यह खाने में जितना स्वादिष्ट लगता है उतनी ही इसकी खेती मेहनत वाली होती है।

इसकी कृषि को वैज्ञानिक ढंग से करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने राष्ट्रीय मखाना शोध केंद्र की स्थापना बिहार के वासुदेवपुर में की है। छोटे-छोटे कांटे की बहुलता के कारण मखानों को कांटे युक्त लिली भी कहते हैं। देश में 80 से 90 फीसदी उत्पादन बिहार में किया जाता है जो कि लगभग 15 हजार हैक्टेयर है। इसके निर्यात से देश को हर साल 25 से 30 करोड़ की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इसकी खेती में रसायनों का प्रयोग न के बराबर होता है अतः इसे ऑर्गेनिक भोजन भी कहा जाता है। यह स्वाद के साथ-साथ आपकी सेहत के लिए भी वरदान है।

मखाने में प्रोटीन 9.7, काबोहाइड्रेट 76, नमी 12.8, वसा 0.11, खनिज लवण 0.5, फास्फोरस 0.9, लौह पदार्थ 1.4 मिली ग्राम आदि होता है। इसके सेवन से हार्ट-अटैक जैसी गंभीर बीमारियों से हम बच सकते हैं। जोड़ों के दर्द में इसका सेवन लाभकारी है। कैल्शियम की प्रचुर मात्रा होने के कारण गठिया एवं जोड़ों के रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। इसमें एंटी-ऑक्सीडेंट भी होते हैं और इसे आसानी से पचाया जा सकता है। इसके सेवन से किडनी को भी बहुत लाभ मिलता है, इसे प्रेगनेंसी के दौरान भी खा सकते हैं।

जनसंख्या में वृद्धि के कारण तालाबों की संख्या कम होती जा रही है और इसकी परम्परागत खेती में कमी आ रही है। भारत के वैज्ञानिकों ने ऐसी तकनीक का विकास किया है कि अब खेतों में भी इसकी खेती की जा सकती है। इसके लिए 6 से 9 इंच तक खेत में पानी जमा करने की व्यवस्था करके इसे किया जाता है। व्यवसायिक स्तर पर इसकी कृषि केवल बिहार में होती है लेकिन भारत सरकार देश के अन्य राज्यों में भी इसकी खेती को बढ़ावा दे रही है।

धीरे-धीरे चीनी मिलों के बंद होने के कारण गन्ने की खेती बंद हो गई। धान तथा गेहूँ की खेती में अधिक लागत और कम मुनाफा होने के कारण मखाना की खेती किसानों के लिए मील का पत्थर साबित हुई। देखते ही देखते आज मखाना एक सुपरफूड बन गया है और आज इसकी कीमत काजू से दो गुनी अधिक हो गई है। इससे किसानों को अधिक मुनाफा हो रहा है। यह सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है और डायबिटीज से लेकर कोलेस्ट्राल नियंत्रित करने, हड्डियां मजबूत बनाकर वजन

घटाने में सहयोग करता है, इस कारण इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। इस कारण इसकी खेती कर किसान आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकते हैं।

इसी को ध्यान में रखते हुए केंद्रीय बजट 2025-26 में भारत की विकास यात्रा के लिए कृषि को पहला इंजन बनाने के लिए बिहार में मखाना बोर्ड के गठन की घोषणा की गई। यह किसानों को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण तथा अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने में मदद करेगा। यह मखाने के उत्पादन, प्रोसेसिंग, वैल्यू एडिशन और विपणन में सुधार करेगा। यह एक महत्वपूर्ण कदम है जो सीधे तौर पर किसानों के लिए लाभदायक होगा। मखाना बोर्ड इसे विश्व के बाजारों में एक नयी पहचान दिलाने में मदद करेगा। स्वयं भारत के प्रधानमंत्री भी मखाने के गुणों की प्रशंसा दुनिया के खुले मंचों से करते हैं तथा मखाने की खेती को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। मखाना आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है और सरकार के सहयोग से इसके किसानों में खुशी की लहर है। इसी कारण इसकी खेती पिछले 5 सालों में 3 गुना बढ़ गई है।

जलवायु परिवर्तन ने इसके उत्पादन पर असर तो डाला है। तेज गर्मी से इसके उत्पादन में कमी आती है। इस पर वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। इसके उत्पादन में चुनौतियां तो बहुत हैं परन्तु फिर भी देश के किसान इसके उत्पादन के लिए उत्साहित है।

तुम मुझसे कहना, मैं कहूँगा तुमसे।
मुझे यक़ीन है, कहने से,
सुनने से कम हो जाते हैं दुख।
जैसे बचपन में
फूँक मारने से दूर हो जाते थे बादल।

**– गीत चतुर्वेदी**

# जल ही जीवन है

**प्रताप चन्द्र नायक**
कार्यालय, महानिदेशक (ब्रह्मोस)

पृथ्वी पर जीवन का आधार जल है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी असंभव है। हम सभी जानते हैं कि "जल ही जीवन है", परंतु अक्सर इसके महत्व को नजरअंदाज कर देते हैं। जल न केवल हमारी प्यास बुझाता है, बल्कि यह कृषि, उद्योग, पर्यावरण संतुलन और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र का भी आधार है।

पृथ्वी का लगभग 71 प्रतिशत हिस्सा जल से आच्छादित है, फिर भी पीने योग्य मीठे जल की उपलब्धता केवल 2.5 प्रतिशत है। इसमें भी अधिकांश जल ग्लेशियरों और बर्फ के रूप में बंधा हुआ है। ऐसे में हमारे पास वास्तव में उपयोग योग्य जल का एक बहुत सीमित भंडार है। इसलिए जल का संरक्षण हमारी पहली और सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बन जाती है।

आज वैश्विक स्तर पर जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुकी है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण और जल के दुरुपयोग ने जल स्रोतों पर अत्यधिक दबाव डाला है। नदियाँ, झीलें, तालाब और भूमिगत जल स्रोत तेजी से सूखते जा रहे हैं। यदि अभी भी हम सचेत नहीं हुए, तो वह दिन दूर नहीं जब जल के लिए युद्ध छिड़ सकता है।

जल का महत्व केवल मानव जीवन तक सीमित नहीं है। वनस्पतियों, जीव-जंतुओं और पूरे पारिस्थितिक तंत्र के लिए जल अनिवार्य है। फसलों की सिंचाई से लेकर औद्योगिक उत्पादन तक, हर क्षेत्र में जल की आवश्यकता है। यदि जल संकट गहराया, तो खाद्य संकट, बेरोजगारी और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी बढ़ जाएंगी।

कार्यालय महानिदेशक ब्रह्मोस जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में भी जल संरक्षण को गंभीरता से लिया जाता है। कार्यालयों में वर्षा जल संचयन, जल पुनः उपयोग की प्रणालियों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से जल बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। छोटे-छोटे कदम, जैसे नल खुला न छोड़ना, रिसाव रोकना और जल अपव्यय से बचना, बड़े परिवर्तन ला सकते हैं।

हम सबको यह समझने की आवश्यकता है कि जल संरक्षण कोई विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। हमें घरों में, कार्यालयों में, खेतों में और उद्योगों में जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। वर्षा जल संचयन, ड्रिप इरिगेशन, जल पुनर्चक्रण जैसी तकनीकों को अपनाकर हम जल संकट को काफी हद तक टाल सकते हैं।

स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों पर जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना भी बेहद जरूरी है। बच्चों को प्रारंभ से ही जल का मूल्य सिखाना चाहिए ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें। हर व्यक्ति अगर यह प्रण ले कि वह जल की एक-एक बूंद की कीमत समझेगा और उसे व्यर्थ नहीं जाने देगा, तो हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

जल को बचाने का अर्थ है जीवन को बचाना। जल संरक्षण न केवल आज की जरूरत है, बल्कि यह भावी पीढ़ियों के प्रति हमारा नैतिक दायित्व भी है। जिस प्रकार हम अपने बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था करना चाहते हैं, उसी प्रकार उन्हें स्वच्छ और प्रचुर जल संसाधन भी सौंपना चाहिए।

अंत में, हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना चाहिए कि जल के प्रति संवेदनशील बनेंगे, जल का संरक्षण करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। यदि हम आज जल बचाएँगे, तो कल जीवन अपने आप सुरक्षित रहेगा।

"एक बूँद जल की कीमत वही जानता है, जिसने प्यासे होठों से आसमान को निहारा हो।"

आइए, जल बचाएँ – जीवन बचाएँ।

जय हिंद!

जब सोच लिया चलना ही है
तम को छोड़ निकलना ही है
अँधेरे को कुचलना ही है
फिर व्यग्रता कैसी, चिंता कैसी

**– उद्‌धव सिंह 'शांडिल्य'**

# पेड़ : अमूल्य संपदा

**विजेंद्र कुमार**
कार्यालय, अपर वित्तीय सलाहकार

पेड़ हमारे जीवन का अस्तित्व हैं। पेड़ों के बिना धरती पर जीवन की कल्पना करना असंभव है। ये धरती पर अमूल्य सम्पदा के समान हैं। पेड़ों के कारण ही मनुष्य को अपनी आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के संसाधन प्राप्त होते हैं।

यदि पेड़ न हों तो पर्यावरण का संतुलन ही बिगड़ जाये और सब ओर तबाही मच जाये। आजकल मनुष्य विकास के नाम पर कंकरीट के जंगल बना रहा है और वे भी इस प्राकृतिक सम्पदा की कीमत पर। यदि पेड़ काटने के साथ-साथ इनका रोपण न किया गया तो इस ग्रह पर जीवन की संभावनायें ही खत्म हो जायेंगी।

पेड़ प्रकृति की वो देन है जिसका कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। पेड़ हमारा सबसे घनिष्ठ मित्र है। हमारे द्वारा लगाया गया पेड़ सिर्फ हमें ही लाभ नहीं पहुँचाता बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों को लाभ पहुँचाता है।

हवा, पानी, खाने-पीने की सामग्री, ईंधन, वस्त्र, जानवरों का चारा अन्य कार्यों में प्रयोग करने के लिए लकड़ी सब हमें पेड़ों से ही मिलता है। पेड़ पर्यावरण से कार्बन डाईऑक्साईड लेकर बदले में ऑक्सीजन देते हैं। पेड़ों पर कई जीव-जन्तु अपना घर बनाते हैं। यदि पेड़ न हों तो हम इन सब चीजों की कल्पना तक नहीं कर सकते।

लेकिन क्या मनुष्य इस प्राकृतिक संसाधन से अपना लाभ लेना ही जानता है या वह इसके संरक्षण और संवर्द्धन के लिए भी जागरुक है? वर्तमान की स्थिति देखकर ऐसा लगता है कि हम पेड़ों को बचाना तो चाहते हैं पर शायद उतना प्रयास नहीं कर पा रहे हैं जितना आवश्यक है। ऐसी परिस्थिति धीरे-धीरे प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जायेगा और हम प्रकृति की इस अमूल्य सम्पदा को धीरे-धीरे अन्य प्रजातियों को लुप्त कर देंगे। इस प्रकार इस धरती पर न जीवन होगा न जीव।

अतः हमें चाहिये कि हमारे आसपास हमें जितनी भी खाली भूमि दिखाई दे हम वहाँ पौधारोपण करें और कुछ अपने घर में गमलों में ही इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित करें। यदि यह छोटा सा कदम हर व्यक्ति उठायेगा तो यह धरती और धरती पर जीवन सब खुशहाल रहेगा। पेड़ों को हरा सोना भी कहा जाता है क्योंकि यह बहुत मूल्यवान सम्पदा है। धरती पर जीवन प्रदान करने वाली ऑक्सीजन और पानी प्रदान करने वाला मुख्य साधन पेड़ ही है। ऑक्सीजन प्रदान करने का कार्य और कोई नहीं कर सकता और पेड़ों के बिना पानी की कल्पना करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है।

पेड़ वायु प्रदूषण कम करने में हमारी सहायता कर पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। मात्र वायु प्रदूषण ही नहीं ये, हानिकारक रसायनों को छानकर जल को भी साफ करते हैं। हर उद्योग में पेड़ के उत्पाद का मुख्य योगदान रहता है। हमारे दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुओं में पेड़ों का बहुत महत्व है।

जितने अधिक पेड़ होंगे पर्यावरण भी उतना ही शुद्ध रहेगा। आजकल लोगों को वायु प्रदूषण के कारण कई प्रकार के रोगों से पीड़ित होना पड़ रहा है।

यदि पेड़ होंगे तो हवा में मिली हानिकारक गैसों को शोषित कर हमें स्वच्छ हवा प्रदान करेंगे और रोगों से छुटकारा भी। यदि हम पेड़ों की संख्या में वृद्धि करेंगे तो ये प्राकृतिक रुप से हवा को स्वच्छ करने के साथ हमें और भी कई फायदे पहुँचायेंगे। इनकी वृद्धि से हम एयर कंडीशनर के उपयोग से बच कर इससे निकलने वाली हानिकारक गैसों से भी निजात दिलाते हैं। पेड़ के कारण ही हमें भरपूर वर्षा प्राप्त होती है।

पेड़ की जड़ें मिट्टी को बांध कर रखती हैं जिनसे भूमि कटाव भी नहीं होता व भूमि जल को अच्छे से अवशोषित कर लेती हैं। यही जल भूमिगत जल बनकर हमें पानी के अभाव से बचाता है। पेड़ हमें छाया प्रदान कर गर्मी के प्रभाव से भी धरती को बचाते हैं।

इस अमूल्य सम्पदा की कमी से धरती पर ग्लोबल वार्मिंग, सूखा, भूमि कटाव जैसी समस्याएं अपना विकराल रूप लेती जा रही हैं। यदि हम इन प्राकृतिक आपदाओं से बचना चाहते हैं तो हमें पेड़ों के संरक्षण की ओर कदम उठाने ही होंगे।यदि आज हम इस दिशा में कार्य करेंगे तभी भावी पीढ़ी को भी इस ओर काम करने की प्रेरणा मिलेगी। ख़ुशी के अवसर पर हम पैसा खर्च करते हैं, दावतें करते हैं लेकिन इन सब के बजाय हम पौधारोपण और पेड़ों का संरक्षण करें तो ये सिर्फ हमारे जान-पहचान वालों के लिए ही नहीं बल्कि मनुष्य के लिए भी ख़ुशी का संकेत होगा।

भारतीय संस्कृति में तो वैसे भी पेड़ों की पूजा की बात कही गई है। एक जिम्मेदार नागरिक बनकर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिये कि यदि विकास के नाम पर पेड़ कट रहे हैं तो उनकी क्षतिपूर्ति हेतु कहाँ पौधारोपण हो रहा है? ईश्वर ने मनुष्य को ही बुद्धि/विवेक का गुण प्रदान किया है। यदि इस बुद्धि का प्रयोग हम विकास के नाम पर प्रकृति को नुकसान पहुँचाने में करते रहे तो यह मनुष्य के विवेक पर धब्बा होगा। अतः आओ हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम अपने लिए ही नहीं बल्कि पूरी प्रकृति के लिए पेड़ों के संरक्षण पर कार्य करेंगे और इस धरा को हरा-भरा बनाएंगे।

# प्रकृति और हम

**महादेव पंडित**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

प्रकृति हमारे आस-पास की सुंदरता की प्रमुख स्रोत है। यह हमारे जीवन का मूलभूत अंग है, जो हमें जीने की आवश्यकता प्रदान करता है। हमारी भूमि, वनस्पति, जल, वायु और जीव-जंतु यहां की प्रकृति के महत्वपूर्ण घटक हैं। प्रकृति हमें आकर्षित करती है, हमें सुख और आनंद देती है और हमारे दिनचर्या में प्राकृतिक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

धरती पर जीवन जीने के लिए भगवान से हमें बहुमूल्य और कीमती उपहार के रूप में प्रकृति मिली है। प्रकृति हमारे चारों ओर सबसे सुंदर और आकर्षण जो हमें खुश करती है एंव हमें स्वस्थ रहने के लिए प्राकृतिक वातावरण प्रदान करती है। हमारी प्रकृति हमें कई प्रकार के फल, फूल, पक्षी, पेड़, आदि प्रदान करती है। हमें जीवन जीने के लिए प्रकृति हर प्रकार से हमारी मदद करती है परंतु इन सभी चीजों को मनुष्य अपने लालच के लिए नष्ट करता जा रहा है। परंतु हमें प्रकृति को नुकसान नहीं पहुचाना चाहिए। बल्कि उसकी भलाई के लिए हमें पेड़ पौधे लगाने चाहिए।

हमारी प्रकृति हमें जीवन जीने व आनंद के लिए सुंदर वातावरण प्रदान करती है इसलिए इस वातावरण को साफ रखने व नुकसानों से बचाने की जिम्मेदारी भी हमारी है। आज कल मानव अपने लाभ के लिए इतना स्वार्थी होता जा रहा है कि वह प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी भूलता जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप मानव को हर दिन एक नई प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ रहा है। प्रकृति हमारे लिए एक ऐसा वरदान है जिसकी तुलना हमारी मां से की जाती है और जो हमारा लालन पोषण करती है। सुबह जल्दी प्रकृति के गोद में टहलने से हम स्वस्थ और मजबूत बनते है साथ ही ये हमें कई सारी घातक बीमारियों जैसे डायबिटिज, उच्च रक्त चाप, लिवर संबंधी आदि समस्याओं को दूर करने में काफी लाभ पहुंचाती है। जिससे हमारा तन और दिमाग दोनों स्वस्थ रहते हैं। ये हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है कि हम प्रकृति के द्वारा रचित जीव जंतुओं की रक्षा करें और इस प्रकृति की चीजों का आनंद उठाएं। ज्यादातर कवि, लेखक और लोगों को अपने दिमाग, शरीर और आत्मा को दुबारा से ऊर्जात्मक बनाने के लिए योग और ध्यान करते देखा जा सकता है।

प्रकृति न केवल खुशी का स्रोत है बल्कि शिक्षा का भी स्रोत है। फलों से झुका हुआ पेड़ हमें विनम्र होना सिखाता है। बड़े-बड़े पहाड़ हमें यह सिखाते हैं कि हमें कभी भी अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए बल्कि उसका डटकर सामना करना चाहिए। फूल हमें मुस्कुराहट सिखाते हैं प्रकृति हमारे लिए आनंद का एक स्रोत है क्योंकि इससे जीवन की उपलब्धियों का पता चलता है। प्रकृति ईश्वर की अभिव्यक्ति है। मनुष्य और प्रकृति के बीच एक संबंध है इसलिए प्रकृति का प्रेम मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। जो व्यक्ति प्रकृति और वनस्पति से प्यार नहीं करता है वह एक विधर्मी है। वह भगवान को सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी के रूप में पहचानने से इंकार करता है।

पृथ्वी के हर एक मनुष्य को प्रकृति से छेड़-छाड़ किये बिना इसकी सुंदर प्रकृति का आनंद उठाना चाहिए। पर्यावरण और प्रकृति के विनाश को रोकने के लिए हमें इसे स्वच्छ रखना होगा। प्रकृति ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया एक अमूल्य उपहार है। प्रकृति ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है लेकिन मनुष्य ने हमेशा इसे बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इसलिए जितना हो सके हमें यह सोचना चाहिए कि कुछ भी काम करने से पहले हमारी प्रकृति को लाभ होगा या हानि।

पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है जिसे जीवन का समर्थन करने के लिए जाना जाता है और इसकी प्राकृतिक विशेषताएं वैज्ञानिक अनुसंधान के कई क्षेत्रों का विषय हैं। सौर मंडल के भीतर यह सूर्य के सबसे करीब तीसरा ग्रह है; यह सबसे बड़ा स्थलीय ग्रह है और कुल मिलाकर पांचवां सबसे बड़ा ग्रह है। इसकी सबसे प्रमुख जलवायु विशेषताएं इसके दो बड़े ध्रुवीय क्षेत्र दो अपेक्षाकृत संकीर्ण समशीतोष्ण क्षेत्र और एक विस्तृत भूमध्यरेखीय उष्णकटिबंधीय से उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र हैं। वर्षा स्थान के साथ व्यापक रूप से भिन्न होती है, प्रति वर्ष कई मीटर पानी से लेकर एक मिलीमीटर से भी कम तक। पृथ्वी की सतह का 71 प्रतिशत हिस्सा खारे पानी के महासागरों से ढका है। शेष में महाद्वीप और द्वीप हैं, जिनमें से अधिकांश उत्तरी गोलार्ध में बसे हुए हैं।

पृथ्वी भू वैज्ञानिक और जैविक प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित हुई है जिसने मूल स्थितियों के निशान छोड़े हैं। बाहरी सतह को कई धीरे-धीरे पलायन करने वाली टेक्टोनिक प्लेटों में विभाजित किया गया है। इंटीरियर सक्रिय रहता है, प्लास्टिक मेंटल की एक मोटी परत और एक लोहे से भरे कोर के साथ जो एक चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करता है। यह लौह कोर एक ठोस आंतरिक चरण और एक तरल बाहरी चरण से बना है। कोर में संवहन गति डायनेमो क्रिया के माध्यम से विद्युत धाराएँ उत्पन्न करती है और ये बदले में भू-चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करती हैं।

जीवन-रूपों की उपस्थिति से वायुमंडलीय स्थितियों को मूल स्थितियों से महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया गया है जो एक पारिस्थितिक संतुलन बनाते हैं जो सतह की स्थिति को स्थिर करता है। अक्षांश और अन्य भौगोलिक कारकों द्वारा जलवायु में व्यापक क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद लंबी अवधि की औसत वैश्विक जलवायु इंटरग्लेशियल अवधियों के दौरान काफी स्थिर है और औसत वैश्विक तापमान के एक या दो डिग्री के बदलाव का ऐतिहासिक रूप से पारिस्थितिक पर प्रमुख प्रभाव पड़ा है।

प्रकृति का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। हमें अपनी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता रखनी चाहिए और स्वयं को इसके साथ संतुष्ट रखना चाहिए। बिना प्रकृति के संतुष्ट और स्वस्थ होने, हमारा जीवन अधूरा और दुखी हो जाता है। प्रदूषण, वनों की कटाई, जल प्रदूषण और जीव-जंतुओं के संकट के बढ़ने के साथ, हमें अपनी प्रकृति की रक्षा करने की अधिक जरूरत है।

प्रकृति से सम्बंधित कुछ सामाजिक परिवर्तन हमें करने की जरूरत हैं। हमें उसे बचाने और संरक्षित करने के लिए पेड़-पौधों का संरक्षण करना चाहिए, जल संरक्षण करना चाहिए, जैविक खेती को बढ़ावा देना चाहिए, और अपनी प्राकृतिक संसाधनों का समय-समय पर उपयोग करना चाहिए।

संकट के बावजूद, हमें एक साथ मिलकर प्रकृति की सुरक्षा करनी चाहिए। हमें अपने निकट के पारिस्थितिकी गतिविधियों में भाग लेना चाहिए और प्रकृति संरक्षण को सामरिक प्राथमिकता बनाना चाहिए। इस तरह हम समृद्धि को बढ़ा सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर और स्वस्थ वातावरण प्रदान कर सकते हैं।

इसलिए, हमें प्रकृति की सुंदरता और महत्व को समझना चाहिए और इसकी सुरक्षा के लिए सक्रिय रहना चाहिए। हमें प्रकृति के साथ संतुष्ट रहकर उसका ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यह हमारे जीवन का आदर्श रूप है और हमारे अच्छे स्वास्थ्य और संतुष्ट जीवन की गारंटी है।

# भारत में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता और उपाय

**शिवम चौधरी**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

आज के दौर में पर्यावरण संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गया है। विज्ञान और तकनीक की प्रगति ने मानव जीवन को आरामदायक अवश्य बनाया है, किंतु इसके साथ ही प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन भी हुआ है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वनों की कटाई, प्रदूषण और जनसंख्या वृद्धि ने प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दिया है। इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, असामान्य वर्षा, सूखा, बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाएँ अधिक बार और अधिक तीव्रता के साथ सामने आने लगी हैं।

## पर्यावरण का महत्व और वर्तमान संकट

पर्यावरण हमारे अस्तित्व का आधार है। स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, उपजाऊ भूमि और हरे-भरे वन ही मानव जीवन की नींव हैं। भारतीय संस्कृति में तो प्रकृति को देवतुल्य माना गया है। गंगा, यमुना जैसी नदियों को 'माँ' का दर्जा दिया गया है, पीपल, वट और नीम जैसे पेड़ों की पूजा की जाती है, और पर्वतों को पवित्र स्थल मानकर उनका संरक्षण किया जाता है।

परंतु वर्तमान समय में पर्यावरण की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। दिल्ली और अन्य महानगरों में वायु प्रदूषण विश्व के सबसे खतरनाक स्तरों में पहुँच चुका है। गंगा और यमुना जैसी नदियाँ औद्योगिक कचरे और प्लास्टिक से दम तोड़ रही हैं। पहाड़ों पर ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे बाढ़ और जल संकट की समस्या बढ़ रही है। हाल के वर्षों में उत्तराखंड की बाढ़, महाराष्ट्र में सूखा और चेन्नई का जल संकट इस बात का संकेत हैं कि हमने प्रकृति के साथ गंभीर छेड़छाड़ की है।

## प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षरण के मुख्य कारण

1. वनों की अंधाधुंध कटाई - बढ़ती जनसंख्या और उद्योगों के लिए भूमि उपलब्ध कराने हेतु बड़े पैमाने पर वनों का विनाश हो रहा है।
2. औद्योगिक अपशिष्ट - कारखानों से निकलने वाला रासायनिक कचरा जल, भूमि और वायु तीनों को प्रदूषित करता है।
3. वाहनों का धुआँ - जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग वायु में जहरीली गैसों को बढ़ाता है।
4. प्लास्टिक का अत्यधिक प्रयोग - सिंगल-यूज़ प्लास्टिक न केवल भूमि को दूषित करता है, बल्कि समुद्री जीवन को भी खतरे में डालता है।

5. रासायनिक खाद और कीटनाशक - आधुनिक कृषि पद्धतियों में रसायनों का अति प्रयोग मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर रहा है और भूजल को भी प्रदूषित कर रहा है।

## पर्यावरण संरक्षण के प्रभावी उपाय

1. वृक्षारोपण: एक पेड़ प्रतिदिन जितनी ऑक्सीजन देता है, वह लगभग 10 लोगों की श्वसन आवश्यकता पूरी कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कम-से-कम एक पेड़ लगाना चाहिए।
2. प्लास्टिक पर प्रतिबंध: कपड़े, जूट और अन्य बायोडिग्रेडेबल विकल्पों को बढ़ावा देना चाहिए।
3. ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग: सौर, पवन और जल ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोतों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।
4. पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग: कचरे का सही निपटान और रीसाइक्लिंग पर्यावरणीय दबाव को कम करता है।
5. जन-जागरूकता: शिक्षा और जनसंवाद के माध्यम से लोगों को यह समझाना आवश्यक है कि पर्यावरण का संरक्षण प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है।

## भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का स्थान

भारत की परंपरा प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देती है। "वसुधैव कुटुम्बकम" का भाव यह बताता है कि सम्पूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है। हमारे त्योहारों, जैसे वृक्षों पर रक्षाबंधन मनाना या गोवर्धन पूजा करना, पर्यावरण के महत्व को उजागर करते हैं।

## सरकारी और वैश्विक प्रयास

भारत सरकार ने कई पहल की हैं, जैसे 'स्वच्छ भारत अभियान', 'नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम' और सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर रोक। पेरिस जलवायु समझौते में भारत ने 2070 तक 'नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जन' का लक्ष्य रखा है।

वैश्विक स्तर पर भी अनेक प्रयास हो रहे हैं, जैसे 'अर्थ समिट', 'क्योटो प्रोटोकॉल', और 'COP-26'। ये सभी कार्यक्रम पर्यावरणीय संकट को रोकने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

## निष्कर्ष

पर्यावरण का संरक्षण केवल सरकार या संगठनों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि यह हर नागरिक का कर्तव्य है। जल, वायु और धरती की रक्षा करना हमारे अस्तित्व की रक्षा करना है। यदि हम आज ही अपने जीवन में छोटे बदलाव करें जैसे प्लास्टिक का बहिष्कार, ऊर्जा की बचत, पानी का विवेकपूर्ण उपयोग, और पेड़ों की रक्षा तो हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य तैयार कर सकते हैं।

भारतीय संस्कृति का यह कथन आज भी प्रासंगिक है - "प्रकृति रक्षति रक्षितः", अर्थात जो प्रकृति की रक्षा करता है, प्रकृति भी उसकी रक्षा करती है। समय आ गया है कि हम इस सत्य को समझें और धरती को फिर से हरियाली, स्वच्छता और संतुलन से परिपूर्ण बनाएँ।

# विविध

## कोई दुख
## मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं
## वही हारा
## जो लड़ा नहीं

– कुंवर नारायण

# कार्मिक निदेशालय एवं उसका नेतृत्व : एक झलक

**बबीता वर्मा**
कार्मिक निदेशालय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की 'रक्षा सेवाओं' को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए जब 'स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी' के विकास की अहमियत को समझा गया, तब 1958 में 'डीआरडीओ' के गठन पर विचार हुआ। इस क्रम में, उस दौरान इंडियन आर्मी की पहले से कार्यरत 'तकनीकी विकास स्थापनाओं' (TDEs) व 'तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय' (DTDP) को एकीकृत करते हुए उनका 'रक्षा विज्ञान संगठन' (DSO) में विलय कर दिया गया।

इस विलय के पश्चात 1958 के बाद से 2001 तक 50 से भी अधिक प्रयोगशालाएं, स्थापनाएं व अनुसंधान केन्द्र औपचारिक रूप से इस संगठन में शामिल हुए।

आज भारत का यह प्रतिष्ठित संगठन लगभग 5000 वैज्ञानिकों तथा तकनीकी, एलाइड व प्रशासनिक कैडर सहित इंटर सर्विस सिविलियन कैडर के लगभग 25000 अधिकारियों/कर्मियों के साथ मिलकर देश को 'अत्याधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकी' के क्षेत्र में आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में अग्रसर है।

वर्ष 1958 के बाद इस संगठन की नफरी लगातार बढ़ रही थी, अतः यहां कार्यरत वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मियों के सेवा-संबंधी प्रशासनिक तथा व्यक्तिगत मामलों से जुड़ी हर छोटी-बड़ी गतिविधि को सहज और व्यवस्थित बनाने के लिए 1960 के दशक के अंतिम वर्षों में कार्मिक निदेशालय (डीओपी) का अस्तित्व सामने आया, जो उस दौरान पहले से कार्यरत 'प्रशासन निदेशालय' से ही निकलकर बना था।

अपने गठन के बाद से लेकर आज तक कार्मिक निदेशालय भारत सरकार के मौजूदा आदेशों/नियमों/नीतियों के अनुरूप 'डीआरडीओ' के प्रचलित दिशा-निर्देशों का अनुसरण करते हुए इस संगठन के अधिकारियों तथा कर्मियों की नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानांतरण, सेवानिवृत्ति जैसे समस्त सेवा-संबंधी मामलों के साथ-साथ उनके व्यक्तिगत हितों एवं दायित्वों से जुड़े विभिन्न पहलुओं की प्रबंधन-व्यवस्था की ज़िम्मेदारी बखूबी संभाल रहा है।

सचिव,रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ के अधीनस्थ कार्यरत डीजी (एचआर) के मार्गदर्शन में कार्य कर रहे कार्मिक निदेशालय में अब तक कई सैन्य व सिविलियन अधिकारियों ने अपने व्यापक अनुभवों तथा कुशल नेतृत्व क्षमताओं के साथ इस निदेशालय के निदेशक के तौर पर अपने उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है।

आज इस लेख के माध्यम से हम उन सभी अधिकारियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं, जिन्होंने निदेशक (कार्मिक) के तौर पर इस संगठन को अपनी सेवाओं से सगौर्वान्वित किया है

(क)डीआरडीओ में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार कार्मिक निदेशालय के प्रथम निदेशक के तौर पर 01 जुलाई 1972 से 31 अगस्त 1976 तक की अवधि में निदेशक (कार्मिक) के तौर पर **श्री ए एन भट्टाचार्य** पदासीन रहे। इन्होनें लगभग चार वर्षों तक अपनी सेवाओं से इस संगठन को लाभान्वित किया।

(ख) तत्पश्चात 01 सितंबर 1976 से 28 फरवरी 1979 के दौरान **डॉ. आर नारायण** लगभग ढाई वर्षों के लिए निदेशक (कार्मिक) के रूप में कार्यरत रहे।

(ग)इसके बाद 01 मार्च 1979 से 20 अगस्त 1982 तक की समयावधि के दौरान डॉ. आर आर अग्रवाल ने निदेशक (कार्मिक) का पद बखूबी संभालते हुए इस संगठन को अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

(घ)भारतीय वायुसेना के कमीशंड अफसर **ग्रुप कैप्टन एम सलाहुद्दीन** 21 अगस्त 1982 से 02 फरवरी 1986 के बीच निदेशक (कार्मिक) के तौर पर कार्यरत रहे।

(च)इस दौरान भारतीय वायुसेना की ओर से एयर कमोडोर के रैंक पर पदोन्नत हो जाने के पश्चात 03 फरवरी 1986 से 31 जुलाई 1986 तक **एयर कमोडोर एम सलाहुद्दीन** ने पुनः निदेशक (कार्मिक) के तौर पर अपनी सेवाओं को जारी रखा तथा अपने अनुशासित सैन्य अनुभवों के साथ यहां कार्यरत रहकर इस संगठन को लाभान्वित किया। एयर कमोडोर एम सलाहुद्दीन ने 01 दिसंबर 1959 को भारतीय वायुसेना में कमीशन प्राप्त किया था तथा अपनी सेवानिवृत्ति की आयु पूर्ण किए बिना जीवनपर्यन्त आप 31 दिसंबर 1991 तक भारतीय वायुसेना के लिए कार्यरत रहे।

(छ)इस क्रम में आगे 01 अगस्त 1986 से 03 जनवरी 1991 तक **डॉ. ए के दत्ता, वैज्ञानिक 'जी'** निदेशक (कार्मिक) के पद पर कार्यरत रहे। आपकी जन्मतिथि 24 अगस्त 1939 है तथा आपने एमएससी, पीएचडी तक शिक्षा अर्जित की। 'डीआरडीओ' में आपका सेवाकाल 30 अगस्त 1963 से 30 सितम्बर 1998 तक रहा तथा लगभग 35 वर्षों तक आपने अपनी समर्पित सेवाएं इस संगठन को प्रदान कीं।

(ज)तत्पश्चात 04 जनवरी 1991 से 15 मार्च 1992 की अवधि के दौरान **डॉ. आई डी गाबा, वैज्ञानिक 'जी'** निदेशक (कार्मिक) के तौर पर पदासीन रहे। आपकी जन्मतिथि 14 सितम्बर 1938 है तथा आपकी शैक्षणिक योग्यता एमएससी, पीएचडी तथा एमबीए रही। आप 'डीआरडीओ' संगठन में 21 फरवरी 1967 से 30 सितम्बर 1998 तक सेवारत रहे। आप 15 मार्च 1992 से 17 जनवरी 1996 के दौरान लगभग चार वर्षों के लिए भारत उच्चायोग, लंदन में बतौर 'टेक्नीकल एडवाइजर (डिफेंस)' भी कार्यरत रहे।

(झ) इसके बाद 16 मार्च 1992 से 24 मार्च 1994 के दौरान बतौर निदेशक (कार्मिक) रह चुके अधिकारी हैं **डॉ. पी सी एंग्लो, वैज्ञानिक 'एफ'**। आपने 'डीआरडीओ' में 30 मार्च 1962 से अपनी सेवा की शुरुआत करते हुए 15 जून 1997 को स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्ति ली। आपकी जन्मतिथि 04 दिसम्बर 1937 है तथा आपने एमएससी (फिजिक्स) तथा पीएचडी (मेटलर्जी) तक शैक्षणिक योग्यता अर्जित की। आप 1988 से 1992 के दौरान 'रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार' के 'स्टाफ अफसर' के तौर पर भी कार्यरत रहे। डॉ. पी.सी. एंग्लो की विशिष्टतम उपलब्धि यह है कि आपकी सेवानिवृत्ति को 28 वर्ष से भी अधिक समय बीत चुका है और एक 'सुपर सीनियर सिटिज़न' युगल के रूप में सपत्नीक आप अपना जीवन अपने गृह-नगर में सकुशल व्यतीत कर रहे हैं।

(ट) इस श्रृंखला में आगे 25 मार्च 1994 से 31 मार्च 1998 तक बतौर निदेशक (कार्मिक) कार्यरत रह चुके अधिकारी हैं **श्री एम बी सिंह, वैज्ञानिक 'जी'**। आपकी जन्मतिथि 20 सितम्बर 1937 है तथा आपने बीए तथा बीई (मैकेनिकल इंजीनियरिंग) तक शिक्षा अर्जित की। 'डीआरडीओ' में आपका

सेवाकाल 21 अगस्त 1963 से 30 सितंबर 1997 तक रहा तथा इस संगठन के लिए आप लगभग 34 वर्षों तक निष्ठापूर्वक सेवाएं प्रदान करते रहे।

(ठ) इसके बाद 01 अप्रैल 1998 से 31 मई 2000 के दौरान **डॉ. राम कुमार, वैज्ञानिक 'जी'** निदेशक (कार्मिक) के रूप में कार्यरत रहे। आपकी जन्मतिथि 06 मई 1939 है तथा आपने एमए (मैथ्स), पीएचडी (मैथ्स), डीआईसी (फिज़िक्स),एमबीए तक की शिक्षा प्राप्त की तथा दिसंबर 1963 से 31 मई 2000 तक लगभग 37 वर्षों तक आप 'डीआरडीओ' के लिए सेवारत रहे।

आपके द्वारा प्रकाशित किए गए कुल 35 रिसर्च पेपर्स में अंतरराष्ट्रीय जर्नल 'प्रोसीडिंग्स ऑफ रॉयल सोसायटी ऑफ लंदन', 'कॉमनवेल्थ स्कॉलरशिप एट इंपीरियल कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी लंदन' आदि शामिल हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, बगदाद (इराक़) में आपने प्रोफेसर के रूप में फॉरेन असाइनमेंट पूरा किया तथा 'कंप्यूटर प्रोग्रामिंग', 'एनवायरमेंटल सिक्योरिटी' तथा 'डीआरडीओ पर्सोनेल पॉलिसी' विषयक 04 पुस्तकों के लेखन सहित आप 'आरएंडडी मैनेजमेंट' के लिए 'साइंटिस्ट ऑफ द इयर' अवॉर्ड से भी सम्मानित किए गए।

आपकी विशिष्टतम उपलब्धि यह है कि सेवानिवृत्ति के बाद लगभग 85 वर्ष की आयु में 'सुपर सीनियर सिटिज़न' के रूप में आप अपने परिजनों के बीच सकुशल जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

(ड) बतौर निदेशक (कार्मिक) 01 जून 2000 से 31 अगस्त 2001 तक की अवधि के दौरान कार्यरत रहे **डॉ. प्रदीप कुमार शुक्ला, वैज्ञानिक 'जी'**। आपकी जन्मतिथि 12 दिसम्बर 1942 है तथा आपकी शैक्षणिक योग्यता एमएससी (फिज़िक्स) रही। डॉ. पी के शुक्ला 01 फरवरी 1965 से 31 दिसंबर 2002 की अवधि के दौरान लगभग 37 वर्षों तक 'डीआरडीओ' के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होकर सेवारत रहे।

(ढ) इस क्रम में 01 सितंबर 2001 से 30 अप्रैल 2004 तक की अवधि में **डॉ. एस एम शर्मा, वैज्ञानिक 'जी'** ने लगभग तीन वर्षों तक निदेशक (कार्मिक) के तौर पर कार्यरत रहते हुए इस संगठन को अपनी सेवाओं से लाभान्वित किया। आपकी जन्मतिथि 20 अप्रैल 1944 है तथा आप 30 अप्रैल 2004 को 'डीआरडीओ' से सेवानिवृत्त हुए।

(त) इस कड़ी में आगे 01 मई 2004 से 28 फरवरी 2007 तक की अवधि के दौरान निदेशक (कार्मिक) के रूप में कार्यरत रहे **डॉ. के एस मांजा, वैज्ञानिक 'जी'**। आपकी जन्मतिथि 20 फरवरी 1947 है तथा आपकी शैक्षणिक योग्यता एमएससी तथा पीएचडी रही। आपने 17 अगस्त 1974 को 'डीआरडीओ' में अपनी सेवा की शुरुआत की तथा लगभग 33 वर्षों तक इस संगठन के लिए कर्तव्यनिष्ठ सेवाएं प्रदान करते हुए आप 28 फरवरी 2007 को सेवानिवृत्त हो गए।

(थ) इसके बाद, 01 मार्च 2007 से 28 फरवरी 2009 की अवधि के दौरान **डॉ. नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक 'जी'** ने बतौर निदेशक (कार्मिक) अपना पदभार सम्भाला। आपकी जन्मतिथि 06 फरवरी 1949 है तथा आपने एमएससी (एग्री) तथा पीएचडी (प्लांट ब्रीडिंग) तक शिक्षा अर्जित की। आपने 03 अगस्त 1970 से 28 फरवरी 2009 के दौरान लगभग 39 वर्षों तक इस संगठन को अपनी समर्पित सेवाएं प्रदान कीं।

वर्ष 2003 में आपको 'अग्नि अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस इन सेल्फ रिलायंस' से भी सम्मानित किया गया।

(द) बतौर निदेशक (कार्मिक) 01 मार्च 2009 से 03 अक्तूबर 2012 तक कार्यरत रहे **डॉ. अरूण कुमार, वैज्ञानिक 'जी'**। आपकी जन्मतिथि 04 नवंबर 1950 है तथा आपकी शैक्षणिक योग्यता एमएससी (स्टेटिस्टिक्स) रही। आपने 'डीआरडीओ' में अपनी सेवा की शुरुआत 27 जून 1973 से की तथा लगभग 39 वर्षों तक इस संगठन को अपनी सेवाओं से लाभान्वित करते हुए आप 30 नवंबर 2012 को सेवानिवृत्त हुए।

(ध) **डॉ. अजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक 'जी'** 04 अक्तूबर 2012 से 19 जून 2015 तक निदेशक (कार्मिक) के रूप में कार्यरत रहे। आपकी जन्मतिथि 25 जून 1961 है तथा आपकी शैक्षणिक योग्यता की फेहरिस्त में बीएससी, एमएससी, पीएचडी, सेकंड पीएचडी, डीएससी (ऑन कॉसा) तथा यूएसए से प्रोजेक्ट मैनेजमेंट में 'इंटरनेशनल एक्ज़ीक्यूटिव डिप्लोमा' आदि शामिल हैं। आप मार्च 1988 से 30 जून 2021 तक 'डीआरडीओ' के लिए सेवारत रहे।

इस दौरान 'यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड'(1999), 'डीआरडीओ टेक्नोलॉजी अवॉर्ड' (2000), 'लेब साइंटिस्ट ऑफ द ईयर अवॉर्ड' (2001) तथा 'डीआरडीओ साइंटिस्ट ऑफ द ईयर अवॉर्ड' (2006) से सम्मानित होना आपकी विशिष्ट उपलब्धियां रहीं।

(न) इस क्रम में, 19 जून 2015 से 31 जुलाई 2017 की अवधि के बीच निदेशक (कार्मिक) के रूप में पदासीन रहीं **डॉ.** (सुश्री) **हिना ए गोखले, वैज्ञानिक 'जी'**। डॉ. गोखले के सम्बंध में एक विशेष बात यह रही कि बतौर निदेशक (कार्मिक) आपने 31 जुलाई 2017 तक कार्मिक निदेशालय का नेतृत्व किया उसके बाद अगस्त 2017 से बतौर डीजी(एच आर) कार्मिक निदेशालय का मार्गदर्शन।

आपकी जन्मतिथि 10 सितम्बर 1958 है तथा आपने बीएससी (मैथ्स), एमएस (मल्टीवेरिएट एनालिसिस) तथा पीएचडी (एप्लाइड स्टेटिस्टिक्स) तक शिक्षा हासिल की। आपने 'डीआरडीओ' में 26 फरवरी 1988 से अपनी सेवा की शुरुआत की तथा 30 सितंबर 2018 तक यहां सेवारत रहते हुए आपने लगभग 30 वर्षों तक इस संगठन के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया।

विभिन्न अंतरराष्ट्रीय जर्नलों, कॉन्फ्रेंसों व टेक्नीकल रिपोर्टों में 'प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एंड स्टेटिस्टिक्स' पर लगभग 30 पब्लिकेशनों का प्रकाशन आपकी विशिष्ट उपलब्धि रही।

(प) कार्मिक निदेशालय के अगले निदेशक **श्री गोपाल भूषण, वैज्ञानिक 'जी'** 01 अगस्त 2017 से 09 जुलाई 2019 के मध्य निदेशक (कार्मिक) के तौर पर पदासीन रहे। आपकी जन्मतिथि 24 नवम्बर 1960 है तथा आपने बीएससी, ऑपरेशनल रिसर्च में एमएससी, एमएस (सॉफ्टवेयर सिस्टम) तथा पीएचडी तक शिक्षा अर्जित की। आपने 01 मई 1985 से 30 नवंबर 2020 के मध्य लगभग 35 वर्षों तक 'डीआरडीओ' के प्रति अपनी समर्पित सेवाएं प्रदान कीं।

इस दौरान आपको 'साइंटिस्ट ऑफ द ईयर अवॉर्ड' (2010) तथा 'बेस्ट टेक्नो मैनेजरियल सर्विस/पॉपुलर साइंस कम्युनिकेश अवॉर्ड'(2016) से भी सम्मानित किया गया।

आपके द्वारा संकलित 04 प्रकाशनों- 'इन्क्रेडिबल कलाम'(2015), 'कलाम कॉफी टेबल बुक' (2016), 'डीआरडीओ कॉफी टेबल बुक'(2018), 'कमेमोरेटिव स्टाम्प ऑन डीआरडीओ डायमंड जुबली' (2018) का विमोचन तात्कालिक माननीय रक्षा मंत्री जी द्वारा किया जाना आपकी विशिष्ट उपलब्धियों में शामिल है।

(फ) इस श्रृंखला में, बतौर निदेशक (कार्मिक) 09 जुलाई 2019 से 30 जून 2021 तक कार्यरत रहे **श्री जी एस गुप्ता, वैज्ञानिक 'जी'**। आपकी जन्मतिथि 11 जून 1961 है तथा आप बी ई (इलेक्ट्रॉनिक्स)

तथा कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग पोस्ट ग्रेजुएट रहे। श्री गुप्ता ने लगभग दो वर्षों तक निदेशक (कार्मिक) के तौर पर अपनी सेवाओं से इस संगठन को लाभांवित किया। 'डीआरडीओ' में आपका सेवाकाल 04 फरवरी 1983 से आरम्भ हुआ तथा 30 जून 2021 को आप 'डीआरडीओ' से सेवानिवृत्त हुए।

(ब) वर्तमान में कार्मिक निदेशालय के निदेशक हैं **डॉ. संजय के द्विवेदी, वैज्ञानिक 'जी'**। बतौर निदेशक (कार्मिक) आप यहां 01 जुलाई 2021 से कार्यरत हैं। आपकी जन्मतिथि 01 जनवरी 1971 है तथा आपने एमएससी (एग्रीकल्चर साइंस) तथा पीएचडी (हॉर्टीकल्चर) तक शैक्षणिक योग्यता अर्जित की है। आपने 'डीआरडीओ' में अपना सेवाकाल 03 अगस्त 1996 से आरम्भ किया।

अब तक आपके कुल सेवाकाल में 91 शोध-प्रकाशन, 16 मोनोग्राम तथा 03 पुस्तकों के प्रकाशन सहित 09 से अधिक पेटेंट आपके नाम पर दर्ज हैं।

इसके अलावा, लेह-लद्दाख जैसे 'हाई अल्टीट्यूड' ठंडे-शुष्क प्रदेशों में 'हाइपरसॉनिक खेती' को बढ़ावा के क्रम में वहां उगने वाले पौधों की 'बायो-डाइवर्सिटी' हेतु 'फील्ड जीन बैंक' की स्थापना करने व कम लागत वाले 'ग्रीन हाउस' को डिजाइन करने के साथ-साथ 'प्रोटेक्टेड कल्टीवेशन एवं प्लांट जेनेटिक रीसोर्सेज' को संरक्षित करने में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान स्मरणीय है।

आप 'यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड' (2001 व 2002) 'साइंटिस्ट ऑफ द ईयर अवॉर्ड' (2002 व 2009) तथा 'टेक्नोलॉजी ग्रुप अवॉर्ड'(2002) से भी सम्मानित हैं।

इस प्रकार, यहां यह कहना समीचीन होगा कि कार्मिक निदेशालय ने अपनी विकास-यात्रा हमेशा ही बेहतरीन और कुशल नेतृत्व के साथ तय की है और हम कामना करते हैं हमारे निदेशालय की यह प्रगति-यात्रा आगे भी यूं ही जारी रहेगी।

तो ...यह था हमारे कार्मिक निदेशालय के सभी निदेशकों का एक संक्षिप्त-सा किंतु सम्पूर्ण परिचय।

इस लेख में प्रस्तुत जानकारी इस संगठन में उपलब्ध 'सेवा रिकॉर्डों' के आधार पर तैयार की गई है। तकनीकी बाध्यताओं के कारण जिन अधिकारियों के सेवा-रिकॉर्ड उपलब्ध नही हो सके, उनके साथ हमने औपचारिक सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास किया। कई सेवानिवृत्त अधिकारियों के साथ औपचारिक सम्पर्क नहीं हो पाया, जिस कारण उनके संबंध में केवल सीमित सूचनाएं ही उपलब्ध हो सकीं।

सेवानिवृत्त अधिकारियों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी हमारे लिए बेहद मूल्यवान साबित हुई। जून 1997 में सेवानिवृत्त हुए डॉ. पी.सी. एंग्लो तथा मई 2000 में सेवानिवृत्त हुए डॉ. राम कुमार जी की सेवानिवृत्ति को लगभग 02 दशकों से भी अधिक समय बीत चुका है और ख़ुशी की बात यह रही कि उम्रदराज़ हो जाने पर भी डीआरडीओ के दोनों 'एक्स-सांइटिस्ट सुपर सीनियर सिटिज़न्स' अपना ब्योरा स्वयं हमें दे पाने में समर्थ रहे।

आज से लगभग 39 वर्ष पहले बतौर निदेशक (कार्मिक) कार्यरत रहे एयर कमोडोर एम सलाहुद्दीन के कार्यकाल को लगभग 04 दशकों का लम्बा अरसा गुजर चुका है और 'भारतीय वायुसेना के कमीशंड अफसर' होने के कारण उनका 'सेवा रिकॉर्ड' डीआरडीओ संगठन में उपलब्ध नहीं था, तथापि उनके संबंध में जितनी जानकारी भी हम जुटा पाए, उसके लिए हम 'वायुसेना मुख्यालय के पेंशन विंग' तथा उनकी 'शरीक़-ए-हयात' बेगम सलाहुद्दीन ग़ौसिया के बेहद आभारी रहेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ कार्मिक निदेशालय की इस इतिहास-यात्रा को हम यहां विराम देते हैं। हमें यकीन है कि कार्मिक निदेशालय के निदेशकों से परिचित कराने का हमारा यह छोटा-सा प्रयास कहीं-कहीं अधूरा ही सही, लेकिन रोचकता और ज्ञानवर्धन के नज़रिए से सर्वथा परिपूर्ण साबित होगा।

# मार्वान अटापट्टू: दृढ़ संकल्प और समर्पण की गाथा

**दिनेश**
उद्योग संपर्क एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय

कोलंबो की हलचल भरी सड़कों के बीच, एक शांत और दृढ़ निश्चयी लड़का बड़ा हो रहा था, जिसका नाम था मार्वान अटापट्टू। उनके शुरुआती वर्ष अन्य बच्चों की तरह ही थे, स्कूल जाना, दोस्तों के साथ खेलना, लेकिन उनके दिल में एक ऐसी आग धधक रही थी जो उन्हें दूसरों से अलग करती थी - क्रिकेट के प्रति अटूट प्रेम।

अटापट्टू का परिवार पारंपरिक मूल्यों में डूबा हुआ था, और उनकी शिक्षा और भविष्य को लेकर उनकी कुछ निश्चित अपेक्षाएँ थीं। क्रिकेट को अक्सर एक शौक के रूप में देखा जाता था, न कि एक गंभीर करियर विकल्प के रूप में। हालाँकि, मार्वान के भीतर एक ऐसी आवाज़ थी जो उन्हें मैदान की ओर खींचती थी, गेंद और बल्ले की लय उन्हें किसी और चीज़ से ज़्यादा सुकून देती थी।

उनके शुरुआती क्रिकेटिंग दिन चुनौतियों से भरे थे। प्रतिभाशाली होने के बावजूद, उन्हें कई बार अस्वीकृति का सामना करना पड़ा। युवा स्तर पर कई बार टीम से बाहर कर दिया गया, उनकी प्रतिभा को पहचानने में चयनकर्ताओं ने समय लगाया। यह वह दौर था जब कई युवा खिलाड़ी निराश होकर खेल छोड़ देते हैं, लेकिन मार्वान के भीतर कुछ अलग था - एक अटूट दृढ़ संकल्प। असफलता उन्हें निराश करने के बजाय और मजबूत बनाती थी। हर ड्रॉप-आउट, हर अस्वीकृति उनके संकल्प को और धार देती थी।

अटापट्टू की कहानी में 'मल्टीपल ड्रॉप्स' एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्हें राष्ट्रीय टीम में कई बार चुना गया और फिर खराब प्रदर्शन के बाद बाहर कर दिया गया। एक सलामी बल्लेबाज के तौर पर, उन्हें अपनी जगह पक्की करने के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ा। यह उनके करियर का एक ऐसा दौर था जब आत्मविश्वास डगमगा सकता था, लेकिन मार्वान ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपनी तकनीक पर अथक परिश्रम किया, अपनी कमजोरियों पर काम किया और हर बार वापसी करने के लिए दृढ़ संकल्पित रहे।

उनका शुरुआती अंतरराष्ट्रीय करियर भी आसान नहीं था। कुछ शुरुआती मैचों में खराब प्रदर्शन के कारण उनकी क्षमता पर सवाल उठाए जाने लगे थे। आलोचकों ने उन्हें टीम में बनाए रखने पर संदेह जताया, और परिवार की अपेक्षाओं का दबाव भी बढ़ रहा था। यह मार्वान के धैर्य और दृढ़ता की परीक्षा थी। उन्होंने बाहरी शोर को अनसुना कर दिया और अपनी मेहनत पर विश्वास रखा।

फिर आया वह 'टर्निंग पॉइंट'। 1997 में, ज़िम्बाब्वे के खिलाफ एक टेस्ट मैच में, अटापट्टू ने शानदार शतक बनाया। यह सिर्फ एक शतक नहीं था, यह उनके वर्षों के संघर्ष, त्याग और अटूट विश्वास का प्रमाण था। इस पारी ने न केवल उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी नई ऊँचाईयों पर पहुँचाया।

इसके बाद, मार्वान अटापट्टू ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने श्रीलंकाई क्रिकेट टीम के एक महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में अपनी जगह पक्की की। उनकी क्लासिक बल्लेबाजी शैली, धैर्य और रनों की भूख ने उन्हें दुनिया के बेहतरीन सलामी बल्लेबाजों में शुमार कर दिया। उन्होंने कई यादगार पारियाँ खेलीं, जिसमें 2001 में इंग्लैंड के खिलाफ एक ही टेस्ट मैच में दो शतक शामिल हैं, एक ऐसा कारनामा जो बहुत कम बल्लेबाजों ने किया है।

एक खिलाड़ी के रूप में, अटापट्टू ने न केवल रन बनाए बल्कि टीम में स्थिरता और अनुभव भी लेकर आए। उनकी शांत और संयमित प्रकृति ने मुश्किल परिस्थितियों में टीम को सहारा दिया। उन्होंने कई युवा खिलाड़ियों का मार्गदर्शन किया और ड्रेसिंग रूम में एक सकारात्मक माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

खिलाड़ी के रूप में अपनी शानदार पारी के बाद, अटापट्टू ने कोचिंग में भी अपना योगदान दिया। उन्होंने श्रीलंका की राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच के रूप में काम किया और युवा प्रतिभाओं को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका कोचिंग दर्शन उनके खेलने के दिनों की तरह ही दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत पर आधारित था।

मार्वान अटापट्टू की कहानी सिर्फ एक क्रिकेटर की कहानी नहीं है, यह दृढ़ता, समर्पण और कभी हार न मानने वाले जज्बे की कहानी है। उन्होंने यह साबित किया कि यदि आपके भीतर अटूट विश्वास और कड़ी मेहनत करने की क्षमता है, तो आप किसी भी चुनौती को पार कर सकते हैं।

उनका प्रभाव श्रीलंकाई क्रिकेट पर गहरा है। उन्होंने अनगिनत युवाओं को क्रिकेट को करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया है। उनकी बल्लेबाजी की क्लासिक शैली आज भी युवा खिलाड़ियों के लिए एक आदर्श है। मार्वान अटापट्टू की विरासत सिर्फ उनके बनाए रनों में नहीं, बल्कि उस प्रेरणा में निहित है जो उन्होंने अनगिनत लोगों को दी है - अपनी असफलताओं से उठने और अपने सपनों को कभी न छोड़ने की प्रेरणा। वह हमेशा श्रीलंकाई क्रिकेट के इतिहास में एक ऐसे योद्धा के रूप में याद किए जाएंगे जिन्होंने अपनी अटूट इच्छाशक्ति से सफलता की नई ऊँचाइयों को छुआ।

# मोटापा: एक चिंता

**अनिल कुमार**
जनसंपर्क निदेशालय

मोटापा का मतलब है शरीर में अत्यधिक वसा का जमा होना, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। यह एक जटिल बीमारी है जो कई अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के खतरे को भी बढ़ाती है, जैसे हृदय रोग, मधुमेह इत्यादि। मोटापा आज दुनिया भर में बहुत बड़ी समस्या बन गया है। विश्व मोटापा दिवस हर साल 4 मार्च को मनाया जाता है ताकि आम लोगों को मोटापे से होने वाली स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों के बारे में जागरूक किया जा सके।

एक अध्ययन में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बताया है कि 1975 के बाद से दुनिया में मोटापा तीन गुना बढ़ा है। इंडियन जनरल कम्यूनिटी मैडिसिन के अनुसार, भारत में 2025 तक 10 करोड़ से ज्यादा लोग ओवर वेट हैं और 135 मिलियन लोग मोटापे का शिकार हैं। भारत में मोटापा तेजी से बढ़ रहा है। भारत में मोटापे की व्यापकता 40.3% आँकी गयी है। क्षेत्रीय भिन्नताओं के मुताबिक दक्षिण भाग में सबसे अधिक 46.51% और पूर्व क्षेत्र में सबसे कम 32.96% पायी गयी है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी मोटापे पर व्यापक चिंता जाहिर की है। उन्होंने 'मन की बात' एपिसोड में लोगों को मोटापे से बचने की एक सलाह दी है। उन्होंने कहा है कि यदि सब लोग मिलकर अपने रसोई और खाने में 10 फीसदी तेल का उपयोग कम कर दें तो काफी हद तक मोटापे से बचा जा सकता है। ये मोटापे को कम करने की दिशा में एक अहम कदम होगा।

हम रोज जो कुछ खाते हैं उसका प्रभाव सीधे हमारे शरीर पर होता है यानी कि भोजन को ऊर्जा में बदलने वाली प्रक्रिया पर होता है और इसका सीधा असर हमारे वजन पर पड़ता है। यदि हम बहुत अधिक शुगर, फैट, कैलोरी युक्त भोजन करते हैं और व्यायाम नहीं करते हैं तो तुरंत हमारा वजन बढ़ने लगता है।

हर किसी के शरीर की जरूरतें अलग हैं और उनके शरीर और आवश्यकता के अनुसार ही आहार होना चाहिए। जैसे पुरुषों को ज्यादा कैलोरी की जरूरत होती है तो वहीं महिलाओं को ज्यादा प्रोटीन की।

आज के दौर में इंटरनेट मीडिया के मंचों पर बहुत सी जानकारी मोटापे से निपटने के लिए मिल जाती है। क्या खायें क्या न खायें, खाने संबंधी सूचनाएं, वजन कम करने संबन्धित डाइट प्लान और वीडियो, फिर भी अक्सर इससे वजन कम होने के बजाए और बढ़ने लगता है। तो आइये सबसे पहले उन मुख्य कारणों को जानते हैं जो कि मोटापा बढ़ने का कारण बनती हैं:

- ***अस्वस्थ खानपान***: जैसे जंक फूड, तला-भुना भोजन, पैकेट बंद खाना, मीठी चीजों का अत्यधिक सेवन करना।
- ***शारीरिक परिश्रम या गतिविधि की कमी***: नियमित व्यायाम न करना, एक जगह ज्यादा देर तक बैठे या सोये रहना, पैदल कम चलना।

- **मानसिक तनाव:** आज के युग में लोगो में मानसिक तनाव बहुत बढ़ गया है जिस कारण हार्मोनल बदलाव हो रहा है। जैसे कार्टिसोल हार्मोन का बढ़ना जो कि भूख को बढ़ाता है।
- **नींद की कमी:** पर्याप्त नींद पूरी न करना जिस कारण भूख कम लगती है और मेटाबोलिज्म प्रक्रिया धीमी हो जाती है।
- **आनुवंशिकी:** परिवार में आनुवंशिकी के कारण भी देखा जाता है कि अक्सर लोग मोटापे से ग्रस्त हो जाते हैं।
- **चिकित्सीय प्रभाव:** कुछ बीमारियां और उसके उपचार के लिए प्रयोग की जाने वाली दवाइयां भी मोटापे का कारण बन सकती हैं।
- **डिजिटल युग:** आज के डिजिटल युग में बच्चे, युवा और हर वर्ग अपनी शारीरिक गतिविधियों में पीछे रह गया है। जैसे कि बच्चों का खेल के मैदान में खेलने की बजाय मोबाइल का प्रयोग ज्यादा करना, अपने आस पास जाने के लिए भी लोग आज कल पैदल जाने की बजाय वाहन का अत्यधिक प्रयोग करते हैं।

## मोटापे से होने वाली समस्याएं:

- हृदय रोग
- मधुमेह
- उच्च रक्तचाप
- नींद की समस्या
- त्वचा संबंधी समस्या
- आत्मविश्वास की कमी

## मोटापे से बचने के उपाय:

- खाने की थाली को कलरफुल यानी कि इंद्रधनुषी बनाएं। अलग-अलग रंग के सब्जी और फल खाने से सभी पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।
- स्वस्थ खानपान रखना, तला-भुना व गरिष्ठ भोजन का सेवन कम करना।
- मौसमी फलों का सेवन करना।
- पर्याप्त पानी पीना जिससे पाचन सही रहता है और भूख भी कम लगती है।
- टीवी या मोबाइल देखते हुए भोजन न करना, टीवी या मोबाइल देखते हुए खाने से हमारा ध्यान खाने पर नहीं रहता जिससे अधिक कैलोरी का सेवन हो जाता है।
- ज्यादा समय तक भूखे रहने से भी हम ज्यादा भोजन खा लेते हैं इसलिए समय अंतराल पर भोजन करना।
- रोज कम से कम 30 मिनट पैदल चलना।
- अपने जीवन में नियमित योग और व्यायाम को शामिल करना।
- हर रोज कम से कम 7-8 घंटे की नींद पूरी करना।
- तनाव प्रबंधन।
- उम्र, शारीरिक गठन, शारीरिक गतिविधि के आधार पर भोजन का चयन।

मोटापा एक स्वास्थ्य समस्या है, जिससे कई बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। स्वस्थ जीवनशैली, उचित खानपान और चिकित्सा सलाह अपनाकर मोटापे को रोका जा सकता है।

# प्रगति की माप केवल गति से नहीं बल्कि सही दिशा से

**प्रतिष्ठा मिश्रा**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

आज के इस तेज़ी से बदलते युग में 'गति' को अक्सर 'प्रगति' का पर्याय मान लिया जाता है। चाहे वह तकनीक हो, अर्थव्यवस्था हो, या फिर व्यक्तिगत जीवन, हम तेजी से आगे बढ़ने को ही सफलता और विकास मान बैठते हैं। प्रगति–यह शब्द सुनते ही हमारे मन में विकास, सफलता और उन्नति की छवि उभरती है। लेकिन क्या हर तेजी से बढ़ता कदम प्रगति की दिशा में होता है? क्या केवल गति ही हमारी तरक्की का प्रमाण है? उत्तर है–नहीं। यदि हमारी दिशा ही गलत है, तो गति चाहे जितनी भी तेज हो, वह हमें लक्ष्य से दूर ही ले जाएगी। प्रगति की माप गति से नहीं, बल्कि उस दिशा से होती है जिसमें हम बढ़ रहे हैं। यदि दिशा गलत है, तो तीव्र गति हमें लक्ष्य से दूर भी ले जा सकती है।

गति और दिशा, ये दोनों किसी यात्रा के महत्वपूर्ण घटक हैं। यदि कोई यात्री अत्यंत तेज रफ्तार से चल रहा हो, लेकिन गलती से विपरीत दिशा में चल पड़ा हो, तो उसकी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाती है। ठीक उसी प्रकार, यदि हम केवल तेज़ी से आगे बढ़ने की होड़ में लगे रहें और यह न देखें कि हम किस ओर जा रहे हैं, तो वह प्रगति नहीं, विनाश का मार्ग हो सकता है।

गति और दिशा दोनों ही प्रगति के लिए आवश्यक हैं, परंतु इनका स्वरूप भिन्न होता है। गति केवल यह दर्शाती है कि हम कितनी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, जबकि दिशा यह सुनिश्चित करती है कि हम सही मार्ग पर हैं या नहीं। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई छात्र बिना लक्ष्य तय किए दिन-रात पढ़ाई करता है, तो वह मेहनत तो करता है, परंतु उचित दिशा के अभाव में उसकी मेहनत व्यर्थ जा सकती है। वहीं एक छात्र यदि कम समय में भी एक निश्चित योजना और लक्ष्य के साथ पढ़ाई करता है, तो वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हो सकता है।

उदाहरण के लिए अर्जुन ने युद्ध में न केवल अपने लक्ष्य को स्पष्ट रूप से पहचाना, बल्कि अपने गुरु के निर्देश के अनुसार सही दिशा में प्रयास किया। वहीं कर्ण, जो अत्यंत कुशल और तेज़ था, लेकिन अधर्म की ओर था, अंततः पराजित हुआ। यह दर्शाता है कि केवल शक्ति और गति ही पर्याप्त नहीं बल्कि सही दिशा भी महत्वपूर्ण है।

आज कई देश आर्थिक रूप से तेज़ी से बढ़ रहे हैं, लेकिन यदि उनकी विकास नीतियाँ पर्यावरण, मानवाधिकार, और सामाजिक समानता की उपेक्षा करती हैं, तो यह विकास नहीं, बल्कि विनाश की ओर एक तेज़ दौड़ है। औद्योगीकरण और आर्थिक विकास की दौड़ में इतने आगे बढ़ चुके हैं कि उन्होंने पर्यावरण की ओर से आंखें मूंद ली हैं। जंगलों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, और प्रदूषण जैसी

समस्याएँ इसका प्रमाण हैं। क्या यह वास्तव में प्रगति है? नहीं। क्योंकि यह गति भले ही आर्थिक हो, लेकिन दिशा विनाशकारी है। जब तक विकास सतत और संतुलित नहीं होगा, तब तक वह मानवता के लिए लाभकारी नहीं बन सकता।

तकनीक के क्षेत्र में हम आज चमत्कारी उन्नति देख रहे हैं—कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), रोबोटिक्स, बायोटेक्नोलॉजी आदि में जबरदस्त प्रगति हुई है। पर यदि इन तकनीकों का उपयोग केवल लाभ कमाने या युद्धों में बढ़त के लिए हो, तो यह मानव जाति के लिए खतरा बन सकता है। अतः यह आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानवीय मूल्य, नैतिकता और सह-अस्तित्व की दिशा में भी ध्यान दिया जाए।

वास्तविक प्रगति वह है जो न केवल तेज़ी से हो, बल्कि सही दिशा में भी हो। बिना दिशा की गति हमें गुमराह कर सकती है, जबकि दिशा के साथ की गई धीमी गति भी हमें सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती है। अतः जीवन, समाज और राष्ट्र सभी स्तरों पर हमें यह समझना होगा कि गति केवल एक साधन है, लक्ष्य तक पहुँचने के लिए दिशा ही सबसे महत्वपूर्ण आधार है। आज के युग में जब समय के साथ दौड़ने की होड़ लगी है, तब यह विचार और भी प्रासंगिक हो जाता है कि हमें केवल गति नहीं, दिशा पर भी ध्यान देना होगा। कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र तभी सच्ची प्रगति कर सकता है जब वह सही मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर हो। अतः यदि हमें सतत, संतुलित और सार्थक विकास चाहिए, तो पहले दिशा चुनें, फिर गति बढ़ाएं। तेजी से भागते रहना महत्वपूर्ण नहीं, यह देखना जरूरी है कि हम किस ओर भाग रहे हैं। यही जीवन की सच्ची प्रगति है। अतः यह आवश्यक है कि हम अपनी दिशा का विवेकपूर्वक चयन करें और फिर उसमें निरंतर प्रयास करें।

कछुए और खरगोश की प्रसिद्ध कहानी हमें यही सिखाती है। खरगोश तेज भागा लेकिन दिशा और निरंतरता का ध्यान नहीं रखा, जबकि कछुए ने धीमी गति के बावजूद अपनी दिशा और धैर्य बनाए रखा, और अंततः वह जीत गया। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि प्रगति का आधार केवल रफ्तार नहीं, बल्कि दिशा और संकल्प है।

**"दिशा की स्पष्टता और गति की निरंतरता – यही सच्ची प्रगति का मूल मंत्र है।"**

# हम तुम

**ए पी अनिता**
कार्मिक निदेशालय

हाल ही में, मेरी एक मित्र ने मुझे व्हाट्स एप पर हम-तुम मूवी का पोस्टर भेज कर बताया कि यह फिल्म दुबारा से थिएटरों में रिलीज हो गई है।

मैनें 2004 या 2005 में अपनी इसी मित्र के साथ पहली बार यह फिल्म तब देखी थी जब उस वक्त हमारे वर्किंग वीमेन हॉस्टल की अन्य लड़कियों ने आपस में मिलकर एक साथ फिल्म देखने की योजना बनाई थी। इस फिल्म की कहानी ऐसे युवक-युवती के इर्द-गिर्द घूमती है जो संयुक्त राज्य अमेरिका जाते समय पहली दफा सफर के दौरान आपस में मिलते हैं और उसके बाद अलग-अलग मौकों पर आपस में कई बार उनका आमना-सामना होता है और अंत तक आते-आते उन्हें अहसास हो जाता है कि वे एक-दूसरे को पसंद करने लग हैं।

बेशक इस बार भी यह फिल्म देखने हम फिर से गए और फिल्म देखने का भरपूर आनंद भी लिया क्योंकि थियटर में दर्शकों के बीच ऐसे कई लोग मौजूद थे, जो फिल्म के किरदारों की नकल करते हुए बिल्कुल उनके जैसी एक्टिंग तो कर ही रहे थे बल्कि साथ-साथ वैसे डायलॉग भी बोल रहे थे। सच में बहुत मजा आया।

घर लौटकर इस सबने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि सफर के दौरान अच्छे दोस्त बन जाने का चलन अब धीरे-धीरे खत्म सा ही हो गया है। जब हम छोटे हुआ करते थे तो हमारा हर बार का यह नियम होता था कि हम अपनी गर्मी की पूरी छुट्टियाँ बिताने हैदराबाद से केरल अपनी नानी के घर जाया करते थे। केरल जाने के लिए हम ट्रेन पकड़ते, जो केरल पँहुचने में लगभग 24 घंटे का समय ले लेती थी।

एक बार ऐसे ही एक सफर में, मेरी ही हमउम्र एक लड़की मेरे पास आई और पूछा कि हम लोग कहां जा रहे हैं? मैने बताया कि हम लोग पालक्कड़ में एक छोटे से स्टेशन ओट्टापलम तक जाएंगे। उसने बताया कि वो भी अपनी मां के साथ वहीं जा रही है। मंजिल एक ही थी तो जल्द ही, मेरे माता-पिता और उसकी मां के बीच आपसी बातचीत शुरू हो गई। हम दोनों लड़कियां भी ट्रेन की ऊपरी बर्थ पर चढ़कर अपनी बातों में मगन हो गईं। बातों-बातों में पता चला कि हम दोनों उम्र के साथ-साथ पढ़ाई में भी समान थी। हम दोनों ही छठी कक्षा में पढ़ रह थे। इस समानता ने हमारी आपसी घनिष्ठता को और बढ़ा दिया था। बाद में पता चला कि हम दोनों के घर भी एक-दूसरे के घर से केवल 2 किमी. की दूरी पर ही थे। वह अपने परिवार की इकलौती संतान थी और मुझे बताने के लिए उसके पास ढेर

सारी बातों का खजाना भरा पड़ा था। बातों बातों में 24 घंटों का सफर कब बीत गया, हम दोनों को ही पता न चला।

हमने एक-दूसरे को अपने घर का पता दिया और यह भी सुखद संयोग ही था कि हम लोग केरल से एक ही समय पर एक ही ट्रेन से वापस लौटने वाले थे। आपसी बातचीत के दौरान एक मजेदार बात और पता चली कि पिछले दो सालों से हम लोग एक साथ एक ही समय पर हैदराबाद से यहां तक आ-जा रहे थे और हमें पता भी नहीं था। इस बात ने हमें जितना हैरान किया उतना ही अफसोस भी था कि काश हमें पहले पता चल गया होता तो अब से 2 साल पहले ही हम अच्छे मित्र बन गए होते। वो आज भी मेरी सबसे अच्छी मित्र है और मेरे लिए बिल्कुल मेरी बहन जैसी है। हम दुनिया-जहान की सारी बातें एक-दूसरे के साथ साझा कर लेते हैं। कम शब्दों में यदि कहा जाए तो केवल इतना ही कहूंगी कि एक मित्र, एक बहन, एक फिलॉसफर और एक गाइड - ये सब एक साथ मुझे एक ही इंसान में मिल गए और इसका सार श्रेय भारतीय रेलवे को जाता है।

एक ऐसा ही अन्य नाता, जो अपनत्व और स्नेह की लंबी उड़ान तय करते हुए खरा उतरा, वो धरती-आकाश के बीच ही कहीं मेरी एक हवाई यात्रा के दौरान बना था। मैं अपनी सरकारी ड्यूटी पर दिल्ली से त्रिवेन्द्रम जा रही थी और इसके लिए जो फ्लाईट मैंने ली वह दिल्ली में स्टॉपओवर वाली एक अन्तर्राष्ट्रीय फ्लाइट थी। मुझे गलियारे वाली सीट मिली थी और मेरे साथ वाली दोनों सीटों पर एक बुजुर्ग दम्पति बैठे थे, जो अमेरिका से लौट रहे थे। बुजुर्ग सज्जन गहरी नींद में थे, और महिला काफी थकी-थकी सी नजर आ रही थीं, शायद काफी लंबे समय से फ्लाइट में बैठे रहने के कारण वो इतनी असहज सी थीं। मैंने सरसरी तौर पर उन्हें एक नजर देखा और फिर से मैं अपनी किताब में मगन हो गई, जिसे मैंने एयरपोर्ट से खरीदकर ही पढ़ना शुरु किया था। विमान के टेक ऑफ होने के थोड़ी देर बाद मेरी आंखे बोझिल सा होने लगीं और कुछ पलों के बाद जैसे ही नींद लगने को हुई उन बुजुर्ग महिला ने हल्के से झकझोर कर मुझे जगा दिया। वो काफी घबराहट में थीं और सहमी हुई सी लग रही थीं। उन्होंने हड़बड़ी में बताया कि पिछले 3 घंटों से उनके पति बिना हिले-डुले इसी अवस्था में आंखे बंद किए हुए हैं। अपने बुजुर्ग पति की तबियत को लेकर महिला की चिन्ता उनके चेहरे से साफ नजर आ रही थी। मैनें उन्हें दिलासा देते हुए समझाने का प्रयास किया कि लंबे सफर के कारण अंकल थक गए होंगे, इसलिए शायद गहरी नींद में हैं। मेरे समझाने का बावजूद भी वह अपने पति की हालत को लेकर काफी परेशान दिख रही थीं। मुझसे बातचीत करके उन बुजुर्ग महिला का तो मन हल्का हो गया था, लेकिन उनकी वह चिंता पलटकर मुझ पर हावी हो गई थी क्योंकि अगले घंटे भर तक अंकल उसी हालत में आंखे मूंदे निश्चल बैठे रहे थे और मैं आंटी को ढांढस बंधाते हुए आंटी की घबराहट को कम करने के प्रयास में लगी पड़ी थी। शुक्र हुआ कि कुछ समय के बाद अंकल जरा हिले और धीमे से अपनी पलकें उठाकर आंटी को देखकर मुस्कुराए। आंटी तो खुशी के मारे बिल्कुल रूआंसी ही हो गई थीं। अब त्रिवेंद्रम तक पहुंचने में केवल डेढ़ घंटा ही शेष बचा था। इस दौरान बातों-बातों में आंटी ने मुझे बताया कि उनके दोनों ही बच्चे अमेरिका में स्थाई रूप से बस गए हैं और पिछले साल पैरेलेटिक स्ट्रोक के बाद से अंकल व्हीलचेयर तक ही सीमित होकर रह गए थे। ऐसे में, उनकी देखभाल की सारी जिम्मेदारी एकमात्र उन्हीं के भरोसे थी, लिहाजा अंकल की सेहत को लेकर उनका इतना चिंतित होना लाजमी भी था।

हम लोग त्रिवेन्द्रम पहुंच गए थे। मैं एयरपोर्ट पर कैब आने तक उनके साथ-साथ ही रही ताकि उन्हें किसी भी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े। हमारी इस छोटी सी मुलाकात के दौरान मैं आंटी-अंकल को जितना भी सहयोग दे सकी, उससे हमारे बीच एक ऐसा अपनत्व भरा रिश्ता कायम हो गया कि घर पहुंच जाने के बाद उनके द्वारा फोन पर आभार व्यक्त करने के बहाने से जुड़े हमारे बीच के आपसी तार आज भी कायम हैं। आज भी जब कभी आंटी मुझे फोन करती हैं तो यही कहती हैं कि उस पूरे सफर के दौरान उन्हें लगातार ऐसा ही महसूस होता रहा था मानो उनका अपना ही कोई बच्चा उनके साथ है। उनकी सरलता ने मेरे दिल को छू लिया था। आज भी यदा-कदा मेरी उनसे फोन पर बात होती रहती है। दो वर्ष पहले अंकल के चले जाने के बाद से वो अकेली रहती हैं।

इन दिनों वो अपने बच्चों से मिलने यू एस गई हुई हैं और वहां से अपनी बढ़िया-बढ़िया तस्वीरें मुझे भेजती रहती हैं।

दरअसल यही तो वो लोग हैं जो सफर का आनन्द लेने की वजह बनते हैं। मैं यात्राओं के दौरान परस्पर परिचय बढ़ाने के प्रयास हमेशा जारी रखती हूं और इन्हीं कोशिशों ने मुझे ऐसे मित्र दिए हैं कि जिनके साथ अपनत्व का बंधन ताउम्र के लिए बंध जाए।

यही तो हैं हमारे असली हम-तुम।

शक्ति अगर सीमित है
तो हर चीज़ अशक्त भी है
भुजाएं अगर छोटी हैं
तो सागर भी सिमटा हुआ है
सामर्थ्य केवल इच्छा का दूसरा नाम है

**– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना**

# जीवन में खेलों का महत्व

**सुनील कुमार**
कार्यालय, निदेशक (वित्त/आर एंड डी)

## प्रस्तावना

हमारे जीवन में खेलों का काफी महत्व है। हर कोई इस बात से अवगत है कि खेल दैनिक जीवन के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। खेल जन्म से ही बच्चे के जीवन का एक हिस्सा है। माताएं और परिवार के कई अन्य सदस्य अपने बच्चों को लाड़-प्यार देते हैं और उनका मनोरंजन करते हैं। जब तक बच्चा बैठना नहीं सीख जाता तब तक वह हाथ-पैर हिलाकर खेलता है। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती है, वह अपने खेल खेलने के तरीके को समायोजित करता है। इसलिए, हम यह दावा कर सकते हैं कि खेल उसी क्षण शुरू हो जाते हैं जब हम पैदा होते हैं।

## खेलों की आवश्यकता

**खेल हर छात्र के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे शारीरिक और मानसिक लाभ प्रदान करते हैं जो छात्रों को स्कूल और उसके बाद भी सफल होने में मदद कर सकते हैं। खेलों में भाग लेने से छात्रों को शारीरिक रूप से सक्रिय रहने, स्वस्थ रहने और टीम वर्क और नेतृत्व कौशल विकसित करने में मदद मिल सकती है।** छात्रों के स्वास्थ्य के लिए शारीरिक गतिविधि महत्वपूर्ण है। खेलों में भाग लेने से छात्रों को सक्रिय और फिट रहने में मदद मिलती है, जिससे मोटापे और अन्य पुरानी स्वास्थ्य स्थितियों का खतरा कम हो सकता है। नियमित शारीरिक गतिविधि से छात्रों को समन्वय, शक्ति और लचीलापन विकसित करने में भी मदद मिलती है। शारीरिक लाभों के अलावा खेल छात्रों को महत्वपूर्ण मानसिक कौशल विकसित करने में मदद कर सकते हैं। टीम खेल छात्रों को एक समान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक इकाई के रूप में मिलकर काम करना सिखाते हैं। इससे अधिक सहयोग और संचार कौशल विकसित हो सकते हैं जिन्हें जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है।

खेल छात्रों को कड़ी मेहनत, समर्पण और दृढ़ता का महत्व भी सिखाते हैं। खेल छात्रों को नेतृत्व कौशल विकसित करने में भी मदद कर सकते हैं। जो छात्र अपनी टीम में नेतृत्व की भूमिका निभाते हैं, उन्हें सीखना चाहिए कि अपने साथियों को कैसे प्रेरित करें, निर्णय लें और संघर्ष को कैसे संभालें। इन कौशलों को कक्षा में और उसके बाहर भी ले जाया जा सकता है।

अंत में, खेलों में भाग लेने से छात्रों को अपने साथियों और कोचों के साथ संबंध बनाने में मदद मिल सकती है। ये रिश्ते छात्रों को आत्मविश्वास विकसित करने और आत्म-सम्मान बनाने में मदद कर सकते हैं। इससे कक्षा में बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन हो सकता है। संक्षेप में, खेलों में भाग लेना

विद्यार्थी के जीवन का अभिन्न अंग है। यह शारीरिक और मानसिक लाभ प्रदान कर सकता है जो छात्रों को स्कूल और जीवन में सफल होने में मदद कर सकता है।

## खेलों के फायदे

अपने जीवन में प्रतिदिन खेलों को शामिल करने के निम्नलिखित फायदे हो सकते हैं;

शारीरिक स्वास्थ्य: आउटडोर खेल बच्चों के लिए बहुत अच्छे हैं और आपकी फिटनेस में मदद कर सकते हैं। नियमित व्यायाम आपको दिल, हड्डियों और फेफड़ों की कार्यप्रणाली को मजबूत बनाने में मदद कर सकता है। यह पुरानी बीमारियों को रोकने में भी मदद करता है। खेल मधुमेह प्रबंधन, वजन घटाने, रक्त परिसंचरण और तनाव कम करने में मदद कर सकता है। मस्तिष्क और शारीरिक विकास का संयोजन खेल के माध्यम से हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत और टोन करने की अनुमति देता है।

खेलों के माध्यम से छात्र सीखते हैं कि स्वस्थ जीवन शैली जीना कितना महत्वपूर्ण है। खेल मोटापे को रोकने और स्वस्थ खान-पान की आदतों को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं। खेल युवाओं को अधिक सब्जियां और फल खाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनके साथियों की तुलना में उनके मोटे होने की संभावना कम होती है और उनके बड़े होकर सक्रिय वयस्क बनने की संभावना अधिक होती है। शारीरिक गतिविधि और खेल के माध्यम से संक्रामक और गैर-संचारी दोनों प्रकार की बीमारियों की रोकथाम संभव है। इसलिए विकसित और विकासशील दोनों देशों में सामान्य आबादी के स्वास्थ्य में सुधार के लिए खेल लागत प्रभावी रणनीतियाँ हैं।

तनाव से राहत: तनाव कम करने के लिए खेल में भागीदारी महत्वपूर्ण है। अज्ञात कारणों से तनाव के कारण लोग अपना मानसिक संतुलन खो सकते हैं। इसलिए अगर हम आउटडोर गेम को अपनी दिनचर्या में शामिल कर लें तो कोई तनाव नहीं है।

मानसिक स्वास्थ्य: स्वस्थ संतुलन बनाए रखना हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। विचार करने की क्षमता भी बढ़ती है। नकारात्मक विचार तुरंत गायब हो जाते हैं सुखद सोच आने लगती है और आईक्यू भी काफी बढ़ जाता है।

सहनशक्ति: खेल से शारीरिक फिटनेस बढ़ती है। हमारी शारीरिक क्षमताएं बेहतर होती हैं. सामान्य व्यक्तियों की तुलना में सहनशक्ति बढ़ती है। फेफड़ों में सांस लेना काफी आसान हो जाता है। लंबी दूरी के धावकों में अच्छी सहनशक्ति और शारीरिक शक्ति होती है।

टीम वर्क की सीख: खेल में भागीदारी दैनिक जीवन में कई बदलाव लाती है। सोचने की क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है। हम समूहों में सहयोग करने में माहिर हैं। खेल में प्रतिद्वंद्वी टीम को हराने के लिए पूरा समूह मिलकर काम करता है। यह दर्शाता है कि किसी पेशे में काम करते समय या व्यवसाय चलाते समय दूसरों के साथ कैसे सहयोग किया जाए। हमारे काम का स्वतः ही विस्तार हो जाता है।

आत्मरक्षा: अपनी सुरक्षा के लिए हम विभिन्न प्रकार के खेलों का अभ्यास कर सकते हैं, जिनमें जूडो, कराटे, अन्य मार्शल आर्ट आदि शामिल हैं।

## उपसंहार

हर किसी को खेल के महत्व के बारे में पता होना चाहिए और छात्रों और बच्चों को इसके बारे में शिक्षित करना चाहिए। हमारे युवाओं में आत्मविश्वास, टीम वर्क की भावना, अपने देश पर गर्व और अनुशासन की गहरी भावना पैदा करने के लिए आइए एक राष्ट्र के रूप में इस अवसर पर आगे आएं और खेलों को अधिक गंभीरता से लें। खेल हमारे देश की भलाई के लिए आवश्यक हैं क्योंकि "स्वास्थ्य ही धन है।" केवल मजबूत, संतुष्ट और बहादुर लोग ही देश को उस रास्ते पर ले जा सकते हैं जैसा कि इरादा है। कल के नागरिक और नेता आज के छात्र हैं। उन्हें सख्त, मेहनती, अनुशासित और प्रतिबद्ध बनने के लिए खेलों में सही निर्देश और अभ्यास प्राप्त करने दें। उन्हें स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग दें। हम केवल प्रगति और एक मजबूत राष्ट्र के रूप में विकसित होने की उम्मीद कर सकते हैं।

जीवन वास्तविकता नदिया के छोर
सुख एक कोने पे दुख दूसरी ओर
है स्वभाविक इनसे दो-चार होना
भागता है डर के डरपोक या चोर
लड़ो डटकर पाओगे कुछ ना कुछ
हो अवतरित रैन के बाद सुनहरी भोर।

**– राज सरगम**

# क्षमा चाहता हूँ, ये गलती से हो गया

**प्रवेश कुमार**
कार्मिक निदेशालय

1. सरकारी कर्मचारियों का कार्य और आचरण उनके लिए प्रयोज्य आचरण नियमों के अनुसार होना चाहिए, ऐसा न होने पर उन्हें अनुशासनिक कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है। कई बार ऐसे मामले देखने में आते हैं जहाँ सरकारी कर्मचारियों ने किसी किस्म का कदाचार करके स्वयं को ऐसी स्थिति में डाल दिया है जिससे बचा जा सकता था। बहरहाल, जब ऐसी कोई घटना संगठन के नोटिस में आती है तो औपचारिक रूप से अनुशासनात्मक कार्यवाही आरंभ कर दी जाती है और आगे चलकर अधिकांश मामलों में सजा हो जाती है।

2. अनुशासनिक और सतर्कता संबंधी मामलों से निबटते हुए हमारा साक्षात्कार कतिपय ऐसी परिस्थितियों से होता है जिनका सामना कोई नहीं करना चाहेगा। इन परिस्थितियों में से कुछ का जिक्र नीचे सभी सरकारी कर्मचारियों के मार्गदर्शन के लिए किया जा रहा है:-

(क)**कार्यालय में शराब पीना:** श्रीमान 'क, ख, ग' को उनके उच्चतर अधिकारी से सीएसडी की मार्फत रम की दो बोतलें मिली थीं जिससे वे अपने घर में होली का त्योहार मना सकें। तथापि, अनुभाग के दूसरे स्टाफ सदस्यों के जिद करने पर उन्होंने कार्यालय में शाम के समय स्टाफ के साथ मिलकर रम की एक बोतल पी ली। कार्यालय से घर के लिए रवाना होते समय अगल-बगल के अनुभागों में कार्यरत स्टाफ सदस्यों ने एक दूसरे के चेहरे पर गुलाल मला। उन्होंने पाया कि श्रीमान 'क ख ग' काम के समय नशे में धुत्त थे और श्रीमान 'क ख ग' की एक महिला सहकर्मी ने इस बावत शिकायत दर्ज करा दी। परिणामस्वरूप उनके विरूद्ध केंद्रीय सिविल सेवाएं (आचरण) नियमावली, 1964 के नियम 22 के उल्लंघन के लिए अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई। अंततः उन पर एक लघु शास्ति (minor penalty) लगाई गई यद्यपि श्रीमान 'क ख ग' ऐसी द्वारा स्थिति से बचा जा सकता था।

(ख) **अपने सपनों का घर खरीदना:** श्रीमती 'च छ ज' ने अपना सपनों का घर खरीदा और अपने मित्र तथा संबंधियों को गृहप्रवेश पर बुलाया। अपनी खुशी और नए घर में शिफ्ट करने की आपाधापी में उन्होंने निर्धारित प्राधिकारी को उक्त संपत्ति के लेनदेन की सूचना नहीं दी जबकि ऐसा करना केन्द्रीय सिविल सेवाएं (आचरण) नियमावली, 1964 के नियम 18 के अधीन आवश्यक है। वे भाग्यशाली थीं कि उनकी इस भूल के लिए उन्हें केवल इस आशय की चेतावनी के साथ छोड़ दिया गया कि वे भविष्य में अधिक सावधानी बरतेंगी। यह सही है कि कार्यालय में और घर पर भी प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक व्यस्त रहता है परन्तु हमें अपनी ओर से नियमों के संपूर्ण रूप से पालन करने के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए।

(ग) **महिला कर्मचारियों के साथ व्यवहार:** एक राजपत्रित अधिकारी ने कार्यालय के एक ऐसे व्हाट्सऐप ग्रुप में कुछ मजाकिया चुटकुले भेजे जिसकी सदस्य महिला कर्मचारी थी। शिकायत प्राप्त होने पर आंतरिक शिकायत समिति ने केंद्रीय सिविल सेवाएं (आचरण) नियमावली, 1964 के नियम 3ग की अवहेलना के लिए अनुशासनात्मक कार्यवाही आरंभ करने की सिफारिश की। अंतत: उस राजपत्रित अधिकारी की गैर-इरादतन गलती के तर्क को स्वीकार नहीं किया गया और उसे सरकारी सेवा से हटा दिया गया। प्रत्येक महिला कर्मचारी (चाहे वह किसी भी रैंक की हो) को गरिमा के साथ काम करने का अधिकार है। हर बार, हम गलती के लिए माफी मांगकर सजा से बच नहीं सकते हैं।

(घ) **14 वर्ष से कम आयु का घरेलू नौकर रखना:** गोल मार्केट सरकारी कालोनी के अन्य निवासियों की ही तरह श्रीमान 'य र ल' ने भी अपनी कालोनी के चौकीदार को प्रतिदिन अपनी कार की धुलाई के काम पर रखा था। कुछ दिनों पश्चात् चौकीदर ने अपने अल्पवयस्क बेटों को उसकी ओर से दैनिक आधार पर कार धोने के काम पर लगा दिया। यद्‌यपि हर कोई उन लडकों को वह कार्य करते हुए देखता था, तथापि किसी ने भी उस पर आपत्ति नहीं की। बाद में उनके विभाग में सीसीटीवी कैमरे से रिकॉर्ड की हुई एक शिकायत प्राप्त हुई जिसमें उन अवयस्क बच्चों द्‌वारा श्रीमान 'य र ल' की कार धोते हुए देखा जा सकता था और कार का रजिस्ट्रेशन नंबर भी दिखाई दे रहा था। चूंकि यह एक अनाम शिकायत थी, अत: उस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई परन्तु उसके आधार पर श्रीमान 'य र ल' मुसीबत में फंस सकते थे। 14 वर्ष की आयु से छोटे बच्चों को घरेलू नौकर के तौर पर काम पर रखना केंद्रीय सिविल सेवाएं (आचरण) नियमावली के नियम 22-ए का उल्लंघन है।

3. ऐसी ही अनेक परिस्थितियां हो सकती हैं जिसमें यदि समय से सावधानी बरती जाए, तो उन्हें हैंडल किया जा सकता है। हमें कोई भी कार्य करने से पहले उसके परिणामों पर पहले से सम्यक विचार करने की आदत डाल लेनी चाहिए। यह सही है कि सजा देने अथवा अन्यथा कार्रवाई करने के निर्णय पर पहुंचने से पूर्व सबंधित प्राधिकारी मामले के सभी तथ्यों पर गौर करते हैं तथापि रोग के निदान से बेहतर है रोग को पैदा ही न होने दिया जाए।

कौन बताता है
समंदर का रास्ता
नदी को
जिसे मंजिल का
जुनून है
वो मशवरा नहीं लेते

**– गौरव उपाध्याय**

# किसी संस्था का चरित्र चित्रण, उसके नेतृत्व में प्रतिबिम्बित

**शिवजीत**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

## प्रस्तावना

नेतृत्व को अक्सर किसी भी संस्था की सफलता की आधारशिला के रूप में देखा जाता है, चाहे वह निगम हो, गैर-लाभकारी संगठन हो, शैक्षणिक संस्था हो या सरकार हो। एक नेता का चरित्र, जिसमें उनके मूल्य, नैतिकता, निर्णय लेने की शैली तथा पारस्परिक कौशल शामिल हैं, संगठन की संस्कृति, प्रदर्शन और सार्वजनिक प्रतिष्ठा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। किसी संस्था की प्रतिष्ठा एवं धारणा अक्सर उसके नेता के कार्यों और चरित्र से बढ़ती या खराब होती है। संस्था को किसी भी ऐसे संगठन के रूप में देखा जा सकता है जो साझा उद्देश्य को प्राप्त करने की ओर उन्मुख हो और जिसका नेता उसके अंदर सर्वोच्च अधिकार रखता हो। चरित्र से तात्पर्य उन गुणों या दोषों से है जो किसी व्यक्ति को परिभाषित करते हैं।

किसी भी संस्था की पहचान उसके कार्यों, सिद्धांतों और मूल्यों से होती है। परंतु यह सारे गुण संस्था के किसी निर्जीव रूप में नहीं होते, बल्कि इनका प्रतिबिंब उस व्यक्ति या समूह में होता है, जो उस संस्था का नेतृत्व करता है। वास्तव में, संस्था का चरित्र उस व्यक्ति के विचारों, दृष्टिकोण, व्यवहार और निर्णयों से गहराई से जुड़ा होता है जो उसका नेतृत्व करता है। अतः यह कहना उचित होगा कि किसी संस्था का चरित्र चित्रण उसके नेतृत्व में प्रतिबिम्बित होता है।

## नेतृत्व का अर्थ और महत्व

नेतृत्व केवल आदेश देना या निर्णय लेना नहीं है, बल्कि वह एक ऐसा दायित्व है जो संस्था को दिशा देता है, उसे प्रेरित करता है और उसके समस्त कार्यों में नैतिकता व उद्देश्य का संचार करता है। नेता के विचार, निर्णय, नैतिक मूल्य, व्यवहार और संवाद शैली संस्था की कार्य संस्कृति को निर्धारित करते हैं। यदि नेता सशक्त, पारदर्शी और नैतिक है तो संस्था भी ईमानदार, संगठित और प्रभावशाली होगी। यदि नेता भ्रष्ट, आत्मकेंद्रित या असंवेदनशील हो तो संस्था भी उसी प्रकार का व्यवहार दिखाएगी।

## ऐतिहासिक उदाहरण

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वाले महात्मा गांधी का उदाहरण लें। उन्होंने सत्य, अहिंसा और नैतिकता को अपने जीवन और संघर्ष का मूल बनाया। उनके इस चरित्र ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं को भी इन्हीं मूल्यों पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनका नेतृत्व संस्था के चरित्र में इस कदर समाहित हो गया कि यह केवल एक राजनीतिक संगठन न रहकर, एक नैतिक आंदोलन का

स्वरूप बन गया। इसी प्रकार, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आज़ाद हिन्द फौज का नेतृत्व किया। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, साहस और अनुशासनप्रियता ने उनकी संस्था को एक योद्धा संगठन के रूप में गढ़ा। जहाँ गांधी जी के नेतृत्व में सत्य और संयम की छाया थी, वहीं बोस के नेतृत्व में जोश, समर्पण और बलिदान की भावना प्रबल थी। दोनों संस्थाओं के चरित्र उनके नेतृत्व के प्रतिबिंब थे।

### आधुनिक उदाहरण

कॉर्पोरेट जगत में टाटा समूह का उदाहरण लिया जा सकता है। रतन टाटा का नेतृत्व सादगी, सामाजिक उत्तरदायित्व और दीर्घकालिक दृष्टिकोण से भरपूर रहा। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने न केवल व्यापारिक सफलता अर्जित की, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी भूमिका भी निभाई। इस संस्था की छवि आज एक विश्वसनीय, नैतिक और संवेदनशील संगठन की बनी हुई है, जो कि रतन टाटा के व्यक्तित्व का ही प्रतिबिंब है। इसके विपरीत, कुछ कंपनियाँ जैसे एनरॉन (Enron) या सत्यम कंप्यूटर का उदाहरण लें, जहाँ नेताओं की भ्रष्ट और अनैतिक सोच के कारण संस्था का पतन हुआ और लाखों लोगों का विश्वास टूटा। इससे यह सिद्ध होता है कि संस्था का पतन या विकास, दोनों ही उसके नेतृत्व पर निर्भर करते हैं।

### शैक्षिक संस्थाओं में नेतृत्व की भूमिका

शैक्षिक संस्थानों में भी यह सिद्धांत पूरी तरह लागू होता है। किसी स्कूल या विश्वविद्यालय का कुलपति, प्राचार्य या संस्थापक यदि शैक्षिक मूल्यों, अनुशासन और नवाचार में विश्वास रखता है, तो उसकी संस्था भी उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होती है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक और शिक्षक जहाँ भी रहे, वहाँ उन्होंने प्रेरणादायक वातावरण बनाया। उनका सादा जीवन, उच्च सोच और छात्रों के प्रति स्नेह, उनके द्वारा संचालित संस्थाओं में स्पष्ट दिखाई देता था। इसके विपरीत, किसी नेता के **लालच, भ्रष्टाचार या दमनकारी प्रवृत्ति** जैसे दोष, संस्था की प्रतिष्ठा और अखंडता को नुकसान पहुँचा सकते हैं तथा उसे बदनामी की ओर ले जा सकते हैं। उदाहरण के लिये, **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी,** जो एक व्यापारिक उद्यम के रूप में शुरू हुई थी, धीरे-धीरे **रॉबर्ट क्लाइव और वॉरेन हेस्टिंग्स** जैसे व्यक्तियों के नेतृत्व में एक दमनकारी औपनिवेशिक शासन में बदल गई। **औरंगज़ेब** जैसे मुगल शासकों के नेतृत्व में, जिनकी गैर-मुस्लिमों के प्रति असहिष्णु और भेदभावपूर्ण नीतियों के साथ-साथ अत्यधिक कराधान ने जनता के एक बड़े हिस्से को अलग-थलग कर दिया, मुगल साम्राज्य के चरित्र को नुकसान पहुँचाया और अंततः इसके पतन की नींव रखी।

परिणामस्वरूप, **एडोल्फ हिटलर** जैसे नेताओं के अनैतिक या विनाशकारी आदर्शों ने, उनकी शानदार वक्तृत्व कला और उग्र राष्ट्रवादी विचारों के कारण, मूल रूप से एक समृद्ध जर्मनी की छवि पेश की लेकिन जल्द ही वे **सैन्य रणनीतियों के प्रति जुनूनी हो गए,** जिससे **द्वितीय विश्व युद्ध** की संभावना बढ़ गई। इसलिये जब नेता किसी संस्था के चरित्र को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, संगठन के भीतर सभी स्तरों पर व्यक्तियों के योगदान को पहचानना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। **CEO से लेकर उपभोक्ताओं तक** विभिन्न स्तरों पर प्रतिनिधियों का प्रभावी सहयोग और प्रयास किसी संगठन की सफलता के लिये आवश्यक हैं। नेतृत्व विजन को प्रेरित और परिभाषित करता है जबकि प्रबंधन उस विजन को प्राप्त करने के लिये टीम को प्रेरित एवं निर्देशित करता है। प्रभावी नेताओं को चरित्र का प्रदर्शन करना चाहिये, विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण समय के दौरान संस्थान को प्रतिकूल परिस्थितियों से निकालने के लिये, दूसरों को एक साझा लक्ष्य की ओर प्रेरित और नेतृत्व करने के लिये।

# आज के परिप्रेक्ष्य में पुरुषों की बिगड़ती स्थिति: छद्म नारीवाद और समानता की प्रतिस्पर्धा

**कपिल अग्रवाल**
प्रबंध सेवा निदेशालय

नारीवाद एक सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन है जो 18वीं सदी के अंत में शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य महिलाओं के लिए पुरुषों के समान अधिकार और अवसर स्थापित करना है। यह एक विचारधारा है जो मानती है कि समाज में महिलाओं के साथ भेदभाव होता है और उन्हें पुरुषों के समान अधिकार मिलने चाहिए। महिलाओं के अधिकारों के लिए चलाए जा रहे आंदोलनों ने निश्चित रूप से समाज में सकारात्मक बदलाव लाए हैं। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे क्षेत्रों में अधिक अवसर मिल रहे हैं।

आज के समय में, जब हम समानता और न्याय की बात करते हैं, तो अक्सर महिलाओं के अधिकारों और उनकी चुनौतियों पर ही ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह सच है कि महिलाओं ने सदियों से भेदभाव और असमानता का सामना किया है, और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष अभी भी जारी है। लेकिन, इस संघर्ष के बीच, एक और पहलू भी है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है: पुरुषों की बिगड़ती स्थिति। आधुनिक समाज में, महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और अधिकारों की बात तो खूब होती है, लेकिन पुरुषों की बदलती भूमिकाओं पर चर्चा अक्सर दब जाती है। क्या वाकई पुरुष आज महिलाओं के बराबर हैं? या फिर, "छद्म नारीवाद" और "समानता की प्रतिस्पर्धा" के चलते उन्हें नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?

पारंपरिक रूप से, पुरुषों को मजबूत, आत्मनिर्भर और भावनात्मक रूप से स्थिर होने की अपेक्षा की जाती है। उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने या कमजोर होने की अनुमति नहीं होती है। यह

अपेक्षा पुरुषों पर एक बहुत बड़ा दबाव डालती है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। पुरुषों में आत्महत्या की दर महिलाओं की तुलना में अधिक होती है, जो इस बात का संकेत है कि वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में कितना संघर्ष करते हैं। पुरुषों को यह सिखाया जाता है कि उन्हें अपनी भावनाओं को दबाना चाहिए और कभी रोना नहीं चाहिए। यह भावनात्मक दमन उन्हें अकेला और असहाय महसूस कराता है। वे अपनी समस्याओं को साझा करने में संकोच करते हैं, क्योंकि उन्हें डर होता है कि उन्हें कमजोर कहा जाएगा। यह चुप्पी उनके मानसिक स्वास्थ्य को और भी खराब कर देती है।

पुरुषों पर सफलता का दबाव एक ऐसी वास्तविकता है जिससे वे सदियों से जूझ रहे हैं। यह दबाव समाज, परिवार और स्वयं से आता है। पुरुषों को अक्सर मजबूत, आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सफल होने की अपेक्षा की जाती है। विफलता को कमजोरी के रूप में देखा जाता है, और समाज में ऐसे पुरुषों को स्वीकारने में कठिनाई होती है। शादी के लिए लड़का ढूंढते समय दुल्हन पक्ष के परिवार को उम्मीद होती है कि दूल्हा लड़की से ज्यादा कमाए। उसकी संपत्ति, बैंक बैलेंस और अन्य संपत्तियां लड़की से शादी करने के लिए उसके योग्य होने का एक पैमाना होती हैं। अगर लड़की गृहिणी है तो वह अपने पति से उम्मीद करती है कि वह परिवार का सारा वित्तीय बोझ, बच्चों की शिक्षा और दिन-प्रतिदिन के खर्च उठाए। अगर लड़की कमाती भी है तो वह चाहती है कि उसका पति बाहर खाने-पीने के दौरान बिल का भुगतान करे। हालांकि, ऐसा जोड़ा मिलना दुर्लभ है जिसमें लड़की कमाती हो और पुरुष गृहिणी हो। एक पुरुष के लिए आर्थिक रूप से सक्षम होना इसलिए भी अनिवार्य है क्योंकि भारतीय संस्कृति में बेटों से अपने माता-पिता की देखभाल करने और अपनी बहनों की शादी का खर्च उठाने की अपेक्षा की जाती है। यह एक सदियों पुरानी परंपरा है जिसे कई लोग आज भी मानते हैं। माता-पिता की उम्र बढ़ने के साथ, उनकी देखभाल की आवश्यकता बढ़ जाती है। उन्हें नियमित चिकित्सा जांच, दवाइयों और दैनिक जीवन में सहायता की आवश्यकता होती है। एक पुरुष के लिए अपने माता-पिता को कमजोर और असहाय देखना भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। वह अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्यबद्ध महसूस करता है, लेकिन साथ ही, उसे अपने काम और अन्य जिम्मेदारियों के लिए समय निकालना भी मुश्किल हो जाता है। भारतीय समाज में, बहन की शादी को एक बड़ी जिम्मेदारी माना जाता है। इसमें न केवल आर्थिक खर्च शामिल होता है, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा का भी सवाल होता है। एक भाई के लिए अपनी बहन को एक अच्छे घर में विदा करना एक महत्वपूर्ण कर्तव्य माना जाता है। शादी के खर्चों का बोझ, दहेज की प्रथा और समाज की अपेक्षाएं, एक पुरुष के लिए अत्यधिक तनाव का कारण बन सकती हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए समान अवसर की बात तो होती है, लेकिन पुरुषों को भी कई बार अपनी योग्यता साबित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ते हैं। पितृत्व अवकाश और पारिवारिक जिम्मेदारियों के मामले में पुरुषों को अक्सर सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है।

कानूनी मामलों में भी पुरुषों को कई बार भेदभाव का सामना करना पड़ता है। घरेलू हिंसा के मामलों में, पुरुषों को अक्सर दोषी मान लिया जाता है भले ही उनके खिलाफ कोई सबूत न हो। पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे, घरेलू हिंसा के शिकार पुरुष, और बच्चों की कस्टडी के मामले में पुरुषों के

साथ होने वाले भेदभाव जैसे मुद्दों पर खुलकर बात नहीं हो पाती। कई मामलों में यह भी देखा जाता है कि उसे अक्सर अपमानित किया जाता है और अपने माता-पिता से अलग रहने के लिए दबाव डाला जाता है। अगर किसी कारण से तलाक हो जाता है तो लड़की गुजारा भत्ते के रूप में एक बड़ी राशि और उसकी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा मांगती है। हाल ही में लड़की और उसके परिवार की यातना के कारण पुरुष द्वारा आत्महत्या के कई मामले सामने आए हैं। 2022 में पुरुषों में आत्महत्या की दर महिलाओं की तुलना में लगभग चार गुना अधिक थी। पुरुषों की आबादी 50% है, लेकिन आत्महत्याओं में लगभग 80% पुरुष हैं।

कोई भी पुरुषों की बिगड़ती सामाजिक और मानसिक स्थिति, कानूनी असमानता और पुरुषों के खिलाफ बढ़ते अपराधों के लिए आवाज नहीं उठा सकता है अन्यथा उसे महिला विरोधी कहा जाएगा उसके विचारों को रूढ़िवादी और पुरुष प्रधान समाज से प्रेरित माना जाएगा।

हमें पुरुषों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और मदद मांगने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। हमें उन्हें यह बताना होगा कि भावनात्मक रूप से कमजोर होना कोई कमजोरी नहीं है, बल्कि यह साहस है। हमें पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ानी होगी और उन्हें मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच प्रदान करनी होगी। हमें कार्यस्थल और पारिवारिक जीवन में पुरुषों के खिलाफ भेदभाव को समाप्त करना होगा। हमें पितृत्व अधिकारों को बढ़ावा देना होगा और पुरुषों को बच्चों के पालन-पोषण में अधिक शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। हमें पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती देनी होगी और पुरुषों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और कमजोर होने की अनुमति देनी होगी। हमें छद्म नारीवाद के नाम पर पुरुषों के खिलाफ नकारात्मक धारणाओं को समाप्त करना होगा। हमें यह समझना होगा कि सभी पुरुष एक जैसे नहीं होते हैं और हमें पुरुषों को एक समूह के रूप में स्टीरियोटाइप नहीं करना चाहिए। पुरुषों के लिए समान कानून बनाने की आवश्यकता इसलिए है ताकि उन्हें भेदभाव का सामना न करना पड़े। वर्तमान में, कई कानून महिलाओं के पक्ष में बनाए गए हैं, जो पुरुषों के साथ भेदभाव करते हैं। इन कानूनों के कारण, पुरुषों को अक्सर न्याय नहीं मिलता है। कानूनों को लिंग-तटस्थ बनाने की आवश्यकता है, जहां प्रत्येक व्यक्ति को उनकी व्यक्तिगत परिस्थितियों के आधार न्याय प्रदान किया जाये, न कि उनके लिंग के आधार पर। समान कानूनों के माध्यम से ही पुरुषों को न्याय और समानता का अधिकार मिल सकता है।

अंत में, एक स्वस्थ समाज के लिए, पुरुषों और महिलाओं दोनों को एक-दूसरे का सम्मान करना होगा और एक-दूसरे की समस्याओं को समझना होगा। हमें एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जहां सभी को अपनी बात कहने का अधिकार हो। पुरुषों और महिलाओं के बीच वास्तविक समानता तभी संभव है जब हम दोनों की चुनौतियों को समझें और उनका समाधान करें। यह एक साझा जिम्मेदारी है जिसमें संवाद, सहानुभूति और आपसी सम्मान की आवश्यकता है।

# पारिवारिक पेंशन/(Family Pension)

**राजेन्द्र अटल**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

## परिचय

केन्द्रीय सचिवालय सेवा (पेंशन) नियम के नियम 54 के अंतर्गत पारिवारिक पेंशन एक कल्याणकारी योजना की प्रकृति की है, जो मृतक कर्मचारी या पेंशनभोगी की विधवा पत्नी और बच्चों को राहत प्रदान करने के लिए तैयार की गई है।

कर्मचारी का पारिवारिक पेंशन पर कोई नियंत्रण नहीं होता क्योंकि उसे इसमें कोई योगदान देने की आवश्यकता नहीं होती। यह मृतक कर्मचारी/पेंशनभोगी की संपत्ति नहीं है, इसलिए पारिवारिक पेंशन के लिए पात्रता उत्तराधिकार प्रमाण पत्र द्वारा तय नहीं की जा सकती।

नियम किसी नामांकन का प्रावधान नहीं करते, बल्कि उन व्यक्तियों को नामित करते हैं जो पारिवारिक पेंशन पाने के हकदार हैं। इस प्रकार, नियमों के तहत नामित व्यक्तियों के अलावा कोई अन्य व्यक्ति पारिवारिक पेंशन पाने का हकदार नहीं है।

## परिवार

- जैसे ही कोई व्यक्ति सरकारी सेवा में प्रवेश करता है, उसे कार्यालय प्रमुख को अपने परिवार का विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।
- यदि सरकारी कर्मचारी का कोई परिवार नहीं है, तो उसे परिवार बनते ही ब्यौरा प्रस्तुत करना होगा।
- कोई भी सरकारी कर्मचारी, जिसका पति या पत्नी जीवित हों, किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करेगा, या विवाह की संविदा नहीं करेगा, परन्तु केन्द्रीय सरकार किसी सरकारी कर्मचारी को ऐसा विवाह करने या विवाह की संविदा करने की अनुमति दे सकेगी।
- पारिवारिक पेंशन प्रदान करने के प्रयोजन के लिए परिवार को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जाएगा-
    - जीवनसाथी
    - बच्चे
    - अभिभावक
    - विकलांग भाई-बहन

### जीवनसाथी की पात्रता

- पारिवारिक पेंशन विधवा या विधुर को मृत्यु या पुनर्विवाह की तिथि तक, जो भी पहले हो, देय है।
- किसी निःसंतान विधवा को पुनर्विवाह पर पारिवारिक पेंशन देय रहेगी, यदि अन्य सभी स्रोतों से उसकी आय न्यूनतम पारिवारिक पेंशन और महंगाई राहत की राशि से कम है।

### बच्चों की पात्रता

- बच्चों को पारिवारिक पेंशन उनके जन्म के क्रम में देय होगी तथा उनमें से छोटा बच्चा पारिवारिक पेंशन के लिए पात्र नहीं होगा, जब तक कि उससे ऊपर का बड़ा बच्चा पारिवारिक पेंशन के लिए अपात्र न हो जाए।
- जहां पारिवारिक पेंशन जुड़वा बच्चों को देय है, वहां इसका भुगतान ऐसे बच्चों को समान हिस्से में किया जाएगा।
- अविवाहित पुत्र के मामले में पारिवारिक पेंशन तब तक देय होगी जब तक वह पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त नहीं कर लेता या उसका विवाह नहीं हो जाता या जब तक वह अपनी आजीविका कमाना शुरू नहीं कर देता, जो भी पहले हो।
- यदि पत्नी और पति दोनों ही पारिवारिक पेंशन 1964 के प्रावधानों के अंतर्गत आते हैं, तो जीवित बच्चे या बच्चों को मृतक माता-पिता के संबंध में दोनों पारिवारिक पेंशन प्रदान की जाएंगी।
- एक मृतक कर्मचारी या पेंशनभोगी के संबंध में लाभार्थी को स्वीकार्य पारिवारिक पेंशन को किसी अन्य मृतक कर्मचारी या पेंशन के संबंध में स्वीकार्य अन्य पारिवारिक पेंशन के लिए पात्रता के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आय के रूप में नहीं गिना जाएगा।
- पेंशनभोगी के पति/पत्नी द्वारा गोद लिए गए बच्चे को मृतक पेंशनभोगी के परिवार का सदस्य नहीं माना जाएगा।

### विकलांग बच्चे की पात्रता

- यदि किसी सरकारी कर्मचारी का पुत्र या पुत्री किसी मानसिक विकार या विकलांगता (मानसिक विकलांगता सहित) से पीड़ित है या शारीरिक रूप से अपंग या विकलांग है, जिससे वह पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद भी जीविकोपार्जन करने में असमर्थ है, तो ऐसे पुत्र या पुत्री को आजीवन पारिवारिक पेंशन देय होगी।
- विकलांग बच्चों को पारिवारिक पेंशन जीवन भर के लिए दी जाती है, जब तक कि सबसे छोटा बच्चा 25 वर्ष का न हो जाए। उसके बाद विकलांगता से पीड़ित बच्चे के पक्ष में पारिवारिक पेंशन फिर से शुरू कर दी जाएगी।
- यदि पारिवारिक पेंशन के लिए कोई अन्य पात्र पूर्व दावेदार नहीं है, तो सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी को जारी किए गए पीपीओ में विकलांग बच्चे/स्थायी रूप से विकलांग, भाई-बहन का नाम जोड़ा जाएगा।
- शारीरिक/मानसिक विकलांगता की सूचना न देने से बच्चा पारिवारिक पेंशन के लिए अयोग्य नहीं हो जाता। कर्मचारी/पेंशनभोगी या उसके पति/पत्नी की मृत्यु के बाद जारी विकलांगता प्रमाण-पत्र,

जो उनकी मृत्यु से पहले मौजूद विकलांगता के लिए हो, नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किया जा सकता है।

- यदि पुत्र या पुत्री नाबालिग है तो उसे पारिवारिक पेंशन अभिभावक के माध्यम से दी जाएगी।
- सरकार ने मानसिक/शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को उनकी शादी के बाद भी पारिवारिक पेंशन जारी रखने की अनुमति देने का निर्णय लिया है।
- मानसिक विकलांगता से पीड़ित बच्चे के संबंध में पारिवारिक पेंशन प्रदान करने के प्रयोजनार्थ राष्ट्रीय न्यास अधिनियम, 1999 के प्रावधानों के अंतर्गत गठित स्थानीय स्तरीय समिति द्वारा जारी संरक्षकता प्रमाण-पत्र स्वीकार किया जाएगा।
- अभिभावक या पुत्र या पुत्री का यह कर्तव्य होगा कि वह हर साल कोषागार/बैंक को एक प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करे, जैसा भी मामला हो, कि (1) उसने अपनी आजीविका के लिए कमाना शुरू नहीं किया है; और (2) अभी तक विवाहित नहीं है। हालाँकि विकलांगता के मामले में, बच्चे या अभिभावक को हर पाँच साल में यह प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा कि वह विकलांगता या मानसिक विकार से पीड़ित है या शारीरिक रूप से अपंग या विकलांग बना हुआ है।

### तलाकशुदा/विधवा/अविवाहित पुत्री की पात्रता

- अविवाहित/विधवा/तलाकशुदा पुत्रियों को पारिवारिक पेंशन तब तक देय है जब तक कि उनकी शादी या पुनर्विवाह नहीं हो जाता या जब तक कि वह अपनी आजीविका कमाना शुरू नहीं कर देती, जो भी पहले हो।
- 25 वर्ष से अधिक आयु की अविवाहित/विधवा/तलाकशुदा बेटियों को पारिवारिक पेंशन तब देय होती है, जब सभी अविवाहित बच्चे 25 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेते हैं या अपनी आजीविका कमाना शुरू कर देते हैं, जो भी पहले हो। यदि मृतक सरकारी कर्मचारी/पेंशनभोगी के पास कोई विकलांग बच्चा है, तो विधवा/तलाकशुदा/अविवाहित बेटी विकलांग बच्चे की बारी आने के बाद ही पारिवारिक पेंशन प्राप्त करने के लिए पात्र होगी।
- तलाकशुदा बेटी पारिवारिक पेंशन के लिए पात्र है, जहां तलाक की कार्यवाही कर्मचारी / पेंशनभोगी या उसके पति/पत्नी के जीवनकाल के दौरान एक सक्षम न्यायालय में दायर की गई थी, लेकिन तलाक उनकी मृत्यु के बाद हुआ था, बशर्ते कि दावेदार सीसीएस (पेंशन) नियम, 1972 के नियम 54 के तहत पारिवारिक पेंशन के अनुदान के लिए अन्य सभी शर्तों को पूरा करता हो। ऐसे मामलों में, पारिवारिक पेंशन तलाक की तारीख से शुरू होगी।

### पारिवारिक पेंशन की दर

- पारिवारिक पेंशन की राशि मासिक दरों पर निर्धारित की जाएगी और उसे पूरे रुपए में व्यक्त किया जाएगा। जहां पारिवारिक पेंशन में रुपए का अंश शामिल है, उसे अगले उच्चतर रुपए में पूर्णांकित किया जाएगा।

- यदि सरकारी कर्मचारी की सेवा के दौरान मृत्यु हो जाती है, तो पारिवारिक पेंशन को बढ़ी हुई दरों पर भुगतान किया जाएगा, अर्थात 10 वर्ष की अवधि के लिए अंतिम वेतन का 50%। उसके बाद पारिवारिक पेंशन का भुगतान अंतिम वेतन के 30% की दर से किया जाएगा।
- यदि पारिवारिक पेंशन माता-पिता को दी जाती है, तो इसका भुगतान अंतिम वेतन के 30% की दर से किया जाएगा।
- यदि किसी कर्मचारी की सेवा के दौरान मृत्यु हो जाती है, तो उसके परिवार को पहले 10 वर्षों के लिए अंतिम वेतन के 50% की बढ़ी हुई दर पर पारिवारिक पेंशन का भुगतान किया जाएगा। न्यूनतम सेवा की कोई आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि सात वर्ष की सेवा की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया है। यह संशोधित नियम 1 अक्टूबर, 2019 से प्रभावी हो गया है। 1 अक्टूबर, 2019 से पहले 10 वर्षों के भीतर 7 वर्ष की सेवा पूरी करने से पहले मरने वाले कर्मचारियों के परिवार भी बढ़ी हुई दर पर पारिवारिक पेंशन के लिए पात्र होंगे।
- पेंशनभोगी/पारिवारिक पेंशनभोगी की मृत्यु होने पर पारिवारिक पेंशन की बढ़ी हुई दर अर्थात 50% का भुगतान मृत्यु की तारीख से अगले दिन से 7 वर्ष की अवधि के लिए या पेंशनभोगी की आयु 67 वर्ष होने तक, जो भी पहले हो, किया जाएगा। उसके बाद पारिवारिक पेंशन का भुगतान अंतिम वेतन के 30% की दर से किया जाएगा।

पेंशनर की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी/ पति को जीवन भर पेंशन दी जाती है. लेकिन अगर वो पुनर्विवाह करती है तो उसकी पेंशन खत्म कर दी जाती है और बच्चों की पेंशन ज्यादा कर दी जाती है. लेकिन अगर किसी कर्मचारी के बच्चे शारीरिक तौर पर अक्षम हैं, तो उन्हें जिंदगी भर 75 फीसदी पेंशन दी जाती है. नियमों के मुताबिक अगर कोई कर्मचारी शादी नहीं करता और उसकी मृत्यु हो जाती है, तो फिर ऐसे मामले में उसके माता-पिता को उम्र भर उसकी पूरी पेंशन दी जाती है।

सच है, विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते
विघ्नों को गले लगाते है
काँटों में राह बनाते हैं।

**– रामधारी सिंह दिनकर**

# जीवन में सच्चा आनंद

**आनंद कुमार**
कार्यालय, सचिव, रक्षा अनु. तथा वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ

जीवन में आनंद एक ऐसा अविभाज्य अनुभव है, जिसे हम सब अपनी तरह से महसूस करते हैं। लेकिन क्या हम जानते हैं कि सच्चा आनंद कहाँ से आता है? क्या यह केवल भौतिक सुखों और दुनियावी वस्तुओं से मिलता है, या फिर इसका संबंध हमारे भीतर की शांति और संतोष से है? इस निबंध में हम जीवन में सच्चे आनंद के स्रोत और उसके महत्व पर विचार करेंगे।

## सच्चे आनंद का अर्थ

सच्चा आनंद किसी बाहरी वस्तु या परिस्थिति से प्राप्त नहीं होता, बल्कि यह हमारी आंतरिक स्थिति पर निर्भर करता है। सच्चा आनंद तब मिलता है जब हम अपने जीवन में संतोष, शांति और संतुलन पाते हैं। यह आनंद न तो किसी धन-संपत्ति या भौतिक सुख-साधनों से जुड़ा होता है, न ही किसी बाहरी दुनिया की दौड़ से। बल्कि यह आत्म-ज्ञान, प्यार, और रिश्तों की गहराई से उत्पन्न होता है।

## सच्चा आनंद कहां से आता है?

1. **आत्म-संतोष**

   जब हम अपनी मेहनत से संतुष्ट होते हैं, और अपने प्रयासों से खुश रहते हैं, तो हम सच्चे आनंद का अनुभव करते हैं। जब हम किसी कार्य को ईमानदारी से करते हैं और परिणाम चाहे जैसे भी हों, तब आत्म-संतोष की भावना हमें गहरी खुशी देती है।

2. **प्यार और रिश्ते**

   जीवन में सच्चा आनंद उन लोगों के साथ जुड़ने में है जिन्हें हम प्यार करते हैं। रिश्तों में ईमानदारी, समझ और विश्वास सच्चे आनंद का कारण बनते हैं। परिवार, मित्र, और साथियों के साथ बिताया गया समय और उनके साथ जुड़ी हुई खुशियाँ, जीवन को रंगीन बना देती हैं।

3. **सामाजिक सेवा**

   जब हम दूसरों की मदद करते हैं, और बिना किसी स्वार्थ के समाज के भले के लिए काम करते हैं, तो हमें जो आत्मिक संतुष्टि मिलती है, वही सच्चा आनंद है। दूसरों को खुशी देना और उनके जीवन को आसान बनाना खुद के लिए भी एक गहरी खुशी का कारण बनता है।

4. **आध्यात्मिक साधना**

   आत्मा की शांति और मानसिक संतुलन पाने के लिए ध्यान, योग, और साधना जैसे उपायों का

अभ्यास करना भी जीवन में सच्चे आनंद का स्रोत हो सकता है। जब हम अपने भीतर के विचारों और भावनाओं को शांति से स्वीकार करते हैं, तो हम सच्चे आनंद का अनुभव करते हैं।

### सच्चे आनंद का महत्व

सच्चा आनंद जीवन को एक गहरे और अर्थपूर्ण दृष्टिकोण से देखता है। यह हमें भौतिक वस्तुओं से परे जाकर अपने वास्तविक उद्देश्य और आत्मा के साथ जुड़ने की प्रेरणा देता है। जब हम बाहरी दुनिया की दौड़ से थक जाते हैं, तब हमें यह एहसास होता है कि सच्चा आनंद तो हमारे भीतर ही था, जिसे हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

सच्चे आनंद का महत्व इस बात में है कि यह हमें जीवन के कठिन समय में भी सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में मदद करता है। यह हमें आंतरिक शांति और संतुलन प्रदान करता है, जिससे हम किसी भी कठिनाई का सामना मजबूती से कर सकते हैं।

### सच्चे आनंद के लाभ

1. मानसिक शांति: जब हम भीतर से शांत रहते हैं, तो जीवन की कोई भी कठिनाई हमें परेशान नहीं कर सकती। सच्चा आनंद हमें मानसिक शांति प्रदान करता है, जो तनाव और चिंता को कम करता है।
2. शारीरिक स्वास्थ्य: मानसिक शांति और संतोष का सीधा संबंध शारीरिक स्वास्थ्य से भी है। जब मन शांति से भर जाता है, तो यह शरीर पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।
3. रिश्तों में सुधार: सच्चा आनंद दूसरों के साथ बेहतर रिश्ते बनाने में मदद करता है। जब हम आंतरिक रूप से खुश होते हैं, तो हम दूसरों के साथ भी अच्छे और संतुलित रिश्ते बना पाते हैं।
4. लंबी उम्र: जो लोग सच्चे आनंद से जुड़े होते हैं, वे ज्यादा खुश रहते हैं और उनका जीवन अधिक लंबा और स्वस्थ होता है।

### सच्चे आनंद की प्राप्ति के उपाय

1. आत्म-जागरूकता बढ़ाएँ: खुद को जानना और अपनी भावनाओं को समझना सच्चे आनंद की ओर पहला कदम है।
2. सकारात्मक सोच रखें: जीवन में चाहे जैसी भी स्थिति हो, सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएँ।
3. सामाजिक सेवा करें: दूसरों की मदद करके आंतरिक संतुष्टि प्राप्त करें।
4. ध्यान और योग का अभ्यास करें: मानसिक शांति के लिए ध्यान और योग आपके जीवन में सच्चे आनंद को ला सकते हैं।

### निष्कर्ष

जीवन में सच्चा आनंद केवल बाहरी सुखों में नहीं, बल्कि हमारे अंदर की स्थिति में है। जब हम आत्म-संतुष्टि, प्यार, समझ, और समाज सेवा जैसे मूल्यों से जुड़ते हैं, तो हमें सच्चे आनंद का अनुभव होता है। यही आनंद जीवन को सुंदर और अर्थपूर्ण बनाता है। इसलिए, हमें चाहिए कि हम अपने जीवन में इन सच्चे आनंद के स्रोतों को पहचानें और इन्हें अपनाएं, ताकि हम जीवन के हर क्षण को खुशी और संतोष के साथ जी सकें।

# फ़ोन की दुनिया: एक आउटसोर्स्ड अस्तित्व

**नीरज**
कार्मिक निदेशालय

नमस्ते दोस्तों! आज हम बात करेंगे उस छोटे से चमकदार डिब्बे की जो आजकल हमारी जेब में नहीं, हमारी आत्मा में रहता है - हमारा मोबाइल फ़ोन! पहले हम कहते थे कि फ़ोन हमारे हाथ में है, पर अब तो ऐसा लगता है जैसे **हमारा वजूद ही फ़ोन के अंदर शिफ्ट हो गया है।** सुबह आँख खुलते ही हम सूरज को नहीं, फ़ोन की ब्राइटनेस को एडजस्ट करते हैं। अगर किसी दिन फ़ोन न मिले तो ऐसा लगता है जैसे किसी ने हमारा **पर्सनल क्लाउड स्टोरेज** ही डिलीट कर दिया हो - 'मेरा जीवन कहाँ गया? मेरी यादें कहाँ गईं?' और आधे घंटे बाद पता चलता है कि वो तो आपकी दूसरी जेब में ही था, और आप पिछले दस मिनट से अपनी पैंट से ही बात कर रहे थे! रिश्तों की परिभाषा भी बदल गई है: 'लास्ट सीन', 'ब्लू टिक', 'टाइपिंग...'. ये अब हमारी भावनाओं के नए पैरामीटर्स हैं। अगर आपकी गर्लफ्रेंड का 'लास्ट सीन' एक घंटे पहले का है और उसने रिप्लाई नहीं किया, तो लगता है जैसे ब्रेकअप हो गया! अगर गलती से 'ब्लू टिक' आ जाए और रिप्लाई न आए, तो सीधे पुलिस कंप्लेंट! ये कैसा प्यार है भाई, जो एक छोटे से हरे या नीले टिक पर टिका है!

दादी से मैंने पूछा, "दादी, जब मोबाइल नहीं था तो आप क्या करती थीं?" दादी ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं उनसे 'चंद्रमा पर पानी कैसे खोजें' पूछ रहा हूँ। फिर बोलीं, "बेटा, जब मोबाइल नहीं था तब हम ज़िंदा थे! हम एक-दूसरे से **फ़िज़िकली बात** करते थे! चिट्ठी लिखते थे! सबसे बड़ी बात, हमें पता होता था कि पड़ोसी के घर क्या पक रहा है, व्हाट्सएप पर किसी फॉरवर्डेड मैसेज से नहीं!" अब तो बच्चों के नाम भी 'सैमसंग', 'आईफोन', 'रेडमी' होने लगे हैं! "अरे ओ आईफोन, होमवर्क कर ले!"

ये जो आजकल नया ट्रेंड चला है, **'डिजिटल डिटॉक्स'!** मतलब आप फ़ोन से दूर रहेंगे। मैंने ट्राई किया। पहले दिन सुबह उठा, फ़ोन नहीं उठाया। बड़ा अच्छा लगा। चिड़ियों की आवाज़ सुनी, सूरज देखा। फिर 10 मिनट बाद बेचैनी होने लगी। ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरी आत्मा बेचकर चाइनीज़ फ़ोन खरीद लिया हो! मैं वॉशरूम गया, तो वहाँ भी फ़ोन नहीं था। आप मानेंगे नहीं, मैंने टॉयलेट पेपर के रोल पर बनी डिज़ाइन को 15 मिनट तक एनालाइज़ किया! इतना ज़्यादा खालीपन! आजकल तो लोग खाना खाते हुए फ़ोन चला रहे हैं, सोते हुए फ़ोन चला रहे हैं, यहाँ तक कि वॉशरूम में भी... अगर गलती से फ़ोन अंदर गिर जाए, तो लोग फ़ोन को बचाने के लिए जान हथेली पर रख लेते हैं! "अरे मेरी ज़िंदगी डूब गई!"

आजकल तो लोग ऐसे फ़ोन चलाते हैं जैसे उनको फ़ोन नहीं, **फ़ोन ही उनको चला रहा है!** मेट्रो में देखिए। सौ लोग बैठे होंगे और सौ के सौ फ़ोन में घुसे होंगे। ऐसा लगता है जैसे कोई सामूहिक योग

निद्रा चल रही है, जहाँ सब आत्मा से नहीं, वाई-फ़ाई से कनेक्टेड हैं। अगर किसी का फ़ोन बज जाए, तो सब ऐसे देखते हैं जैसे उसने पब्लिक में 'भारत माता की जय' बोल दिया हो। "देखो, ये बात कर रहा है! इसे शर्म नहीं आती? इसकी आवाज़ से मेरी रील का मज़ा खराब हो गया!" मैंने तो एक दोस्त को देखा। वो अपनी गर्लफ्रेंड से वीडियो कॉल पर बात कर रहा था, और उसी समय उसके सामने से एक खूबसूरत लड़की गुज़री। उसने अपनी गर्दन ऐसे मोड़ी कि अगर वो इंसान नहीं होता तो उसकी गर्दन 360 डिग्री घूम जाती और फिर फ़ोन में वापस घुस गया। मतलब **वर्चुअल वर्ल्ड इतना असली हो गया है कि असली दुनिया फेक लगने लगी है!** ऐसा लगता है जैसे हमारी ज़िंदगी किसी फ़ोन के 'सेंसर' पर चल रही है - लाइट ऑन, स्क्रीन ऑन; लाइट ऑफ, स्क्रीन ऑफ। हाँ, अगर आपने किसी के घर जाकर उसका वाई-फ़ाई पासवर्ड नहीं पूछा, तो इसका मतलब है कि आप अभी तक उससे दोस्त नहीं बने हैं। सच्ची दोस्ती की पहली सीढ़ी है - "भाई, वाई-फ़ाई का पासवर्ड क्या है?"

ये जो **फ़ोटो लेने का जुनून है**, ये तो अलग ही लेवल पर है। खाना आए न आए, फ़ोटो पहले आएगी। चाय की चुस्की लेनी है, लेकिन पहले उसकी परफेक्ट 'एस्थेटिक' फ़ोटो खींचनी है। अगर वाई-फ़ाई न मिले, तो लोग ऐसे घबरा जाते हैं जैसे उन्हें किसी वीआईपी ने अनफॉलो कर दिया हो। "वाई-फ़ाई कहाँ है? अरे यार, मेरा इंस्टाग्राम अपडेट नहीं हो रहा! मेरी ज़िंदगी रुक गई है! मेरी 'स्टोरी' कौन देखेगा अब?" आजकल तो ये 'स्टोरी' इतनी फ़ास्ट चलती है कि अगर आप पलक झपकाएं, तो किसी की शादी की स्टोरी भी मिस कर सकते हैं! और अगर किसी ने बिना फ़िल्टर के अपनी फ़ोटो डाल दी, तो लोग ऐसे देखते हैं जैसे उसने क्राइम कर दिया हो। "अरे, इसने ओरिजिनल चेहरा दिखा दिया! यह तो पाप है!"

मेरे एक अंकल हैं। उन्होंने अभी-अभी नया स्मार्टफ़ोन लिया है। मैंने पूछा, "अंकल, क्या कर रहे हो?" वो बोले, "मैं 'रील' देख रहा हूँ। ये छोटे-छोटे वीडियो होते हैं।" मैंने कहा, "अंकल, आपने तो कहा था कि आप अपनी ज़िंदगी में कोई 'रील' नहीं चाहते? आपको तो शादी के कार्ड पर लिखा 'फ़ोटो खींचना मना है' भी अच्छा लगता था!" वो बोले, "अरे बेटा, ये 'रील' अलग है! इसमें तो लोग नाचते हैं, गाते हैं, और मुझे पता चलता है कि पड़ोसी की बेटी किस गाने पर नाच रही है!" मैंने कहा, "अंकल, आपकी तो शादी को 30 साल हो गए हैं, आपने कभी भाभी के सामने इतना नहीं नाचा, जितना इन रील्स के सामने नाच रहे हो! भाभी को भी एक रील बनाकर दिखाओ!" आजकल तो बच्चे भी अपने माँ-बाप को ब्लैकमेल करते हैं, 'आईफोन दे दो, नहीं तो मैं अपना चैनल बंद कर दूंगा और आप फेमस नहीं हो पाएंगे!' ये कैसी दुनिया है भाई!

तो दोस्तों, मेरा आपसे यही निवेदन है। **फ़ोन ज़रूरी है, लेकिन हम उससे ज़्यादा ज़रूरी हैं।** थोड़ी देर के लिए इसे जेब में रखिए। अपनी आँखें उठाइए। अपने आस-पास देखिए। लोगों से बात कीजिए। क्योंकि यकीन मानिए, दुनिया फ़ोन से ज़्यादा खूबसूरत है! हाँ, अगर आज आप किसी से मिले हैं, तो उसे **'हग' कीजिए, 'लाइक' नहीं!** क्या पता वो आपको भी एक 'लाइफटाइम वारंटी' दे दे, फ़ोन की तरह हर साल अपडेट न मांगे!

# संतुष्टि ही प्रकृति की दौलत है

**विपिन बिहारी**
**आरटीआई प्रकोष्ठ**

"इस धरा में सभी की आवश्यकताओं को पूर्ण करने
की क्षमता है, परंतु किसी के लालच की नहीं"

गांधी जी का उपरोक्त कथन हमारे शास्त्रों में वर्णित 'संतोषम् परम् सुखम्' की उक्ति को चरितार्थ करता है। संतोष वह धन है जिसके आगे विश्व की समस्त सम्पदा का मोल फीका पड़ जाता है। कहा भी जाता है कि -

गोधन गजधन बाजधन और रतन धनवान
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समाम।

संतोष वह धन है जो व्यक्ति को प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर उसके त्यागपूर्ण उपभोग की प्रेरणा देता है। इस प्रकार का उपभोग आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक अच्छी, सुंदर एवं समृद्ध धरा को संजोता है। संतुष्टि का यह भाव किसी व्यक्त, समाज एवं देश के सतत् विकास की आधारशिला का निर्माण करता है। यह स्वहित के साथ ही 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए विश्व बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करता है।

यद्यपि वर्तमान में संतुष्टि रूपी यह धन कहीं खोता जा रहा है। आज का व्यक्ति कम से कम समय में अधिक से अधिक भौतिक संसाधनों को इकट्ठा करने की होड़ में लगा हुआ है। उसकी समस्त ऊर्जा आर्थिक संसाधनों को एकत्रित करने की चूहा दौड़ में ही खप जा रही है। परिणामत: एक ओर वह कम उम्र में ही विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से घिर रहा है। जैसा कि WHO की एक रिपोर्ट से भी स्पष्ट है कि भारत में 30 वर्ष की उम्र तक के व्यक्तियों में डायबिटिज एवं हृदय रोग संबधी विकारों में पिछले एक दशक में दोगुनी वृद्धि हो गई है तो दूसरी ओर वह अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का भी समुचित निर्वहन नहीं कर पा रहा है।

युवाओं में बढता तनाव, नशाखोरी की प्रवृत्ति, तलाक के बढ़ते मामले, वृद्ध माता पिता की उपेक्षा जैसी बढ़ती समस्याएं इसी असंतुष्टि से उत्पन्न कारकों का ही परिणाम है।

समाज चूंकि व्यक्तियों का समुचय होता है। अत: सभी इसी असंतोष से पीड़ित हैं। आश्चर्य नहीं कि देश में प्रत्येक 4 मिनट में एक विवाहिता दहेज की बलि वेदी पर चढ़ा दी जाती है। समाज में आर्थिक संसाधनों की उपलब्धि को ही सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि माना जाता है। फलस्वरूप माता पिता द्वारा बच्चों पर

अत्यधिक दबाव डालकर बच्चों की रूचि के विपरीत पाठयक्रमों में प्रवेश लेने का दबाव बनाया जाता है। इसी प्रकार आवश्यक वस्तुओं की कमी होने पर कालाबाजारी शुरू हो जाती है। लोग अपनी वास्तविक आय छिपाकर आयकर की चोरी करते हैं।

असन्तुष्टि का यह भाव विभिन्न सामाजिक आर्थिक, राजनितिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म देता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नकल का सहारा लेना विभिन्न गिरोंहों द्वारा नकल का सामूहिक व्यापार करना, विभिन्न अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अति उच्च कीमतें वसूल करना, चिकित्सकों द्वारा फिजूल के स्वास्थ्य परीक्षणों एवं औषधियों का परामर्श देना इस बढ़ती भौतिकता एवं गिरती नैतिकता तथा संतुष्टि के पैमानों के कुछ उदाहरण हैं।

इसी क्रम में तकनीकी उन्नति को भी देखा जा सकता है। तकनीक के उपयोग ने जहां एक ओर मानव जीवन को सुगम बनाया है तो वहां मानव की सर्वशक्तिशाली बनने की आकांक्षा ने परमाणु बम जैसे सर्वनाशक अस्त्र का भी निर्माण कराया है।

आज बिट कॉइन के माध्यम से फिरौती मांगने, साइबर हमले से किसी राष्ट्र को पंगु बनाने से लेकर डिजाइनर बेबी जैसे तकनीकी आयाम इसी मानवी असंतोष की उपज हैं। आज राष्ट्र अपने मानव विकास की अपेक्षा अपने GDP के आंकड़ों पर अधिक ध्यान देते दिखते हैं। पर्यावरणीय सरोकारों पर भी इसका सीधा असर देखने को मिल रहा है।

बढ़ता प्रदूषण लाखों लोगों की मृत्यु का कारण बन रहा है तो ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। हमारे जल, जंगल, जमीन सभी प्रदूषित हो रहे हैं, जैव-विविधता खतरे में है परंतु मनुष्य की आकांक्षाए बढ़ती जा रही हैं।

सता की भूख ने निरंकुश तानाशाहियों को जन्म दिया है, लोकतंत्र को दबाया जा रहा है फिर चाहे वह म्यांमार हो या पाकिस्तान, अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित किया जा रहा है। विश्व में सभ्यताओं के मल्टिंग़ पॉट कहे जाने वाले देश अमेरिका में भी गोरे - काले का भेद उभर आया है, आखिर यह सब मानव का असंतोष एवं अधिक से अधिक शक्ति एवं संसाधनों को एकत्रित करने की लालसा नहीं तो और क्या है?

यदि मनुष्य संतुष्ट है तो इसका सीधा प्रभाव समाज एवं राष्ट्र पर पड़ता है। व्यक्ति की संतुष्टि का भाव उसे गीता में वर्णित निष्काम कर्म योग की प्रेरणा देता है। इसके माध्यम से एक ओर वह अपनी प्रगति के प्रयास करता है तो वहीं दूसरी ओर किसी भी कीमत पर सफलता का मार्ग नहीं अपनाता है।

इसका सामाजिक प्रभाव अंत्यत महत्वपूर्ण होता है। आज यह आवश्यकता है कि राष्ट्र अपने आर्थिक विकास के साथ ही मानव विकास सूचकांक को सुधारने का प्रयास करें।

संतोष के साथ किया गया आर्थिक विकास ही सतत् आर्थिक विकास को जन्म देता है जो भावी पीढियों को भूख, कुपोषण, गरीबी से बचाकर तेन व्यक्तेन भूंजिता का मार्ग प्रशस्त करता है अर्थात

हमें सांसारिक सुखों-दुखों से दूर नहीं भागना चाहिए, यह जानते हुए कि वे क्षणभंगुर हैं और हमें उनसे मोह नहीं रखना चाहिए।

व्यक्ति एवं समाज की संतुष्टि का यही भाव एक परिपक्व लोकतंत्र का निर्माण करता है। यह राष्ट्र की उन्नति को लोकतंत्र का मूल आधार बनाता है। आम जन की सहभागिता इसी संतुष्टि का परिणाम होता है।

आज वैश्विक चुनौतियों तथा आतंकवाद से निपटना, शरणार्थियों की समस्या का समाधान, जलवायु परिवर्तन पर अंतराष्ट्रीय संधियों का क्रियान्वयन, गरीबी, कुपोषण जैसी समस्याओं इत्यादि के समाधान के मूल में यदि कुछ है तो वह अहि वसुधैवा कुटुम्बकम की भावना ही है।

सर्वे भवंतु सुख़िनः सर्वे संतु निरामया की उक्ति को चरितार्थ करके ही इस विश्व को अधिक सुखद, शांतिपूर्ण, समतापूर्ण, समावेशी एवं समृद्धशाली बनाया जा सकता है और इसके लिए जो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है, वह है आत्म संतुष्टि की भावना।

यह भावना ही वह शक्ति है जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखती है, उसे जियो और जिने दो का नैसर्गिक संदेश देती है। जीवन झंझावातों में भी प्रेरणायुक्त एवं आशावान बनाए रखती है। उसे प्रेम, करूणा जैसे गुणों से युक्त करती है, सार्वभौमिक भाईचारे के लिए प्रेरित करती है और महात्मा गांधी के शब्दों में उसे यह संदेश देती हैं कि -

"जिस दिन प्रेम की शक्ति, शक्ति के प्रेम पर हावी हो जाएगी, उस दिन संसार की समस्त समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी"।

हम धूल हैं और धूल में लौट जाते हैं।
अंत में हम न तो हवा हैं,
न आग, न पानी,
सिर्फ़ मिट्टी हैं,
न अधिक न कम,
केवल मिट्टी,
और शायद
कुछ पीले फूल।

**– पाब्लो नेरुदा**

# पुरुषार्थ ही प्रारब्ध है

**भूपेंद्र सिंह**
कार्मिक निदेशालय

हमारा जीवन प्रारब्ध की नींव पर बना है और जीवन को सार्थक करने के लिए हमें पुरुषार्थ करना है। हम वेद मार्ग पर चलते हुए ज्ञान प्राप्ति, उपासना व समाजोत्थान के लिए जितने कार्य करेंगे उससे हमारा वर्तमान और भावी जीवन यशस्वी व सुखमय होगा। प्रश्न है कि पुरुषार्थ और प्रारब्ध हैं क्या? इस संबंध में ऋषि दयानन्द जी 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में कहते हैं कि पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिये है कि क्योंकि इससे ही संचित प्रारब्ध बनते हैं, इसके सुधरने से सब सुधरते हैं और इसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं। इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है। ऋषि दयानन्द ने पहली बात यह कही है कि पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है। पुरुषार्थ से संचित प्रारब्ध बनते हैं अर्थात् प्रारब्ध वृद्धि को प्राप्त होते हैं। पुरुषार्थ के सुधरने से सब सुधरते हैं अर्थात् इससे हमारा प्रारब्ध भी सुधरता है। ऋषि ने यह भी कहा है कि पुरुषार्थ के बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं अर्थात् प्रारब्ध भी बिगड़ता है। इन्हीं कारणों से पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है। पुरुषार्थ है क्या? पुरुषार्थ सद्कर्मों को कहते हैं। वेदानुकूल सद्कर्मों को पुरुषार्थ कहते हैं। वेदविरुद्ध कार्य भी पुरुषार्थ हो सकता है परन्तु इन अशुभ कर्मो का परिणाम सुखमय न होकर दुःखरूप ही होगा। मत-मतान्तरों की मिथ्या मान्यताओं के आचरण में पुरुषार्थ तो होता है परन्तु इससे हमारा प्रारब्ध सुख रूप न होकर दुःख रूप ही होता है। इसलिए सभी मनुष्यों को वैदिक धर्म की शरण में आकर श्रेष्ठाचार कर सुख रूप प्रारब्ध में वृद्धि करनी चाहिये। अधिक सद्कर्मों के करने के लिए अधिक पुरुषार्थ अर्थात् श्रम करना होगा जिससे हमारे संचित पुरुषार्थ में भी वृद्धि होगी। इसके लिए यह जानना भी आवश्यक है कि मनुष्य जो कर्म करता है वह क्रियमाण व संचित कर्म होते हैं। क्रियमाण कर्म वह होते हैं जिसका फल करने के साथ व कुछ समय में ही मिल जाता है। दूसरे कर्म संचित कर्म होते हैं जो हमारे प्रारब्ध में जुड़ कर उसमें वृद्धि करते हैं। संचित कर्म व संचित प्रारब्ध से भावी समय अर्थात् परजन्म में हमें उसके अनुरूप जाति, आयु और भोग प्राप्त होते हैं। सद्कर्मों व पुरुषार्थ से बना प्रारब्ध ही हमें मोक्ष तक ले जाता है। यदि हम अपने प्रारब्ध में सद्कर्म रूपी पुरुषार्थ की वृद्धि नहीं करते तो यह हमें दुःख व निम्न योनियों की यात्रा करा सकता है। यह भी जान लें कि प्रारब्ध को ही लोग भाग्य के नाम से भी कहते हैं।

प्रारब्ध व पुरुषार्थ को हम उदाहरण से भी समझ सकते हैं। प्रारब्ध हमारे संचित कर्मों की पूंजी है जिसके अनुरूप सुख व दुःख का भोग हमने कुछ कर लिया और शेष जीवन में भी करेंगे। प्रारब्ध के अनुसार ही हमें यह मानव जन्म मिला है। प्रारब्ध से ही हमारी जाति, आयु व भोग को परमात्मा हमारे जन्म से पूर्व निर्धारित करते हैं। हमारे इस जन्म से पूर्व परमात्मा ने हमारे प्रारब्ध के अनुसार इस मनुष्य जन्म, इसकी आयु व इसमें मिलने वाले सुख व दुःखों का निर्धारण किया है। इसी के

अनुसार हमारा जीवन चल रहा है। प्रारब्ध को यदि कर्मों की पूंजी मान लें तो हम जो शुभ व अशुभ कर्म इस मानव जीवन में करते हैं वह उस प्रारब्ध के शुभ व अशुभ कर्मों में संग्रहित होते जाते हैं। प्रारब्ध में यदि सद्कर्मों की अधिकता होती है तो हमें मृत्योपरान्त मनुष्य जन्म मिलता है और यदि हमारे अशुभ कर्म अधिक होते हैं तो हमें पशु व इससे भी निकृष्ट योनियों में जाना पड़ता है जहां सुख कम व दुःख अधिक होते हैं। अनादि काल से यह क्रम चला आ रहा है। इसी सिद्धान्त के अनुसार ही हम अब तक अनन्त बार जन्म ले चुके हैं। संसार में हम जितनी भी योनियां देखते हैं प्रायः उन सभी योनियों में हमारा अनेकानेक बार जन्म हो चुका है। अनेक बार हम मोक्ष में भी रह चुके हैं। परमात्मा हमारे सभी जन्मों व मोक्ष का साथी रहा है और आगे भी रहेगा। हम जितने अधिक शुभ कर्म करते हैं उतना अधिक परमात्मा के निकट होते हैं और बुरे कर्म करने से परमात्मा से हमारी दूरी हो जाती है। यह दूरी देश व काल की नहीं होती। यह ऐसा होता है कि जैसे हमारे किसी बुरे आचरण से हमारे माता, पिता या मित्र नाराज हों तो सामने होकर भी वह हमसे बातें नहीं करते और उपेक्षा का व्यवहार करते हैं। कुछ इसी प्रकार की दूरी परमात्मा से बुरे कर्म करने पर होती है जिससे हमें लाभ नहीं अपितु दुःख की प्राप्ति रूप हानि होती है। अतः हमें सोच विचार कर अपने जीवन में केवल अच्छे कर्मों का ही आचरण करना चाहिये जिससे हमारा प्रारब्ध शुभ कर्मों से भरा हुआ हो और हम वर्तमान व भावी जन्मों में अधिक से अधिक सुखों को प्राप्त हो सकें और ईश्वर की कृपा से मोक्ष की स्थिति में पहुंच कर मोक्ष को भी प्राप्त कर सकें।

इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा
कुछ भी नहीं है
न ईश्वर
न ज्ञान
न चुनाव
कागज पर लिखी कोई भी इबारत
फाड़ी जा सकती है
और जमीन की सात परतों के भीतर
गाड़ी जा सकती हैं।

**- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना**

# लघु कथाएं

**अंजलि कंवर**
योजना एवं समन्वय निदेशालय

## वक़्त का मोल

एक कंजूस व्यापारी ने दिन-रात एक करके तीन करोड़ सोने के सिक्के जमा कर लिए। उसने कभी ये नहीं सोचा कि मौत भी आएगी। एक दिन मौत व्यापारी के सामने आ खड़ी हुई और कहने लगी- चलो वक्त हो गया.. 'अरे' अभी कैसे?' व्यापारी बोला। अभी तो मैंने धन कमाया है, उससे खर्च कर जीवन का आनंद तो लेने दो। मौत ने कहा-नहीं, अब वक्त हो गया। व्यापारी ने कहा-मुझे एक साल की मोहलत दे दो और उसके बदले में एक करोड़ सिक्के ले लो। मौत ने कहा-नहीं। व्यापारी ने वक्त कम करने के साथ कीमत बढ़ाना शुरू कर दिया पर बात न बनी। हार कर व्यापारी बोला-मुझे एक वाक्य लिखने दो फिर चलूगा। मौत राज़ी हुई। व्यापारी ने लिखा-वक्त की कीमत जानते हुए जिंदगी का हर पल जीयो, मैं तीन करोड़ सिक्कों से दस मिनट भी नहीं खरीद पाया।

## बहादुरी

एक बार कॉलेज में दो छात्रों के बीच 'बहादुर कौन' के मुद्दे पर लड़ाई हो गई। दोनों अपने को बड़ा बहादुर कहते थे। दोनों ही एक दूसरे की जान लेने पर तुले थे। जब झगड़ा हल करने का कोई रास्ता नहीं निकला तो दोनों कॉलेज के प्राचार्य के पास पहुंच गए। एक ने खुद को बहादुर बताया, तो दूसरे ने खुद को पहले से भी बहादुर बताया। प्राचार्य ने दोनों की बात सुनी, फिर कहा, 'तो तुम दोनों बड़े बहादुर हो'। दोनों बिना रुके बोले हाँ। प्राचार्य ने पूछा 'बहादुर कौन होते हैं?' जवाब मिला, जो मुश्किल काम करता है। 'प्राचार्य ने कहा, 'अच्छा बताओ कि जब तुम्हें गुस्सा आ रहा हो, और तुम्हारा मुक्का तना हो, तब दूसरे की नाक पर मुक्का मार देना आसान है या उससे खींच कर जेब में रख लेना? दोनों छात्रों ने समान स्वर में कहा, 'मुक्का मारना आसान है'। प्राचार्य ने कहा, 'पर तुम दोनों तो बहादुर हो!'

# असंभव कुछ भी नही......

**रश्मि सैनी**
कार्मिक निदेशालय

'असंभव कुछ भी नही' का अर्थ है कि कोई भी कार्य असंभव नही है। यह एक प्रेरणादायक वाक्य है जो बताता है, यदि मन में विश्वास, दृढ संकल्प और मेहनत करने का इरादा हो तो आप मुश्किल से मुश्किल लक्ष्य की प्राप्ति भी कर सकते हैं।

दुनिया में कई लोग लक्ष्य की ओर कदम बढाने से पहले ही उसके परिणाम के बारे में सोचने लगते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के लिए मेहनत और ईमानदारी से की गई कोशिश जरुरी है। एक बार असफलता मिलने का अर्थ यह कभी नहीं होता की लक्ष्य को ही छोड़ दें बल्कि नए जोश और दुगुनी मेहनत के साथ उसकी प्राप्ति में लग जाना जिंदगी है। यही लगन और मेहनत आपको आपकी मंजिल तक पहुँचाएगी।

हम अगर आज के बच्चों की बात करे जो अपनी पढ़ाई को लेकर चिंतित रहते हैं, भरपूर प्रयास भी करते हैं, परन्तु कई बार अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाते और फिर उन्हें लगता है कि अब सब खत्म हो गया इसके आगे उनके लिए कुछ शेष ही नहीं है। जबकि बच्चों को यह समझना चाहिए कि असफल होना कोई बुरी बात नहीं है, उम्मीद छोड़ देना गलत है। बात बच्चों की ही नहीं है, बड़ी उम्र के लोग भी ये गलती करते हैं, एक असफलता को अपनी किस्मत मानकर कोशिश करना छोड़ देते हैं। सभी को यह बात समझनी चाहिए कि लगातार किए गए प्रयास कभी असफल नहीं होते और जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है।

जिस समय लोगों के बीच पत्राचार का चलन था, क्या कभी उन्होंने सोचा होगा कि व्हाट्स एप जैसी तकनीक पर वे दूर बैठे कुछ सेकैंड में बात कर पाएँगे। बात सिर्फ संकल्प की है, फिर हर चीज आसान हो जाती है और मंजिल को पाने के रास्ते नजर आने लगते हैं।

असंभव को संभव बनाने के लिए कुछ बातें हमेशा याद रखनी चाहिए।

हम सभी में सबसे पहले आत्मविश्वास होना बहुत जरूरी है, स्वंय पर विश्वास रखने से ही सफलता की ओर बढ़ा जा सकता है। किसी भी काम को करने के लिए दृढ संकल्प रखना होगा, तभी आप काम को पूरा कर पाएँगे। मुश्किलों का सामना करने और नए अवसरों को अपनाने का साहस भी अत्यंत आवश्यक है। इन सभी गुणों के ऊपर आती है सकारात्मक सोच, हर चीज को सकारात्मक तरीके से देखने से सफलता प्राप्ति आसान हो जाती है।

कार्य तब तक ही असंभव लगता है जब तक उसे किया नहीं जाता। किसी ने सच ही कहा है -

**"संभव है सब कुछ, असंभव कुछ भी नही,**
**कर हौसले बुलंद, दूर कुछ भी नहीं"**

# काव्य खंड

**कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने**
**कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने**
**बाहर भीतर**
**इस घर, उस घर**
**कविता के पंख लगा उड़ने के माने चिड़िया**
**क्या जाने ?**

# अखबार

**अनुमीत चावला**
कार्यालय, अपर सचिव एवं अपर वित्तीय सलाहकार

देखना चाहती हूँ छपते हुए ऐसा अखबार
जिसमें छपे खबरें शान्ति की,
समाज में आई क्रान्ति की
जिसकी खबरों में
गाँव और शहर
होते हों आबाद
और दु:ख बर्बाद
बारिशों में लहलहाते खेत-खलिहान
अनाज उगाते किसान
और भविष्य सँवारते बच्चे

पढ़ना चाहती हूँ ऐसा अखबार
जिसमें घटनाएँ तो हों
दुर्घटनाएँ न हों
तथ्यों में उजागर होते हों सत्य
सरोकार हों, सरसराहटें न हों

लिखना चाहती हूँ ऐसा अखबार
जिसकी खबरों में न हो बमबार
जिसमें हों बच्चों का खिलखिलाता कोना
हों युवाओं को धरोहर सौपतें वृद्धों की कहानी
हो रामराज्य बनाते नेताओं की होड़
और
हो हर तरफ हँसी-खुशी का दौर।।

# सबको साथ लेकर चलो

**पंकज भारती**
मानव संसाधन विकास निदेशालय

ये जरुरी नहीं कि सब एक जैसे हों,
तेरे जैसे नेक और विवेक रखते हों,
फिर भी सबको साथ लेकर चलते रहो,
यही सही तरीका है, इसी राह चलते रहो....

घर, बाहर और दफ्तर, झांक लो कहीं,
तरह-तरह के लोग मिलते हैं कि नहीं,
कोई ज्यादा बोलता, पर काम करता नहीं,
कोई कम बोलता, पर काम निपटाता सभी,
दोनो में फर्क है, भला वो एक कैसे हों,
ये जरुरी नहीं कि सब एक जैसे हों.....

विधाता ने सबको कुछ खास है बनाया,
हरेक को कुछ अच्छाईयों से है सजाया,
जरूरत है, उसकी अच्छाई परखने की,
उसके अनुसार ही उससे काम लेने की,
अच्छाई दिखेगी, तो काम न कैसे हों,
ये जरुरी नहीं कि सब एक जैसे हों......

सभी गुण एक इंसां में हों, ये मुमकिन नहीं,
सभी इंसान एक जैसे हों, ये मुमकिन नहीं,
ईश्वर का ये सत्य वचन है, चाहे मानो या नहीं,
सत्य न होता, तो द्रौपदी को पांच मिलते नहीं,

सभी भिन्न हैं, तो भला एक कैसे हों,
ये जरूरी नहीं कि सब एक जैसे हों,
तेरे जैसे नेक और विवेक रखते हों,
फिर भी सबको साथ लेकर चलते रहो,
यही सही तरीका है, इसी राह चलते रहो....

# कविता के बहाने

**अंकुश**
कार्यालय, महानिदेशक प्रौद्योगिकी प्रबंधन

कविता!

तू मन की मथित भावना है।

कभी तू वेदना की आग में जलती हुई

राख हो जाती है –

कभी तू स्वप्न की दुनिया में

किसी दिव्य लोक की छाया बन

दिखलाई पड़ती है।

कभी तू भूख की टीस से

उठती कराह है –

कभी तू क्रांति की मशाल है।

कभी तू श्रम की गाथा है –

कभी तू आत्मा की व्यथा है।

# राम और रावण – वो जो कहानी के पार हैं

**योगेश कुमार**
कार्मिक निदेशालय

राम और रावण –
दो नाम, दो ध्रुव, दो विचार।
एक ने धर्म का मार्ग चुना,
दूसरे ने ज्ञान का।

राम – जिन्होंने वनवास में भी मर्यादा निभाई,
और हर परिस्थिति में
राजा नहीं, राजधर्म बने।
उन्होंने त्याग किया –
राज्य का, आराम का,
और अंत में –
अपनी निजी खुशियों का।

रावण –
जिसे अक्सर राक्षस कहा गया,
पर जिसने शिव को तप से प्रसन्न किया।
जिसने ब्रह्मा से वेदों की दीक्षा ली,
पर अपने अभिमान से कभी पार न पा सका।

राम ने युद्ध को अंतिम विकल्प माना,
पर जब समय आया,
तो अधर्म के सामने
धनुष उठाया –
पर केवल तब, जब धर्म की रक्षा ज़रूरी हो गई।

रावण ने अपनी बहन के अपमान पर प्रतिशोध माँगा –
पर उसके अहंकार ने उसे वह युद्ध दिलाया
जिसमें वो जानता था –
जीत संभव नहीं।

राम ने सीता की अग्निपरीक्षा ली –
हाँ, वो प्रश्न आज भी जलता है।
पर वो निर्णय एक पुरुष का नहीं,
एक राजा का था –
जिसे समाज की आँखों से खुद को भी देखना पड़ा।

रावण ने सीता को बंदी बनाया –
पर सम्मान की एक लक्ष्मण रेखा कभी लांघी नहीं।
उसने जब मृत्यु स्वीकार की,
तो विद्वत्ता और शौर्य के साथ।

---

तो क्या ये कहानी
सिर्फ बुराई बनाम अच्छाई की है?
या दो चरित्रों की,
जो अपने-अपने सत्य में अडिग थे?

राम – जो हर कदम सोच कर रखते थे,
रावण – जो सब जानकर भी युद्ध का वरण करते थे।

एक ने त्याग से ऊँचाई पाई,
दूसरे ने विवेक होते हुए भी पतन स्वीकारा।

तो इस बार रावण जलाते वक्त,
राम के आँसू भी याद रखना –
क्योंकि उन्होंने भी बहुत खोया था।

और रावण को कोसते वक्त,
उसके भीतर छुपे उस विद्वान को मत भूलना,
जो गलत था...
पर पूरी तरह नीच नहीं।

“राम और रावण – दोनों इंसान थे,”
एक ने मर्यादा में जीकर ईश्वर का दर्जा पाया,
दूसरा – अपनी सीमाओं के बावजूद,
आज भी सवाल छोड़ गया।

# सिंदूर : देश भक्ति का अमर दस्तूर

**सुंदरी श्रीनिवासन**
कार्यालय, महानिदेशक (प्रौद्योगिकी प्रबंधन)

लाल सिंदूर जो माथे पे सजे,
वो अब रणभूमि की मिट्टी में बहे।
धधक उठे थे वीरों के प्राण,
जब आया वतन का बुलावा महान।

उत्तरी पर्वत, बर्फ की चादर,
जहाँ दुश्मन ने बोया था ज़हर।
"ऑपरेशन सिंदूर" बना अंगार,
हर जवान था वज्र, हर वार था धार।

तलवार नहीं, पर हौसले थे,
सीने में जलते भारत के अंग।
आँखों में सपना, दिल में आग,
मिटा दी सीमा पर हर दुश्मन की झलक।

मां ने कहा: “जाओ बेटा, तिरंगा लहराना,”
बेटे ने कहा: “वापस आऊं या लहू बहाना।”
देशभक्ति का ये अमर दस्तूर,
गूंजता रहेगा - ऑपरेशन सिंदूर।

# लोकगीत - अपना गांव

**राम शंकर चौरसिया**
प्रौद्योगिकी विकास निधि निदेशालय

गंउवा के बेटवा, न गंउवा में रहिगे,
गंउवा भईल बा विरान रे।
जवनै गलीवा मा बीतल वा बचपन,
उहवव भईल अनजान रे॥
बदलल उमरिया में बदलल वा चाहत,
बदल गइले दोस्त व यार रे।
यदि नाही बदलल ई कुछ भी जिनगियां में,
गंउवा से अपने प्यार रे॥
जवने दुवारवा पे होते रे संझवा,
खटिया बिछ्त एक साथ रे।
उहय दुवरवा अब बटिया जोहत है,
कहां गईल सारा परिवार रे।
वही रे दुवरवा पे, पापा की गोदिया में,
बचपन से भईले सयान रे।
बहना से तू-तू अव भईया से मै-मै,
उनकर रहल ई सब प्यार रे॥
माई के दुलरवा का, कइसै भुलैबु,
उनकर करज हजार रे।
छोड़त घरवा पे, चुमत गलवा के,
उस पर असुवन के धार रे।
माई के ममता के मोल न होला,
न होला कोई उद्धार रे।
भाग जगल उनकर, माई के रोजे,
मिलत रहत ई दुलार रे।

# छवि देश की बदलेंगे

**अरुण कमल**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

भाव न अपना छोड़ेंगे
स्वभाव न अपना छोड़ेंगे
हर भटके साथी को अपने
स्वच्छ राह पर मोड़ेंगे

घर हो या हो आस-पड़ोस
या फिर अपना ऑफिस हो
धूल के हर इक कण को पोंछ
चमकाने की कोशिश हो

सभी स्वच्छता साथी के संग
कंधे से कंधा जोड़ेंगे
हर भटके साथी को अपने
स्वच्छ राह पर मोड़ेंगे

ढेर फाइल की खत्म करें
और कमरा अपना साफ रखें
बिना जरूरत के पत्रों को
श्रडर मशीन के पास रखें

कॉरपोरेट और सरकारी के
बीच का अंतर तोड़ेंगे
हर भटके साथी को अपने
स्वच्छ राह पर मोड़ेंगे

मुँह में लाल चबाएँ गुटका
चलते चलते थूक दिया
बैठ कार में शीशा खोलकर
फल का छिलका फ़ेंक दिया

आओ प्रण लें आदत ऐसी
सारी अपनी छोड़ेंगे
हर भटके साथी को अपने
स्वच्छ राह पर मोड़ेंगे

गाँव गली तक शौचालय अब
हर घर की बेटी की हिम्मत
फिर भी स्वच्छ राह में रुक कर
उत्सर्जित करते हो छिपकर

देशवासी अपना हर बदले
छवि देश की बदलेंगे
हर भटके साथी को अपने
स्वच्छ राह पर मोड़ेंगे

हरा-भरा परिवेश हो अपना
आस-पास बहे स्वच्छ हवा
स्वस्थ रहें ना पड़े सोचना
खाने में मिसरी मेवा

नाटक के हर परिदृश्य में
श्रम और स्वास्थ्य को जोड़ेंगे
हर भटके साथी को अपने
स्वच्छ राह पर मोड़ेंगे

नहीं ज़रूरी दंडित होंगे
तभी नियम अपनाएँगे
स्वच्छ सभ्य सी आदत के बल
देश को स्वच्छ बनाएँगे

# ऑपरेशन सिंदूर

**शिल्की सुमन**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

जिहाद नहीं करता है कभी निर्दोष लहू की मांग
लांघ सीमा बर्बरता की तूने धर्म को भी किया बदनाम
न तो इसमें जबरन है न हुकूमत की है सिफारिश
यह तो है नूर खुदा का जिसमें हिमायत की है गुज़ारिश

हमने न कहा था तुमसे कभी कि छोड़ हमें तुम जाओ
चालाकों के बहकावे में आ दुनिया अपनी अलग बसाओ
पर विकृत सोच पाल तुमने स्वयं मां को ही काट डाला
खबरदार जो मुकुट पर उसकी आज नजर है डाला

दे परिचय कायरता का चुपके से तुमने वार किया
धरती के स्वर्ग की वादी पर सिंदूर का कत्ल-ए-आम किया
जिसकी कुर्बानी गाथा पर नतमस्तक है संपूर्ण विश्व
सिंदूर छीन उस हिंदुस्तानी के हृदय में भरने चले हो विष

हम हिंदुस्तान का आंचल है स्वच्छंद हवा में बहते हैं
प्रेम की पावन धारा से पुरुषार्थ को सींचा करते हैं
वीरों का पालन करते हैं ममता है हमारा धर्म सही
सौंदर्य की अलौकिक मूरत है पर सशक्त हैं कमजोर नहीं

हम अपने सीने का रक्त पिला फौलादें पैदा करते हैं
और हृदय की नर्म दीवारों पर बारूद चढ़ा कर रखते हैं
पुरुषार्थ को छाया देते हैं हम मस्त मोरनी बन
पर शत्रु की नींव हिलाते हैं खूंखार शेरनी बन

भूल गए हो तुम, हम तुम्हें इतिहास स्मरण कराते हैं
वर्तमान है इससे भी सशक्त आश्वासन तुम्हें दिलाते हैं
हमने झांसी की रणभूमि पर दुश्मन को धूल चटाया है
दे स्वयं आहुति अग्नि में राष्ट्र की अस्मिता को बचाया है

आओ अब याद दिलाएं तुम्हें हम गाथा हाड़ी रानी की
राष्ट्र की रक्षा खातिर जिसने दी अनोखी कुर्बानी थी
नई नवेली दुल्हन के प्रेम समक्ष जब आया रण
स्वयं अपने तलवार से उसने सर अपना कर दिया कलम

युद्ध भूमि प्रस्थान पूर्व राजा ने जब मांगी निशानी थी
बन रहा प्रेम बाधा कर्तव्य में समझ गई यह रानी थी
सिर काट अपना स्वयं उन्होंने भिजवाया निशानी स्वरूप
स्तब्ध राजा ने बांध वो सिर परास्त किया शत्रु को खूब

हम न केवल बन पद्मिनियाँ वफा में जौहर करते हैं
बल्कि बन लक्ष्मीबाई शत्रु के दांत भी खट्टे करते हैं
हम स्वयं काट सिर अपना युद्ध भूमि भिजवाते हैं
और पहन हमारी मुंड प्रिय भारत का शीर्ष बचाते हैं

कर पाया जिसका बाल न बांका विश्व विजेता सिकंदर
उस मां की मांग उजाड़ने चले हैं दो कौड़ी के बंदर
कर शर्मसार मानवता को तुमने सिंदूर ललकारा है
तो सुनो रिपु हमने भी आज महाकाल को पुकारा है

यह हिंदुस्तानी धरती है यहां स्वयं देवता बसते हैं
यहां चलकर अंगारों पर भी हम खुशी के आंसू से हंसते हैं
किसे कहते हैं दहलाना दिल यह तुमने क्या जाना है
आओ मैदान-ए-जंग में तुम्हें अब ये हमें समझाना है

यहां हर स्त्री हर पुरुष को देते हैं वो शक्ति ईश्वर
संपूर्णता का प्रतीक है जो कहलाता अर्धनारीश्वर
हर पुरुष में स्त्री शामिल है हर स्त्री में पुरुष समाहित
दोनों शक्तियां हो जाती एक जब राष्ट्र का शत्रु चाहे अहित

आतंक का नग्न तमाशा कर तुम हमें डराने आए हो
दहशत फैला हवाओं में हमारा स्वर्ग चुराने आए हो
एक-एक कर तुमसे अब कण-कण का साथ छूटेगा
सुनो दरिंदे तुमसे अब तुम्हारा ईश भी रूठेगा

जिस दिन वीरों की कुर्बानी हमें आवाज लगाएंगी
जिस दिन सरहद की हवाओं से हमारी मांगे आएंगी
लहू लिप्त चोंगा वीरों का पहन उपस्थित होंगे हम
खूंखार शस्त्र बन जाएगा हमारी काया का अंग-अंग

ज्वाला सी दहकती छाती से विष के फव्वारे छूटेंगे
हवा में उड़ते बालों से अग्नि अंगारे बरसेंगे
उड़ते आंचल के तरंग से हवा का रुख यूं बदलेगा
ले जाएगा सांसे खींच तेरी तू पानी को भी तरसेगा

जागृत होंगे मेघराज जब कंठ ध्वनि भरेगी हुंकार
बूंद-बूंद बन तीव्र अमल उतारेंगी उस दिन तेरी खाल
बढ़ते कदमों के पायल की ध्वनि में होगा वो कंपन
निगल जाएगी धरती तुम्हें आएगा ऐसा प्रचंड भूकंप

शुष्क पड़े नैनों के अश्रु जब करेंगे गंगा का आह्वान
आएगी बाढ़ ऐसी डूब जाएगा तेरा आसमान
जख्मी काया के गिरते लहू में होगा ऐसा तीक्ष्ण जहर
बरसों तक अन्न न उपजेगा भू हो जाएगी यूं बंजर

आह्वान करेंगे शेषनाग का यूं जिह्वा और दंत
अपाहिज होंगे 100 वंश लग गया जो इनका दंश
नखों की कोमल दीवारों पर स्वयं नरसिंह विराजेंगे
चीर कलेजा उन्हीं नखों से जिंदा लहू पी जाएंगे

खरबूजे की तरह कटा था कोई क्या भूल गए वो दिन
अब बारी तुम्हारी आई है लो दिन अपने तुम गिन
जीत उसकी खैरात नहीं बल है जिसके बाजू में
यह हक है उसका भारी जिसका पलड़ा न्याय के तराजू में

इस जीवंत चेतावनी संग तुम्हें देते हैं हम युद्ध विराम
दानवता छोड़ सीमा में अपने जीवन को दो आयाम
सिंदूर क्या ममता भी हमारी छीन अगर ले जाओगे
फिर भी हमारी धरती से तुम स्वर्ग चुरा ना पाओगे

खैरात समझ ले बैठे हो जो वो भी एक दिन गंवाओगे
बनेगा साक्षी अंबर जब खीरे की तरह छील दिए जाओगे
भारत का शीर्ष न कटने देंगे सुन लो आज यह खोल कान
है न केवल ये फर्ज हमारा मानवता की है यह जुबान

जय हिंद

**पहलगाम आतंकवादी हमले की चपेट में आकर अपना सिंदूर खोने वाली सभी साहसी पीड़िताओं को समर्पित।**

# रिश्ते क्या हैं?

**किरन**
आरटीआई प्रकोष्ठ

ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।
बार - बार चोट पहुंचाते हैं, फिर भी रिश्ते कहलाते हैं।
कितना भी झुक जाओ, समय आने पर ये रंग दिखाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।

पाण्डवों की तरह माफ करो, फिर भी कौरव बन जाते हैं।
जहर देकर मारना चाहें, फिर भी रिश्ते कहलाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।
जरूरत पड़ने पर पैरों पर गिर जाते हैं।

काम निकल जाए तो यही रिश्ते आंख दिखाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।
कभी ये रिश्ते भीष्म सी अखण्ड प्रतिज्ञा करवाते हैं।
और कभी भाईयों में महाभारत ये करवाते हैं।

ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।
कभी ये रिश्ते मिश्री से मीठे हो जाते हैं।
और कभी नीम से भी कड़वे बन जाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।

कहीं ये रिश्ते श्रीराम सा वनवास दिलाते हैं।
और कहीं सिंहासन पर पादुका से रिश्ते पूजे जाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं
कभी परेशानी में साथ खड़े हों।

कभी खुद परेशानी बन जाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।
कभी ये रिश्ते आजीवन कारावास दिलाते हैं।
और कहीं पत्थर पर पटक - पटक कर रिश्ते मारे जाते हैं।

ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं।
कभी ठंडी फुहार बन फूलों से महकाते हैं।
और कभी दिल में काटों से चुभ जाते हैं।
ये रिश्ते क्या हैं? समझ नहीं हमें आते हैं

# पर्यावरण की पुकार

**मदन मोहन मीना**
जनसंपर्क निदेशालय

हरियाली की चादर ओढ़े, धरती मुस्कुराए,
नीले अम्बर तले जीवन गुनगुनाए।
पेड़-पौधे, नदियाँ, झरने, सबका है साथ,
प्रकृति की गोद में है जीवन की बात।

पत्तों की सरसराहट, पंछियों का गीत,
इनकी मिठास में छुपा है एक सुखद संगीत।
साँसों की डोर बाँधे ये वनों का प्यार,
पर्यावरण है जीवन, इसका कर सम्मान।

काट रहे हम जिस डाली को रोज़,
सोचो, क्या बचेगा कल, जब होगी ये खोज?
पिघलते ग्लेशियर, सूखते झरने,
ये संकेत हैं, अब तो जाग।

चलो उठाएँ हम सब एक साथ क़दम,
संरक्षण करेंगे, करेंगे हरदम।
पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ, करें हम प्रयास,
स्वस्थ रहे धरती, सदा रहे प्रकाश।

धरती माँ की सेवा हो अपना धर्म,
तभी तो होगा उज्ज्वल जीवन का मर्म।

# समाज में महिलाओं की भूमिका

**वंदना ढींगरा**
उद्योग संपर्क एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय

सपनों की ऊँचाई पर उड़ी, नारी की महक,
कभी माँ, कभी बहन, कभी साथी की झलक।
सपनों की चादर में बुनती है नए विचार,
समाज की धारा में, नारी की सजग उपस्थिति का ऐलान।
संस्कृति परंपराओं में रंग भरी छवि,
संगीत, नृत्य, कला में, सृजन की पूरी शक्ति।
परंपरा की धरोहर को सजगता से संजोए,
घर के आँगन से लेकर, रंगमंच पर भी छाए।
आर्थिक महलों में, आत्मनिर्भरता की कहानी,
स्वरोजगार, उद्यमिता से खुद को सजाया।
नए दिशा में बढ़ते कदमों से,
सृजनात्मकता की ऊँचाई पर चढ़ते सितारे।
राजनीति की गलियों में भी, नारी का दम,
समानता की आवाज़, बदलाव का विज़न।
समाज के निर्णयों में, नया संचयन लाती,
सभी के लिए न्याय की राह खोलती जाती।
हर भूमिका में उसकी चमक बिखरी,
संबंधों के हर धागे में प्रेम का रंग घुला।
समाज की हर धुरी में नारी का योगदान,
अखंड प्रेम, सृजन, और न्याय का पर्यावरण।
समाज के हर कोने में, उसकी पहचान है गहराई,
जिसने समर्थ, नारी की छवि महकाई।
जिसके बिना जीवन की कल्पना अधूरी,
समाज की सम्पूर्णता, नारी की उपस्थिति से ही है पूरी।

# रिश्ते

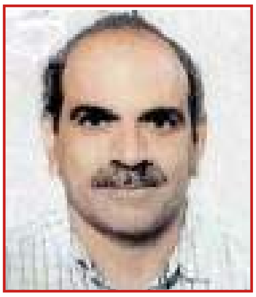

**दीपक कुमार**
कार्यालय, महानिदेशक (प्रौद्‌योगिकी प्रबंधन)

रिश्ते क्या हैं, रिश्ते प्यार भरा अहसास हैं।
हर रिश्ता अपने आप में बहुत खास है।
रिश्ते हम सबके जीवन के वृक्ष को
हरा-भरा और छायादार रखने की आस है।
रिश्ते निस्वार्थ प्रेम की ज़मीन पर
भावनाओं और सच्चाई के खाद-पानी
और परवाह की रोशनी में
पलते-बढ़ते और परवान चढ़ते हैं
रिश्ते सचमुच रेशम के कच्चे धागों से हैं
अगर तनाव ज्यादा हो तो टूट जाते हैं।
कुछ रिश्ते पिछले जन्मों के संस्कार से आते हैं
कुछ जन्म से अगर न निभाओ तो छूट जाते हैं
सदियों पहले
रिश्ते प्यार की चाशनी में पके होते थे,
अगर इसमें डूबते थे तो डूबते ही रहते थे।
फिर समां बदला
रिश्ते - चाशनी में डुबा निभाने के प्रयासों सा रसगुल्ला हो गया
ये स्वरूप बड़ा सुविधाजनक था और खूब सफल हो गया
और ये तो हद ही हो गई-
प्यार की चाशनी भी शुगर फ्री हो गई,
रिश्तों से अहसास और गरमाहट ही गायब हो गई,
अब तो न रस पकता है, न पगता है, न चढ़ता है,
हर इंसान आगे और आगे जाने के लिए दौड़ता है।
भौतिक प्रगति की होड़ में सब ऐसे होते जा रहे हैं,
रिश्ते अब जन्मों के साथ नहीं एक्सपायरी डेट वाले होते जा रहे हैं।

# सबक

**बसंत लाल**
प्रौद्योगिकी विकास निधि निदेशालय

कुछ लोग है जो खुद को, मगरूर समझते हैं,
खुद को खुदा और गैरों को, मजबूर समझते हैं।
कह दो उन्हें ये जाकर, है बदला हुआ जमाना,
बोओगे वही काटोगे, इतना समझ के आना॥
वो दौर था कुछ और, जब थे तुम्हीं फरिश्ते,
जैसे थे चाहते तुम, रखते बना के रिश्ते।
बदले जमाने में जो, खुद को बदल न पाये,
मिट गयी उनकी हस्ती, खुद को बचा पाये॥
इसलिये कह रहा हूँ, आओ मिटाये नफ़रत,
सबको गले लगाकर, जीवन बनाये जन्नत।
दुश्मन को मारने से, मिटती नहीं दुश्मनी,
जीवन नरक हो जानता, इतनी सी बात कहनी॥
यदि चाहते हो समाज में, मेरा भी सम्मान हो,
तो भूलकर भी खुद से, न किसी का अपमान हो।
सम्मान देना सीखो, खुद भी यही पाओगे,
बोओगे गर बबूल तो, अमिया कहां से खाओगे॥
लगता तुम्हें है यदि कोई है नीच कोई ऊँचा,
मैं सच बता रहा हूँ, तुम रोगी हो समूचा।
मिल करके किसी डॉक्टर से, इलाज कराइये,
इस नफ़रती रोग से, अपने को बचाइये॥

# आईपीएल

**वरूण लाकड़ा**
कार्मिक निदेशालय

वाह रे IPL, क्या गजब का खेल, कभी इधर-कभी उधर, वफादारी का मेल।
आज कोहली पे ताली, कल रोहित का छक्का, किस टीम के हम पक्के, ये दिल भी है अटका।
टीवी के आगे चिपके, रिमोट से नाता गहरा, हर चौके, हर छक्के पे, उठने लगे है नारा।
कमेंटेटर की बातें, लंबी, मीठी धार, "स्ट्राइक को घुमाया!" "फेंक दिया बाहर!"
हमें तो बस चाहिए, एक जोरदार सिक्स लगे, उससे पहले ही टाइम आउट, ऐड का शोर मचे।
पेप्सी हो या कुरकुरे, हर ब्रेक में है हल्ला, लगता है क्रिकेट कम, विज्ञापनों का है पल्ला।
DRS का ड्रामा, सांसे अटकी-अटकी सी, आउट है या नॉट आउट, ये कैसी पेचीदगी?
बल्ले का किनारा लगा, या पैड पे बस लगा, अंपायर का चेहरा देखो, जैसे कोई ठगा।
अक्सर अंपायर का कॉल, बस एक कंधा उचकाए, समझ ना आए हमें, जैसे गुगली कोई फिराए।
कभी खुशी कभी गम, ये टेक्नोलॉजी का खेल, फैसला आने तक, दिल में मचता है रेलमपेल।
नीलामी का तमाशा, क्या बताएं यार, करोड़ों में बिकते खिलाड़ी, बिना किसी विचार।
अनकैप्ड खिलाड़ी भी, बन जाते हैं लखपति, हमें तो बस मिलती है, सैलरी की रटारटी।
कोई लाखों में जाए, कोई कौड़ी के मोल, सोचते रहें हम, क्या है ये सब झोल?
कौन खिलाड़ी चलेगा, कौन बनेगा फ्लॉप, ज्योतिषी भी फेल, इस खेल का है ये टॉप।
चीयरलीडर का नाच, बॉलीवुड का गाना, कैच छूटे, रन आउट, ये कैसा अफसाना।
फील्डिंग में हुई गड़बड़, या स्ट्रेटेजी में चूक, सोशल मीडिया पे मीम्स, करते हैं खूब ठुक्क।
IPL है सर्कस, मस्ती का बाजार, दिमाग जाए छुट्टी पे, बस हँसी बेशुमार।
हारो या जीतो, ये चलता रहेगा कारवां, अगले साल फिर मिलेंगे, यही है अब प्रण।
तो पॉपकॉर्न उठाओ, रिमोट पकड़ो यार, एक और सीज़न है, मस्ती का अंबार।
IPL है अद्भुत, एक अनोखा संगम, क्रिकेट, ड्रामा और हँसी, जब तक ना हो खत्म।
ये सिर्फ खेल नहीं, ये है एक त्योहार, जहाँ हर घर बनता है, एक छोटा स्टेडियम यार!

# मेरा वजूद

**बिन्दु कंधारी**
कार्यालय, महानिदेशक (संसाधन एवं प्रबंधन)

सृष्टि को रचा होगा ब्रह्मा जी ने, गर ना होती जननी तो क्या होता
पालक होंगे नारायण जन जन के, गर ना होती माँ तो क्या होता
हर शय को मुकम्मल करके, गुम हो जाती हूँ इस वजूद से मैं
क्योंकि मुझे भी नवाज़ा है कुदरत ने ममता से।
हाँ मैं बेटी हूँ मेरे माता पिता की, जो देती है आहुति अपने सपनों की
ताकि सम्मान रहे कायम उनका, वो जीवन जो देन है अपनों की
हाँ मैं बहन हूँ मेरे भाई की, जो हर खुशी कर सकती है कुर्बान
उस रिश्ते की खातिर, जो पाक है, हर एक की है जान।
हाँ मैं हूँ प्रेयसी और अर्धांगिनी, तन मन धन से न्योछावर
किसी बेनाम से मुसाफिर की, हमसाया बनकर हमसफर
जीवन का सबसे खूबसूरत एहसास, इक नयी दुनिया में
नये रिश्तों को सहेजने संजोने की सरमाया बनकर।
मेरा अस्तित्व मिट रहा है, क्षण प्रतिक्षण, दिन प्रतिदिन
मेरी ममता उमड़ रही है, मेरे ही अंश के लिये
सींचना है अब मुझे उस नये पनप रहे जीवन को
स्वयं को फिर मिटा देना है किसी के वंश के लिये।
जीवन की इस डगर पर, हर बार कोई अपना
ज़्यादा ज़रुरी हो जाता है और खुश हो जाती हूँ मैं
मेरे उस अपने की खुशी में।
पराजित नहीं हूँ मैं, बेशक, क्योंकि मेरी हार है, मेरे ही अपनों के लिये।

# रणभूमि की ललकार

**मोहित लाल**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

बॉर्डर पर जब बादल गरजते हैं,
तो वो सिर्फ मौसम नहीं होता –
कहीं कोई माँ सिंदूर थामे
हर सांझ तिरंगे की ओर नज़रें टिकाए बैठी होती है।

ऑपरेशन सिंदूर कोई योजना नहीं,
वो हर फौजी की वह कसम है
कि जब भी देश पुकारे,
तो जान भी हथेली पर सज जाती है।

जब युद्ध का बिगुल बजता है,
हर घर से उठता है एक सिपाही –
ना आँखों में डर, ना होठों पर शिकवा,
बस "जय हिंद" की गूंज होती है हर स्वर में।

गोली जब सीने से आर-पार होती है,
तो झुकाता नहीं वो वर्दीधारी सिर –
क्योंकि उसके पीछे खड़ा होता है
एक पत्नी का सिंदूर,
और एक माँ की नज़र – बंद दरवाज़े पर।

वो जानता है –
शायद लौटेगा राख बनकर,
मगर देश की मिट्टी पर
उसका नाम अमर बन जाएगा।

रणभूमि काँप उठती है
जब भारत का जवान हुंकार भरता है,
और जब तिरंगा हवा में लहराता है,
दुश्मन का हौसला खुद सिहर जाता है।

ऑपरेशन सिंदूर
सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं,
वो हर स्त्री की प्रतीक्षा है –
जो अपने सिंदूर को
देश के नाम समर्पित कर चुकी है।

युद्ध में केवल गोली नहीं चलती –
हर साँस, हर वादा, हर रिश्ता
मोर्चे पर साथ चलता है।
और जब कोई फौजी गिरता है,
तो पूरा राष्ट्र उठ खड़ा होता है।

# खून की मिट्टी में उगते हैं सिपाही

**विशाल कुमार**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

चौदह फरवरी...
किसी के लिए बस एक तारीख,
किसी के लिए एक ज़ख़्म – अब तक न भरा।
वो दिन नहीं बीता,
वो आज भी हर माँ की नींद में सुलगता है।

जिनके सीने पर लिखा था 'CRPF',
उनकी वर्दियाँ अब तिरंगे में लिपटी पड़ी हैं।
वो जवान –
जिनके हाथों में चाय की प्याली होनी थी,
उनके हिस्से आई
बारूद की चाय... और लहू की चुप्पी।

वो बस नहीं चली थी –
वो देश की धड़कन ले जा रही थी।
एक पल... और सब कुछ ख़ामोश।
ना कोई अलार्म,
ना कोई अलविदा।

किसी माँ के कंगन की खनक थम गई,
किसी बहन की राखी अधूरी रह गई,
किसी बेटी ने अपने खिलौनों से कहना छोड़ दिया–
"पापा आ रहे हैं।"

दुश्मन ने सोचा – डर जाएगा देश,
पर उन्हें क्या पता –
जब भारत के जवान गिरते हैं,
तो माटी भी बंदूक थाम लेती है।

हम रोए ज़रूर थे,
पर कमज़ोर नहीं हुए।
हम टूटे थे,
पर बदले की आग में और भी जुड़ गए।

पुलवामा सिर्फ एक हमला नहीं था –
वो भारत की रगों में लिखी एक कहानी थी,
जहाँ ख़ून बहा, पर सिर नहीं झुका।

और याद रखना –
जो वर्दियाँ जलती हैं,
वो राख नहीं बनतीं –
शपथ बन जाती हैं।

# वतन के वास्ते

**आकाश कुमार**
कार्यालय, महानिदेशक (प्रौद्योगिकी प्रबंधन)

माटी की खुशबू से जुड़ा है नाता,
भारत मां से सबसे प्यारा रिश्ता।
तन-मन अर्पित कर दूं मैं उस पर,
जिसने सिखाया जीना सच्चा रास्ता।
सीमा पर जो सैनिक जागता है रातों में,
नींद नहीं आती उसे अपनों की बातों में।
देश की रक्षा ही जीवन का अर्थ है,
बलिदान में ही उसे परम सुख प्राप्त है।
हर खेत खिले, हर बच्चा पढ़े,
हर कोना देश का उजियारा गढ़े।
हम मिलकर ऐसा भारत बनाएं,
जहां प्रेम, शांति और विकास सजाएं।
तिरंगा लहराए ऊँचा आसमान में,
हर दिल धड़कता हो हिंदुस्तान में।
भारत माता के चरणों में शीश नवाएं,
देशभक्ति की लौ कभी न बुझने पाएं।

# रील्स में हंसता समाज

**पूजा कुमारी**
आरटीआई प्रकोष्ठ

कहीं कोई गिरा सबने हंसी उड़ाई
कैमरे में कैद हुई संवेदना की रूलाई ।
लाइक की चाह में दिल भी बेच डाले,
झूठे फिल्टर ने चेहरे बदल डाले ॥

खाना खिला भूखे को बना डाला वीडियो,
नेकी का हिसाब लाइक से आंक डाला ।
मंदिर में जाना भी मोबाईल के साथ हो गया,
बिना उसके समय बिताना भी दुष्वार हो गया ॥

मां रसोई में जलती रही धुंए संग,
बेटा मोबाईल पर नाचता रहा हर रंग ।
पिता की खांसी स्टेटस में नहीं आई,
ट्रेंडिंग नहीं थी वायरल वो कहां हो पाई ॥

दुनिया हंस रही है पर असल में टूट रही,
रील्स की दुनिया में जिंदगी छूट रही ।
सवाल यह नही कि मोबाईल कितना स्मार्ट हुआ,
सवाल है कि इंसान कितना बेकार हुआ ॥

# राजभाषा खंड

**हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।**

–राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

# डीआरडीओ में राजभाषा: एक सूत्रधार

**ले. कर्नल अभिनव कुमार**
जनसंपर्क निदेशालय

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) देश की रक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुसंधान और नवाचार का प्रमुख केंद्र है। भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यरत यह संगठन रक्षा तकनीकों के विकास में आत्मनिर्भरता की दिशा में निरंतर अग्रसर है। डीआरडीओ की भूमिका न केवल अत्याधुनिक रक्षा प्रणालियों और प्रौद्योगिकी के अनुसंधान और विकास में है, बल्कि यह देश की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए भी प्रतिबद्ध है।

राजभाषा हिंदी का प्रभावी प्रयोग किसी भी संगठन के प्रशासनिक कार्यों की दक्षता को बढ़ाने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता को भी सुदृढ़ करता है। डीआरडीओ में राजभाषा हिंदी केवल संचार का एक माध्यम नहीं, बल्कि संगठन की सशक्त पहचान का एक अभिन्न अंग भी है।

## राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में डीआरडीओ की भूमिका

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप डीआरडीओ में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। संगठन अपने अधीनस्थ प्रयोगशालाओं और कार्यालयों के साथ मिलकर हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न प्रयास कर रहा है।

### 1. पत्राचार में हिंदी का प्रयोग

डीआरडीओ में "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्र के अनुसार पत्राचार में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाता है। तिमाही प्रगति रिपोर्ट के अनुसार, हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देने का अनुपात बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। डीआरडीओ इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है कि संगठन के अंतर्गत सभी कार्यालय अपने पत्राचार में हिंदी को प्राथमिकता दें।

### 2. फाइलों और टिप्पणियों में हिंदी का उपयोग

डीआरडीओ में फाइलों पर टिप्पणियां हिंदी में लिखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाता है। प्रत्येक तिमाही में हिंदी टिप्पणियों की संख्या को बढ़ाने हेतु कार्यालयों को निर्देशित किया जाता है। इससे न केवल सरकारी कार्यों की सुगमता बढ़ती है, बल्कि हिंदी में कार्य करने की दक्षता भी विकसित होती है।

### 3. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

डीआरडीओ की सभी प्रयोगशालाओं और कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित की गई है। इन समितियों की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं, जिनमें हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उठाए गए कदमों की समीक्षा की जाती है। प्रत्येक बैठक में राजभाषा से जुड़े मुद्दों और उनकी प्रगति पर विचार-विमर्श किया जाता है।

### 4. हिंदी कार्यशालाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए डीआरडीओ समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। यह कार्यशालाएं न केवल कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं, बल्कि उन्हें हिंदी टाइपिंग, राजभाषा नीति और तकनीकी शब्दावली से भी परिचित कराती हैं।

### 5. निरीक्षण और मूल्यांकन

डीआरडीओ में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए नियमित निरीक्षण किए जाते हैं। संगठन के वरिष्ठ अधिकारी समय-समय पर अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण कर हिंदी के प्रयोग की स्थिति का मूल्यांकन करते हैं। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भी डीआरडीओ के मुख्यालय और विभिन्न प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया जाता है, जिससे संगठन में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

## राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने की अन्य पहलें

### 1. पुस्तकालयों में हिंदी साहित्य का संवर्धन

डीआरडीओ के पुस्तकालयों में हिंदी पुस्तकों को प्राथमिकता दी जाती है। संगठन के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी भाषा और तकनीकी विषयों से संबंधित पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है ताकि अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में तकनीकी विषयों का अध्ययन कर सकें।

### 2. आईटी और डिजिटल माध्यमों में हिंदी का प्रयोग

तकनीकी युग में डिजिटल संचार और आईटी का उपयोग बढ़ा है। डीआरडीओ ने डिजिटल प्लेटफॉर्म और सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता दी है। हिंदी टाइपिंग टूल, द्विभाषी वेबसाइट और हिंदी में ई-मेल संचार को बढ़ावा दिया गया है।

### 3. हिंदी में तकनीकी शब्दावली का विकास

डीआरडीओ में तकनीकी शब्दावली के मानकीकरण की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। संगठन विभिन्न रक्षा अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित तकनीकी शब्दों का हिंदी अनुवाद सुनिश्चित कर रहा है, जिससे वैज्ञानिक और तकनीकी दस्तावेजों को हिंदी में तैयार किया जा सके।

### 4. हिंदी पखवाड़ा और साहित्यिक गतिविधियां

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए डीआरडीओ प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा आयोजित करता है। इस दौरान निबंध लेखन, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, हिंदी नाटक और कविता पाठ जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, जिससे कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़े।

### 5. हिंदी समाचार पत्र और पत्रिकाओं का प्रोत्साहन

डीआरडीओ के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी समाचार पत्र और पत्रिकाओं को बढ़ावा दिया जाता है। कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों पर लेख लिखें और उन्हें प्रकाशित करवाएं।

## डीआरडीओ का लक्ष्य: हिंदी को एक प्रभावी कार्य भाषा बनाना

डीआरडीओ राजभाषा हिंदी के संवर्धन और उसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सतत प्रयासरत है। संगठन का उद्देश्य न केवल प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का अधिकतम उपयोग करना है, बल्कि इसे अनुसंधान और तकनीकी विकास की भाषा के रूप में स्थापित करना भी है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप डीआरडीओ यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि संगठन के सभी अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में दक्ष हों और इसका प्रयोग अपने दैनिक कार्यों में करें।

## निष्कर्ष

डीआरडीओ में राजभाषा हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि संगठन के मूल्यों, सिद्धांतों और राष्ट्रीय एकता की भावना को सशक्त करने का माध्यम भी है। प्रशासनिक प्रक्रियाओं से लेकर तकनीकी अनुसंधान तक हिंदी का प्रयोग संगठन की कार्यकुशलता और आत्मनिर्भरता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन डीआरडीओ को न केवल प्रशासनिक रूप से अधिक संगठित बनाता है, बल्कि वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान में भी भाषा की बाधाओं को समाप्त करता है। डीआरडीओ की यह पहल भारत को रक्षा अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राजभाषा के इस प्रभावी कार्यान्वयन से डीआरडीओ अपने मिशन **"शक्ति, विज्ञान और स्वावलंबन"** को और अधिक सशक्त बना रहा है।

# संसदीय राजभाषा समिति: एक नियामक शक्ति

**सुजीत कुमार मेहता**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

भारत, जिसकी आत्मा उसकी भाषाओं में बसती है, एक ऐसा राष्ट्र है जहाँ भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक जुड़ाव और राष्ट्रीय एकता का आधार भी है। यह देश न केवल बहुभाषी है, बल्कि भाषिक विविधता की दृष्टि से विश्व में अद्वितीय है। संविधान की आठवीं अनुसूची में आज 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है, और इनके अतिरिक्त सैकड़ों बोलियाँ, उपभाषाएँ एवं क्षेत्रीय भाषाएँ हमारे देश के सामाजिक ताने-बाने में गहराई से बुनी हुई हैं।

जब भारत स्वतंत्र हुआ और नए राष्ट्र का संविधान तैयार किया गया, तब सबसे जटिल और भावनात्मक रूप से संवेदनशील प्रश्नों में से एक था - राष्ट्र की भाषा क्या हो? हिंदी, जो उस समय तक व्यापक रूप से उत्तर भारत में बोली जाती थी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संपर्क भाषा के रूप में उपयोग में लाई जाती रही, को संघ की राजभाषा घोषित किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक इस विषय को विशेष स्थान मिला, जहाँ हिंदी को राजभाषा बनाते हुए अंग्रेज़ी को एक सहायक भाषा के रूप में सीमित अवधि तक साथ रखने का प्रावधान किया गया। हालांकि यह प्रावधान समयबद्ध था, परंतु हिंदी के व्यवहारिक प्रयोग और उसकी स्वीकार्यता को लेकर राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर समय-समय पर नई चुनौतियाँ उभरती रहीं। इसी संदर्भ में "संसदीय राजभाषा समिति" का गठन वर्ष 1976 में किया गया – एक ऐसा संवैधानिक तंत्र, जो राजभाषा हिंदी के प्रयोग, विकास और निगरानी से संबंधित सभी प्रक्रियाओं पर दृष्टि रखता है।

यह समिति केवल एक प्रशासनिक इकाई नहीं है, बल्कि एक ऐसा मंच है जहाँ भारतीय लोकतंत्र की भाषाई आत्मा की परख होती है। यह संस्था सुनिश्चित करती है कि भारत के संघीय ढांचे में, विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग संविधान की भावना के अनुरूप हो, न तो थोपा जाए, न ही उपेक्षित किया जाए।

इसी संदर्भ में कार्यालयी हिंदी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। कार्यालयों में प्रयुक्त भाषा न केवल शासन के कार्यों को दिशा देती है, बल्कि जनता के साथ राज्य के संवाद की शैली भी निर्धारित करती है। यदि प्रशासन की भाषा सरल, सुबोध और स्थानीय जनमानस से जुड़ी हुई है, तो लोकतांत्रिक शासन की प्रक्रिया भी अधिक पारदर्शी और सहभागी बनती है।

आज जब भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट गवर्नेंस, और लोक-केन्द्रित नीतियों को बढ़ावा दे रहा है, तब यह आवश्यक हो गया है कि राजभाषा समिति और कार्यालयी

हिंदी पर गहन विमर्श हो। क्या हिंदी प्रशासन में समानता और सुगमता ला रही है? क्या यह क्षेत्रीय असंतोष को जन्म दे रही है या उन्हें समाहित कर रही है? क्या कार्यालयी हिंदी तकनीक और वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है?

## संसदीय राजभाषा समिति का कानूनी आधार

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में एकता और प्रशासनिक कुशलता के लिए एक संपर्क भाषा आवश्यक थी। हिंदी को राजभाषा बनाकर, और अंग्रेज़ी को सहायक भाषा के रूप में बनाए रखकर भारत ने एक संतुलित भाषिक शासन व्यवस्था विकसित की। लेकिन इस व्यवस्था की समीक्षा, अनुशंसा और प्रगति पर नियंत्रण के लिए एक सतत निगरानी संस्था की आवश्यकता थी, जिसे संसदीय राजभाषा समिति ने पूर्ण किया।

- राजभाषा अधिनियम की धारा **4(1)** के अनुसार, केंद्र सरकार द्वारा संसदीय राजभाषा समिति गठित की जाती है, जो संविधान व उपरोक्त अधिनियम के प्रावधानों के अनुपालन की निगरानी करती है।
- इसका गठन राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है और यह समिति हर पाँच वर्ष में एक रिपोर्ट प्रस्तुत करती है।

## गठन, संगठन और कार्यप्रणाली

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम, **1963** की धारा **4(1)** के अंतर्गत किया गया। इसका उद्देश्य है:

"यह समीक्षा करना कि केंद्र सरकार द्वारा किस सीमा तक हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है और उस पर संसद को रिपोर्ट प्रस्तुत करना।"

इस समिति का गठन पहली बार वर्ष **1976** में हुआ, और तब से अब तक यह कई बार पुनर्गठित हो चुकी है। यह समिति केंद्र सरकार द्वारा गठित होती है और इसकी रिपोर्टें राष्ट्रपति को प्रस्तुत की जाती हैं। बाद में इन्हें लोकसभा व राज्यसभा में प्रस्तुत किया जाता है।

संसदीय राजभाषा समिति का संगठनात्मक ढाँचा भारतीय लोकतंत्र की बहुदलीय एवं प्रतिनिधिक प्रणाली का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह समिति एक बहु-पक्षीय संसदीय निकाय के रूप में गठित की जाती है, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के सदस्य, लोकसभा और राज्यसभा से चुने जाते हैं। समिति में कुल 30 सदस्य होते हैं, जिनमें 20 सदस्य लोकसभा और 10 सदस्य राज्यसभा से मनोनीत किए जाते हैं। इनका चयन संसद सदस्यों के बीच समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर किया जाता है, जिससे समिति में देश की विविध वैचारिक धाराओं और भाषाई क्षेत्रों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

समिति के सदस्य प्रायः अपने संसद कार्यकाल की अवधि तक ही कार्य करते हैं, और समिति का औपचारिक कार्यकाल पाँच वर्षों का निर्धारित होता है। इस समिति के अध्यक्ष पद पर सदैव केंद्रीय

गृह मंत्री होते हैं, जो इसे केवल प्रशासनिक दिशा ही नहीं, बल्कि भाषाई नीति-निर्धारण में निर्णायक भूमिका भी प्रदान करते हैं। वर्तमान में (2024-25) यह दायित्व श्री अमित शाह द्वारा निभाया जा रहा है, जो समिति को नीतिगत स्तर पर सक्रिय नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। अध्यक्ष की भूमिका केवल औपचारिक न होकर, समिति के निरीक्षण, अनुशंसा और अनुपालन के मामलों में केंद्रीय मार्गदर्शक के रूप में होती है। इस प्रकार, यह समिति संसद और कार्यपालिका के बीच सेतु के रूप में कार्य करती है, जो न केवल हिंदी के प्रयोग की स्थिति की निगरानी करती है, बल्कि देश की राजभाषा नीति को जीवंत और गतिशील बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संसदीय राजभाषा समिति की कार्यप्रणाली अत्यंत सुनियोजित, अनुशासित और बहुस्तरीय है। कार्य विभाजन की दृष्टि से समिति अपने भीतर कई उप-समितियाँ गठित करती है, जो विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, स्वायत्त संस्थानों, विश्वविद्यालयों, न्यायालयों, पुलिस इकाइयों और रक्षा प्रतिष्ठानों आदि का निरीक्षण करती हैं। ये उप-समितियाँ वस्तुतः समिति के आधार स्तंभ हैं, जिनके माध्यम से देश भर में हिंदी के कार्यालयी प्रयोग की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाता है।

इन उप-समितियों का कार्य केवल सतही निरीक्षण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वे गहराई से यह परखती हैं कि क्या संबंधित कार्यालयों में हिंदी में नोटिंग और ड्राफ्टिंग की जा रही है, क्या अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में सक्षम हैं, क्या उन्हें राजभाषा प्रशिक्षण दिया गया है और क्या सभी आवश्यक दस्तावेज़ द्विभाषिक रूप में उपलब्ध हैं। इसके साथ ही वे यह भी देखती हैं कि भाषा संबंधी विज्ञप्तियों, तकनीकी शब्दावली के प्रयोग, आंतरिक संचार और लोक संवाद में हिंदी की कितनी सुलभता और गुणवत्ता है।

समिति की कार्यप्रणाली को तीन प्रमुख चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रथम चरण निरीक्षण और मूल्यांकन का होता है, जिसके अंतर्गत उप-समितियाँ कार्यालयों का दौरा कर के वास्तविक कार्य-स्थितियों का प्रत्यक्ष अवलोकन करती हैं। दूसरा चरण आँकड़ों के संकलन और विश्लेषण का होता है, जिसमें निरीक्षण के दौरान एक पूर्वनिर्धारित प्रारूप और प्रश्नावली के माध्यम से गहन आँकड़े एकत्र किए जाते हैं। इन आँकड़ों में हिंदी प्रयोग का प्रतिशत, हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों की संख्या, त्रैमासिक राजभाषा प्रगति रिपोर्टों की उपलब्धता, तकनीकी शब्दावली का प्रयोग, तथा डिजिटल मंचों पर हिंदी की उपस्थिति आदि बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

तीसरे और अंतिम चरण में, उप-समितियों द्वारा संकलित अनुशंसाओं को एकत्रित कर मुख्य समिति एक समेकित रिपोर्ट तैयार करती है। यह रिपोर्ट औपचारिक रूप से राष्ट्रपति को सौंपी जाती है, और तत्पश्चात लोकसभा तथा राज्यसभा में प्रस्तुत की जाती है। रिपोर्टों में उल्लिखित सुझावों को गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के माध्यम से संबंधित मंत्रालयों, विभागों और राज्य सरकारों को भेजा जाता है, जिससे उनका समयबद्ध कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सके। इस प्रक्रिया के माध्यम से हिंदी का प्रयोग केवल एक प्रशासनिक निर्देश न रहकर, एक सतत निगरानी और सुधार की नीति का अंग बन जाता है।

## संसदीय राजभाषा समिति का महत्त्व

भारत के भाषाई, प्रशासनिक और संवैधानिक ढाँचे में बहुआयामी रूप दिखाई देता है। यह समिति केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार का औजार नहीं, बल्कि भारतीय संघ, लोकतंत्र और भाषिक विविधता के बीच संतुलन स्थापित करने का एक सक्रिय माध्यम है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में वर्णित राजभाषा संबंधी संकल्पों की व्यावहारिक पूर्ति इस समिति के माध्यम से ही होती है। हिंदी के प्रयोग का मूल्यांकन करते समय यह समिति न केवल प्रशासनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, बल्कि वह यह सुनिश्चित करती है कि देश के विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में संवेदनशीलता और समरसता बनी रहे। समिति का कार्य राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके सदस्य संसद के विभिन्न दलों और राज्यों से आते हैं, जिससे इसकी अनुशंसाओं में राष्ट्रीय सहमति की झलक मिलती है।

इसके अतिरिक्त, समिति प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि के लिए कार्य करती है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से कार्य में एकरूपता, स्पष्टता और पारदर्शिता आती है। साथ ही यह समिति यह भी देखती है कि नागरिकों को प्रशासन, न्याय और सेवा प्रदाय की प्रक्रियाओं में भाषा को लेकर कोई असुविधा न हो। विशेष रूप से डिजिटल भारत के दौर में, समिति यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि वेबसाइटों, मोबाइल ऐप्स और पोर्टलों पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की उपलब्धता बनी रहे, जिससे भाषाई डिजिटल विभाजन न पनपे। शिक्षा, न्यायपालिका और रक्षा क्षेत्र जैसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग की दिशा में जो अनुशंसाएँ समिति करती है, वे न केवल नीति निर्धारण को दिशा देती हैं, बल्कि एक बड़े वर्ग को सशक्त बनाती हैं।

सबसे अहम यह कि संसदीय राजभाषा समिति एक उत्तरदायी, पारदर्शी और निरंतर निगरानी रखने वाला निकाय है, जो राष्ट्रपति और संसद–दोनों को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। इस कारण यह समिति प्रशासनिक तंत्र में भाषाई नीति की वास्तविक स्थिति को सामने लाती है और उसे सुधारने की दिशा में सुझाव भी देती है। यही विशेषताएँ इसे अन्य किसी भी भाषा से संबंधित निकायों की तुलना में अधिक प्रभावशाली और संवैधानिक रूप से सशक्त बनाती हैं। निःसंदेह, यह समिति हिंदी के संवर्धन का एक सक्रिय साधन है, परंतु उससे भी अधिक, यह भारत की भाषाई आत्मा की रक्षक और संवाहक के रूप में कार्य करती है।

# कार्यालयी हिंदी: मौलिकता का अभाव

**श्रद्धा वर्मा**
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय

भारतीय प्रशासनिक प्रणाली में हिंदी का स्थान संविधान द्वारा सुनिश्चित एक राजभाषा के रूप में महत्वपूर्ण है। किंतु इसका प्रयोग जितना व्यापक है, उतनी ही जटिल इसकी व्यावहारिक चुनौतियाँ भी हैं। कार्यालयी हिंदी को लेकर जो सबसे बड़ा संकट उभरता है, वह है मौलिक लेखन की अनुपस्थिति और अनुवाद की अत्यधिक निर्भरता। सरकारी फाइलों, आदेशों, परिपत्रों, प्रेस विज्ञप्तियों और नीति दस्तावेज़ों में जो हिंदी प्रकट होती है, वह अधिकांशतः अंग्रेज़ी से अनुवादित होती है, न कि स्वतंत्र रूप से हिंदी में सोची और लिखी गई। यह स्थिति न केवल भाषा की सहजता और व्यावहारिकता को प्रभावित करती है, बल्कि हिंदी को एक सशक्त प्रशासनिक उपकरण बनने से भी रोकती है।

अनुवाद द्वारा तैयार की गई हिंदी अक्सर जटिल, कृत्रिम और अभिव्यक्तिगत रूप से बोझिल होती है। यह एक ऐसी भाषा बन जाती है जो न तो अंग्रेज़ी जैसी सटीक है, न ही हिंदी जैसी आत्मीय। अनुवाद प्रक्रिया में मूल भाषा की संरचना, मुहावरे, और भावभूमि हिंदी पर थोपी जाती है, जिससे संवाद में एक अजीब सी दूरियाँ उत्पन्न होती हैं। “The meeting is postponed until further notice” को जब “यह बैठक अग्रिम सूचना तक स्थगित की जाती है” कहा जाता है, तो यह यद्यपि व्याकरणिक रूप से सही है, परंतु उसमें व्यवहार की सहजता या सामाजिकता नहीं झलकती। हिंदी भाषी कर्मचारी और अधिकारी भी अक्सर उस भाषा से असहज हो जाते हैं, जो उनकी अपनी होते हुए भी ‘पराई’ लगती है। इसका मूल कारण यह है कि वह भाषा सोची गई नहीं, बल्कि अनूदित है।

मौलिक लेखन के अभाव में कार्यालयी हिंदी एक “दूसरी भाषा” बनकर रह गई है एक ऐसी भाषा जिसे पढ़ा तो जा सकता है, परंतु जिसमें सहजता से सोचना या लिखना कठिन होता है। प्रशासनिक अधिकारियों की सोच की भाषा आज भी अंग्रेज़ी है, और जब विचार अंग्रेज़ी में होंगे, तो स्वाभाविक है कि उसका प्रतिफलन भी अंग्रेज़ी में ही होगा। इसके बाद यदि केवल अनुवाद के भरोसे हिंदी में अभिव्यक्ति की अपेक्षा की जाए, तो वह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से दोषपूर्ण होगी। यह न केवल भाषा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, बल्कि संप्रेषणीयता की स्पष्टता को भी धुंधला कर देती है।

सरकारी दस्तावेजों में सटीकता अत्यंत आवश्यक होती है, नीतियाँ, दिशा-निर्देश, वित्तीय विवरण, विधायी आदेश, सबकुछ एक-एक शब्द पर आधारित होते हैं। ऐसे में अनुवाद यदि मात्र “शब्द-स्थानांतरण” बन जाए, तो गलतफहमी या विधिक अस्पष्टता की संभावना बनी रहती है। उदाहरण के लिए, “Legal liability” को यदि “कानूनी देनदारी” के स्थान पर “कानूनी ज़िम्मेदारी” लिखा जाए, तो अर्थ का गंभीर अंतर उत्पन्न हो सकता है। यही कारण है कि कई बार न्यायालयों या प्रशासन में अनुवादित हिंदी दस्तावेजों को स्वीकार करने में हिचकिचाहट होती है।

मौलिक लेखन न केवल भाषा को गरिमा प्रदान करता है, बल्कि वह शासन को जन के निकट लाता है। जब अधिकारी सीधे हिंदी में सोचकर दस्तावेज तैयार करते हैं, तो उसमें न केवल स्पष्टता होती है,

बल्कि संदर्भ, संस्कृति और सामाजिक चेतना भी समाहित होती है। मौलिक हिंदी लेखन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सादगी और उद्देश्य के अनुरूप वाक्य-रचना देखने को मिलती है। यह शैली प्रशासनिक भाषा को केवल अधिकार का माध्यम नहीं, संवाद और सेवा का औजार बना देती है।

यह भी विचारणीय है कि राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित अधिकतर हिंदी कार्यशालाएँ आज भी अनुवाद कौशल पर केंद्रित रहती हैं। प्रशिक्षण का उद्देश्य यह होता है कि अंग्रेज़ी दस्तावेज़ों का हिंदी अनुवाद कैसे किया जाए, न कि यह कि हिंदी में कैसे स्वतंत्र रूप से नीति, पत्राचार या आलेख लिखा जाए। जब तक अधिकारियों को हिंदी में स्वतंत्र सोचने और लिखने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जाएगा, तब तक मौलिक लेखन संभव नहीं हो सकेगा। हिंदी में तकनीकी या विधिक लेखन केवल व्याकरणिक ज्ञान से नहीं, बल्कि विषय-विवेक, शैलीगत दक्षता और सोच के आत्मविश्वास से विकसित होता है।

इस समस्या का एक और पक्ष है – मानसिकता। कार्यालयी व्यवस्था में हिंदी को आज भी एक "अनुवर्ती भाषा" की तरह देखा जाता है। अधिकांश विभागों में पहले अंग्रेज़ी में फाइल तैयार होती है, और फिर अनुवाद विभाग या राजभाषा अनुभाग में भेज दी जाती है। इससे हिंदी लेखन की प्राथमिकता नहीं बनती। एक स्वाभाविक संकोच और शंका बनी रहती है कि क्या हिंदी में लिखा गया दस्तावेज़ पर्याप्त गंभीर या तकनीकी होगा? यह मानसिकता न केवल भाषा के प्रति अविश्वास को दर्शाती है, बल्कि राजभाषा नीति की आत्मा के भी विपरीत है। यदि हिंदी को वास्तव में प्रशासन की भाषा बनाना है, तो उसे विकल्प नहीं, प्राथमिकता बनाना होगा।

कार्यालयी हिंदी की गुणवत्ता सुधारने के लिए अनुवाद की जगह मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करना अनिवार्य है। इसके लिए सबसे पहले नीतिगत स्तर पर यह स्वीकार करना होगा कि अनुवाद एक सहायक प्रक्रिया है, मुख्य नहीं। राजभाषा नीति में स्पष्ट निर्देश होने चाहिए कि जहाँ संभव हो, वहाँ दस्तावेज़ हिंदी में ही प्रारंभिक रूप से तैयार किए जाएँ। इसके लिए विभागीय हिंदी लेखकों या सलाहकारों की नियुक्ति की जा सकती है, जिन्हें मौलिक लेखन का अनुभव हो। साथ ही, ऐसे लेखन को राजभाषा पुरस्कार, प्रकाशन अवसर और प्रशंसा प्रमाणपत्रों के माध्यम से मान्यता दी जाए।

तकनीकी समाधान भी इस दिशा में सहायक हो सकते हैं। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित हिंदी लेखन उपकरण उपलब्ध हैं, जो टेम्पलेट, शब्द सुझाव, व्याकरण सुधार, और लेखन संरचना में सहायता करते हैं। यदि अधिकारियों को इनका प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे अनुवाद की आवश्यकता के बिना भी प्रभावशाली हिंदी लेखन कर सकते हैं। यह प्रयास न केवल भाषा को सशक्त करेगा, बल्कि कामकाज की गति और प्रभावशीलता में भी वृद्धि करेगा।

मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए एक और सशक्त उपाय यह हो सकता है कि मंत्रालयों और विभागों में "हिंदी में मौलिक रूप से तैयार की गई" फाइलों की संख्या की अलग से गणना और सराहना हो। आज अधिकतर राजभाषा त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट में केवल हिंदी प्रयोग प्रतिशत देखा जाता है, जबकि यह नहीं जाना जाता कि वह लेखन मौलिक था या अनुवादित। यदि यह भेद किया जाए और मौलिकता को महत्व दिया जाए, तो हिंदी के विकास को नई दिशा मिल सकती है।

न्यायपालिका, शिक्षा और तकनीकी संस्थानों में भी मौलिक लेखन का अभ्यास बढ़ाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालयों में हिंदी में शोध-प्रस्तावों और शैक्षणिक रिपोर्टों को केवल अनुवाद के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र भाषा में तैयार करने को बढ़ावा दिया जाए। इसी प्रकार, तकनीकी विषयों, जैसे आईटी, इंजीनियरिंग, पर्यावरण आदि में हिंदी में मौलिक लेखन करने वाले विद्यार्थियों और प्रोफेसरों को भी प्रोत्साहन मिले।

हिंदी के मौलिक लेखन को बढ़ावा देने का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है राजभाषा नीति की भाषाई दृष्टि का पुनरावलोकन। वर्तमान व्यवस्था में अनुवाद और टर्मिनोलॉजी आधारित कार्य को इतना प्रमुख बना दिया गया है कि मौलिक लेखन को हाशिये पर डाल दिया गया है। परिणामस्वरूप, अधिकारी यह समझने लगते हैं कि हिंदी केवल "दूसरी पंक्ति की भाषा" है एक ऐसी भाषा जिसे औपचारिकता के लिए निभाया जाता है, न कि सोचने और रणनीति तय करने के लिए। इस मानसिकता को बदलने के लिए आवश्यक है कि हिंदी को केवल रूपांतरण की भाषा नहीं, चिंतन और संवाद की भाषा के रूप में देखा जाए। यह तब ही संभव होगा जब हिंदी में प्रशासनिक चिंतन, नीति निर्माण, और रणनीतिक संवाद का स्वतंत्र अभ्यास बढ़ाया जाएगा।

इसके साथ ही, यह प्रश्न भी विचारणीय है कि हिंदी की शुद्धता और "शास्त्रीयता" के आग्रह ने भी मौलिक लेखन को कहीं न कहीं कठिन बना दिया है। जब कार्यालयी हिंदी में अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ और जटिल शब्दों का प्रयोग किया जाता है – जैसे "प्रारूप", "परिपत्र", "संचिका", "आदेशावली", "निर्गमन" तो वह भाषा सरकारी तो लगती है, परंतु मानवीय नहीं। जबकि प्रशासनिक संवाद का उद्देश्य ही होता है स्पष्ट, सरल और संवेदनशील संप्रेषण। इस प्रकार, मौलिक लेखन के साथ-साथ भाषा की सहजता, आधुनिकता और उपयोगिता पर भी ध्यान देना होगा। भाषा जितनी सरल, संक्षिप्त और सुसंगत होगी, वह प्रशासन में उतनी ही अधिक प्रभावशाली होगी।

वर्तमान में जो सीमित मौलिक लेखन होता भी है, वह अकसर अपवादस्वरूप होता है – कुछ वरिष्ठ अधिकारियों या प्रगतिशील विभागों के प्रयासों से। यदि इसे प्रणालीगत समर्थन न मिले, तो ऐसे प्रयास टिकाऊ नहीं हो पाते। इसीलिए आवश्यकता है कि मंत्रालय स्तर पर मौलिक हिंदी लेखन प्रोत्साहन योजना चलाई जाए, जिसमें उत्कृष्ट लेखन को न केवल पुरस्कार मिले, बल्कि उसका प्रकाशन, प्रसार और अध्ययन भी हो। इस दिशा में लोक प्रशासन संस्थान, हिंदी निदेशालय और केंद्रीय राजभाषा प्रशिक्षण संस्थान जैसे निकायों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

शोध, नीति विश्लेषण, तथा प्रशासनिक नवाचार जैसे क्षेत्रों में यदि अधिकारी हिंदी में मौलिक लेखन करें, तो न केवल भाषा का प्रयोग बढ़ेगा, बल्कि इससे राजभाषा हिंदी की बौद्धिक प्रतिष्ठा भी स्थापित होगी। आज की स्थिति में जब सरकारी कार्य नीति निर्माण, ई-गवर्नेंस, साइबर सुरक्षा, पर्यावरणीय नीति, शहरी नियोजन, डिजिटल समावेशन जैसे जटिल विषयों से जुड़ा है, तो ज़रूरत है कि इन विषयों पर हिंदी में भी उतनी ही बौद्धिक गहराई और भाषाई परिपक्वता से लेखन हो, जितना अंग्रेज़ी में होता है। तभी हिंदी को केवल संपर्क भाषा के स्थान पर विचार भाषा के रूप में स्थापित किया जा सकेगा।

अंततः यह स्वीकार करना होगा कि अनुवाद की उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता यह बहुभाषी भारत की एक अनिवार्य प्रशासनिक आवश्यकता है। किंतु जब तक हम केवल अनुवाद पर आधारित हिंदी प्रयोग को ही कार्यालयी दक्षता का मापदंड मानते रहेंगे, तब तक हिंदी प्रशासनिक स्वतंत्रता नहीं, अनुगामी भाषा बनी रहेगी। मौलिक लेखन इस प्रवृत्ति से मुक्ति का मार्ग है। यह न केवल भाषा को गरिमा देता है, बल्कि कार्य संस्कृति में आत्मविश्वास, सृजनशीलता और मानवीयता का संचार करता है। इसलिए अब समय है कि हम "हिंदी में लिखने" से आगे बढ़कर "हिंदी में सोचने और निर्णय लेने" की दिशा में कदम बढ़ाएँ तभी राजभाषा हिंदी वास्तव में राष्ट्रव्यापी संवाद की भाषा बन पाएगी। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद और मौलिक लेखन के बीच संतुलन स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। अनुवाद अपनी जगह आवश्यक है, परंतु यदि पूरा प्रशासनिक ढाँचा केवल अनुवाद पर आश्रित रहेगा, तो भाषा की रचनात्मकता, संप्रेषणीयता और जनसुलभता में ह्रास होना स्वाभाविक है। मौलिक लेखन केवल भाषाई अभ्यास नहीं, बल्कि भाषा के आत्मसम्मान और प्रशासनिक आत्मविश्वास का प्रतीक है। यदि हिंदी को सच्चे अर्थों में भारत की राजभाषा बनाना है, तो उसे काग़ज़ पर लाने से पहले सोच में स्थान देना होगा मौलिक लेखन उसी सोच का पहला कदम है।

## रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन मुख्यालय में राजभाषा संबंधी गतिविधियां

# हिंदी कार्यशाला

स्वाति सिन्हा

राजभाषा नियमों के अनुसार हिन्दी में प्रवीणता अथवा कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर करने के लिए उन्हें प्रेरित करने के लिए प्रति तिमाही एक कार्यशाला का आयोजन किया जाना आवश्यक है। इसी क्रम में, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन में दिनांक 20 दिसंबर 2024 को **"संसदीय राजभाषायी निरीक्षण प्रश्नावली : समस्याए वं समाधान"**, विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। आमंत्रित वक्ता **डॉ. राकेश बी. दुबे, निदेशक** (रा.भा.), गृह मंत्रालय (सेवानिवृत्त) ने उपरोक्त विषय पर रूचिकर व्याख्यान दिया। डॉ. राकेश बी. दुबे ने अपने वक्तव्य में बताया कि हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि हिंदी हमारी राजभाषा है और हम सभी को इसके प्रति कुछ संवैधानिक दायित्व हैं। राजभाषा विभाग द्वारा इस संदर्भ में जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोगशालाओं को कार्य करना है। इस कार्य की रेगुलर मॉनिटरिंग भी होती है जिसके आधार पर संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण करती है। इससे संबंधित प्रश्नावली में कई मुख्य बदलाव हुए हैं जिससे राजभाषायी अनुपालन की सख्ती बढ़ाई गई है। समिति के निरीक्षण के संबंध में यह बदलाव महत्वपूर्ण हैं जिनके अनुपालन का उत्तरदायित्व कार्यालय प्रमुख का होता है। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों के साथ उनके कार्य में आने वाली समस्याओं पर संवाद किया और उनका समाधान बताते हुए हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। श्री सुजीत कुमार मेहता, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं सफल मंच संचालन किया गया।

**दिनांक 06 फ़रवरी 2025** को **"अधिकाधिक सरकारी कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग कैसे करें** विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। आमंत्रित वक्ता **श्री दिलीप कुमार निगम, उप निदेशक (रा.भा.) स्वास्थ्य मंत्रालय, सेवानिवृत्त** ने उपरोक्त विषय पर रूचिकर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि भाषा किसी भी देश के लिए सिर्फ विचारों के संप्रेषण का माध्यम ही नहीं बल्कि उसके समाज और संस्कृति को भी दर्शाती है। यह लोकप्रिय भाषा हमारे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम करती है। यह आवश्यक है कि संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सही मायनों में संभव हो ताकि क, ख और ग क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें। वक्ता ने उपस्थित प्रतिभागियों के साथ समस्याओं पर संवाद स्थापित किया और सरल समाधानों के साथ हमे हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

**<u>दिनांक 30</u> मई 2025** को **"राजभाषा से संबंधित उपलब्ध प्रमुख तकनीकी सुविधाएं एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट"** विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। आमंत्रित वक्ता **श्री राजीव रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईआईटी, खड़गपुर ने उपरोक्त** विषय पर रूचिकर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी वैश्विक स्तर पर अत्यंत समृद्ध हुई है। भारत इस समय विश्व का सबसे बड़ा बाजार है और इस बाजार में आने के लिए हिंदी जानने

आवश्यक है क्योंकि यह वैश्वीरण और बाजारवाद की संवाहक भाषा बन चुकी है। भारत सरकार के सभी कार्यालयों में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाना आवश्यक है तभी सही मायनों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन संभव होगा। डॉ रावत ने आज के समय में हिंदी के लिए उपलब्ध सभी तकनीकी सुविधाओं को बताते हुए जानकारी दी।

**दिनांक 12 अगस्त 2025** को "**राजभाषा में नवीनतम तकनीकी सुविधाएं"** विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। आमंत्रित वक्ता **डॉ. बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक, स्थानीय भाषाएं एवं सुगम्यता, माइक्रोसॉफ्ट, भारत** ने उपरोक्त विषय पर रूचिकर व्याख्यान दिया। वर्तमान समय में भाषा कार्यान्वयन के लिए एआई द्वारा उपलब्ध टूल्स पर वक्ता ने एक विस्तृत चर्चा की। माइक्रोसॉफ्ट के कोपायलट, चैटजीपीटी, जयमिनी आदि एआई टूल्स में हिंदी की संभावनाएं तराशी गईं। उन्होंने बताया कि तकनीक की दुनिया में हिंदी बहुत आगे बढ़ चुकी है और अब एआई में लर्निंग मॉडल भी हिंदी भाषा के साथ - साथ अन्य भारतीय भाषाओं जैसे तमिल, बंगाली आदि में डेवलप हो रहे हैं। इससे आने वाला समय भाषाओं के क्षेत्र में एक एआई क्रांति का होगा।

# कंठस्थ प्रशिक्षण

डीआरडीओ मुख्यालय द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रस्ताव पर सी- डैक, पुणे द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' डीआरडीओ के इंट्रानेट द्रोणा पर सफलतापूर्वक कस्टमाइज किया गया। इस संबंध में देशभर में फैली डीआरडीओ की सभी प्रयोगशालाओं को पांच जोन में बांटकर कंठस्थ का प्रशिक्षण सी-डैक टीम के द्वारा संचालित किया गया। मेजबान प्रयोगशालाएं थीं इनमास एवं डेसीडॉक, दिल्ली, एचईएमआरएल, पुणे, टीबीआरएल, चंडीगढ़, डीआरडीएल, हैदराबाद एवं एलआरडीई, बेंगलुरु। दिल्ली में यह आयोजन जनवरी में किया गया था। इसके उपरांत पहले जोन का प्रशिक्षण एचईएमआरएल द्वारा 23-25 जून, 2025 को पुणे में कराया गया। दूसरे जोन का प्रशिक्षण टीबीआरएल द्वारा 30 जून-02 जुलाई, 2025 को चंडीगढ़ में आयोजित हुआ। तीसरे जोन का प्रशिक्षण डीआरडीएल, हैदराबाद में 07-09 जुलाई, 2025 को तथा चौथे जोन का प्रशिक्षण बेंगलुरु में स्थित एलआरडीई में 16-18 जुलाई, 2025 को कराया गया। प्रत्येक जोन में यह प्रशिक्षण तीन दिवसीय रहा जिसमें कार्मिकों को कंठस्थ की हैंड्स ऑन ट्रेनिंग दी गई। इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री सुनील शर्मा, निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा, तथा संगठन पद्धति निदेशालय ने सभी प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षण के माध्यम से इस टूल को सीखने, साझा करने तथा अभ्यास करने तथा इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर इसकी स्मृति को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया ताकि अनुवाद की गुणवत्ता में और सुधार हो सके।

# 'उन्मेष 2026' का आयोजन

## सूचना

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर डीआरडीओ, मुख्यालय एवं नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि द्वारा दो-दिवसीय द्वितीय अखिल भारतीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन 'उन्मेष-2026' का आयोजन 10-11 जनवरी 2025 को संयुक्त रुप से कोच्चि में किया जाना अपेक्षित है। सम्मेलन का विषय "राष्ट्र के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका" " Role of Science and Technology in Development of Nation" है। इस आयोजन में डीआरडीओ के अतिरिक्त सभी प्रमुख तकनीकी संगठनों, विश्वविद्यालयों आदि से प्रतिभागी सम्मिलित होंगे। तकनीकी शोध पत्रों का विभिन्न सत्रों में प्रस्तुतिकरण किया जाएगा जिसमें 01 सत्र मलयालम भाषा का भी रहेगा। इस सम्मेलन का उद्देश्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोध पत्रों को सरल हिंदी में प्रस्तुत कर हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाना और हिंदी को तकनीक से जोड़ना है। आप सभी से उत्कृष्ट लेखों/ शोध पत्रों की अपेक्षा है।

"उन्मेष - 2026"
10–11 जनवरी 2026

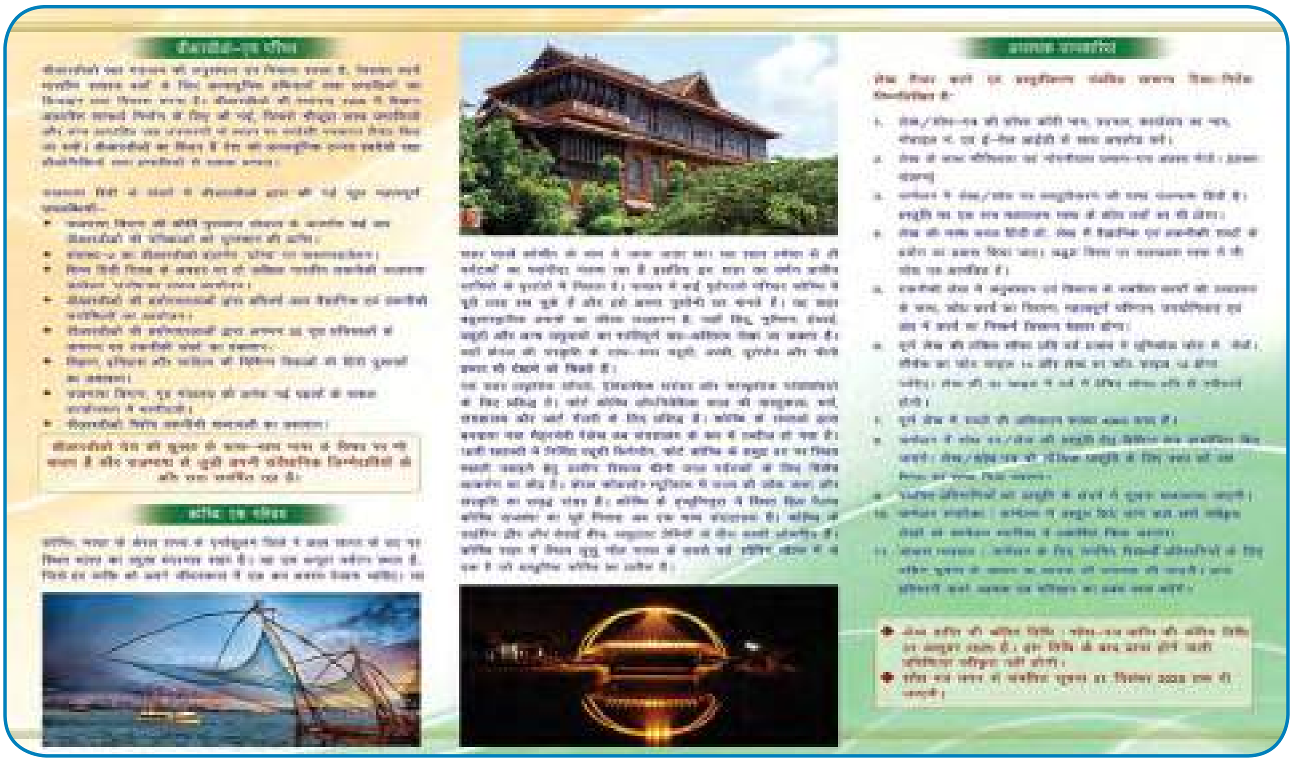

# डीआरडीओ में अनुवाद टूल कंठस्थ का प्रशिक्षण

# डीआरडीओ में संसदीय राजभाषायी निरीक्षण

# डीआरडीओ मुख्यालय में हिंदी कार्यशाला की झलकियां

# हिंदी पखवाड़ा 2025

## डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुण्यतिथि

## डीओएमएस सर्विस एवं रिसोर्स कॉन्क्लेव 2025

## भारत मंडपम, नई दिल्ली में स्टार्टअप महाकुंभ

## बेसिक लाइफ सपोर्ट एवं बेसिक डिज़ास्टर लाइफ सपोर्ट के लिए हैंड्स ऑन ट्रेनिंग प्रोग्राम

## विश्व पर्यावरण दिवस 2025

## राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025

## विश्व स्वास्थ्य दिवस 2025

## अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2025

## राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025

मैंने उसको
जब-जब देखा,
लोहा देखा
लोहे जैसा
तपते देखा
गलते देखा
ढलते देखा
मैंने उसको
गोली जैसा
चलते देखा !
- केदारनाथ अग्रवाल

**रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय**
**रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार**

**डीआरडीओ भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली - 110011**